Machine Translated by Google

मूळ कन्नड लेखक

डॉ. एस्. एल्. भैरप्पा

अनुवाद

उमा कुलकर्णी

अवघ्या दोन वर्षांत
बावीस आवृत्त्यांचा पल्ला गाठणारी
सुप्रसिद्ध कन्नड कादंबरी

आवरण

मेहता पब्लिशिंग हाऊस

Machine Translated by Google

आवरण

मूल लेखक डॉ.
एस. एल. भैरप्पा

उमा
कुलकन द्वारा अनुवादित

मेहता
पिलशंग
हाऊस

Machine Translated by Google

'हाथ का पुनरुद्धार'

'.... इस नज़रिए से देखें तो इस देश का इतिहास गलतियों और बदले, शांति और हार का कभी न खत्म होने वाला सिलसिला लगता है, जो आज भी जारी है। इसका मतलब यह नहीं है कि अतीत और भविष्य हमेशा के लिए थम गए हैं, लेखक भैरपा का मानना है! मुस्लिम सोच, जो अपनी पिछली जीतों को दोहराने पर अड़ी हुई है, उलझनों से भरी है; और इसलिए दिखाती है कि यह क्रिएटिव ग्रोथ करने में काबिल है.... ऐसी हदें हवा में हैं। दुनिया के धुंधले इंसान के साथ, इन सख्त दिल लोगों के लिए भी जगह है। दुनिया में ऐसी उलझनों के लिए कोई जगह नहीं है!...

लेखक : एम. एस. भाकर.
‘ंटलाईन’ सिााहक,

'इंडियन दा-वांची कोड!'

'अवारन' पढ़ते हुए, डुनॉन का 'दा विंची कोड' याद आया। लेकिन, आने वाली पीढ़ियाँ सच्चे इतिहास को दबा रही हैं और झूठा इतिहास बना रही हैं, दोनों ही कलाकृतियों में यही कहानी है। इस किताब में कैथोलिक चर्च और इस बुरी साज़िश में हिस्सा लेने वाला संगठन 'ओपस डी' विलेन हैं, जबकि भैरपा के 'अवारन' में, अपने निजी फ़ायदे और डर से इलम धर्म पर मौजूद रिकॉर्ड को दबाने वाले इतिहासकार और बुद्धिजीवी विलेन हैं। ये 'बुद्धिजीवी' न सिर्फ़ एक ऐसा लीडर ग्रुप बना सकते हैं जिसे अपने समय में सरकार का सपोर्ट मिल सके! उनके लिए अतीत के रिकॉर्ड को दबाना और अतीत के रिकॉर्ड को दबाना राजनीतिक रूप से भी आसान है!...

लेखक : एन. एस. राजाराम
(शाह और इतिहासकार, डेविड
वोले के साथ 'हिडन टॉर्चर्स : 1000
इयर्स ऑफ इंडियन सिविलाइज़ेशन '
के सह-लेखक)

Machine Translated by Google

डॉ. एस. एल. भैरप्पा

उनका

उमा कुलकन

द्वारा

अनुवादित पुस्तकें

पंजा

वंशवृ
मं

लकड़ी

रेशे

Machine Translated by Google

चार शद

डॉ. एस.एस.एल. 'साथ' के बाद यह दूसरा 'ऐतिहासिक' उपन्यास (कंबना के इतिहास पर आधारित) है। दो साल में बाईस वॉल्यूम और दस किताबें छपीं।

अपने लेखन की शुरुआत से ही, भैरप्पा ने जाति और धर्म पर एक स्टडी और मेडिटेशन पेश किया है। अपनी किताब 'धामी' में, उन्होंने धर्म के पीछे की साइकोलॉजी को समझने की कोशिश की है, जबकि अपनी किताब 'दातु' (गो बियॉन्ड) में, जिसने सहीह अकादमी परातोषक विजय जीती, उन्होंने भारतीय जाति व्यवस्था के पीछे की साइकोलॉजी को समझा है। महाभारत पर अपनी किताब 'पावा' लिखते समय भी, उन्होंने 'सुत्त' समुदाय पर बात की है।

अगर कोई इस नॉवेल को इस बैकग्राउंड के साथ पढ़ता है और आखिर में दिए गए 'रेफरेंस' की लिस्ट देखता है, तो पढ़ने वाला इस सब्जेक्ट पर डॉ. भैरप्पा के पैशन, सीरियस स्टडी और सोच-समझ की तारीफ़ कर पाएगा।

यह किताब आज न सिर्फ़ भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में हो रही कई दुखद घटनाओं के सामने एक 'रक्षक' बन गई है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है!

आखिर में, पिछले सभी ट्रांसलेशन की तरह, इस ट्रांसलेशन में भी मुझे मिस्टर विपा कुलकन की मदद मिली। इसी तरह, 'सा. सकाल' के एडिटर मिस्टर सदा दुबे ने भी मैन्युस्क्रिप्ट पढ़ी और कुछ सुझाव दिए। उन्हें पहले से ही दिल से धन्यवाद!

- सौ. उमा ि व. कुलकण

Machine Translated by Google

वेश

जो माया मन को ढक लेती है उसे 'आवरण' कहते हैं और जो मन को कन्फ्यूज करती है उसे 'वेपा' कहते हैं। जो इंडिविजुअल लेवल पर काम करती है उसे 'ऐवा' कहते हैं और जो कलेक्टिव या ग्लोबल लेवल पर काम करती है उसे 'माया' कहते हैं।

वेदों द्वारा बताए गए इन कॉन्सेप्ट्स को बौद्धों ने भी अपनाया। इन्हें 'संवृत' कहा जाता है। भारतीय साम्राज्य की तरह इन दोनों ताकतों ने कैसे एक ही कॉन्सेप्ट को अपनाया और उसे ज़ाहिर किया, यह कुछ उदाहरणों के आधार पर देखा जा सकता है।

आपका 'मायिमाकारक'मायेनागाजुन कहता है:

समुदाय की नींव लोगों की संस्कृति की नींव है ।

बुद्ध ने लोकसंवृतिशय (लोगों द्वारा बनाए गए सिद्धांत) और परमठशय के सिद्धांतों पर आधारित ऐसा धम्म बनाया है।

बेतुकापन ही बेतुकेपन का आधार है। यह वह

मतलब दिखाता है जो है ही नहीं और जो है उसे छिपाता है।

लिफ़ाफ़ा प्रकृति के स्वरूप के आवरण से ढकी रोशनी लाता है, जो ब्रह्मांड का स्रोत है । या, हे लिफ़ाफ़े के स्वामी, सत्य पारलौकिक है और प्रकृति के रूप को ढक रहा है।
।

यह कल्चर उस चेतना को धुंधला कर देता है जो अभी भी मौजूद है। यह हमारी एक जैसी भावनाओं को भी धुंधला कर देता है।

यही भ्रम है। यह जो है ही नहीं उसे अनंत दिखाता है, असली सार को छिपाता है, और खुद को मरा हुआ रखता है।

यह आपके दलाल के पिरान्हा जैसा है

(कन्वर्ज़न) यह सच नहीं दिखाता, यह झूठ दिखाता है। इसका यही मतलब है, यही मतलब है।

Machine Translated by Google

– बोधिचयावतार पंजिका, पृ.

आस-पास का कवरिंग कवर किया गया है।

संस्कृति सभी बुराइयों से एक ढाल है।

– मायिमककारकावृ, प.ृ ४९२

स्नेह के साथ बंद:

कीड़ा और तलवार एक ही हैं।

संस्कृति मोहक होती है। यह भी कहा जाता है कि 'धोखा ही धोखे का स्रोत है'।

– मयमकावतार

ऊपर दिए गए सभी उदाहरण टू-डाइमेंशनल चेतना के बीच के संबंध के हैं। वेदों द्वारा दिए गए नीचे दिए गए दो उदाहरण काफी हैं।

वे अंधेरे के आवरण की तरह हैं।

सामने है सच।

या यह एक अंधी और अंधा करने वाली ताकत है। यह इसके प्रति दुश्मनी वाला रवैया दिखाता है। इतना ही नहीं, यह शक पैदा करने की आदत दिखाता है या यह हालात का अंदाज़ा नहीं लगा पाता।

– शंकरगीताभाई.

अयाानयावरणिवेपनामकमित शियम।्

हालांकि छत ठंडी थी, लेकिन बादल कई योजन लंबा आसमान देख रहा था।

ऐसा लगता है कि यह आँखों के रास्ते को ढक रहा है ।

उन्होंने खुद को ऐसे ढक लिया जैसे वे कांप रहे हों

भले ही मैं अधीन हूं, मैं यह करने में सक्षम हूं।

Machine Translated by Google

सूरज के दो हिस्से हैं, कवर और रिवर्स। एक छोटा बादल आकर कई ग्रहों वाले सोलर सिस्टम का नज़ारा ब्लॉक कर देता है, जिससे कवर वाला हिस्सा धुंधला हो जाता है... सूरज आसमान को साँप जैसा दिखाता है। साथ ही, रिवर्स वाला हिस्सा भी इसे साँप जैसा दिखाता है।

– सदानंदीय वेदातसार, पृ. ३९-४०.

भारतीय दर्शन का सार सदी के समय को अगले लेवल पर ले जाना और एक विज़न बनाना है। मुझे समझ आने लगा, और तब से यह मुझे परेशान कर रहा है! मैंने चौथाई सदी पहले जो 'साईं' लिखी थी, उसमें भी समय अगले लेवल पर पहुँच गया था। 'दुनिया की शुरुआत कहाँ से हुई? क्या दुनिया ही खत्म नहीं होती?' किताब यहीं रुक गई। हालाँकि यह किताब पूरी तरह सफल रही, लेकिन मेरा मन और दिल नाखुश रहा। सदी का वही समय इस 'आवरण' में ग्रुप लेवल और टोटल लेवल पर पहुँच गया है, और किताब खत्म होने की कगार पर लगती है।

या, जब तक हम काम और काम(ों) से आज़ाद होकर शुद्ध चेतना के लेवल पर नहीं पहुँच जाते, तब तक हम अपनी स्थिति और मानवता के इतिहास को नहीं समझ सकते।

यह मेरी दूसरी हिस्टोरिकल किताब है। मैंने अपनी सभी किताबों में 8वीं सदी में संधि काल के आखिर को कवर करने की कोशिश की है, लेकिन 'आवरण' में मैंने 'सठ' के बाद के समय के इतिहास को खंगालने की कोशिश की है। भारतीय इतिहास में इस समय के बारे में बहुत जानकारी है, लेकिन 'आवरण-शि' की ज़्यादाता को पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया गया है। 'सठ' के दौरान का समय 'आवरण-शि' से ज़्यादा प्रभावित नहीं हुआ है। इस समय के बारे में बिना डरे किताब लिखना मुमकिन है, लेकिन 'आवरण' के दौरान का समय नहीं! यहाँ बिना कवर-स्टोन तोड़े आगे बढ़ना मुमकिन नहीं है। इसलिए, यहाँ एक आसान तरीका और तरीका अपनाया गया है। लिटरेचर एक ऐसा डायलॉग है जो इस लेवल पर होता है कि शब्दों और मतलब का तालमेल नहीं बैठ पाता। किताब को पढ़ने वालों के सामने लाते समय, उनके मन में उठने वाले शक को दूर करके आगे बढ़ने की ज़रूरत है। क्या किताब में सच में लिटरेरी रेफरेंस और सबूतों की ज़रूरत है, इस शक को इस ज़रूरत के बैकग्राउंड को देखकर दूर किया जा सकता है। इस लिस्ट को आने-जाने वाले समय को ट्रेस करने के तरीके के तौर पर भी देखा जा सकता है ताकि पढ़ने वालों से बातचीत की जा सके। इतिहास और इतिहासकार दोनों 'कवर' हैं। इसका क्या मतलब है अगर इतिहासकारों का इतिहास के बारे में नज़रिया इतिहास से छिपा हुआ है?

Machine Translated by Google

इस किताब के हिस्टोरिकल सब्जेक्ट पर मेरी कोई पर्सनल राय नहीं है। इस किताब की हर डिटेल और करेंसी इस तरह से दी गई है कि यह लिटरेरी राइटर के काम आए। कहानी बनाते समय मैंने इसी नज़रिए से काम किया है। ये सभी बातें क्रिएटिव राइटर और विज़ुअल रीडर्स को समझ में आएंगी। मैं कोई और सपोर्ट नहीं देता, मैं इसे किताब में लेखक के बर्ताव के पीछे के कारणों को समझाने के लिए ज़रूरत के तौर पर देता हूं। पूरी कहानी को यह रूप देना, बस यही मेरा काम है! अगर हिस्टोरिकल आर्ट की भावना उभरी है, तो यह लिखावट इस मामले में 'लिटरेरी' के तौर पर सफल कही जा सकती है।

साइंस और आर्ट के बीच का रिश्ता और अंतर माया रिसर्च का विषय है। इसके बाद, माया लिटरेचर की स्टडी में अपने क्रिएटिव अनुभव के ज़रिए मैंने इस पर सोचा है। ऐतिहासिक कहानियों को लिटरेरी कामों में बदलते समय, मुझे लगातार यह याद दिलाया गया है कि राइटर की साइंस के प्रति कितनी ज़िम्मेदारी होती है। आज के सब्जेक्ट्स पर बिना रिसर्च के भी लिटरेचर लिखा जा सकता है, लेकिन ऐतिहासिक सब्जेक्ट्स पर आर्ट बनाते समय हर डिटेल के लिए रिसर्च ज़रूरी है। राइटर की ज़िम्मेदारी है कि वह जो लिटरेरी काम लिख रहा है, उसमें इतिहास को दिखाए। राइटर और मेंबर्स की तुलना करें तो, राइटर की आखिरी ज़िम्मेदारी राइटर की होनी चाहिए। राइटर के लिए यह ठीक नहीं है कि वह 'मैं तो बस एक आर्ट-मेकर हूँ' कहकर अपनी होणाया ज़िम्मेदारी से बच जाए, और अपनी सुविधा के हिसाब से उससे ले ले।

पढ़ने वाला भी सच की खोज में उतना ही हिस्सा लेता है जितना लिखने वाला। चाहे किताब हो, कविता हो, कविता हो या कला की कविता हो; पढ़ने वाले को अपने गुस्से और नाराज़गी को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए, बल्कि इसका एहसास होना चाहिए। यह सच है कि किसी की अतीत में की गई गलतियों के लिए वर्तमान ज़िम्मेदार नहीं है, लेकिन अगर हम अतीत से जुड़ जाते हैं और 'हम उनके वारिस हैं' की भावना में फंस जाते हैं, तो हमें उनके किए कामों की ज़िम्मेदारी माननी होगी। जब तक हम यह नहीं जान लेते कि हमारे पुरखों ने क्या काम किया और वे किस फ़र्ज़ से बचना चाहते थे, तब तक हम नहीं बचेंगे, जब तक हम आज़ाद नहीं हो जाते। हमें इतिहास से सीखना होगा, और हमें उससे छुटकारा पाना होगा। यह बात हर धर्म, हर जाति और हर समुदाय पर लागू होती है।

इस आर्ट को बनाने में कई लोगों ने मेरी मदद की। मैं एक राइटर-सिस्टर और उनके पूरे परिवार को धन्यवाद देना चाहूंगी। मैं इस परिवार के साथ पांच दिन रही, जहां मैंने और उनके प्यारे बच्चों ने मुसलमानों के रोज़ाना के रीति-रिवाजों और खास दिनों के बारे में लंबी बातें कीं। उनके पति भी माया के साथ लगातार रहे। वह नमाज़ के दौरान उनके साथ थे।

Machine Translated by Google

वह मुझे मस्जिद ले गए और वहां मौजूद लोगों से मिलवाया। उसी समय, मंगलौर 'शांतिकाशन' द्वारा मुस्लिम नैतिकता पर पब्लिश किए गए सभी पब्लिकेशन उपलब्ध कराए गए।

भारत में भी, बनारस में मुसलमानों के रीति-रिवाजों के बारे में मुझे मेरे साथी डॉ. सिसक ने दो दिन तक समझाया। शिवमोग्या एच. इब्राहिम साहेब ने कई डिटेल्स बताकर मुझे कहानी की डिटेल्स समझने में मदद की। मैं इन सभी लोगों का एहसानमंद हूँ। बाकी डिटेल्स मुझे किताबों से मिलीं।

इस बात को लेकर मेरे मन में कुछ था। डॉ. एम. चिदंडमुत ने मुझे पुराणों का एक लिंक भेजकर मेरी मदद की, जो उतना ही मज़बूत था। भारतीय धर्म और दर्शन के कुछ रेफरेंस मुझे साफ़ याद थे। अवधानी गणेश ने न सिर्फ़ इसमें सही रेफरेंस खोजे, बल्कि इस किताब की पूरी मैन्युस्क्रिप्ट भी पढ़ी और उस पर चर्चा की। डॉ. एस. राजास्वामी, बी. एस. चंद्रशेखर, तुलसीराम ने मैन्युस्क्रिप्ट पढ़ी और कुछ सुझाव दिए। डॉ. धन गुड ने फ़ाइनल वर्शन चेक किया और किताब पर हर तरफ़ से चर्चा भी की। डॉ. एच. एस. गोपालराय ने कुछ ओरिजिनल टेक्स्ट इकट्ठा किए और कुछ ओरिजिनल रिवर ज़ीरो दिए।

इस मामले में कई और लोगों ने भी माया की मदद की है। मुझे उनके नाम याद नहीं हैं। उनके नाम और डिटेल्स समय पर न देने की गलती के लिए मैं पूरी तरह से ज़िम्मेदार हूँ!

डी.टी.पी. पुंजया पर यह किताब पब्लिश करने से पहले, इसे पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस, इस विषय पर कुछ बेहतरीन कामों के लेखक, झारखंड और बिहार के पूर्व रायपाल एम. रामाजोइस, साथ ही जाने-माने वकीलों, पूर्व जजों, टैक्स गांधीवादियों, और पब्लिक लाइफ के अनुभवी हरनहली रामस्वामी और अशोक हरनहली ने ध्यान से पढ़ा और सलाह ली।

मैं खास तौर पर इस देश के मज़दूरों का आभारी हूँ।

- एस. एल. भैरपा,

Machine Translated by Google

संपर्क : 020-24476924 / 24460313 वेबसाइट :
www.mehtapublishinghouse.com info@mehtapublishinghouse.com
production@mehtapublishinghouse.com
sales@mehtapublishinghouse.com

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। पब्लिशर और लाइसेंस होल्डर की पहले से लिखी हुई मंज़ूरी के बिना, इस पब्लिकेशन के किसी भी हिस्से को दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, किसी रिट्रीवल सिस्टम में स्टोर नहीं किया जा सकता या किसी भी तरह से भेजा नहीं जा सकता। कृपया हमसे मेहता पब्लिशिंग हाउस, 1941, मडीवाले कॉलोनी, सदाशिव पेठ, पुणे 30 पर संपर्क करें।

Machine Translated by Google

अनुम

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

Machine Translated by Google

1

तुंगभा डैम के पास सरकारी गेट-हाउस। पुराने घर की खिड़की से बाहर देखने पर, बूढ़े आदमी के सिर के बाल ठंडी हवा में उड़ रहे थे। सुबह से जंगल में घूमने की वजह से आई नमी ठंडी हवा की तरह लग रही थी।

"चाय?"

आमिर की आवाज़ उसके कानों तक नहीं पहुँची। विथिन तालाब से सीधे उसके शरीर पर हवा चलने की वजह से वह सुन नहीं पाया, या इसलिए कि वह हैरानी में था, उसे समझ नहीं आया। 'तुम कितनी चंचल हो, औरत! तुम्हारा शरीर एक जगह होने पर भी तुम्हारा मन अक्सर गलत जगह भटक जाता है!' सावधान रहने के बावजूद, जब वह गपशप के मूड में होता था, तो उसे उसे थोड़ा ज़्यादा समय देना अच्छा लगता था। हवा की वजह से विथिन तालाब पर धीरे-धीरे उठती लहरों को देखकर भी वह उत्साहित हो जाता था।

“तुम्हारे बाल सुनहरी शाम की धूप में लेदर जैसे लग रहे हैं। लेकिन अगर तुमने इन्हें डाई किया होता तो तुम और भी खूबसूरत लगतीं!” वह हंसा, उसकी आवाज़ रोमांटिक थी।

फिर भी, वह उसकी तरफ नहीं मुड़ी। न ही किसी और ने। यह पहली बार नहीं है जब उसने उससे बात की है, है ना? एक बार, उसने यह भी कहा था, "मैं अपने बाल डाई कर लूँगी। लेकिन फिर तुम्हें अपनी दाढ़ी भी डाई करनी होगी। ठीक है?"

'अगर मौलाना की दाढ़ी लंबी होती, तो उनके पति उसे रंग सकते थे। लेकिन हमारी दाढ़ी वैसी नहीं है। हमारी दाढ़ी तो आम लोगों या समझदार लोगों के लिए सजावट है। इसे आठ साल में एक बार रंगना पड़ता है। रंगी हुई दाढ़ी काट दी जाती है। तो हर आठ साल में, जब दाढ़ी रंगी जाती है, तो चमड़ी ढीली होकर निकलती है! पूषा की आँखों के अलावा, बालों की ग्रोथ के लिए कोई गाइड नहीं है। औरतें ही परेशान रहती हैं।'

'लेकिन इससे मुझे कोई मदद नहीं मिलेगी! वह फिर से बराबरी के बारे में बहस करती रहेगी!' वह यह सब याद करते हुए बैठ गया।

चाय और बिस्किट लाने के बाद मैंने वेट्रेस से पूछा कि उसे डिनर में क्या चाहिए। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। होटल में खाना हमेशा वही ऑर्डर करती थी। अब, मेरी माँ ने हाथ में चाय का कप पकड़े हुए कहा, "तुम ही बताओ।"

Machine Translated by Google

वह खिड़की के पास वापस गई। अमरीख चिल्लाया, “चिकन पुलाव! नहीं तो बिरयानी!”

“यहाँ कुछ नहीं है, सर। आज यहाँ और कोई नहीं है। मैं आपके लिए कुछ शाकाहारी खाना बनाऊँगा। चपाती, आलू-सब्ज़ी, चावल, सांबर, दही।” वेटर से।

आमिर को गुस्सा आया। “ओह! यह क्या है! मैं सुबह से सिर्फ़ चावल खाकर गुज़ारा कर रहा हूँ। अगर मुझे दिन में एक बार भी चावल नहीं मिलेगा, तो मेरे हाथ-पैर में खाना कहाँ से आएगा? अरे, हम सरकारी पानी पर हैं। तुम क्यों शिकायत कर रहे हो कि यहाँ का खाना अच्छा नहीं है?”

लेकिन तब भी वेटर बेबस होकर वहीं खड़ा रहा, उसके दांत भींचे हुए थे। सरकारी गेटहाउस की हालत आमिर के लिए भी नई नहीं थी! फिर भी, उसने अपनी आवाज़ ऊँची कर ली थी, यह सोचकर कि अगर उसने उसे थोड़ा नहीं दिखाया, तो वह और भी गुस्सा हो जाएगा। फिर उसने कहा, “ठीक है। अब, इसे बढ़ाते हैं। मैं देखता हूँ कि सुबह तुम्हारे पास वापस आ पाता हूँ या नहीं।”

वेटर ने भी कहा, "नहीं सर! मैं अभी अंडे ऑर्डर करता हूँ।" और चला गया।

दिन भर घूमने के बाद, उसका पूरा शरीर पसीने से लथपथ था। वह बाथरूम गया और शावर के नीचे तब तक खड़ा रहा जब तक उसे फ्रेश महसूस नहीं हुआ। अपना शरीर धोने और कपड़े बदलने के बाद, वह बाहर आया और वह अभी भी खिड़की से बाहर देख रही थी। उसने धुली हुई पैंट पहनी, अपनी चप्पलें पहनीं और यह कहते हुए, "मैं आधे घंटे में पानी में वापस आऊंगा...", वह चला गया।

डैम पर ठंडी हवा चल रही थी। 'ये सब ऐसे ही है, हालात भी ऐसे ही हैं! अगर लोगों के लिए नहीं, तो नरक है! धत् तेरे की! उन्होंने सब कुछ छोड़कर यहाँ राजधानी क्यों बनाई? वैसे? उनमें से हर एक यहीं रहता होगा। इसीलिए यह राजधानी बनाई गई! यानी, ये सब डिटेल्स। रिज़ा सोचेगी। ये उसकी ज़िम्मेदारी है। लेकिन शाम से ही, असल में, जेडपुर से पहले से ही, वह इतनी मूडी क्यों हो गई है? आर्टिस्ट तो मूडी होते हैं, है ना? मैं भी आर्टिस्ट हूँ। लेकिन अगर हम बस बैठकर मूड को देखेंगे, तो क्या वह वर्कहॉलिक हो जाएगा? इस बात पर हमारी कई बार लड़ाई हो चुकी है! अगर सिनेमा में एक आदमी बैठकर कह दे 'मूड नहीं है', तो बाकी सौ लोग क्या करेंगे? और फिर डायरेक्टर की बारी आती है जो बहुत सारा पैसा बहाकर खुद को फाँसी पर लटका लेता है! गुड लक! कोई बात नहीं, कोई कहानी नहीं, कोई स्क्रिप्ट नहीं, कोई राइटिंग नहीं। शूटिंग में उनका हिस्सा लेना हमेशा अपनी मर्ज़ी से होता है। लेकिन जिस समय वे सहमत हुए थे, उन्होंने एक भी पत्र नहीं दिया।' वह गुस्सा हो गया। 'क्या वे अब भी ऐसा ही करेंगे?'

हेरिटेज डिपार्टमेंट को यह काम भारत सरकार ने दिया था। देश का सबसे महत्वपूर्ण

Machine Translated by Google

यही था हेरिटेज साइट्स को मार्क करने का सार और प्लान। इन जगहों को मार्क करने का काम अमेरिकियों ने किया था। इसके पीछे भी सरकार की एक अनलिखी मंशा थी कि किसी के मन में लड़कियों के खिलाफ भावनाएं पैदा न हों, जैसा कि सब जानते थे। 'हाल ही में देश में कट्टरपंथ भड़क रहा है। अगर देश के आम लोग ही कट्टरपंथी बनने लगे तो देश कैसे आज़ाद रह सकता है? क्या ये कट्टरपंथी विचार एक महीने का नतीजा बन गए? हाँ! एक महीना, आठ दिन। पूरा देश पूरी तरह से तबाह हो गया! देश के आम लोगों के मन में सिक्योरिटी खत्म हो गई। वो घटना हुई जिसने इंटरनेशनल लेवल पर भारत की शान को खत्म कर दिया। मैंने अयोध्या जाकर देखा भी नहीं था! लोगों का वहाँ जाना मना है। हज़ारों पुलिस वाले पहरा दे रहे हैं। एक महीना और आठ दिन हो गए हैं। माइनॉरिटी की पवित्र पूजा की जगह – बाबरी मस्जिद – गिरा दी गई। वहाँ पुलिस का पहरा देना भी काफी नहीं है। देश के सभी माइनॉरिटी के मन में सुरक्षा की भावना मज़बूत करना ज़रूरी है, और इसी बेमेल की वजह से सरकार ने यह कदम उठाने का फ़ैसला किया है, यह भी मैं समझता हूँ। सरकार पेज, जाति-भेद, लेफ़्ट-विंग, शिव मैया की राय नहीं लेती, माइनॉरिटी को इतनी महानता देती है कि उन्हें लात मार सके, और वे बिना किसी झिझक के माइनॉरिटी की बुराई करते हैं। मुझे इस फ़िल्म का काम मिला, क्या वह भी इसी पॉलिसी का हिस्सा है? हाँ! ऐसा ही होगा। इसमें कोई शक नहीं कि माया को यह काम इसलिए दिया गया है क्योंकि वह एक टैलेंटेड डायरेक्टर हैं। अगर उन्होंने मुझे इसी वजह से दिया होता, तो मैं इसे क्यों लेता? उन्होंने मुझे यह भी बताया है कि यह काम मुझे एक तय तारीख़ को दिया जाएगा, और उसके बाद, बाकी सभी काम मुझे सही वजहों से दिए जाएँगे! मैं हर प्रोजेक्ट से आसानी से आठ से दस लाख कमा लूँगा।

'मैंने इसे पहले देखा था। अब मैंने इसे देख लिया है।' फिर मुझे चार या पाँच मिनट में स्क्रिप्ट लिखनी है। मुझे कैमरामैन को डायरेक्टर बनाकर सब कुछ शूट करना है। मुझे इस पर लिखी जानकारी का इस्तेमाल करके एक डॉक्यूमेंट्री तैयार करनी है। तो मैंने कहा, 'अगर वह भी शूटिंग के दौरान मेरे साथ होती तो बहुत अच्छा होता! आह, वह ज़रूर वहाँ होगी।'

'यह कोई मूड खराब होने की बात नहीं है। उसे थोड़ा अजीब लग रहा है! नहीं, नहीं। वह थक गई है। गर्मी, गर्म पत्थरों से आती हवा। हर स्टॉप पर गाड़ी में चढ़ना-उतरना भी! क्या कम प्रेशर है? तीन दिन से चल रहा है! वह भी चार साल का प्रेशर है। उसे प्रेशर कैसे महसूस नहीं हो रहा? मैं भी उसके बराबर हूँ! फिर मुझे यह प्रेशर क्यों महसूस नहीं हुआ? वोट आते-जाते रहते हैं। कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि वह कमज़ोर है, चाहे कुछ भी हो। शारीरिक मामलों में वह कमज़ोर है, और यही बात बुद्धि और मन के मामले में भी सच है! प्रकृति की एक बनावट है! यह झूठ कैसे हो सकता है?' वह यही सोचता रहा।

Machine Translated by Google

चावल खाते समय भी वह कुंवारी थी। लेटते हुए उसने सोचा, “जितना पढ़ना था, पढ़ लिया। अगर मुझे पहले पता होता कि ऐसा कुछ होगा, तो मैं आज ही ऋषि बगुला के पास चली जाती। चलो, पूरा दिन यहीं गेट-हाउस पर बिताते हैं और ऋषि बगुला की ट्रेन पकड़ते हैं। तुम्हें अभी भी पढ़ने और समझने का काम करना है, लेकिन अगर तुमने अब तक पढ़ लिया है, तो क्या तुम कोई कविता लिखोगी? तुम्हें हर चीज़ पढ़ने के बाद खास लाइनें बनानी होंगी। अगर तुम्हें कोई अच्छा गाइड मिल जाए, तो तुम्हें कुछ जानकारी भी मिल जाएगी।”

फिर भी उसने कुछ नहीं कहा।

'क्या यह उसका मूड है या माया पर गुस्सा? लेकिन मैंने गुस्सा होने के लिए क्या किया है? मैंने दिन भर की सारी बातें सोचीं। मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। अगर वह नहीं भी जाती, तो औरत के गुस्से की वजह क्या होती है?' मैंने आगे कुछ कहने के बारे में नहीं सोचा। जब उसने कुछ नहीं कहा, तो मुझे बुरा लगा कि मैं बार-बार यह बात उठा रहा हूँ। 'कुछ बातें जो हमारे ध्यान में आईं, वे पहले भी हो चुकी थीं। मैंने उन्हें पीछे छोड़ दिया था, उन्हें शादीशुदा ज़िंदगी का एक ज़रूरी हिस्सा मानकर।'

खिड़की से ठंडी हवा आ रही थी। उसे डैम के नीचे किनारे से टकराती छोटी लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह चुप था क्योंकि उसे पता था कि खिड़की के पास जाने पर भी उसे कुछ नहीं दिखेगा। थोड़ी देर बाद उसने बोलना शुरू किया, “प्यार या बैकग्राउंड के बारे में लिखना आसान नहीं है। कैमरा दिखाते समय हमें इसके पीछे की असली वजहें बतानी पड़ती हैं। नहीं तो सब लोग इसमें झूठ पकड़ लेंगे। कैमरे की आँख इंसान की आँख से हज़ार गुना ज़्यादा सेंसिटिव होती है। अगर हमें इस झंझट से बचना है तो हमें कुछ कॉन्टेक्स्ट छोड़ना होगा और अगर हम उसे छोड़ देंगे तो हम इस सब्जेक्ट पर डॉक्यूमेंट्री कैसे तैयार करेंगे?” जब उसने देखा कि वह बोलने लगी है तो उसे थोड़ी राहत मिली।

“अरे, एक ही सुर में मत बोलो। जो कहना है, उसके उदाहरण मत दो। कलाकारों में अजीब, बेतुकी और बेतुकी बातों में फर्क करने की ताकत होती है। यह तुम जानते हो, और मैं भी जानता हूँ। एक कलाकार जितनी ताकत किसी और में नहीं होती।”

“ठीक है. मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ. हमने नरसंहार की तस्वीर देखी. यानी, यह एक नरसंहार है, एक नरसंहार, लेकिन हम स्थिति को बहुत अच्छी तरह से नहीं समझते हैं! क्या गड़बड़ है! हर अंग! उनकी पहचान!

Machine Translated by Google

मूर्ति को देखते हुए मन में एक अजीब सी फीलिंग आती है! इसके हाथ-पैर किसने काटे? विजय-विला मंदिर किसने तोड़ा? नरसंहया मूर्ति के लिए भी एक ऊंचा पिलर था। इसमें, लाठियों से काटकर मूर्ति के हाथ-पैर तोड़े गए, आग लगाई गई और मूर्ति को तोड़ने के बाद, मूर्ति के हाथ-पैर भी तोड़े गए। कोई भी देख सकता है कि विजय-विलय के मामले में भी ऐसा ही किया गया था। क्योंकि जले हुए पत्थरों के निशान आज भी देखे जा सकते हैं। ऐसा दूसरे मंदिरों के मामले में भी हुआ है। मूर्ति के मामले में भी ऐसा हुआ है। अगर कोई हमें यह नहीं बताता कि यह सब क्यों किया गया, तो हमारा हिसाब-किताब बेईमानी होगा। इसलिए यह भी बेकार होगा।"

"तो फिर हमें समाज में यह नहीं देखना चाहिए! यह बर्बादी सामंतों और इन सामंतों का विरोध करने वालों के बीच संघर्ष की वजह से हुई, हमें भविष्य में देखना चाहिए कि विरोधी ताकतों ने यह किया। मेरा भी एक नज़रिया है। समझदार लोग इसे जल्दी समझ जाएँगे। इस समय, विजयनगर बस बहुत ज़्यादा अनैतिक था, बस। इस बाज़ार में हीरे-मोती को पैमाने से तोला जाता था, है ना! अगर यह सारी दौलत एक जगह इकट्ठा हो गई, तो यह क्या दिखाता है? पूंजीपतियों ने किसानों की दौलत खा ली और मोटा हो गए। दौलत किसान बाँट नहीं रहे थे। किसान वर्ग में अंदरूनी कलह थी। उन्होंने शुपा से हाथ मिला लिया। जब शुपा आए, तो उन्होंने शुपा की मदद की। आपका

"उन्होंने वह फल नहीं दिया जिसके वे हकदार थे, बल्कि उनकी ही ताकत का फायदा उठाकर उनका शोषण किया और उन्हें अपने ही हाथों से मार डाला। इस वजह से, उन्होंने दो पत्तों वाले पेड़ में आग लगा दी। इतना ही नहीं, इसके बाद भी, हथौड़े ने उन पर बदला लेने के लिए वार किया। क्या! आपको कैसा लगा? ऐसी दुख भरी रात में, सभी समझदार जीव खुशी से रहेंगे?"

वह कुछ देर चुप रहीं। उनकी चुप्पी उनके शब्दों से पैदा हुई अमेरिकी कोशिश पर ठंडा पानी डालने जैसी थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "अगर हम पोस्ट-इंडस्ट्रियल मूवमेंट और जागरूक खेती के दौर को जोड़ दें, तो यह कागज़ पर कागज़ का टुकड़ा रखने जैसा होगा। एक और लात ज़रूर पड़ेगी। इन मंदिरों के लिए काम करने वाले लोग महल के लिए काम करने वाले मज़दूरों की तरह सिर्फ़ मज़दूर नहीं थे। ये मंदिर, ये मूर्तियाँ भी उनके पुरखों की प्रॉपर्टी थीं। इसलिए, वे उन लोगों के स्वभाव से अलग हैं जो उन्हें अपने हाथों से आग लगाते हैं और अपने ही हथौड़ों से पीटते हैं। वे हारने वालों की प्रॉपर्टी लूटने में भी खुश हैं। लेकिन हारने वालों के मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ना "चीज़ों को करने का तरीका समझ नहीं आता।"

अब बात यह है।

उन्होंने आगे कहा, "माया दोया ने मुझे एक घटना बताई जो उन्होंने मेरे बचपन में देखी थी।

Machine Translated by Google

हमारे गांव नरसापुर और नीचे बसे कलिनिहाली गांव के बीच बहुत पुराना झगड़ा था। जब भी पहाड़ी पर बारिश होती थी, तो पानी सबसे पहले हमारे गांव में जमा होता था। जब तक हमारा तालाब भर नहीं जाता था, तब तक पानी कलिनिहाली में नहीं छोड़ा जाता था। खेतों में पानी नहीं होने की वजह से इस गांव की खेती की ज़मीन सूख जाती थी। गांव के तालाब और झरने भी सूख जाते थे। कभी-कभी बहुत तेज़ बारिश होती थी और हमारे गांव का तालाब भर जाता था, लेकिन जब पानी निकल जाता था, तो कलिनिहाली को पानी देखने को मिलता था। ज़ाहिर है, इस गांव की नज़रें लगातार हम पर टिकी रहती थीं!

"एक साल, कलिनिहाली में सच में अकाल पड़ा. इस गांव का एक आदमी हमारे गांव आया और तीन डायनामाइट बम फोड़कर हमारे गांव के तालाब का निचला हिस्सा उड़ा दिया. हमारे गांव का तालाब ओवरफ्लो होने लगा, सारा पानी उसकी तरफ बहने लगा. सुबह हमारा गांव जाग उठा. बहते पानी को रोकने का कोई तरीका नहीं था. खबर पूरे गांव में फैल गई. गांव के सभी आदमी इकट्ठा हो गए. हर किसी के पास कलछुल, चाकू, गैंती, लाठी – कुछ न कुछ था. सब लोग कलिनिहाली के साथ-साथ डेढ़ मील तक चले. बहुत बड़ी लड़ाई हुई! बहुत से लोग घायल हुए, उनके हाथ-पैर टूट गए, कुछ मारे गए. मैं वहां दस साल का था. मैं लड़ाई देखने के लिए दौड़ा था. जब मैं वहां पहुंचा, तो लड़ाई खत्म हो चुकी थी. हमारे गांव के लोगों की बारी थी. रास्ते में गांव की सांवली मडवैता सड़क के बीच में थी. वहां पहुंचते ही उसने अपने हाथों में जो गट्ठर थे, उन्हें सड़क पर फेंक दिया. "उन्हें ज़मीन पर गिराकर गेट के सामने फेंक दिया। 'माँ! तुम मेरा ख्याल रखना!' हमने प्रार्थना की और फिर से हाथ जोड़कर आगे बढ़ गए। लड़ाई इन गाँव वालों से थी। लेकिन इस बार, हमने उन्हें उसी तरह नमस्ते किया जैसे बूढ़े आदमी ने किया था। इन गाँव वालों के साथ भी यही हुआ। हमारे गाँव से गुज़रते समय, हम अपने गाँव के सफ़ेद देवता को नमस्ते करते थे और एक पल रुककर आगे बढ़ जाते थे। यह परंपरा इस घटना के बाद भी जारी रही। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? भले ही पैसे की वजह से दो ग्रुप में लड़ाई हो, लेकिन पारंपरिक देवताओं के प्रति सम्मान दिखाना भी हमारी परंपरा है। इसीलिए मैंने यहाँ देवताओं के दर्शन किए, और मेरा दिमाग चकरा गया।"

उसने कुछ नहीं कहा। जब वह बोलना चाहता था, तो उसके मन में कई सवाल थे। उसकी आँखों में भी कुछ नया नहीं था। इतने सालों तक साथ रहने के बाद अक्सर ऐसे टॉपिक आते थे, और आज का मूड भी ठीक हो रहा था। वैसे तो सब चुप थे, लेकिन जब उनमें से किसी ने बोलना शुरू किया, तो सवालों का ढेर लग गया था, जैसे "पुडी डाट"

'लेकिन आज की बातचीत हमेशा की तरह खुली नहीं है। दोनों के बीच समानताएं देखने के बजाय, आज वे अंतर बता रहे हैं।' अब, हम जो भी कहें

Machine Translated by Google

हालाँकि, वह चुप रहे, क्योंकि उन्हें पता था कि इससे विवाद पैदा होगा।

वह आँखें बंद करके सो रही थी। वह सच में सो रहा था, लेकिन वह वहीं लेटा हुआ था, उसे अपनी हरकतों का पता भी नहीं था। जब वे एक-दूसरे के बगल में सो रहे थे, तब भी उनके मन और विचार अलग-अलग दिशाओं में दौड़ रहे थे, जैसा कि असित भी उसे अपने पिछले अनुभवों से बता रहा था। उसे भी कई बार ऐसा अनुभव हुआ होगा। लेकिन उन दोनों में से किसी ने भी कभी ऐसा अनुभव शेयर नहीं किया।

'आँखें खुली हों या बंद; आँखों के सामने वाला चेहरा एक इंच भी हिलने को तैयार नहीं, नरसंहार के बावजूद। नरसंहार हट गया है, और गोद में कपड़े का एक फटा-पुराना टुकड़ा ज़रूर होगा। लेकिन यहाँ तो उस दानव का चेहरा ही फट गया है। मेरे दिल के हज़ारों चेहरों में से यह एक चेहरा ऐसे क्यों फटा होगा, यह बात मेरे मन को क्यों सताती है?' उसने मन ही मन सोचा, और पलक झपकते ही यह बात भी दिमाग में आ गई।

'गांव के हॉल में नरसिंह देव की मूर्ति भी ऐसी ही है। यह एक देवी है जो अपनी गोद में हरिकायपुला को लेकर उसे फाड़ देती है। यह इतनी बड़ी नहीं है। यह हमारे घर के देवता हैं। माया के दादा का नाम नरसिंह गौड़ा है। मेरा नाम नरसिंह गौड़ा है। इस देवता, इस घर, इस धर्म, इस परिवार से नाता तोड़कर, यह बिना नातेदारी वाला, बिना नातेदारी वाला राक्षस आज मुझे इस गांव में क्यों सता रहा है?'

बहुत देर तक लेटे रहने से उसकी पीठ में दर्द हो रहा था। वह बिस्तर पर करवट बदली। वह गहरी नींद में सो रही थी।

'मैंने सोचा था कि मैं तुम्हें मार डालूंगा,' उसने आखिर में कहा, 'तुमने अपनी ज़िंदगी अकेले संभाली है, नहीं। तुम्हारा जो बच्चा होगा, या इस बच्चे का बच्चा, किसी न किसी पीढ़ी में तुम्हारे मंदिर को तोड़ देगा। वह पाप तुम्हारे सिर पर होगा, उसे बाहर निकालो!'

“आप भी कहाँ की बात कर रही हैं, आपा?”

“मुगल बादशाह जहाँगीर, उसका बेटा शाहजहाँ, सब वेदी के चारों ओर इकट्ठा हुए। वेदी भी टूट गई और वेदी भी टूट गई। उनका धर्म ऐसा कहता है, लेकिन वेदी के साथ भी ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए। है ना? वह धर्म आज भी नहीं बदला! बेटा, तुम अपनी बुढ़ापे की वजह से मेरी बात नहीं समझ रहे हो!”

इससे पहले आपने कभी इतनी कठोरता से बात नहीं की थी। एक सौ गांधीवादी। एक

Machine Translated by Google

धार्मिक काम करने के लिए, वह हर सुबह दो घंटे सूत कातते थे। चरखा एक पवित्र औज़ार है जो दिल से गंदगी धोता है। उनके अनुसार, यह गुस्से से दूर रहने और दूसरों के साथ मिलजुलकर रहने में मदद करता है।

अ!

जब मेरी माँ गुज़रीं, तब मैं तीन साल का था और अपा तैंतीस साल के थे। वह पहले शादी के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा, 'मत आओ, मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा।' लालमी-नरसांह मंदिर के पुजारी शेषशाही, अपा से चार साल बड़े थे। उन्होंने मुझे चेतावनी दी, "नरसांह, जितनी हो सके समाज सेवा करो। लेकिन तुम्हें हमारा धर्म मानना होगा। तुम्हें घर आकर गुज़ारा करने के लिए एक अच्छा इंसान बनना होगा। अगर तुमने अपने पिता का कर्ज़ नहीं चुकाया, तो तुम्हारा क्या होगा! तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए!"

उसी शेषासन ने मुझे 'सबसे भयानक बात' कहकर मेरा ध्यान भटकाने की बहुत कोशिश की। मैंने उसकी बात नहीं सुनी। लेकिन मैं ऐसे ही खलिहान की तरफ भागा और डर के मारे सोचने लगा, "आमिर! क्या तुमने अपने लिए जो बंधन बनाया था, उसे तोड़ दिया है?"

आमिर ने यह भी कहा, “नहीं! क्या तुम ऐसी कहानियों पर यकीन करते हो कि मुसलमानों को फांसी पर लटकाने के लिए उनका मुंह काला किया जा रहा है?” यह कहना काफी है कि तुम्हारी बातें झूठी हैं। धर्म की ताकत बहुत बड़ी है। धर्म में डूबे इंसान का बोला हुआ एक भी शब्द हज़ारों रिसर्चर की रिसर्च को खारिज करने की ताकत रखता है! ज़ाहिर है, इस उम्र में तुम्हारी बातें मुर्दों की कहानी बन गई हैं।

पुया एक ही इंस्टीट्यूट में पढ़ रही थी। हम दोनों कर्नाटक से थे। हम मिले, बड़े हुए। हम पुरानी बातें याद करते और एक-दूसरे को बताते थे। शाम को हम फ्यूजन कॉलेज के पीछे चट्टान पर बैठकर सूरज देखते थे। हम दूसरे लड़के-लड़कियों को एक-दूसरे को गले लगाते हुए देखते थे। हमारे इमोशन भी काबू से बाहर हो जाते थे और हम फिल्मों के गाने और गाने गुनगुनाते थे। हम 'जब यार क्या तो डरना या', 'तुम्हारा चाँद, मटेरी चाँदनी', 'कोरा कागज़ था यमन मेरा...' जैसे गाने गुनगुनाते थे। एक दिन आमिर ने गुनगुनाया, "लामी, जब हम अपने ख्यालों में बिज़ी होते हैं, तो ज़बरदस्ती हमारा हाथ पकड़ना कितना दर्दनाक होता है, है ना?"

दोनों एक ही उम्र के थे। मूवी देखते हुए, उसके बारे में सीखते हुए, उस पर बात करते हुए और फिर मूवी बनाते हुए, हम एक-दूसरे के साथ थे। आज मैं कितने दिन इस बात से इनकार करता! रविवार और शनिवार को, जब हमें होटल में कमरा मिलता था, तो हम दोनों में से किसी को भी पैसे की टेंशन महसूस नहीं होती थी। लेकिन आमिर ने मुझे कभी पैसे नहीं दिए। मुझे इस समय कैसे पता चलता कि हमारे बीच धर्म को लेकर इतनी गहरी खाई होगी! अगर आमिर ने मुझे पैसे नहीं दिए होते

Machine Translated by Google

कौन जानता है, शायद मैं अपने प्यारे आमिर से दूर हो गया हूँ! यह एक ऐसा समय था जब मुझे पक्का यकीन था कि अगर मैं किसी की बॉडी ले लूँगा, तो मेरे पास उनके साथ रहने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। वह तीस साल का हो गया!

आपा ने आगे कहा था, “अगर यह इंसान भी तुमसे इतना ही प्यार करता है, तो अपना धर्म और नाम बदल लो। मैं खुद कर लूंगा।” आमिर ने इस मौके पर कहा था, “इसका मतलब अभी भी मेरे दिमाग में है!”

"मैं एक लड़की हूं, तो आपके मन में भी यही ख्याल आता है, है ना?"

वह चुप था। मैंने आगे बढ़कर कहा, “क्या तुम यह कर रही हो, लामी? नए धर्म को मानना भी एक ऐसी मान्यता है जो दुनिया में हर जगह मानी जाती है।”

"लेकिन फिर लड़कियाँ लड़कियों में बदल जाती हैं। वह?"

“अरे, मैं तुम्हें बताता हूँ। हमारा समाज हमारे धर्म के किसी भी आदमी को, जो किसी भी वजह से समाज से बाहर जाता है, बर्दाश्त नहीं करता। जो जाति से बाहर जाता है, उसे मार देते हैं और जो इसके लिए ज़िम्मेदार हैं, उन्हें भी मार देते हैं। माया की नज़र में, हमारा एक-दूसरे के लिए प्यार ज़रूरी है। हम दोनों का एक शांति से रहने वाले कपल की तरह रहना ज़रूरी है! मैं धर्म को नहीं मानता, न तुम। हम दोनों मॉडर्न सोच वाले हैं। अब तुम, धर्म और नाम बदलना तो बस एक पॉलिसी का हिस्सा है। वह दिन दूर नहीं जब हम अपना समाज बदल लेंगे और धर्म गरीबों के लिए अफीम की गोली नहीं बनेगा! चलो, अभी के लिए इसे एक सुविधा बना लेते हैं।”

उसे नींद आ रही है। हाँ। उसे नींद आने लगी है।

वह धीरे से उठी। उसने बिना आवाज़ किए दरवाज़ा खोला और बाहर के हॉल में चली गई, फिर धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। उसने पूरब की खिड़की पर एक बड़ा पर्दा डाला और बाहर देखने लगी। उसे सिर्फ़ लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी जो उसके पैरों से टकरा रही थीं। चाँदनी भी नहीं।

'इलम से शादी कबूल करने के छह महीने बाद मुझे महार याद आने लगे। मैं बिना माँ का महार था। उससे दस साल पहले मेरी माँ बिना याद के बगलू-पुया चली गई थीं। मैं गाँव-गाँव घूमकर दान-पुण्य का काम करता था और चरखा चलाता था। मैं गाँव में बहुत सावधान रहता था, भले ही मैं साधु था! "अगर तुम अपने धर्म के लिए जा रहे हो, तो सिर्फ़ यह ज़मीन ही नहीं, बल्कि किसी भी ज़मीन से कोई लेना-देना नहीं होगा!" मुझे वह आज भी याद हैं! गांधीवादी, अहिंसक! वह सबको सलाह देते थे कि 'गुस्से पर जीत हासिल करनी चाहिए'! अगर पंचोशी में कहीं लड़ाई होती, तो वह बीच-बचाव करते, लड़ाई खत्म करवाते, और उसे खत्म करवाने के लिए पंचायत में जाते।

Machine Translated by Google

जो लोग अपने रिश्तेदारों को सबके सामने सुलह और सुलह करवाते हैं। जाति के फ़र्क झूठे हैं, और जो लोग गाँवों, शराबखानों और गाँवों के होटलों में जाकर पीड़ितों को छिपाते हैं, सबसे कहते हैं, 'सिर्फ़ सरकार के डर से नहीं, बल्कि एकता की भावना से भी!' और मुझे हैरानी होती है कि क्या कोई, शराबखाना तोड़कर, आज अपनी बेटी को लेकर सिर पर चमड़ी ओढ़कर जी रहा होगा! "मैं प्रेग्नेंट हूँ, मैं सच में तुमसे मिलना चाहती हूँ"? या अगर मैं गाँव जाकर उससे मिलूँ जहाँ वह है? क्या उसका दिल एक प्रेग्नेंट लड़की का पेट देखकर नहीं टूटेगा जिसने अपने दिन पूरे कर लिए हैं? अगर वह माँ होती, तो क्या वह इतनी सख़्त होती? क्या वह इतना सख़्त नहीं हो सकता था? भले ही वह अहिंसक और गांधीवादी था, वह हमेशा अपने फ़ैसले पर अड़ा रहा, मुझे उसका रवैया याद है, क्योंकि मुझे उसके बेटे के सपोर्ट का डर था। अगर उसका यह रवैया होता, तो क्या मैं कुछ कम होता? अगर वह इतना चाहता था, तो मुझे उसके लिए क्यों खड़ा होना पड़ता? क्या यह सच है? उसने कुछ क्यों कहा, वह गया ही नहीं, बस! मेरी बेटी प्रेग्नेंट है, वह कैसे समझेगा! उसे कौन बताएगा? अब सब ठीक हो रहा है। इस समय सब ठीक नहीं हो रहा है।'

सिर्फ़ प्रोफ़ेसर शशि ही उसे समझते थे। यानी योगी। उनके पिता, शेषराय शशि, और माँ, अमा, जो अपनी परंपरा को मानते थे, लड़की से बहुत नाराज़ थे। उन्होंने उसे घर में आने दिया था, किचन के अलावा घर में कदम रखे बिना। इसलिए शशि साल में एक बार गाँव जाता था और गाँव और परिवार के पाँच-छह लोगों से मिलता था। वह मेहमानों को देखकर मुस्कुराता था, खुशी के बारे में सोचता था, और जो दूर रहते थे उन्हें भी मुश्किल होती थी। लेकिन मैं प्रेग्नेंट थी, और इस दौरान वह एक साल के लिए विज़िटिंग प्रोफ़ेसर के तौर पर विदेश गया हुआ था। उनमें से कोई क्यों नहीं आया, औरत को महारे इतनी शिद्दत से क्यों याद थे? सभी जवान लड़कियों को दिखाने की इच्छा इतनी मज़बूत क्यों है?

प्रेग्नेंसी के दौरान मेरी एक ही इच्छा थी और जिसने मुझे सबसे ज़्यादा परेशान किया, वो ये थी: अगर मेरी माँ ज़िंदा होतीं, तो क्या वो ऐसी हालत में बिना बुलाए घर पर रहतीं? क्या वो दूसरी जाति में जाने के बजाय दूसरी जाति के बच्चे से शादी करतीं? अगर ऐसा होता, तो क्या वो एक छोटी लड़की की मदद से बच्चे को जन्म देतीं जो अपनी माँ के गुज़र जाने के बाद बड़ी हो रही थी और घर संभाल रही थी?

और इतना ही नहीं, सास को कैसा लगेगा अगर कोई बहू घर में नियम तोड़कर आई हो, लेकिन मुसलमान बन गई हो और उसके बेटे से शादी कर ली हो, लेकिन घर आने के बाद भी बहू के रीति-रिवाजों को न माने? वह चाहती थी कि मैं घर के एक कमरे में दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ूँ। मैं वह भी करूँगी। मेरी सास अलग है!

Machine Translated by Google

मॉडर्न सोच ने हम दोनों के बीच दरार पैदा कर दी। हर धर्म में कुछ न कुछ कमियां थीं। ये सब धार्मिक कैपिटलिज़्म के एजेंट हैं। गरीबों के फायदे के लिए बनाया गया अफीम! इस सोच ने मुझ पर इतना असर किया कि मुझे लगा कि मैंने खुद को इस धर्म से, इसके आचार-विचारों से आज़ाद कर लिया है, अब मैं इस धर्म के आचार-विचारों में क्यों फंसूं? पहले मैं इस धर्म में आया था, जिस धर्म को छोड़ा था, उसमें ऐसी कोई रोक-टोक नहीं थी। नार्सिसिज़्म या व्हाइट सुप्रीमेसी की मूर्ति जहां चाहे जा सकती थी। मैं न भी चाहूं, तो भी मुझे जाने दिया जाता था। पांचों रोज़ की नमाज़, जुमे की ज़रूरी नमाज़, रमज़ान में सूरज उगने से सूरज डूबने तक बिना एक कदम भी रखे सख़्त रोज़ा, समुदाय के लोगों के बनाए लिखे हुए नियम-कानून, त्योहारों के दिनों में दी जाने वाली जानवरों की कुर्बानी – माया धर्म में ऐसे कोई सख़्त नियम नहीं हैं। बकरों की कुर्बानी सिर्फ़ त्योहार के दिन दी जाती थी। सरकारी कानूनों और हमारी अपनी मान्यताओं के कारण, वहाँ जानवरों की बलि पर विश्वास पूरी तरह से बंद हो गया और नैवे की जगह तंबू, कोषम्बीर, नारियल और केले के लड्डुओं ने ले ली। इंसानियत की पूजा! लेकिन मैं इस धर्म में आया था, और मुझमें किसी को यह बताने की हिम्मत नहीं थी कि इस धर्म में जानवरों की बलि पाप है। क्या कोई ऐसा इंसान जो इसे नहीं मानता, ज़िंदा भी रह सकता है? पैगंबर (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) मक्का गए और ऊँट की बलि दी। अगर उनमें ऊँट की बलि देने की ताकत नहीं होती, तो वे भेड़ और बकरियों की बलि देते। जानवरों की बलि इस धर्म का एक अहम हिस्सा है।

नज़ीर इकट्ठा होकर इस हेटिटेनलाट में आया। महीने के सातवें दिन, दोनों बकरियाँ सुबह सो गईं और बोलीं, “इल्वतुव्ज़ हिलिल दी फरसम...”

...मैं अल्लाह के साथ एक हूं, जो आकाश और पृथ्वी का निर्माता है। मैं विधर्मी नहीं हूं। मेरी प्रार्थना, मेरी कुर्बानी, मेरा जीवन, मेरी मृत्यु, सब कुछ दुनिया के भगवान के चरणों में है। वह अकेला है। उसमें कोई भागीदार नहीं है। मुझे यही आदेश दिया गया है। मैं पूरी तरह से उसके सामने आत्मसमर्पण करता हूं। (मुलिम) ऐ अल्लाह! मैं उसके सामने आत्मसमर्पण करता हूं! आप ही एक हैं!" इसके बाद, उन्होंने कहा, 'बिम अल्लाहि अल्लाह अकबर' और एक तेज चाकू लिया और दो बकरियों की गर्दन काट दी, और कहा, "ऐ अल्लाह! यह एक नज़ीर की महिला है! अपनी कुर्बानी स्वीकार करें। अपने प्यारे मुहम्मद (s.a.w.a.) और मेरे प्यारे इब्राहीम (a.s.) से स्वीकार करें, जिसका खून उसके बेटे से बेहतर है, जिसका मांस उसके बेटे से बेहतर है, जिसके बाल उसके बालों से बेहतर हैं। (ऐ अल्लाह! इसे स्वीकार करें!)

इस समय मैं बच्चे के कमरे में सो रहा था। तभी मुझे दो छोटे मेमनों की जगह दो केले, मेथी के दाने और गुड़ का केक बनाकर अपने दोस्तों का कर्ज़ याद आया।

Machine Translated by Google

मुझे भी मांस खाने वालों की जाति में शामिल कर लिया गया है। गांधी से मिलने के बाद मैं शाकाहारी बन गया। इसके बाद घर में मांस पूरी तरह से बैन हो गया। माया जब अपनी मां के साथ थी, तो वह अपने पिता के साथ जाती थी। फिर भी, मैं कभी-कभी रिश्तेदारों, दोस्तों और जाति के लोगों के घर जाता था, और वे मांस खाते थे। कुछ दिन, हमारी जाति के लोग व्रत भी रखते थे, इन दिनों वे भी शाकाहारी थे। इसके बाद, मैं अपने दोस्तों और परिवार के साथ एक होटल में गया, क्योंकि मुझे नॉर्मल खाना था। फिर भी, दयालु भगवान को जानवर का मांस चढ़ाने की यह इच्छा मेरे मन में आई। यह मेरे मन में इमोशनल लेवल पर गई।

लेकिन शाम के इस समय प्रोफेसर शाका के एक फोन कॉल ने माया को बिल्कुल अलग मोड़ दे दिया। आमिर के लंबे तार ने माया को समुद्र के किनारे लाकर खड़ा कर दिया।
सैनिक.

"क्या लामी है! कोन्युलस! तुम इसलिए नाराज़ हो क्योंकि रिज़ा की जगह लामी को चुना गया! बिना ज़्यादा सोचे-समझे, तुमने अपने आप वही नाम रख लिया! क्योंकि तुम अपने गाँव से कितनी भी दूर क्यों न आ गए हो, माया तो हमारे गाँव की ही लड़की है!"

प्रोफेसर की आवाज़ सुनकर माया को अच्छा लगा। उन्होंने आगे कहा, "परसों मैं आमिर से सेमिनार में मिला था। वह अपने बेटे के साथ था। लड़का हो या लड़की! माया की नज़र में कोई फ़र्क नहीं है! मैं तुम्हें बताने वाला था कि क्या करना है। लेकिन अगले दिन मुझे सुबह जल्दी दिल्ली के लिए निकलना था। मैं शाम को लौटा। आज मैं 'गांधी और मछली - एक तुलना' टॉपिक पर एक शैडो प्ले के लिए गांधी भवन गया था। मैं तुम्हारे पापा से मिला। मैंने उनसे कहा, 'मुझे लगा था कि तुम्हारा एक पोता है। आज सातवां दिन है।' उन्होंने कुछ नहीं कहा। उन्हें मेरी बात पसंद आई होगी। माया का चेहरा खिल उठा। मैंने सोचा, 'क्या तुम अब भी जातियों के बीच फ़र्क मानते हो? इंसान का दिल धर्म से ज़्यादा ज़रूरी है, है ना?' वह क्या है? 'नारायण! इधर-उधर, करण नारद मुनि का काम! मैं इसे छोड़ता हूँ!' मुझे उससे कोई गुस्सा नहीं है! माया विडाल का बेटा। वह मेरी ही उम्र का है। लेकिन, जैसा मैं देख रहा हूँ, धम्म और करण का दिल मेरे बीच एक दीवार खड़ी कर रहे हैं। इसीलिए मैं कहता रहता हूँ, जब तक धर्म बहुत रहेगा, इंसानियत नहीं रहेगी। कोई बात नहीं। तुमसे बात किए बहुत दिन हो गए। बचपन खत्म होने के बाद, चलो एक दिन कहीं डिनर पर चलते हैं।"

इसके बाद मैं खुद के साथ और भी सख्त हो गया। इतना ही नहीं, मुझे इस धर्म से नफ़रत हो गई। हाँ। लहरों की आवाज़ थोड़ी शांत हो गई है। जो नफ़रत मुझे हुई, वह उस धर्म से थी जिसे मैंने पीछे छोड़ दिया था! उस धर्म से नहीं जिसे मैंने अपना लिया था। इसके विरोध में, मैं शाकाहारी बन गया और मांस खाना छोड़ दिया। इसने मेरे दिल की इंसानियत को भी खत्म कर दिया, वह नफ़रत कितनी बुरी थी! इसके बाद ही मुझे एहसास हुआ कि मेरी

Machine Translated by Google

लेख, पब्लिक स्पीच और सेमिनार के ज़रिए खुलकर अपने विचार ज़ाहिर किए जाने लगे! “हिंदू धर्म जितना पवित्र कोई दूसरा धर्म नहीं है... जिसमें सामाजिक सरोकार न हो... जिसमें बराबरी का विचार न हो... जिसमें सामाजिक असमानता हो... जिसमें ऐसी भावना हो जो दुनिया में कहीं और न मिले... जिसमें गरीबों और दबे-कुचले लोगों पर बिना रोक-टोक के ज़ुल्म किया जाए। धरती पर कोई दूसरा धर्म नहीं मिलेगा!... इसलिए मैंने इस धर्म को त्याग दिया और एक बहुत बड़ी नींव पर खड़ा होकर, बिना देवताओं के सहारे के पूरी दुनिया में फैल गया... आज का बराबरी का धर्म चौदह सौ साल पहले बना था... मैंने इस धर्म में कदम रखा...” वगैरह।

प्रोफेसर शशि मुकांता माया के विचारों का समर्थन करने लगे। इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे अपने भाषणों में इस्तेमाल करने के लिए कई शब्द भी देने शुरू कर दिए, माया मेरे पास ऐसे लोग लाने लगी जो उसकी बातों का समर्थन करते थे। माया के मन में थोड़ा डर भी था। वह देश में बैठे लोगों से बात करना चाहती थी, शी तेलो के पैर रौंदना चाहती थी, वह भी खुलेआम! वह बिना डरे कैसे रह सकती थी?

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

उल्टा, अखबार ने पहले पेज पर मेरी फोटो छापी और मुझे एक बहादुर औरत बताकर बड़ाई की। सेमिनार में मैं जो एस्से लिख रही थी, वे पूरे छापे गए। मैं सोचने लगी कि अगर कोई क्रांति हुई, तो मैं ही बचूंगी। जल्द ही, मेरे दोस्तों ने मुझे हेरोइन देना शुरू कर दिया। मैंने लात मारने वालों के पैर धोए, और वहीं से इन लोगों और धर्म के लिए मेरी नफरत और भी बढ़ गई। मेरा नया धर्म ऐसा नहीं है। अगर कोई इस धर्म को छीन ले, तो उसकी इज्ज़त नहीं होती! पूरा समाज इसके खिलाफ खड़ा होता है और इससे डरता है, सज़ा मिलती है या डराया जाता है। इस धर्म में ऐसा डर पैदा करने की खूबी है कि बाहर से कोई इससे बच नहीं पाएगा! हमें अपने गर्व को ऐसे ही देखना चाहिए! ऐसे कामों से धर्म के प्रति मेरा गर्व और बढ़ गया। 'यही धर्म है!' की एक कड़वी भावना पैदा हो गई। जब मैं घर पर होती थी, तो मैं दिन में पाँच बार बिना चूके नमाज़ पढ़ने लगी।

ज़ाहिर है, सास को माया से प्यार हो गया था। ससुर खुश थे। फिर भी, सास कुछ बातों से नाखुश थीं। एक जवान लड़की के परिवार में दो हिस्से होते थे, मर्दों का और औरतों का। आगे का हिस्सा मर्दों के लिए होता था, पीछे का हिस्सा औरतों के लिए। दोनों के बीच दरवाज़े ऐसे लगाए जाते थे कि औरतों का हिस्सा अंदर आने वालों को दिखे। बाड़ भी ऊँची होती थी। अगर कोई अनजान आदमी कंपाउंड में आता, तो वह चिल्लाता, "गोशा, गोशा!" उसके बाद औरतें छिप जातीं। उसके बाद घर के मर्द या काम करने वाली औरतें बाड़ के पास जाकर आपस में बातें करतीं।

Machine Translated by Google

जिस दिन मैंने इस घर में कदम रखा, मेरी सास ने मुझे इस रिवाज के बारे में बताया था। लेकिन मुझे इससे डर नहीं लगा। मैं घूंघट करने से दूर रही। अगर कोई मुझे बुलाता भी, तो मैं सीधे बाड़े में चली जाती। मेरी सास पूछ रही थीं, "अगर तुम ऐसा बर्ताव करोगी, तो लड़की कैसे बनोगी?" "मैं फिल्मों के लिए डायलॉग लिखती हूँ, फिल्मों की स्क्रिप्ट लिखती हूँ। मुझे हर जगह 'गोशा' तो नहीं कहा जाएगा। तो फिर घर में हंगामा क्यों नहीं होता?" मैंने कंधे उचकाए।

"मर्दों को अपना काम छोड़ देना चाहिए। तभी एक मुस्लिम औरत को मुस्लिम औरत के तौर पर इज्ज़त मिलेगी। तभी अल्लाह उसके साथ रहेगा।"

"आपके बेटे ने मुझसे कहा कि मैं ग्रेजुएशन के बाद भी सिनेमा में काम कर सकता हूँ। अगर आपको कोई आइडिया चाहिए तो!" उन्होंने कहा। ज़ाहिर है, सास को गुस्सा आ गया।

लेकिन सास ने गुस्सा नहीं दिखाया। अगले दिन, उन्होंने प्यार से कहा, "मैं जो कह रही हूँ, उसे शांति से सुनो। अगर तुम इसे अच्छी तरह समझ जाओगी, तो तुम बच्चे के चेहरे पर मुस्कान देखोगे। उसका चेहरा गुस्से से लाल है। उसमें एक खास गुण है कि वह काम न करते हुए भी मज़बूत रहता है। इसीलिए वह घर के बाहर परेशान रहता है।"

"मैं घर से बाहर काम कर रहा हूँ, अपनी फिजिकल हेल्थ के लिए नहीं! बल्कि माया और पीढ़ी के लिए...." मैंने उसे क्लास में सिनेमा के बारे में बताया। लेकिन वह समझा नहीं। तीन साल बाद भी, मैं उससे बिल्कुल सहमत नहीं था। "अगर मैंने किसी लड़की के साथ ऐसा किया होता, तो वह हर मामले में इतना नेगेटिव जवाब नहीं देता। मेरा बेटा दसाया है। वह एक फिल्म डायरेक्टर है। कोई लड़की जो उससे अट्रैक्ट होकर आती है, वह हमारे परिवार के रीति-रिवाजों से क्यों सहमत होगी? वह हमारे धर्म को क्यों मानेगा!...." बात यहाँ तक बढ़ी। इसके बाद, मुझे लगा कि मुझे उसके साथ रहना चाहिए। मैंने अलग होने की बात उठाई।

लेकिन अमिरना ने कोई तैयारी नहीं दिखाई। "तुम्हें आकर इसे ले लेना चाहिए। तुम्हें थोड़ी देर और रुकना चाहिए...." असान्या ने कहा।

"क्या? आप टैटफुल को क्या कहना चाहते हैं?"

"जब मैं घर पर होती थी, तो मैं काला गाउन पहनती थी जो मेरी माँ को पसंद था।"

"और शूट के दौरान? आपको प्रेस के लिए कुछ फ़ोटो लेने हैं और उन्हें अलग-अलग एजेंसियों को भेजना है, है ना? आप किस तरह के कपड़े पहनेंगे? क्या आपको घूंघट करके अपना चेहरा छिपाना चाहिए? अगर ऐसी फ़ोटो एक एजेंसी में छप गई, तो माया क्रांतिकारी इमेज का क्या होगा?"

Machine Translated by Google

इससे भी कोई हल नहीं निकला। आठ बहनों की पीठ पर पैदा हुआ यह प्यारा इकलौता बेटा। न सिर्फ़ उसके माता-पिता आए, बल्कि अंदर झाँककर मुझे धीरे-धीरे यह भी एहसास होने लगा कि उसमें भी धर्म की ताकत थी।

परिवार धार्मिक रूप से बहुत धार्मिक माना जाता था। हरेगरी करण तिलख, जिन्हें यह पक्का करने के लिए रखा गया था कि हर मुस्लिम परिवार में धर्म और परंपराओं का सख्ती से पालन न हो, बात समझ गए। उन्होंने आकर ससुराल वालों से पूछा। सास, जो पहले से ही गुस्से से भरी हुई थीं, बोलीं, “वह हमारी बहू नहीं है जो चुपचाप सुनती है! आपने भी सोचा है!” मैंने दो सेकंड सोचा, “मैं समझ गई कि अब आप अपने माथे पर कुमकुम लगा रही हैं। क्या यह सच है?”

“मैं सिनेमा में हूँ। मैं वहाँ की कंपनी के हिसाब से कपड़े पहनता हूँ।”

“मुझे जानकारी मिली है कि आया-आया घर पर कुमकुम नहीं धोती हैं।” “वे कहते हैं कि

कुमकुम धोना ज़रूरी नहीं है। वे कहते हैं कि कुमकुम धोना ज़रूरी नहीं है। घर आते ही इसे धोना पड़ता है! इसका धर्म से क्या लेना-देना है?”

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इन दाढ़ी वाले साधुओं से आगे क्या कहूँ।

“क्या बात है? काफ़िरों का क्रेडिट!” थैचर ने कहा।

"काफ़िर शिवा बन गया है! यह गुनाह है, यह कहाँ से आया?"

उनमें से एक हँसा, "तुम गलत बोल रहे हो। तुम्हें शब्द याद नहीं आ रहे, तुम बहुत तेज़ी से बोल रहे हो।"

“माया मुसलमानों को उडू पसंद नहीं है। तमिल मुसलमानों को भी पसंद है। उडू का धर्म से क्या लेना-देना?” फिल्म के शानदार डायलॉग्स ने कट्टर परंपरावादियों को भी हैरान कर दिया।

"क्या बात है? तुम कहाँ से हो?" उन्होंने एक दूसरे को देखा।

“मैं समझता हूँ कि आप बीफ़ नहीं खाते हैं। क्या यह सच है?” पुजारी ने फिर पूछा।

"मैंने इस धर्म में गोमांस को पाप घोषित कर दिया है। मैं इलम में शामिल हो गया हूँ।"

Machine Translated by Google

मेरी भी यही इच्छा थी। अब, अगर मैं खाने जाता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं पागल हो रहा हूँ। मैं तुम्हें दोष नहीं देता! इसके अलावा, यह कहाँ लिखा है कि मुसलमानों को बीफ़ खाना चाहिए?

"तुमने ऐसा कहाँ कहा?" अब हम दोनों ने एक ही आवाज़ में कहा, जैसे हम कोई डुएट गाना तोड़ रहे हों, "तुमने ऐसा कहाँ कहा, मेरी प्यारी? मैंने तुमसे यह सवाल इसलिए पूछा था ताकि यह टेस्ट कर सको कि तुमने अपने पैगनिज़्म की जड़ों को पूरी तरह से काट दिया है या नहीं। अगर मैं और पूछूंगा, तो मुझे सौ और गलतियाँ मिलेंगी।"

मैंने उन्हें टोकते हुए पूछा, "मान लीजिए कि एक लड़की को एक आदमी से प्यार हो गया, और आपने उसे यह देखने के लिए सूअर का मांस खाने को दिया कि वह इस नियम से बाहर आई है या नहीं, और यह उस आदमी के खिलाफ आपकी दलील है जो इस परंपरा को मानता है!"

"क्या? तुमने क्या कहा?" दोनों ज़ोर से हंस पड़े। फिर लंबी सफ़ेद दाढ़ी वाले ने लंबी दाढ़ी वाले को समझाया। फिर ग्रे दाढ़ी वाला हंसा, "तिलख को यह क्या है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! क्या तुम नहीं जानते कि इस धर्म में जमा हुआ इंसान अगर दूसरे धर्म में जाएगा, तो वह उसके लिए मरेगा? फिर तुम इस नंदूकारा का मांस क्यों खाना चाहते हो?" यह कहकर वे गांव वालों के पास गए और हंसे, "यूनुस कुरैशी साहब! तुमने अपनी बहू की बात नहीं सुनी? उसे भी ठीक से वापस लाना चाहिए। नहीं तो तुम पर इल्ज़ाम लगेगा। कोई तुम्हारे घर नहीं आएगा। अगर तुम घर पर मर गए, तो कोई तुम्हारी बॉडी लेने नहीं आएगा। अगर कोई आया, तो भी उस पर इल्ज़ाम लगेगा। तुम्हारे बेटे के साथ भी यही होगा। अपने बेटे से कहो कि मुझसे मिले।" और वे चले गए।

आमिर को माया पर गुस्सा आया। "तुम थोड़ी समझदारी से काम क्यों नहीं लेती? क्या तुमने सोचा है कि अगर वे हमला कर दें तो तुम्हारा क्या होगा?"

"टैटफुल क्या है? मुझे यह समझ में नहीं आता, मुझे क्यों समझना चाहिए?"

"अगर तुम नहीं आए, तो वे यह नतीजा निकालेंगे कि तुम इस धर्म में विश्वास नहीं करते। वे यह मौका क्यों चाहेंगे?"

"तुम्हें क्या लगता है कि मैं नरक में रह रहा हूँ, और इतना कुछ नष्ट कर रहा हूँ?"

"तो! अगर बाहर शूटिंग करते हुए तुम गंदे भी हो जाओ, तो घर आकर उसे पोंछने में क्या दिक्कत है? बाहर सलवार कमीज़ पहनो। घर आकर सिर, चेहरा और गर्दन ढकने वाला काला शॉल पहनो, और कभी-कभी इतना ज़्यादा खाना खाने में क्या दिक्कत है? अगर नहीं, तो चिकन और बीफ़ और गाय-बैल भी क्यों नहीं खाते?"

Machine Translated by Google

"आप भी तो यही कह रहे थे, आप भी यही कह रहे हैं!"

उन्होंने कुछ नहीं कहा। ससुराल वालों ने भी बाद में माया से बात करने से मना कर दिया। “यह पिता के बारे में नहीं है। यह माया वंतन्या के बारे में है। यह हमारे गर्व के बारे में है!” यह मेरा
माया अकेली रहती थी। एक दिन मैं उसे अमन रेस्टोरेंट ले गया और गोथ बियानी ऑर्डर किया। वह खुश था। होटल के बाहर मेड ने कहा, “मैंने यह दिखाने के लिए खाया कि मैंने जिस धर्म को पीछे छोड़ा था, उसकी जड़ें पूरी तरह तोड़ दी हैं। लेकिन अगर मैं इसे घर पर रोज़ खाने लगूँगी, तो मैं माया के घमंड का शिकार हो जाऊँगी। इसके बाद, तुम मुझे अपना पक्ष लेते हुए देखोगे। घर में रोज़ की बहस, लेबल का डर, सिर्फ़ उनका डर नहीं, बल्कि यह डर भी कि अगर हमने इन सब चीज़ों को मौका दिया, तो हम नरक में जाएँगे! आज मैं गोथ खाऊँगी। इसके बाद, जब वे इसे घर पर बनाते हैं तो तुम इसे क्यों नहीं खाओगे, यह सवाल उठेगा। तुम वही बात नहीं कहना चाहते। चलो एक छोटा सा लाटे पीते हैं। उन्हें लेबल या नरक से डरने की ज़रूरत भी नहीं है। और तुम रोज़ की सुबह की भागदौड़ भी नहीं करना चाहते।” मैं वहाँ से चली गई।

अपने भतीजे को लेकर जाना आसान नहीं था। विडला जैसा बड़ा घर सुविधाजनक था। मैंने खाने और दूसरे खर्चों के लिए भी कुछ नहीं दिया। जब मैं घर से दूर होता था, तब भी मेरे पोते का हमेशा ख्याल रखा जाता था। हमारी फिल्में, पत्नी की बेवफाई जैसी कई चीजें थीं। मुश्किलें थीं, लेकिन बुरा नहीं था।

शिव आमिर अपने माता-पिता का सबसे प्यारा बेटा था। वह इतनी कम उम्र में उसे छोड़कर घर से बाहर जाने के लिए तैयार नहीं था। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। उसने कहा, “मैं नहीं आऊंगा। नहीं तो, तुम्हें अकेले जाना होगा।”

"इसका क्या मतलब है? क्या तुम समझ रहे हो कि तुम क्या कह रहे हो?"

“आप ही डायलॉग लिखते हैं। आप ही इसका मतलब समझते हैं।”

“तुम अपने पिता जैसे हो!”

“माया, क्या तुम दरारों से सुन रही हो?” उसने अपने बाएं हाथ से मेरी गर्दन दबाई, मेरी चोटियां पकड़ीं और अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया।

कमरे का दरवाज़ा बंद था। बच्चा अपनी दादी के साथ था। मैं हैरान रह गया। उन दोनों के बीच कितना भी झगड़ा क्यों न हो, मैंने पहले कभी इस तरह हाथ नहीं उठाया था। डर से मेरे हाथ-पैर ठंडे हो गए। मैं पत्थर की तरह डरा हुआ था। फिर भी, मैंने खुद को पीछे खींच लिया, “अपना हाथ हटाओ! दूर रहो! अगर मैंने भी हाथ उठाया, तो तुम्हारी खोई हुई शर्म कभी वापस नहीं आएगी।”

Machine Translated by Google

उसका बढ़ा हुआ हाथ वैसे ही रहा। चोटी पर उसकी पकड़ ढीली हो गई। मेरा दिमाग खाली हो गया। मेरी नज़रें उसकी नज़रों से मिलीं। उसकी नज़र नीचे ज़मीन पर पड़ी। एक हारे हुए आदमी की तरह, वह तुरंत कमरे से बाहर चला गया और एक और कदम बढ़ाकर माया के सामने खड़ा हो गया। उसने कहा, "तुम्हारे जैसे इंसान को तलाक देने का सिर्फ़ एक ही तरीका है। मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा! मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा! मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा!" और वह फिर चला गया। वह वापस आया और उतनी ही तेज़ी से मुड़ा जितनी तेज़ी से आया था!

एक पल के लिए मुझे लगा कि यह किसी नाटक या फ़िल्म का सीन है। मैं उसके हाव-भाव की कलाकारी, डायलॉग बोलने का स्टाइल और उसके बाद आने वाले कदमों की लय से मोहित हो गया था। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं भी ऐसा ही महसूस कर रहा हूँ। मेरा दिल काँप उठा। यह सच में तीन बार तलाक़ है! क्या तलाक़ तब होता है जब आप एक बार में तीन बार तलाक़ लेते हैं, या आपको कई महीनों के समय में तीन बार ऐसा करना पड़ता है? क्या यह सच है कि एक साथ तीन तलाक़ काफ़ी हैं, और अगर वे काफ़ी भी हैं, तो क्या फ़र्क पड़ता है? महीने में इतनी बार तलाक़ हो सकता है। चाहे जितनी बार करो, तुम्हें करना ही है! एक बार यह बात मेरे मन में आई, साथ रहने की चाहत, मेरे दिल में जो प्यार था, वह प्यार बन गया। मेरा पूरा वजूद काँप उठा। मेरे शरीर से बहुत पसीना बह रहा था। मैं बिस्तर पर बैठ गया, डर था कि मेरा बैलेंस बिगड़ जाएगा। मैं वहीं लेटा रहा। मुझे बाहर से किसी के चूतड़ की आवाज़ सुनाई दी। यह कहीं जा रहा था। उसने अपने मम्मी-पापा को नहीं बताया था कि कमरे में क्या हो रहा है। भले ही उसने गुस्से में कहा था, लेकिन उसमें काफी सब्र था। वह जानता था कि अगर वह अपने मम्मी-पापा के पास गया, तो वह फिर कभी उनके साथ नहीं रह पाएगा। यह डायलॉग मुझे डराने के लिए था। इस सोच ने मेरे मन को थोड़ा शांत किया।

फिर भी, इस दरार से निकले इन शब्दों ने हमारे साथ रहने में रुकावट पैदा कर दी है।
घटित हुआ।

फिर मुझे अपने पति की याद आई। इस समय मुझे अपने और अपने पति में पूरा फ़र्क समझ नहीं आया। मैं धर्म बदलने के ख़िलाफ़ थी। मेरे पति भी यही करते थे, दोनों में से कोई एक अपना धर्म बदलकर रजिस्टर ऑफ़िस में शादी कर लेता था। लेकिन इस पर परिवार में झगड़ा होगा, अगर पत्नी नए धर्म में आ गई, तो इसमें कुछ खास नहीं है, सिवाय इसके कि तुम चारों के लिए धर्म बदलोगे, तुम दोनों किसी धर्म को नहीं मानते, और तुम्हें यह पता है, वगैरह। और मैं भी इस बात पर यकीन करती थी! अब पति को अपने धर्म में जो खास हक़ मिला हुआ है, उसका इस्तेमाल करके वह मेरे सामने तलाक़ की भाषा ले आया है। मुझे धोखा महसूस हुआ। ऐसा लगता है कि दुश्मन को धोखे से पंजायत ले जाकर उसे टॉर्चर किया जाए।

Machine Translated by Google

उस रात वह देर से घर आया। डेढ़ साल का नज़ीर टेंट में गहरी नींद में सो रहा था। मैंने आमिर से बात नहीं की। वह भी बिना कुछ बोले चुपचाप सो गया। उसने मेरे शरीर को छूने जैसा प्यार भी नहीं दिखाया। वह माघा के पास जाकर बिस्तर पर सो गया, और जैसे ही माया, जो हमारे बगल में लेटी थी, दो हाथ दूर सो रही थी, उसने फिर से पंखा उठा दिया। मैंने सोचा, एक बार उसकी बात सुन लूं, "तलाक जैसा ख्याल तुम्हारे जैसे पढ़े-लिखे और मॉडर्न इंसान को शोभा नहीं देता।" लेकिन मैं बोलने को तैयार नहीं था। घमंड आड़े आ रहा था।

इसके बाद, हम एक ही बिस्तर पर इतनी दूरी पर सोते हुए एक-दूसरे की फुसफुसाहट सुनते और बात करना बंद कर देते। लेकिन इन मां-बेटियों को कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दिन, मैंने यह बात छेड़ी, "आमिर! जो मन में है, कहो।"

उसने कुछ कहा नहीं।

“क्या चुप रहकर शर्मिंदा होने से बेहतर नहीं है कि खुलकर बात की जाए?”

“ऐसी मुश्किल हालत में साथ रहने से तो बेहतर है कि अलग-अलग शांति से रहा जाए, है ना? पहले तलाक की घोषणा हो चुकी है। दो और शादियां हो चुकी हैं। लगता है कि इस दौरान वे दोनों साथ नहीं आए। उनकी आपस में बनती भी नहीं है, इसलिए मैं इस बिस्तर पर सो रहा हूं।”

मैं रोना चाहता था। लेकिन मैं रोकर अपनी कमज़ोरी नहीं दिखाना चाहता था। मैं ऐसे ही उठ गया। मैं बाथरूम गया, दरवाज़ा बंद किया और रोया। मैंने पानी उबलने के लिए रख दिया। वह दो बार उबल गया, फिर बस उबल गया। फिर नहीं उबला। मैंने दो-तीन बार अपनी इच्छा को बाहर आने दिया। उसके बाद, मैंने रोने का फैसला नहीं किया, अपना चेहरा धोया, बाथरूम से बाहर आया और फिर से सो गया।

दो बार तलाक का ऐलान होने का इंतज़ार करते हुए, मैंने सोचा कि क्यों न खुद को छोड़ दिया जाए। मैं एक छोटा सा फ्लैट खरीद लूंगी और अकेली रहूंगी। इससे मैं किराए, डिपॉजिट और रहने के खर्च के लिए काफी पैसे कमा पाऊंगी। लेकिन नज़ीर? शरिया के हिसाब से बच्चे पर किसका हक होगा? पहले, मां का! लेकिन चूंकि मैं काम के लिए लगातार घर से बाहर रहती थी, इसलिए वह याया के दादा-दादी के करीब हो गया। फिर भी, मैं उसके लिए ज़िम्मेदार हूं। मुझे पहले याया का ख्याल रखना है! पहले, मुझे उसके अफेयर्स के बारे में पता लगाना चाहिए था। मेरा दिमाग अलर्ट हो गया। आमिर सो रहा था। मैं धीरे से उठी। मैं नज़ीर के पास गई जो बिस्तर पर सो रहा था। मैंने याया के माथे पर अपने होंठ रख दिए। अगर याया की देखभाल के लिए कोई औरत रख ली जाए, तो सब ठीक हो जाएगा।

Machine Translated by Google

तलाक के लिए मन बनाने के बाद, मैंने सोचा, मुझे प्रोफेसर शाना से मिलना चाहिए और उनसे बात करनी चाहिए कि मैं माया पर क्या थोपने की कोशिश कर रहा हूँ। अगर वह मुझे कुछ सलाह दें और कुछ उपाय बताएं, तो इससे मुझे फैसला लेने में मदद मिलेगी। जब पूया अभी भी इंस्टीट्यूट में थी, आमिर और मुझे एक-दूसरे से प्यार हो गया था। अंग्रेजी शब्द 'फॉलिंग इन लव' कितना मतलब वाला है! उस समय मुझे बहुत गहरा महसूस हुआ। प्यार में पड़ते समय, मैं अतीत या भविष्य, अच्छे या बुरे के बारे में नहीं सोचता। घटनाएँ इतनी तेज़ी से हुईं कि यह बताना भी नामुमकिन था कि मुझे किससे और कैसे प्यार हुआ। पूया को लगा कि मुझे आया से 'फॉल इन लव' करना चाहिए था। जब दोनों माता-पिता ने एतराज़ किया, तो प्रोफेसर शशि ने पहल की और हमें मिलवाया! हमारे चाचा शेषाशी के बेटे। वह पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए और वापस आने पर एक गोरी लड़की को अपनी पत्नी के रूप में लाए। इस घटना ने वापीथा के बुद्धिजीवियों के हलकों में हलचल मचा दी। यानी, कोई भी पहली बार गोरी लड़की को अपनी पत्नी के रूप में नहीं लाया था। लेकिन उन्होंने किसी को निराश नहीं किया। इंटर-कास्ट लवर्स सलाह लेने के लिए उनके पास आने लगे। उन्होंने भी उनका अभिवादन किया। इसमें भी मैं सबसे पहले था।

जब मैं पहली बार उनसे मिलने उनके कमरे में गया, तो उन्होंने कहा, “लामी! तुम कितनी लंबी हो गई हो! तुम कितनी बड़ी और कितनी सुंदर लग रही हो। नरसापुर के डायरेक्टर, और बगलू की शहरी शान! वाह! क्या कॉम्बिनेशन है तुम्हारा।” वह पास आए और मुझे नमस्ते किया। मुझे ऐसे नमस्ते की आदत थी क्योंकि मैंने पहले सिनेमा और एमेच्योर थिएटर में काम किया था। फिर भी, मुझे एहसास हुआ कि ये नमस्ते भी माया के शरीर के नमस्ते जितने ही थे।

बिना सोचे समझे मैंने कहा, "थैंक यू, अंकल।"

उन्होंने कहा, “जब तक हम इस चाचा-बेटी के रिश्ते से बाहर नहीं निकलते, हम चाचाओं के इस समाज का हिस्सा बने रहेंगे। अगर आपको हिचकिचाहट हो रही है, तो नारायण बनो, शाय बनो, प्रोफेसर बनो।”

"तो फिर मैं प्रोफेसर बनूंगा।"

“अच्छा हुआ! बोलो। गाँव से क्या खबर है? मुझे गाँव में भेस बदलने की मनाही है, यह तुम भी जानते हो।” “मैं भी तुम्हारे पीछे हूँ।”

"हाँ? अरे! वो किस्मतवाला कौन है? मेरी गलती थी। मैं जल्दी में था! ऐसा खुशबूदार फूल तो हमारे ही गाँव में खिलता है, वरना मैं किसी अंग्रेज़ लड़की से शादी क्यों करता?"

Machine Translated by Google

"क्या तुम ऐसा करने जाते? वैसे भी! शादियां स्वर्ग में बनती हैं, उन्हें बर्दाश्त नहीं किया जाता, अगर यह सच है!" यह कहते हुए उसके चेहरे पर मुस्कान और आँखों में उम्मीद थी।

मैंने अपनी कहानी सुनाई। मैं आपको बता रहा हूँ, मैं वही हूँ, कि उन्होंने मेरी बात इतनी एकता से सुनी। इसके बाद, उन्होंने जिज्ञासा से बात की, मुझे वह सच बताया जो उन्होंने अतीत, वर्तमान और भविष्य को देखकर खोजा था। मैं पिछले कुछ सालों से उनके भाषण और स्पीच सुन रहा हूँ। वह माया से दस साल बड़े हैं। जैसा कि मैंने कहा, उनमें सहज अभिनय और एक्टिंग का ऐसा कॉम्बिनेशन है जिसका कोई दूसरा एक्टर मुकाबला नहीं कर सकता। चेहरे पर मुस्कान के साथ उन्होंने कहा, "लामी, भविष्य के रास्ते पर चलते समय हर कदम ज़रूरी होता है। तुमने एक कदम उठाया है। अब इसे पीछे मत हटाओ। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मेरा परिवार मेरे साथ है। अंतर-जातीय और अंतर-धार्मिक संबंध ज़्यादा इतिहास में एक-एक कदम ज़रूरी हैं।" फिर वह आगे झुके और मेरा हाथ पकड़कर मुझे बैठने को कहा।

उन्होंने आमिर को बुलाया और उससे बात की। "आज के सोशल हालात की वजह से ही वह लड़की बन रही है। मैं उसके खिलाफ कोई एक्शन नहीं लूंगा। हम दोनों मिलकर फिल्म इंडस्ट्री में अपना करियर बनाना चाहते हैं। अगर हम ट्रेडिशनल लोगों के साथ बैठेंगे तो बात नहीं बनेगी, समझे न?" मैं यही कहता था। प्रोफेसर ने मुझे अकेले में बुलाया और कहा, "शांति का आइडिया कोई काम नहीं है। अक्सर, आपको खुद को एक ट्रेडिशन का भेष बनाकर अंदर आना पड़ता है। तभी ट्रेडिशन को अंदर से खत्म किया जा सकता है। आज, समाज में ट्रेडिशन को अंदर से खत्म करने की असली ज़रूरत है। क्योंकि यह मैजोरिटी कम्युनिटी है। इसी तरह, लड़की कम्युनिटी में भी ट्रेडिशन को तोड़ना होगा। अगर तुम जैसी लड़की इसमें शामिल हो जाती है, तो तुम उस पेड़ को खत्म कर पाओगी जिसे हवा ने बचाया है। शांति हर जगह फैलनी चाहिए।"

मैंने बगलुम में एमेच्योर थिएटर मूवमेंट के बारे में शांति और आंदोलन जैसे शब्द सुने थे। पूजा फाउंडेशन में पढ़ाई के दौरान मेरे मन में कई विचार आते थे, जैसे 'आज के सामाजिक हालात में हमारे योगदान की यही लिमिट है। चलो मान लेते हैं। यह कोई पिछले जन्म का कॉन्सेप्ट नहीं हो सकता...'। अब, प्रोफेसर वपन मुझे बदलने के लिए उन्हीं विचारों का इस्तेमाल कर रहे थे।

"और हेबघ लामी, चाहे और कोई भी गलती हो, इलम में शैविज़्म है। यह एक ऐसी शिक्षा है जिसे मेरे करीबी लोगों को आपस में शेयर करना चाहिए। अगर धार्मिक लेवल पर शैविज़्म में शांति होनी है, तो यह इलम के लेवल पर होनी चाहिए। पुराने ज़माने में यह सबसे पहले नहीं था," उसने कहा। शॉर्ट में, मुझे एक ऐसे पति ने पाला-पोसा जो ऑफिसर्स के लिए मुझे धर्म के लिए समझते थे। इतना ही नहीं, बल्कि हमारी शादी भी

Machine Translated by Google

उन्होंने राजधानी में अपनी बनाई 'रिवोल्यूशनरी सोसाइटी' से एक सोशल मूवमेंट शुरू किया। उन्होंने स्टेज के सामने जमा दर्शकों के सामने नए शादीशुदा जोड़ों को बिठाया, उन्हें माला पहनाई और हैरान होकर भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने न सिर्फ़ सोशल बॉन्ड के आदर्शों को पहनाकर हमारी बड़ाई की, बल्कि यह भी कहा कि हर किसी को अपने आदर्शों को सामने रखना चाहिए।

इस काम की तस्वीरें लगभग सभी पब्लिकेशन में खास तौर पर दिखाई गईं। दो मॉडर्निस्ट पब्लिकेशन में दो आर्टिकल भी छपे, जिनमें बताया गया कि फोटोग्राफी और कला समाज को कैसे गाइड कर सकती हैं।

मैं हाल ही में प्रोफेसर से भी मिला था। उनके घर का फ़ोन नंबर बदल गया था। अगर मैं उन्हें ऑफिस में फ़ोन करता, तो कोई फ़ोन नहीं उठाता। बहुत ढूंढने के बाद, मुझे उनके घर का फ़ोन नंबर मिला, और मुझे पता चला कि वे मीनार देखने कोलकाता गए हैं। वे रविवार शाम को लौटने वाले थे। वे अगले शनिवार को पेकिंग जा रहे थे, और मैं उनसे सोमवार से शुक्रवार तक ऑफिस में मिल सकता था। दिन के इस समय उनसे मिलना मुश्किल था। वे लोगों से घिरे हुए थे, यह बात हेम को भी पता थी। वे फिर भी चले गए।

मैं हैरान था, उसके आस-पास बहुत भीड़ थी। पाँच-छह बूढ़ी औरतें और दो बच्चे थे। मुझे देखते ही प्रोफेसर के चेहरे पर मुस्कान आ गई... "रिज्या! तुम्हें पता है? बदलाव! मौज-मस्ती करने वाला!" उसने मुझे भीड़ से मिलवाया। लड़कियाँ आईं और मुझे देखने लगीं। प्रोफेसर ने खुद लड़के से पूछा, "तो? वह हीरोइन जैसी बनेगी, है ना?" फिर उसने मुझसे कहा, "लामी, तुम यहाँ किसी ज़रूरी काम से आई हो। तुम, शंकर, शाम को चार बजे आना। मैं सबको बाहर निकाल दूँगा और तुम्हारे लिए समय निकालूँगा। तब तक, लाइब्रेरी में बैठकर कुछ पढ़ो। तुम्हें पाँच घंटे इंतज़ार करना होगा।"

दसु रा उपाय नहता.

शाम के चार बज रहे थे। "चलो, यहाँ बहुत सारे लोग हैं। चलो वहाँ चलते हैं।"

मुझे भी ऐसा ही लगा। यह जानते हुए कि अगर मैं वहाँ गया, तो हेज़लगिंस इधर-उधर हाथ-पैर मारेंगे, मैंने सोचा, क्या होगा? जब मैं थिएटर-सिनेमा इंडस्ट्री में रहना चाहता हूँ तो मैं इतना आराम से कैसे रह सकता हूँ? मैं उनके बाईं ओर बैठ गया।

कार पार्क के बाहर खड़ी औरत ने कहा, “क्या हम बड़े बरगद के पेड़ के पास चलें? इस समय वहाँ कोई नहीं है।” फिर, मेरी सहमति मानकर उसने कहा, “बोलो।”

Machine Translated by Google

"आप कैसी हैं?" उन्होंने अपना बायां हाथ माया उजा के माथे पर रखा।

"मुझे नहीं पता कि कहां से शुरू करूं। मैंने समाज में मुस्लिम होने की परंपरा के खिलाफ लड़ाई शुरू की। लेकिन मुझे इस परंपरा का हिस्सा बने बिना इस धर्म में रहना है।"

"हाँ? लेकिन तुम अंदर क्यों आए? अगर तुमने और आमिर ने अपने धर्म से बाहर शादी की होती, तो क्या तुम मॉडर्न इंडिया में मॉडर्न कपल नहीं होते?"

मैं हैरान रह गया। चार साल पहले, मैं परंपरा का पालन करना भूल गया था। यह देखकर मैं हैरान रह गया। "क्या आप मज़ाक कर रहे हैं, सर? आपने मुझे भी ऐसी सलाह दी थी और मुझे अपना धर्म बदलने के लिए उकसाया था?"

"ओह, हाँ! ओह, मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है! क्या हुआ था? मुझे और बताओ!"

मैं तारों के साथ सब कुछ खत्म कर चुका था और इस बड़े बरगद के पेड़ के पास पहुँच गया था। मैंने कार रोकी, बाहर निकला और पेड़ के सामने पत्थर की बेंच पर चला गया। उसने पेड़ को देखा, उसकी आँखों में एक ही समय में भविष्य, अतीत और वर्तमान था, और कहा, "यह बरगद का पेड़ एक पूरी छवि बन गया है, है ना? मूल पेड़ फैल गया। शाखाएँ चारों ओर फैल गईं। इनमें से कुछ ज़मीन में उग आईं। उन्होंने जड़ें पकड़ लीं। उनकी शाखाएँ पेड़ बन गईं। वे पेड़ बन गए.. अब सैकड़ों जड़ों वाला यह विशाल पेड़ एक पेड़ बन गया है। है ना! अब आप ही बताइए, इस पेड़ की जड़ क्या है? मन जड़ की जड़ बन गया है। ज़मीन में जड़ें जमाए हुए हर शाखा को जड़ की जड़ माना जाता है। क्या हमारा धर्म भी ऐसा ही नहीं है?"

हमेशा की तरह, जब मैं उनकी बातें सुनता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं कुछ नया सुन रहा हूँ। गलतियाँ करने की आदत मुझमें है, और इस बार मैं यह भी समझ गया। लेकिन, जिन शब्दों से गलतियाँ होती हैं, उनकी कोई जड़ नहीं होती, यह बात इस बार मैं नहीं समझ पाया। इस वजह से, मैंने भी उनकी बात मानी। उन्होंने भी माया खान को अपना दाहिना हाथ दिया और अपने पास खींच लिया, उनका शरीर ही नहीं, बल्कि उनका मन भी एक हो गया, विनम्रता का एक रूप दिखा रहा था! बिना किसी सहमति या विरोध के, मैं इस काई वाले पेड़ को सम्मान से देखता रहा। फिर मैंने कहा, "सर, आपने यह भी कहा था कि इलम ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो समाजवाद की बुनियाद पर बना है! आप गुस्से में हैं, और इसी एक वजह से, आप अपनी पत्नी के खिलाफ तलाक का आदेश दे रहे हैं, जिसने आपके धर्म के लिए अपना घर, गाँव, पिता, धर्म – सब कुछ छोड़ दिया! मैं इसके बारे में क्या करूँ?"

Machine Translated by Google

प्रोफेसर अंतमुख घर के दरवाज़े पर आए और बोले, "मैं किसी भी समय आ जाऊँगा। मुझे उनका फ़ोन नंबर दे दो।"

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि इसके बाद क्या हुआ, किसने उसे कॉल किया, वह किससे मिलने गया। हम दोनों एक-दूसरे को बता रहे थे कि हम किससे मिले, क्या बात की, किसने हमें कॉल किया। इस 'तलाक' के हटने के बाद हम दोनों के बीच बातचीत पूरी तरह से बंद हो गई। मुझे इस बारे में कुछ समझ नहीं आ रहा।

लेकिन जब मैं प्रोफेसर से मिला, तो उन्होंने पाँच दिन बाद मुझसे कहा, “मैंने बहुत सोचा। बूढ़े लोगों को बदलना नामुमकिन है। लेकिन उन्हें हर दिन तकलीफ़ देना ठीक नहीं है। ट्यूडियो यहाँ से बहुत दूर है, और मुझे समय-समय पर वहाँ जाना पड़ता है। मुझे ट्यूडियो के पास एक भाई का घर दिख रहा है, मैं भी वहाँ रहता हूँ, मैं भी यहाँ रहता हूँ, चलो साथ चलते हैं। रविवार को यहाँ आएँ। यहाँ आएँ, तुम एक जवान औरत की तरह हो जाओगी। चाहे कुछ भी हो जाए, वे यहाँ नहीं आएँगे।”

प्रोफेसर की बात का यह पूरा मतलब, इससे मैं घबरा गया। लेकिन उन्होंने मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया। मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं। मेरा दिमाग खाली हो गया, बस! ऐसा लगा जैसे मुझे मैसेज मिल रहा है। असल में: यह इतना बुरा नहीं है। उन्होंने दबाव में आकर तलाक की बात की होगी, मैंने सोचा। परंपरा का विचार एक दिन में ही खत्म हो गया।

प्रोफेसर पेकांगन ने वापस कॉल किया और मीटिंग का टाइम फिक्स किया। वह दूसरे दिन शाम को पांच बजे गए। सारे डिपार्टमेंट बंद थे। वह अपने कमरे में अकेले थे। वह मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मैं थोड़ा कन्फ्यूज्ड था। लेकिन मुझे अपनी डेस्टिनेशन पता थी। माया, जो दिन-रात सिनेमा में काम करती है, पूषा से अकेले मिलने के खतरों से डर रही थी, लेकिन वह डरी नहीं।

उन्होंने सबसे पहले ऑडियंस से अपने पेकिंग वाले घर के बारे में बात की। चीनी सोशलिज़्म रूसी सोशलिज़्म से ज़्यादा मतलब वाला है, किसानों में सबसे पहले यही बना, माओ का विज़न लेनिन-टालिन से ज़्यादा गहरा और बड़ा है, वगैरह। वे इस मामले पर बहुत ध्यान से बात करते रहे। तब तक मैं कुछ समय के लिए उनका दोस्त बन गया था और वे सच में एक प्रोफ़ेसर बन गए थे। सिर्फ़ माया के लिए एक घंटे तक दिलचस्प स्पीच देने के बाद, मैंने उन्हें माया के टॉपिक पर घुमाया।

“चलो, हम किसी दूसरे घर में रहते हैं,” आमिर ने कहा। “अब मैं एक घर ढूंढ रहा हूँ। मैंने अपने परिवार को इसके बारे में बता दिया है। मुझे पता है कि यह किसी और के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए है।”

Machine Translated by Google

"नहीं! तुमने उसे क्या बताया? उसने क्या कहा? मैं तुमसे यह सुनना चाहता हूँ, मैं तुम्हारे पास आया हूँ।"

"ओह! सही कहा! मैंने आमिर को फ़ोन करके यहाँ बुलाया। तुम इसी बेंच पर बैठे थे। यह अच्छा लड़का है! वह चला गया, उसके बाद अपने माता-पिता के साथ रहना भी एक अच्छाई है। अपनी ज़िम्मेदारी पर अपनी ज़िंदगी बनाना भी मॉडर्निटी है। चाहे तुम कैपिटलिस्ट हो या सोशलिस्ट, अगर तुमने किसी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी की होती, वह भी थिएटर और सिनेमा से जुड़ी, तो तुम्हारे माता-पिता से तुम्हारी अनबन हो जाती। तुम क्या करते? अगर तुमने हमारी बेटी को तलाक़ दे दिया होता, तो यह बात हर जगह फैल जाती। तुम एक आर्टिस्ट हो, एक डायरेक्टर हो, एक पब्लिक फ़िगर हो, हर प्राइवेट काम का एक पब्लिक पहलू होता है। इसके भी नतीजे होते हैं। तुमने एक लड़की को बहला-फुसलाकर उससे शादी की और फिर उसे गटर में फेंक दिया, अगर लोगों को यह खबर . सावजिनक पता चलती, तो वे सिनेमाघरों का बॉयकॉट कर देते। कोई तुम्हें मौका नहीं देगा। मॉडर्न ग्रुप तुम्हारे ख़िलाफ़ प्रोटेस्ट मीटिंग करेंगे, तुम्हें पिकेट करेंगे, और सिट-इन करेंगे। अख़बारों का यही होगा, तुम क्या करोगे? अगर तुम जैसी लड़की ऐसा बर्ताव करने लगे, तो क्या यह काम नहीं होगा? अंतर-धार्मिक पंथ? क्या यही आपकी सामाजिक चेतना है?... मैंने उससे ऐसे ही बात की। मैं यह भी देख सकता था कि वह गुस्सा हो रहा था। इसके बाद, अगर आपको उससे किसी भी तरह का दर्द महसूस हो, तो मुझे बताएं। मैं सब ठीक कर दूंगा!" वह हंसा।

"थानूसर! बहुत-बहुत धन्यवाद!" मैंने भी टेबल से हाथ मिलाया।

"सर...."

"सर, आप मुझे गुस्सा दिलाते हैं। आप हमारे गांव की बेटी हैं! माया भी उसी मां की बेटी है। मेरा आप पर खास हक है और आपका माया पर खास हक है। है ना?"

मैंने सुनने से मना कर दिया। उसने वही बात मुझसे दोहराई। "क्या तुम मेरा दिल देखना चाहते हो?"

"चलो चलें। हर गाय एक साथी होती है, क्या किसी ने मुझे बताया है? अरे हाँ! मैं एक काले आदमी से मिला। उसका नाम शिवा गौड़ा है। वह बातें कर रहा था, कह रहा था कि तुम्हारे भाई ने हाल ही में बहुत कम पब्लिक काम किया है। और तो और, उसने डाली को पूरी तरह छोड़ दिया है। वह कहता था कि वह घर पर बैठकर हर समय कुछ न कुछ पढ़ता रहता है!"

Machine Translated by Google

मैं अपनवी को समझना चाहता था। जो भी मैंने समझा, उसी से समझा। गोरी पत्नी को घर छोड़ना पड़ा। लेकिन माया के परिवार ने कुछ गलत नहीं किया था, इसलिए किसी ने उसे गांव से नहीं निकाला था। सिवाय पुश के। वे कभी-कभी गांव जाते थे। मैंने इस बारे में सोचा नहीं, लेकिन मुझे यह भी लगा कि अगर तुमने अपनवी के बारे में जो जानकारी मुझे बताई, तो तुम भी माया के करीब रहना चाहोगे, और तुम यह बर्दाश्त नहीं कर पाओगे।

बाहर सूरज डूब रहा था और अंधेरा फैल रहा था। मैंने अपनी कलाई पर एक अंगूठी देखी। उसने कहा, "क्या तुम शिवाजीनगर जाना चाहती हो? मैं जयनगर के लिए निकलूंगा। तुम्हें वहां से बस मिल जाएगी।" वह खड़ा हो गया। मैं भी खड़ी हो गई। वह माया के पास आया। हमेशा की तरह, वह उसे गले लगाने के बारे में सोच रहा था, लेकिन माया आ गई। वही हुआ। उसके बाद, उसने माया के होंठों पर अपने होंठ रख दिए। मुझे इस बारे में कुछ महसूस नहीं हुआ क्योंकि मैंने फिल्म में एक लव सीन किया था और वह कर चुका था। उसने कहा, "लामी, मैं तुम्हारे लिए खास महसूस करता हूं। तुम्हारे साथ चाहे कुछ भी हो जाए, तुम माया के पास आओगी। मैं तुम्हारी मदद करना बंद नहीं करूंगा।" और एक बार फिर, उसने मेरे होंठों को खोजा।

"सर! मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूँ! चलिए! चलिए!" मैंने धीरे से खुद को छुड़ाया और बाहर चला गया। हम दोनों कार के पास आए। उसने कार

पार्क की। ऐसे एक्टिंग करते हुए जैसे कुछ हुआ ही न हो, उसने टॉपिक बदल दिया। "आपने अली कादेन में क्या पढ़ा? क्रिएटिव काम बढ़ गया है, आर्टिस्ट अपनी पढ़ाई छोड़ रहे हैं। डेवलपमेंट के नज़रिए से, यह बहुत खतरनाक कदम है!" वह एकेडमिक टॉपिक पर बात करने लगा। लेकिन मैंने भी मुश्किल के आगे हार नहीं मानी और कहा, "सिनेमा के लिए, सिर्फ़ पढ़ना काफ़ी नहीं है। मुझे लिटरेचर-म्यूज़िक-म्यूज़िक के बारे में भी पढ़ते रहना है..." वह चला गया।

उन्होंने आगे कहा, "हमें सामाजिक ज़िम्मेदारियों के बारे में भी गंभीरता से सोचना चाहिए। हम सभी इतिहास के लिए ज़िम्मेदार हैं...."

मुझे जयनगर से विजयनगर जाने वाली बस में सीट मिल गई। प्रोफेसर ने आमिर के मन में जो डर बैठाया था, मैं उस पर काबू पा सकती थी। लेकिन अगर ऐसा होता, तो क्या नतीजा यही होता? मैं समाज में उतनी ही मशहूर हूँ जितनी तुम्हारी। इसके अलावा, अगर एक-तलाक जैसा तलाक होता है, तो इसमें कोई शक नहीं कि जाति के हमदर्द मुझसे हमदर्दी दिखाएंगे। मैंने इस बारे में सोचा भी क्यों नहीं? मैंने सोचा, सोचने के बाद, प्रोफेसर की प्रैक्टिकल समझ माया से ज़्यादा मुश्किल है, मुझे करनी ही पड़ेगी। वह मुझसे अकेले में मिलना पसंद करते हैं, हमेशा मुझे मेरे पुराने नाम 'लामी' से बुलाते हैं, हमेशा 'मेरे गाँव की लड़की' कहकर अपनापन दिखाते हैं। वह आसानी से मेरे कंधे पर हाथ रखते हैं, गले मिलते हैं। आज तो उन्होंने मेरे होंठों पर किस भी कर लिया। वह भी बहुत आसानी से! कुछ

Machine Translated by Google

ऐसा लगता है कि कुछ खास नहीं हुआ है! इसके पीछे क्या मोटिवेशन हो सकता है? क्या मौका आने पर उसका फायदा उठाने का आइडिया है? यह तो क्लाइमेक्स जैसा लग रहा था।

फिर भी, इस आदमी से कोई झगड़ा नहीं हुआ। चाहे वो कैसा भी इंसान हो, ज़ुल्म करने के लेवल तक नहीं जाता। इससे उसे ध्यान से हैंडल करना आसान हो जाता है। क्या कहूँ, शायद उसे भी माया से सच में अपनापन महसूस होता है। हो सकता है उसने उस उम्र में किसी गोवा की लड़की के साथ तुरंत अट्रैक्शन की वजह से ऐसा किया हो। इस सोसाइटी में रहते हुए उसे अपनी जड़ें उखड़ती हुई महसूस हुई होंगी और उसे खालीपन भी महसूस हो रहा होगा। दोनों एक ही गाँव से थे, दोनों के पिता करीब थे, ये सब याद करके उसके दिल में एक मीठी सी फीलिंग आई होगी। मैंने ध्यान से काम लिया, और किसी तरह का गलत मैसेज नहीं दिया! उसके दिल में कैसी फीलिंग थी! जैसे ही मेरे दिल में ये दरियादिली आई, मुझे थोड़ी तसल्ली हुई।

दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ आई. आमिर ने दरवाज़ा खोला और बाहर आया, "तुम अंधेरे में अकेले क्यों बैठे हो?"

“कुछ नहीं। बस बैठकर पानी देख रहा था।”

“अंधेरे में?”

“मैं बस उठकर बैठना चाहता था। सो जाना चाहता था।”

वह पीछे मुड़ा। वह वहाँ भी नहीं हिला। फिर भी, जो आदमी हमेशा उसके साथ रहता था, वह वहाँ नहीं था। उसे लगा जैसे वह जाग गया हो! विचारों और यादों का सिलसिला टूट गया था। भले ही वह खिड़की से बाहर देखता रहा, लेकिन उसे सपनों, यादों, विचारों और भावनाओं के अलावा कुछ नहीं आया। उसे अपने शरीर में दर्द महसूस हुआ। उसने जम्हाई ली। वह उठा, अंदर गया और अपनी जगह पर सो गया।

हपशिन के एक हफ़्ते बाद भी, नरसंहार की मूर्ति, विल मंदिर, दूसरे मंदिर और मूर्तियाँ मेरे दिमाग से नहीं गईं। मुझे बचपन में देखे गए हायेबिदु और दूसरे मंदिर याद आए, उसके बाद संगीतलंगा मंदिर, जो भी एक मंदिर था जिसे मैंने बनवाया था। यही जानकारी विजयनगर के बारे में भी बताई गई है। अब, मैं जो शॉर्ट फ़िल्में बना रहा हूँ, उनमें इसका ज़िक्र करना चाहता हूँ, यह वही था।

Machine Translated by Google

2

एक दिन सुबह करीब 10 बजे प्रोफेसर का फोन आया। आमिर बाहर गया हुआ था।

“लामी! माया तुम्हें कुछ बुरी खबर सुनाने आई है! तुम्हारे दादाजी की मौत हो गई है, मैंने सोचा। पंद्रह दिन हो गए हैं। हमारे गांव का कुमारेश नाम का एक आदमी तुम्हें यह खबर सुनाने आया था। मैंने कल तुम्हें आठ-दस बार फोन किया। किसी ने उठाया नहीं।”

मेरा सिर बवंडर की तरह घूम रहा था। एक भी शब्द नहीं निकला।

“सुन रही हो, लामी?” फिर भी कोई शब्द नहीं निकला। अंदर धुआँ सा था। न हवा चल रही थी, न आग जल रही थी। धुएँ की आवाज़, जो सुनाई तो दे रही थी पर दिख नहीं रही थी, ऐसी लग रही थी जैसे कोई फुसफुसाहट हो!

“लामी, असली खबर बाहर आनी चाहिए थी और बताई जानी चाहिए थी। वरना, खबर शेयर करने से जो दुख होता है, वह भी कम हो सकता है। लेकिन अब मैं एक मीटिंग के लिए दलिला जा रहा हूँ। नहीं तो, मैं आ जाता। तुम्हारा स्वागत है। क्या हमें मिले हुए बीस साल नहीं हो गए हैं? भले ही हमारा रिश्ता है, लेकिन हीरो वाले धागे अभी भी मज़बूत हैं। मुझे एक अमेरिकन फ़ोन दो।”

वह घर पर नहीं था, वह यह भी नहीं कह सकता था। एक मिनट इंतज़ार करने के बाद, प्रोफ़ेसर ने रेज़र नीचे रख दिया। ऐसा लगा जैसे डोया पर बिजली गिर गई हो।

कुछ देर बाद मैं खुद ही रोने लगा। एक-एक करके मैं ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। एक के बाद एक, मैंने कहा, “अपाजी! मैं आपके लिए एक सुंदर लड़की नहीं बन सका। कोई हैरानी नहीं! शुक्रिया! मैं नशे में हूँ!”, मैंने अपने सिर को बगल की दीवार पर चार-पाँच बार मारा, खुद को बुरा-भला कहते हुए। मेरा सिर बवंडर की तरह घूम रहा था। बस ऐसे ही, मैं शरीर के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। मेरा माथा सूज गया था। मेरी स्किन फट रही थी। मेरे दिल में एक खालीपन का एहसास भर गया। मुझे कोई नहीं जानता, मैं एक अनाथ हूँ, मैं अपनी ही दुनिया में बस एक इंसान हूँ – अपाजी! अब वह भी चला गया! टूटी जड़ों वाली एक बेल। मुरझाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। जब मैं मर रहा था, तब भी उन्होंने मुझे अलविदा का मैसेज नहीं भेजा और न ही बुलाया। मेरी जड़ें अपने आप नहीं टूटीं। इन जड़ों ने मुझे पूरी तरह से नकार दिया। मैं और भी ज़्यादा रोने लगा। मैं अपनी पत्नी से लड़ने लगा।

दोपहर तक मेरा मन थोड़ा हल्का हो गया था। पंद्रह दिन हो गए थे, और सारा काम पूरा हो गया होगा। तभी मुझे पता चला। हाँ, सही है। मैं इसका हिस्सा नहीं बनना चाहता था!

Machine Translated by Google

मैं धर्म से बाहर हूँ और मैंने इस धर्म में अपना भेष बदल लिया है, और यह धर्म काफ़िरों के सारे काम भी करता है। मेरी बुराई तो होनी ही नहीं चाहिए, मुझे सज़ा भी नहीं मिलनी चाहिए! अगर गाँव वाले मुझे कुछ रस्में करने भी दें और मैं कुछ रस्में करूँ, तो भी वे मुझे अकेला नहीं छोड़ेंगे। इतना ही नहीं, नौकरानी को भी सज़ा मिलेगी। जो लोग इलम कबूल किए बिना मरेंगे, उन्हें लगातार जलने वाला नर्क मिलेगा! लेकिन हे कुमारेश, तुम मुझे अलविदा कहने यहाँ तक क्यों आए हो? क्या अपजय की मौत की खबर लाने आए हो? और कुछ कहना है?

शाम को खबर सुनकर आमिर भी दुखी हुआ। उसने उसे देखा भी नहीं था। हालाँकि उसके पिता को उसके प्यार की वजह से हमदर्दी थी, लेकिन उसके मन में उसके लिए कोई फीलिंग्स नहीं थीं। वह हमेशा उसका मन बदलने के लिए और पूरी ज़िंदगी उसकी बुराई करता रहा था। लेकिन उसने इस बारे में कभी कुछ नहीं कहा। “वे मुझे ढूँढ़ते हुए यहाँ तक आए हैं, तो ज़रूर कोई काम होगा। मैं सुबह गाँव जाऊँगा।”

"मैं भी आ रहा हूं।"

“नहीं!” उसने कहा। वह यह भी जानती थी कि अगर वह ऐसे लोगों के साथ गई तो अच्छा नहीं होगा।

“कुनिंगल के लिए कुछ बसें हैं। वहां से छह मील दूर है। आगे जाने के लिए ज़्यादा बसें नहीं हैं और वो भी बाईस साल पुरानी बात है। अब क्या हाल है, कौन जाने। मैं कार ले लूंगा। शाम को वापस आ जाऊंगा। नहीं तो एक-दो दिन स्कूटर इस्तेमाल करूंगा।”

वह बिना किसी अंदाज़े के कार चला रही थी कि गाँव में कौन है या रास्ते में उसे कौन मिलेगा। उसे एक बात पता थी। वह सीधे अपने घर जाना चाहती थी!

'मैं इस शहर में कई बार रुकी हूँ। मैं इसी रास्ते से मैंगलोर, चिकमंगलूर, धमथल और दूसरी जगहों पर जाती थी। मैंने ग्रुप के साथ कुंगाला के साथ दो-तीन बार कॉफी भी पी थी। उस समय मेरी ज़िंदगी पैसों की तंगी जैसी थी।' उस चाहत को उस अजेय कठोरता पर थोपकर वह थोड़ी शांत हो गई थी। अब भी, कुंगाला ने कार रोकी, कॉफी पी और आगे बढ़ गई।

गांव में घुसते ही मुझे थोड़ा बदलाव महसूस हुआ। गांव के बाहर एक हाई स्कूल जैसी बिल्डिंग दिखी। उस पर एक बोर्ड लिखा था, 'श्री लामी-नारा सिंह हाई स्कूल'। उसके बगल में एक आयुर्वेदिक हॉस्पिटल था। उसके सामने अमदवाई टी. पंढर्वेचांडौ स्ट्रीट थी। वहां वह

Machine Translated by Google

यह गांव के बाहर था। रायनसरल गांव में, सड़क के दाईं ओर, डेव चंदाऊ के नरसंहार के बाद गांव का नाम दलाना रखा गया था। लगभग तीस फीट ऊंची पहाड़ी पर। पहाड़ी की चोटी से, पूरा गांव और गांव के आगे, तालाब, खेत और दलदल सब दिखाई दे रहे थे। हमने पहाड़ी को घेर लिया, और हमारा घर पहाड़ी के नीचे था! घर के पीछे गायों का बाड़ा और सामने मंगलोरियन झोपड़ियों की छत।

दरवाज़ा बंद होता। "घर पर कौन है?" उसने चार-पांच बार दरवाज़ा खटखटाते हुए पूछा। और वह सच में बहुत खुश हुई। बाईस साल बाद भी, मैं फ़ोन करना नहीं भूली हूँ।

एक तेईस साल की औरत अंदर आई और दरवाज़ा खोला। उसने एक रोब पहना हुआ था, हाथ में एक ब्रेसलेट और माथे पर एक स्कार्फ़ पहना हुआ था।

"घर में कौन है?" उसने सोचा।

"हम ही हैं! आप कौन हैं?" मैंने सोचा।

मुझे कौन बता सकता है? यह एक गड़बड़ है। लेकिन मुझे आपको बताना ही होगा। आपको एक बार बताकर, मैं आज़ाद महसूस करती हूँ, कि यह मुश्किल स्थिति हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। मैंने उनसे कहा, "मैं नरसिंह गौड़ा की बेटी हूँ।"

"ओह!" उसका चेहरा कुछ देर तक वैसा ही रहा। फिर, होश में आकर उसने कहा, "बैठ जाओ! रुको! चटाई बिछाई जा रही है," और उसने किनारे की तरफ इशारा किया। हालांकि चटाई अभी भी वहीं थी, लेकिन वह खुश नहीं था, इसलिए उसने मुझे किनारे पर बिठा दिया। उसने मुझे अंदर भी नहीं बुलाया।

कार के चारों ओर पाँच-छह बच्चे जमा हो गए। उसने उनसे कहा, "बैठो मत! हम अपने दोस्तों को अलविदा कह रहे हैं। चलो कब्रिस्तान चलते हैं," और वह दरवाज़े पर खड़ी हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे, इसलिए वह बस देखती रही। ये लोग कौन हैं? वह सोचना चाहती थी, लेकिन जब आपको न तो अतीत पता हो और न ही भविष्य, तो यह सोचने लायक नहीं था। यह सेक्स के बारे में भी नहीं था, इसलिए वह चुप रही। फिर उसने सोचा, "इस घर में कौन है?"

"तेन्या की पत्नी।"

"मैं इस जगह जा रही हूँ। अपने दोस्तों को फ़ोन करो और आ जाओ।" यह कहकर, उसने कार वहीं छोड़ दी और अपने रास्ते पर चल पड़ी।

Machine Translated by Google

'इस रास्ते पर, पहाड़ी की चोटियों पर और पहाड़ी के नीचे करीब चालीस घर हैं। कुछ भी नहीं बदला है। दोनों तरफ गायों के खुर। घर पर दाशे का गेट। सामने के दरवाज़े पर हल्दी और केसर लगाया गया है। दरवाज़े पर लगाई गई पत्तों की माला सूख गई है। घर के सामने वाले आँगन में फ़र्श बिछा दिया गया है। खंभों पर, दरवाज़े के सामने, तुलसी के सामने नई रंगोली लगाई गई है।

दरवाज़ा खुला था. मैं दरवाज़े के पास गया और आवाज़ लगाई, "क्या शाइबुवा घर पर हैं?" यह बूढ़े आदमी की गलती है!

"कौन?" आवाज़ शाइबू की थी! वह पहले से ही बूढ़ा था और बाईस साल पहले अपने रिश्तेदारों को खो चुका था। फिर भी, मैंने चिल्लाकर कहा, "मैं नरसिंह गौड़ा की बेटी, लामी हूँ!"

"लामी!" वह भी उतनी ही आसानी से घर से बाहर आते हुए बोला, "तुम! आओ, आओ! तुम कहाँ से आयी हो?"

भले ही उसके बाल बॉब थे, लेकिन साड़ी पहनकर उसे ज़्यादा अच्छा लग रहा था। माथे पर कुमकुम उसे और भी अच्छा दिखा रहा था। वह घर भी नहीं आई थी। "तुम बस आ रहे हो। तुम भी ठीक हो? अम्मा कैसी हैं?" उसने कहा, दो कदम आगे बढ़कर और उसके पैर चूमते हुए उसे झुककर प्रणाम किया। वह उसकी तरफ गई। उसका सिर स्कार्फ़ से ढका हुआ था। उसकी ठुड्डी और गालों पर सफ़ेद दाढ़ी थी। माथे पर सफ़ेद घूंघट, भौंहों के बीच कुमकुम और एक सफ़ेद शॉल। उसने अपनी दाहिनी बगल के नीचे से एक शॉल निकालकर अपने कंधों पर डाल ली थी। उसकी नज़र धुंधली हो गई थी जैसे वह मरने वाला हो।

शाइबूबा चिल्लाए, "सुना? नार्सिसिस्ट की बेटी लामी आई है। आओ!" आवाज़ सुनकर अमा बाहर आई। उसने पैर क्रॉस किए। उसने कमर झुकाई। उसके गाल, हथेलियाँ और पैर, जो हल्दी से पीले थे, माथे पर फूलों की माला सजी हुई थी, और उसने फूलों की माला पहनी हुई थी। हाथों में चूड़ियाँ थीं। उसने दूर से उसे प्रणाम किया और पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

"बग्लुंग. कार चलाना."

"बैस. दोसेकरते."

"मैं कुनिंगल के होटल में खाना खाकर आया हूँ।"

"तुम होटल में क्यों खा रहे हो? तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। चलो, मैं तुम्हारे लिए कॉफ़ी लाती हूँ। तुम लंच यहीं करोगे!" हनात ने मुझे लकड़ी के स्टूल पर बैठने का इशारा किया।

Machine Translated by Google

मैं लकड़ी की बेंच पर पालथी मारकर बैठ गया। चलो अंदर चलते हैं।

“कोने पर जो राजकुमार है, वह कभी-कभी बगलू के पास जाता है। उसी से मैंने यह संदेश भेजा था। तुम्हारे गाँव के जमींदारों की शादी तो तय होनी चाहिए, है न? क्या तुम उसके घर गए थे?”

“हाँ। कार वहीं पार्क है। उस लेडी ने दरवाज़ा खोला। वह मुझे बैठने के लिए कह रही थी। उसने अपने पति को मैसेज भेजा था। मैंने भी सोचा, वहाँ बैठने के बजाय, मुझे यहाँ आकर आपका आशीर्वाद लेना चाहिए।”

“क्या हुआ? तुमने अपनी पहचान बनाए रखी, तुम्हें वो मिल गया, बस इतना ही काफी

है!” “क्या हुआ, अपाजना? तुम्हें किस तरह की बीमारी थी?”

“वह कैसे बीमार है! वह लगभग पचास साल का है। माया से चार साल छोटा होगा। यह देखते हुए, मुझे पहले जाना चाहिए था। मुझे क्या करना चाहिए! क्या हर किसी की उम्र उसके माथे पर नहीं लिखी होती? शाम को, उसके सीने में दर्द हुआ। वह सूरज देखकर जाग जाता था। वह सुबह नहीं उठा। वह पूरे दिन पढ़ता होगा, वह सुबह उठेगा, इसलिए वह हमेशा की तरह खेत में चला गया। जब वह नौ बजे घर लौटा, तो वह नहीं उठा। वह अपने कमरे के दरवाजे पर रुक गया था और उसे ठंड लग रही थी। उसका बेटा उसे बताने आया। मुझे क्या करना चाहिए!”

"क्या उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि वे मर जाएंगे?"

"नहीं - नहीं।"

“हम्म!” वह बोली। वह इसका मतलब समझ गई थी। लेकिन उसका इस बारे में बात करने का मन नहीं था, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। उसने कहा, “अगर तुम्हें पता होता, तो क्या तुम मुझे मैसेज भेजते?”

उन्होंने दूसरी पार्टियों को भी बताया। उसने आगे कहा, “हो सकता है कि आपको यह पता न हो!”

“मैं तुम्हें कैसे बताऊं कि इस व्यक्ति के दिमाग में क्या चल रहा है, बेबी?”

उसका चेहरा पीला पड़ गया था और ऐसा लग रहा था कि वह कुछ भी कहना नहीं चाहता था।

“आपने मुझे कुमारेश का संदेश क्यों भेजा?”

Machine Translated by Google

“यह आपकी विरासत है। आज, आपको आकर इस जायदाद के लिए जो भी इंतज़ाम करने हैं, वो कर लेना चाहिए।”

"उसने मुझे पूरी तरह से छोड़ दिया था। उसने मुझे मैसेज नहीं भेजा, भले ही उसे लगा कि मैं मरने के करीब हूँ, और यह एक अच्छा कारण था। नहीं तो, मैं उसकी विरासत को कैसे जी पाता? मैं इसे कैसे मान पाता?"

“अरे बेटा! तुम सोच रहे हो। मैं भी साफ़-साफ़ कहता हूँ। यह सारी प्रॉपर्टी विडाल की है। तीन सौ नारियल, दस आया के पेड़, पाँच कटहल के पेड़। यह सब बगीचे में है। बगीचे में तीन एकड़, खेत में आठ एकड़ और घर को छोड़कर। इस बारे में कुछ और तय करने का हक़ उसे नहीं था। अगर हक़ होता, तो वह क्या करता, यह वही जानता है! जब तुम गए थे, तो घर में नंगवा नाम की एक औरत रहती थी। याद है? चार साल बाद की बात है। फिर वह अपने बेटे के पास चली गई, तो वह चली गई। उसके बाद, वह इस बच्चे को ले आई और अपने घर में रख लिया। उसने इसे टेबल पर रख दिया। पति-पत्नी खेत के साथ-साथ घर का खाना बनाने और पानी देने का भी काम देखते हैं। उनके दो बच्चे भी हैं। जब वे लौटेंगे तो उनका क्या होगा? “तो, उसके लिए लगभग 1000 का नारियल का बगीचा, दो एकड़ का बाग और चार एकड़ का खेत अलग कर दिया गया है। गाँव के बाहर एक घर भी बन गया है। अब, हॉस्पिटल का एक डॉक्टर खुश है। कचपा एक ईमानदार आदमी है। उसकी पत्नी का नाम लामा है। तुम्हारा नाम! वह भी एक अच्छी औरत है। उसने तुम्हारे बच्चों का अच्छे से ख्याल रखा। तुम्हारा हक है। तुम जो चाहो कर सकते हो। कचपा और उसकी पत्नी बिना किराया दिए घर छोड़ देंगे।"

'आप वाहर के बारे में इतनी ज़ोरदार बातें करते हैं कि मेरे दिल में भी माया के लिए अकेलापन महसूस होता है! जब हम एक-दूसरे के इतने करीब हैं तो इससे ज़्यादा शर्म की क्या बात है!'

“मैं सम्पितिया से मिलने नहीं आया। यहाँ ज़रूर कुछ गड़बड़ है, हेमया मिलने भी नहीं आई। मैं इसलिए आया क्योंकि तुमने मुझे मैसेज भेजा था।”

“मुझे भी पता है। उसे जानना है, इसीलिए तो मैसेज भेजा है, है ना? तुम आए और गुस्सा हो गए। मैं क्या करूँ, कच्छपा कन्फ्यूज है। नारियल तैयार हैं, उन्हें निकालकर सुखाना है। यह काम किसके अंडर करूँ? वह माया के पास आकर पूछ रहा है। लेकिन नारियल निकालने की ज़रूरत नहीं है, खेती बंद हो गई है और कुछ छोटे-मोटे काम हैं जो हर दिन तय करने होते हैं। मुझे कौन बता सकता है? खर्च, प्रॉफिट-लॉस और बैलेंस के लिए कौन जिम्मेदार है? कच्छपा ईमानदार है, इसलिए यह सब होता है। नहीं तो, वह भी आज के कामों के आधार पर सारे एसेट्स बेच देता। अब पहले हमें अपने मरने वाले का डेथ सर्टिफिकेट दिखाओ और सब कुछ अपने नाम करवा लो।”

Machine Translated by Google

इसी समय, लगभग छियासठ साल का एक आदमी आया। उसने पैरों और ठुड्डी पर लाल रंग की सफ़ेद लुंगी पहनी हुई थी, छाती पर धारीदार पैटर्न वाली शर्ट, कंधों पर तौलिए जैसा सफ़ेद कपड़ा, बिखरे बाल, और पाँच-छह दिन की दाढ़ी और मूंछें थीं। वह एक शायरी था,
“देखो! मुर्गी आ गयी है।”

“ताई, तुम कहाँ से आई हो?” उसने अपने लिए एक जगह बना ली क्योंकि वह उसे कई दिनों से जानता था।

"यह साइपैक है, लैमी। जाओ और खाओ। शाई हनाल.ई

“मैं घर जा रही हूँ। मैं रात के खाने के समय तक वापस आ जाऊँगी—” उसने कहा और चली गयी।

जब वह घर पहुँचा, तो उसने घर के दूसरी तरफ़ वाले कमरे का ताला खोला और कहा, "यह कमरा देखो जहाँ मैं सोता था। मैं यहाँ पूरे दिन बैठकर पढ़ता था। ऐसा लगता था जैसे दरवाज़ा हमेशा बंद रहता था। कोई दरवाज़ा खोलकर शोर नहीं मचाता था।"

यह कमरा भी उसका था। यह करीब दो मंज़िला था। इस समय कमान यहाँ दो घंटे तक अंधेरे में घास पर सूत कातता रहता था। वह अंदर गया और देखा। अब इस कमरे के दोनों तरफ़ कई शेल्फ़ थे। हर शेल्फ़ सात फ़ीट ऊँची थी। साढ़े चार फ़ीट चौड़ी थी। स्लाइडिंग कांच के दरवाज़े। ऐसी तीन शेल्फ़। दीवार के पास बैठने की एक छोटी सी जगह। इस पर दीवार से टिकी हुई एक मेज़। सामने, सोने के लिए एक बिस्तर। इस पर एक कंबल बिछा हुआ था।

उसने पूरी दीवार पर नज़र डाली. गांधी की जो तस्वीर पहले थी, वह वहां नहीं थी. कमरे में कहीं भी चरखा नहीं था. अलमारियों के दरवाज़े खोले बिना उसने अंदर रखी किताबों पर नज़र डाली. पवित्र कुरान की एक हार्ड कॉपी, एक अंग्रेजी अनुवाद, पैगंबर मुहम्मद (PBUH) के चार अलग-अलग खंड, मार्गरी, सर विलियम, उयिर, मार्टिन लांस द्वारा. एक खंड. खादी, अकबरनामा, बादशाहनामा, तुगलकनामा, तुज़क-ए-बाबरी, ऐजाज़-ए-खुवी, मसीर-ए-आलमिगरी और मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप में उनकी जीत और सफलता के बारे में लिखे गए सभी खंड! उसने किनारे देखा, और प्रत्येक पुस्तक के पृष्ठ पर निशान थे जिन्हें उसने ध्यान से पढ़ा था. कुछ अंशों पर निशान लगाए गए थे, कई लाइनें खींची गई थीं. कुछ जगहों पर, ऐसा लगा कि उसने किताब में अपने नोट्स बनाए चार-पांच नोट्स के बाद उसकी नज़र इधर-उधर गई। उसकी इंग्लिश भी बहुत अच्छी थी। उसे याद था कि उसे इंग्लिश अच्छी आती है, लेकिन इस लेवल की इंग्लिश? इतनी अच्छी भाषा? उसने हाई स्कूल में ही स्कूल छोड़कर हवा में छलांग लगा ली थी। इसके बाद वह गांव के सुधारों में लग गया था। इसलिए

Machine Translated by Google

एक और अलमारी खोलकर देखा गया। उसमें शहर के इतिहास की किताबें थीं। वे पढ़ने लायक भी थीं और कभी-कभी उन पर निशान भी लगे थे। इनके अलावा, कुछ धार्मिक किताबें भी थीं। जर्मन, चीनी, अंग्रेजी, जापानी और भारतीय किताबें। एक अलमारी में, निचले हिस्से में, एक ऑक्सफ़ोर्ड और एक फ्रेंच डिक्शनरी, एक अंग्रेजी-चीनी डिक्शनरी, और तीन बड़ी विदेशी डिक्शनरी थीं जिन पर चुने हुए शब्द और मतलब लिखे थे।

वह हर किताब का टाइटल पढ़ रही थी। अलमारी का दरवाज़ा खुला, और अंदर से टार और गू की बदबू आ रही थी।

“डैम्बरा का मर्डर क्या है?” उसने पूछा। मैंने कमरे के दरबान से पूछा।

"तेज़ हवा में, शाइबु लोग कुंगालन का एक बड़ा बंडल ले आए और सैनिकों से कहा कि वे किताबों के सामने खड़े हों और उन्हें अपने पीछे रख दें।"

"क्या आप हर दिन इस बिस्तर पर सोना चाहते हैं?"

"हाँ। इसी वजह से उसकी जान चली गई।"

वह कुछ देर बेंच पर बैठी रही, उसे लग रहा था कि वह इस लायक नहीं है। एक बार उसका मन किया कि वह घर के अंदर जाए। लेकिन वह मुस्लिम जाति में आ गई थी! अरे यार, तब भी उसकी पत्नी को यह पसंद नहीं आएगा, उसने सोचा। वह घर के पीछे जाकर आंगन और गौशाला देख सकती थी। लेकिन उसने सोचा कि अगर उसने ऐसा किया, तो वह यह दिखाएगी कि वह घर में आने के लायक नहीं है, लेकिन उसने कुछ नहीं किया।

उस समय, घर के बरामदे में सात-आठ लोग बातें कर रहे थे, जो खिड़की से दिख रहा था। वह कमरे से बाहर निकली और अगले बरामदे में आ गई। उसके बगल में एक औरत ने पूछा, “क्या तुम वही हो, जो नरसंहार करने वाले बहिष्कृत व्यक्ति की बेटी हो?”

भले ही यह सीधा था, लेकिन इसमें कोई उलझन नहीं थी। इसमें आसानी थी। फिर भी, यह दिल को छू गया। उसे चोट लगी थी। वह हटा नहीं, लेकिन उसे गुस्सा आ रहा था। लेकिन उसे एहसास हुआ कि अगर उसने सात-आठ लोगों के सामने अपना गुस्सा दिखाया, तो वह खुद ही अपनी बेइज्जती करवाएगा। उसने बाद में सोचा, ऐसा और कौन कर सकता था? गांव की इस औरत में इतनी हिम्मत कहां से आई?

"हाँ, मैं नरसांगौड़ा की बेटी हूँ।" वह एक तरफ बेंच पर बैठ गई।

Machine Translated by Google

"सफेद माथे के साथ। तुम्हें गए हुए कितने दिन हो गए?" एक और हतारी ने सोचा।

उसने सब्र से यह समझने की कोशिश की। पति के ज़िंदा रहते कोई भी बिना पत्नी के रहने का सपना देखने की हिम्मत नहीं करेगा। पत्नी भी एक धार्मिक चीज़ है, एक ऐसी चीज़ जो नरक में जाती है। बेइज़्ज़ती करने वाला इंसान भी धरती पर धार्मिक इंसान है, इस दुनिया में कोई भी उसके बारे में सपने में भी नहीं सोचेगा, उसने सोचा, “तुमने यह कर दिया। यह बेकार है।”

लेकिन तभी पाशी के एक आदमी ने कहा, "हे भगवान, मुसलमान केसर कहाँ लगाते हैं? बिगतलान में केसर का क्या काम है?"

कोई हमारा मज़ाक नहीं उड़ा रहा है, फिर भी गांव में हमारी जगह हमारी बातों से पता चल रही है। पिछले बीस सालों में हम जिन भावनाओं के आदी हो गए थे, वे हमारे मन में फिर से उभर आईं।

'जब हमने घर छोड़ा तो आमिर के साथ रहने के लिए एक छोटा सा फ्लैट ढूंढना कितना मुश्किल था! किसी को भी अपने पड़ोस में दूसरी जाति का रहना पसंद नहीं है। अगर कोई दूसरे धर्म का आ जाए, तो कोई परेशान भी नहीं होगा। हमारा पड़ोस नॉन-वेजिटेरियन लोगों से भरा है, सबके साथ ऐसा ही है। नॉन-वेजिटेरियन लोग भी दूसरे धर्म के लोगों से दूरी बनाकर रखते थे। अगर हमें फ्लैट मिल भी जाता, तो कोई आकर हमसे बात नहीं करता था। उन्हें मेरा और आमिर का नाम भी पता था, जो फिल्मी दुनिया और अखबारों में चमक रहा था। लेकिन क्योंकि हम अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में शामिल होना चाहते थे और इतना नाम कमाना चाहते थे, इसलिए हमने अपने बच्चों को हमसे बात नहीं करने दी, यह सोचकर कि अगर हमारी बेटियां हमारी अपनी हो जाएंगी, तो वे हमारी अपनी हो जाएंगी। यह पच्चीस साल पहले की बात है। "परंपरावादी लोग महानगरों में मालेरमाये की तरह होते हैं! लेकिन गांव में ऐसा नहीं है।"

तभी एक पंद्रह साल का लड़का आया और बोला, "बगालुवाया बाना ने मुझे शाइबुवा के घर डिनर पर बुलाया है!"

वह यह सोचकर उठी कि उसे मुश्किल संगत से बचने का मौका मिल गया है।

शाया के घर में, किचन के बाहर आंगन में एक खंभे पर केले का एक पत्ता उग आया था। उसे इसमें कोई खास बेइज्जती महसूस नहीं हुई। कमठा परिवार के घर में ऐसे पत्ते बहुत कम मात्रा में रखे जाते थे। फिर भी, उसे उलटे पेड़ के नीचे ज़मीन पर पत्ते उगाने में झिझक महसूस हुई। खाते समय, वह इस बारे में सोचता रहा।

निकाला गया।

Machine Translated by Google

"मैंने वो सारी किताबें देखीं. तुमने उन्हें पढ़ना कब शुरू किया? उन्हें तो इंग्लिश भी अच्छी नहीं आती."

"तुम चले गए। तुम्हारे जाने का मुझे कितना दुख है, यह बताना मुश्किल है। दुख, दुख, गुस्सा वगैरह दिखाना उसके स्वभाव में नहीं है। बहुत ही शांत आदमी! 'ऐसा क्यों हुआ, शाइबू?' वह माया के सामने गुस्से में था। मैंने भी कहा, 'यह सब तुम्हारी गलती है! उसने अपने कर्मों की वजह से ऐसा किया, तुम अपने कर्मों की वजह से ऐसा महसूस कर रहे हो।' मैंने सुचलांते से कहा। 'तुम्हारे कर्म बिल्कुल भी मंज़ूर नहीं हैं!' वह सिर हिलाते हुए हँसा। इसका एक नतीजा यह हुआ कि पंचोशी में, जहाँ उसे इज़्ज़त मिलती थी, वहाँ लोग कहने लगे, 'उसकी बेटी एक मुस्लिम लड़के के साथ भाग गई और मुस्लिम बन गई।' उसे गाँवों में घूमने में भी दिलचस्पी नहीं रही। एक बार वह बगलू गया था। तुम्हें पता है कि गांधी पहले के काम से अय्यन मंडल जाते थे। वहाँ उनकी मुलाकात विकटर्मन नाम की एक लड़की से हुई। हमने उससे इधर-उधर की बातें कीं और पवित्र कुरान का टॉपिक निकल आया। उसने पूछा, 'क्या तुमने गांधी की बायोग्राफी पढ़ी है? पूरन?' उसने जवाब दिया, 'नहीं'। उसने पूछा, 'तुम यहाँ बैठकर बिना पढ़े या समझे राय क्यों बनाते हो?' उसने जवाब दिया, 'वे सब अरबी में हैं। मैं उन्हें कैसे पढ़ सकती हूँ?' उसने मुझे बताया कि सब कुछ इंग्लिश में ट्रांसलेट किया गया था। उसने मुझे बताया कि उसे इंग्लिश मुश्किल से आती थी, इसलिए उसने मुझे डिक्शनरी के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि अगर मुझे थोड़ी घबराहट भी हो, तो बाद में सब कुछ आसान हो जाएगा। इतना ही नहीं, वह मुझे बुक स्टोर ले गया, और किताबें और डिक्शनरी चुनने में भी मेरी मदद की। जब मैंने अयास को बताया, तो वह अक्सर लेखकों से मिलने और चर्चा करने के लिए बगलू जाता था। फिर मेरी माँ बुक स्टोर के मालिक को लिस्ट भेज देती थी। बगलू का बुक स्टोर का मालिक जहाँ से भी चाहता, अपनी पसंद की किताब ले आता और उसे भेज देता। उसके पास और कोई आइडिया नहीं था। एक बार मैंने मन ही मन सोचा, 'तुम बस पढ़ रहे हो! इतना पढ़े बिना क्या करोगे?' इस पर उसने कहा, 'मैं कदमा में एक सीरियस किताब लिखने वाला हूँ।' उन्होंने तुरंत आह भरकर अपनी आँखें बंद कर लीं! आपके कॉलेज से एक लेक्चरर तूफ़ान के इस समय आए थे। उन्होंने कहा, 'नर संघा गौड़ा को भारत पर मुस्लिम हमले के बाद के समय के इतिहास के बारे में उतना ही पता था जितना हमारी यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसरों को। मैं यह बात मरने वाले को श्रद्धांजलि देने की फ़ॉर्मैलिटी के तौर पर नहीं कह रहा हूँ।' वह बहुत इज़्ज़त से बोल रहे थे!

शचन की बातें सुनते हुए, उसे ज़ोर से लगा कि उसे भी वे सभी किताबें पढ़नी चाहिए जो अपाजी ने पढ़ी हैं। उसे सुवती जैसी इंग्लिश की प्रॉब्लम भी नहीं है। उसे यह भी लगा कि क्योंकि उसने हम्पी पर इस शॉर्ट फ़िल्म के लिए चार-पांच किताबें पढ़ी हैं, इसलिए यह सब्जेक्ट उसे पूरी तरह से अनजान नहीं लगेगा। अपाजी का कलेक्शन पढ़ने के लिए ज़रूरी रीडिंग स्किल्स

Machine Translated by Google

अगर आपको कोई समस्या है तो आप बगलू में किसी से भी मदद ले सकते हैं।

कुछ याद करके उसने सोचा, "अपाज चंदफान कहां है?"

“दफ़नाना? क्या? क्या आप दाह संस्कार करवाना चाहते हैं?” “हाँ। मैं

वहाँ जाकर अपनी श्रद्धांजलि देना चाहता हूँ।”

“नरसंहपनकुना ने मुझे कुछ नहीं बताया कि हमने एक-दूसरे को कैसे मारा था। एक बार माया से बात करते हुए उसने कहा था, ‘अंतिम संस्कार से पहले बॉडी को जला देना बेहतर है।’ तुम सच में लोगों में एक नेक इंसान हो। लेकिन इस मामले में, मैंने पहल की और तुम्हारे घर में एक चिता तैयार की और उसका अंतिम संस्कार किया। कचपन के बच्चे उठकर चले गए। मैं चला गया। तीसरे दिन, राख इकट्ठा की गई और एक गाड़ी में रखकर वहीं दफना दी गई, क्योंकि तुम्हारे सभी परिवार वालों की समाधि है। इनमें से कुछ राख को एक टोकरी में रखा गया, रस्सी से बांधा गया और दूसरे दिन तुम्हारे घर में रखा गया। ग्यारहवें दिन, मुझे संगम पर रस्म करनी थी। मुझे वह नहीं मिली। मुझे इसे किसी समय सिरिंगपन को भेज देना चाहिए था।”

वह खेत में अपाज्या समाधि को श्रद्धांजलि देना चाहते थे। उन्होंने यह बात कही। उन्होंने यह भी कहा, “जाओ और आओ! क्या तुम अभी भी ज़िंदा हो? अगर नहीं, तो कच्छपा को ले जाओ।”

“ठीक है!” उसने कहा और चली गई। लेकिन जब तक वह घर पहुँची, उसे लगा कि उसे अकेले जाना चाहिए। वहाँ ज़रूर कोई और होगा, जो विकलांग की मौत पर दुख मना रहा होगा।

“यह माया की तरफ़ से आ रहा है। क्या गेट पर ताला लगा है? चाबी, ताला। खाना कब मिलेगा?” वह हँसी।

"मैं भी आ रहा हूँ-" वह हँसा।

"नहीं, मैं अकेली जाऊंगी," उसने कहा और गेट की चाबी लेकर चली गई।

'माया का रास्ता भी वही है। गाँव के बाहर, पहले हमारा अपना खेत। पड़ोसी का मुडगेरेया रंगपा। उसके बाद माया की लाइन। टीले पर बना रास्ता दाहिनी ओर मुड़ गया। हर जगह। उसकी छतरी हवा में हरी चमक रही थी। आगे, गेट। यहाँ से, बाएँ या दाएँ? बहुत सोचने के बाद, मैंने तय किया, हाँ, ठीक है। गेट दिख रहा था। पहले यह दामादों का था। अब इस पर अच्छी तरह से इस्त्री लगी है।' उसने ताला निकाला।

Machine Translated by Google

वह अंदर चली गई।

'नारियल के पेड़ काफी ऊंचे हो गए थे। बीस साल हो गए थे! विहार के पास बाएं मुड़कर हम थोड़ा आगे गए तो हमें छह बेल का एक पेड़ दिखा। उसके नीचे पुरखों की कब्र थी। ऐसा लग रहा था कि उसके बगल में ताज़ी मिट्टी रखी गई है और उस पर पत्थर अभी-अभी रखा गया है।'

चप्पलों को दूर रखकर उसने उन्हें हाथों में पकड़ लिया, आँखें बंद कर लीं और मन ही मन मरने वाले की मौत के बारे में सोचने लगी। बाईस साल पहले की तस्वीर उसकी आँखों के सामने थी। वह थोड़ा और आगे जाकर बैठ गई और कुछ देर तक ज़मीन पर सिर टिकाए बैठी रही। फिर वह खड़ी हो गई। चारों तरफ उसके पुरखों की कब्रें थीं। उसकी माँ की जगह भी वहीं थी। मुझे उसके दादा नरसेगौड़ा, उसके पिता शांगेगौड़, उसके पिता वेकेटेगौड़, उसके पिता के माता-पिता का नाम नहीं पता। लेकिन सब लोग इसी जगह टहलते थे। थोड़ी देर उनके बीच खड़ी होकर उसने अपनी चप्पलें पहनीं। उसने माया को तालियाँ दीं, गेट बंद किया और घर की तरफ चल दी।

जब वह घर लौटी तो कचपा घर पर नहीं था। लामा ने सोचा, "क्या मैं चाय पी लूँ?" उसे चाय की बहुत ज़रूरत थी। इस पर, "हाँ!" उसने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा और कमरे में वापस चली गई, लकड़ी की बेंच पर बैठकर जहाँ वह पढ़ रही थी।

हफ़्ते के दूसरे दिन वह बगलू के लिए निकली। उसने कार गैराज में पार्क की और डोरबेल बजाई, तभी अमीना बेगम ने दरवाज़ा खोला। जब तक वह अंदर जाकर बैठी नहीं, उसे कुछ पता ही नहीं चला। 'अमीना हाउसकीपर है, पानी का ध्यान रखने वाली। वह घर में हो या न हो, घर चलता है।' लेकिन अब इस घर में कुछ भी नहीं है, जो कुछ भी है, वह वहीं है, उसे बेचैनी हो रही थी। इतनी दूर होने के बावजूद, नेलमंगल से बगलू तक बहुत ट्रैफिक रहता है! नर्स ने उसका मन किया कि वह सोफे पर गिर जाए। अगर हम सारा अपाज कलेक्शन एक ही बार में यहाँ ले आए, तो उसे कहाँ रखेंगे? अगर किताबें एक तरफ होंगी और हम दूसरी तरफ, तो पढ़ना ठीक नहीं रहेगा। उसके पास लिटरेचर और सिनेमा के बारे में लिखने-पढ़ने के लिए एक अलग कमरा था। लेकिन उसमें इतनी किताबें नहीं आ पातीं। नज़ीर का कमरा फ्लोर पर बड़ा है। अगर वह उसका इस्तेमाल करता तो? लेकिन फिर वह वहाँ सुई के लिए आता? शिवा की मौत के बाद? घर बनाने के बाद वहां एक खास कमरा बनवाना चाहिए था, लेकिन इस बार पैसे की तंगी थी।

'रास्ते में शाना से मिलकर मैं याचरण गया था। मुझे उसे बता देना चाहिए था कि मैं भी अपाजया के अथि-रेचिविसजन के दिन आऊंगा। मुझे कार से गांव जाना चाहिए था, थ्री-व्हीलर लेना चाहिए था, और खुद कार चलाकर सिरंगपन जाना चाहिए था' – उसके मन में एक ख्याल आया। एक ख्याल यह भी आया कि उसने कुछ समय के लिए धर्म छोड़ दिया था, वह फिर से इस धर्म-कामकांड में क्यों फंसे? लेकिन कल, जब वह गांव गया, तो उसने अपाजया की मूर्तियां देखीं,

Machine Translated by Google

समाधि की घटना और शशि आपा के बारे में गपशप के बाद, 'धर्म छोड़ने' की भावना कम हो गई थी।

उसने इसके लिए अमीनन को फ़ोन किया. ऑमलेट-सैंडविच खाने और चाय पीने के बाद, उसने उसे लंच का मेन्यू बताया और बाथरूम चली गई. वह बाहर आई और शायद पाँच मिनट हुए होंगे, लेकिन फ़ोन की घंटी बजी. आमिर! उसने फ़ोन उठाया. हाँ, वही था.

"हमें आये हुए 15 मिनट हो गये हैं।"

“मैं कल शाम को तुम्हारे आने का इंतज़ार कर रहा था। इतने सालों बाद तुम अकेले गाँव गए थे। मुझे डर था कि क्या हुआ, किसे पता चलेगा।” “कुछ नहीं हुआ। तुम भी बाकी सब लोगों

की तरह ही हो। तुम घर कब आ रहे हो? मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा।”

"मैंने टीचर से कहा, अगले तीन महीने हैं, चलो दसवीं से फिल्म की शूटिंग शुरू करते हैं," वे कहते हैं। आप अपनी काबिलियत और डिटेल्स के बिना शूटिंग कैसे कर सकते हैं?"

“ओह! बस हो गया!” उसे लगा जैसे वह पूल के किनारे बैठा हो। उसने फ़ोन ऐसे रख दिया जैसे वह शाम को घर आ रहा हो।

हापान का नाम सुनते ही वहाँ का नरसंहार मेरे दिमाग में आने लगा। फिर, 'मैं इतने गाँवों में गया हूँ, लेकिन नरसन्हा की दरगाह पर नहीं गया,' मुझे यह बात अच्छी तरह याद आ गई। तीस फुट ऊँची पहाड़ी पर नरसन्हा की दरगाह। पहले गाँव नहीं बना था। बाद में, दरगाह के आस-पास गाँव बस गया। अगर मैंने वह मूर्ति देखी होती, तो मुझे हापान में नरसन्हा की मूर्ति याद आ जाती। लेकिन दरगाह उतनी बड़ी नहीं है। इसे किसी नबाब, सुल्तान या बादशाह के खिलाफ नहीं बनवाया गया था। इस वजह से, दरगाह और मूर्ति की हालत खराब है, मुझे याद आया।

असल वजह समझे बिना, मुझे इस शॉर्ट फ़िल्म की स्क्रिप्ट लिखने में बुरा लग रहा था। शाम को, जैसे ही आमिर घर आया, मैंने उसे सब कुछ बताया जो हुआ था। बाद में, मैंने कहा, “मेरा कुछ भी लिखने का मन नहीं है। इस बारे में बहस या बहस मत करो। चलो किसी और से लिखवाते हैं।”

“आपके अलावा मैंने और किस पर काम किया है?”

“तो फिर चलो इस प्रस्ताव को छोड़ देते हैं।”

Machine Translated by Google

“एक बार तुम चले गए, तो हर्टेज के लोग तुम्हें दोबारा काम नहीं देंगे। जैसा वे कहते हैं, इसे ध्यान में रखते हुए।”

उसने दो दिन कोशिश की। फिर भी उसे बुरा लगा। उसने उनसे कहा, “मुझे गाँव जाना है। मुझे अपाज का राज्य जीतना है। मैं उसके बाद करूँगा। मैं कार ले जाऊँगा, इसमें तीन दिन लगेंगे। तब तक, आप अपनी कार चला सकते हैं।”

उपयोग।"

आमिर ने तुरंत कुछ नहीं कहा, लेकिन उनके चेहरे पर नाराज़गी साफ़ दिख रही थी।

"क्यों? तुमने कहा था कि तुम चिट्ठी नहीं लिख सकती, इसलिए तुम गुस्सा हो गई?" हनात ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"Sayawadi, ivachawadi, modern ahase . Ya dhamak sambosana sharan jates? Ichata-bham, sangamamayeyachanivasjan hesgalesnemat dakhavaychesin!"

'यह एक सोशियोपैथ है, इतने मॉडर्न सोचने वाले होने के बावजूद, तुमने एक लड़की के लिए छोटी दाढ़ी रखी है! क्या यह सिंबॉलिज़्म नहीं है?' यह बात तुरंत दिमाग में आई। लेकिन मैंने अपने मन को काबू में रखा। मेरे मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला।

"जैसे तुम्हारा और मेरा मेल है, वैसे मेरा किसी और का नहीं। इस बार मुझे और किसे देखना चाहिए?" उसने सोचा।

इस पर भी कुछ अन्य पार्टियां सहमत थीं।

वह बगलुमाया में तीन दिन रही। करने के लिए इतने सारे काम थे कि वह उनके बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी। लेकिन उसका कुछ भी करने का मन नहीं कर रहा था। वह सोचती रही, 'क्या होगा अगर हमारे गाँव पहुँचने से पहले ही उन्होंने किसी के अस्थि-कलश की राख फेंक दी? साथ ही, उसने इस कमरे में रखी सारी किताबें पढ़ ली होंगी,' ऐसी इच्छा उसके मन में ज़ोर मार रही थी।

चौथे दिन, वह उठी और अपने साथ एक हफ़्ते के कपड़े ले गई। उसने दो बेडशीट और एक रोब पहना, उन्हें बाँधा, और आमिर से छुट्टी लेकर चली गई! उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। पिछले तीन दिनों से, वह सदमे में था, और बीमार भी पड़ रहा था। अब उसे चिट्ठी लेकर इसकी भरपाई करनी थी। उसने कहा कि वह अब इस जाल में नहीं फँसना चाहती थी। वह उसे अलविदा कहने भी नहीं आया।

Machine Translated by Google

जब यह शिपमेंट आया, तो माँ ने दरवाज़े पर ताला लगा दिया था। सूटकेस और बिस्तर का एक बंडल कमरे में छोड़कर, उसने माँ से कहा कि वह आठ दिन रुकेगी और उसके पास लंच के लिए काफ़ी सामान है। वह घर की ओर चल पड़ी।

शाया ने उसे ड्रिंक देकर कहा, "तुम कब आए? मैं थोड़ी परेशान हो जाऊँगी। मैं दही डाल दूँगी। खा लो!"

मैंने मन ही मन सोचा, "क्या मैं रा-कलाश से किस्मत बना सकता हूँ? क्या यह ठीक है?"

"तुम इसी में फंस गए हो। क्या हुआ जो तुम चल नहीं पा रहे हो?"

"मैंने अपना धर्म नहीं बदला है, मैंने सोचा।" "बताओ?

धर्म के बारे में कोई शक नहीं है। आप धर्म छोड़ देते हैं, उससे छुटकारा नहीं मिलता।"

"हाँ!"

"तो फिर इसे मान ही लीजिए।"

"इसका अर्थ क्या है?"

"तुम रस्म करते समय डिटेल्स समझ जाओगे। अपने मन में यह समझना ज़रूरी है कि तुमने जो किया वह गलत था। साथ ही, तुम्हें अपने मन में यह तय करना चाहिए कि तुम यह गलती दोबारा नहीं करोगे। अगर तुम इसके लिए तैयार हो, तो मुझे बताओ। मैं रस्म करके तुम्हारी चिंताएं और डर दूर कर दूंगा।"

उन्हें उम्मीद नहीं थी कि यह मुश्किल इतनी आसानी से खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा, "मैं तैयार हूं।"

शनि लामिला को तीन दिन तक दूध और फल पर रखा गया। उसके बाद उनसे होम कराया गया। इस दौरान उन्हें लगातार यह एहसास होता रहा कि 'मैंने बीफ खाकर गलती की है, मैं नरक में चली गई हूं।' उसके बाद शनि को पीछे की सीट पर बिठाया गया और यह इंतज़ाम करने के बाद कि रा-कलश उनके बगल वाली सीट पर न गिरे, उन्होंने खुद गाड़ी चलाई और पहली गाड़ी में बैठकर नदी पर गईं। उन्होंने नदी में तीन पत्थर फेंके और उन्हें बचाते हुए अपना पाठ किया।

रा-विसजना कान अयार की यादें जो उन्होंने पीछे छोड़ी थीं, और भी गहरी हो गईं। हमारी आस्था का संबंध गोमांस से नहीं है, योय-अयोय से है

Machine Translated by Google

इसके अलावा, मेरा मन भी तरोताज़ा और मज़बूत महसूस कर रहा था, और मेरा मन भी थोड़ा शांत महसूस कर रहा था। मुझे ये सारी किताबें भी पढ़नी चाहिए जो उन्होंने रखी थीं और समझ ली थीं, यह बात और भी साफ़ हो गई। 'दुनिया के लिए कहानियाँ, डायलॉग वगैरह लिखने की ज़रूरत नहीं है। गाँव में जो खेत और घर मैंने रखा है, वही गुज़ारे के लिए काफ़ी है! नए अनुभव लिए बिना, अपनी जमा-पूंजी की कहानियाँ और डायलॉग पढ़े बिना, मेरी क्रिएटिविटी डल होती जा रही है। दो-तीन साल में मुझे काम से छुट्टी मिल जाएगी!'

'क्या मुझे ये सारी किताबें बगलू ले जानी चाहिए? नहीं। जो किताबें मैंने पढ़ी हैं, उन्हें इसी कमरे में, इसी घर में, इसी माहौल में पढ़ना चाहिए।' ऐसी किताब से इमोशनल लगाव और मज़बूत होने लगा। 'मैं ये किताबें यहीं जंगल में दो-तीन साल तक पढ़ूँगी,' मैंने तय किया। 'आमिर नाराज़ हो जाएगा। वह पहले से ही नाराज़ है क्योंकि मैंने इसके लिए एक शॉर्ट फ़िल्म लिखी है। घर में इसे देखने वाला कोई नहीं था, चाहे वह चाहे या न चाहे। मैं भी एक बार शहर से वहाँ गया था, जो काफ़ी था। नहीं तो, वहाँ गाड़ी होती। अगर उसे आना होता, तो वह आता।' मैंने मन बना लिया।

Machine Translated by Google

3

“िय अमीजान, सलाम आलेकूम. िबिमला रहमान उररहीम.

हम मिले। आजकल हम अपने जामगांव में साथ में समय बिता रहे हैं, मुझे लगता है जैसे मैं खो गया हूँ। मेरे लिए यह सपना देखना भी मुश्किल है कि तुम्हारे जैसा जामगांव भी होगा! तुमने मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया। मेरे पिता की तरफ से मेरे दादा हैं, लेकिन तुमने भी मुझे नहीं बताया। माया के सपने में कोई मूर्ति नहीं है। ऐसा लगता है कि लड़की एक विदेशी धर्म में कवि के गुस्से को आखिर तक नहीं भूल पाई है। इस दुनिया में बहुत सारे लोग हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे दादा-दादी मुझे इन लोगों के बारे में बताते थे, ू जो मूर्ति पूजा करते हैं और दूसरे धर्मों से नफ़रत करते हैं। जामगांव ही वह जगह होगी जिसने तुम्हें तुम्हारे पुराने धर्म की ओर खींचा। मेरी एक असली प्रॉब्लम है, जो यह है कि मैं तुमसे फ़ोन पर कॉन्टैक्ट नहीं कर सकता। अमेरिका में दो साल की पढ़ाई के बाद, तुम्हें लिखना बहुत मुश्किल लगता है। इसके अलावा, अरब देशों में आने-जाने वाले कुछ लोगों को अरेस्ट किया जा रहा है। इस वजह से, मैं आज़ादी से नहीं लिख सकता। इसलिए, फ़ोन करना आसान है। माया के लिए तुम्हारे प्यार के लिए, तुम्हें भी बगलम में होना चाहिए, वरना। मैं जब चाहूँ आपको कॉल कर सकता हूँ। मैं इसे लखनऊ के मिस्टर शबीब खान के साथ भी भेज रहा हूँ जो इसी काम के लिए इंडिया आ रहे हैं। मैंने उनसे रिक्वेस्ट की है कि वे लेटर पर इंडिया में स्टैम्प लगाकर उसे एक बॉक्स में डाल दें। इसलिए, मैं खुले मन से लिख रहा हूँ।

सभी अरब देशों में सऊदी अरब सबसे ज़्यादा धार्मिक देश है। पैगंबर (PBUH) ने उस देश पर कब्ज़ा किया, उसे बढ़ाया और इस्लाम की स्थापना की! यह हज की पवित्र जगह है। यहाँ हमारे धर्म की हर छोटी-बड़ी बात मानी जाती है। यह एक ऐसा देश है जिसने अपना इतिहास खो दिया है और एक ऐसा समाज है जिसने अपने धर्म को सीधे अमेरिका से हमसे दूर कर दिया है। अमेरिका में, पेट्रोकेमिकल्स के क्षेत्र में भी और टेक्सास में भी, मैंने मेडिसिन के क्षेत्र में MS किया। इस वजह से, मुझे एशिया में यहाँ पढ़ने वालों से दोगुनी सैलरी मिलती है। मुझे अपनी नौकरी में लड़की होने का फ़ायदा मिला। अच्छी-खासी सैलरी। कोई टैक्स नहीं। यहाँ के बाज़ार में जो दौलत दिखती है, वह किसी और बाज़ार में नहीं दिखती। चावल, बीन्स, फल, इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़े, घर का सामान, सोना-चांदी, हीरे, कीमती पत्थर या एक-दो! ये सभी चीज़ें जो दुनिया के बाज़ार में मिलती हैं, यहाँ बिकती हैं। यहाँ का बाज़ार अमेरिका से भी अमीर है। इसके अलावा, कमी भी कम है। टैक्स का बोझ भी कम है। यहां चोरी और धोखाधड़ी की कोई समस्या नहीं है जो दूसरे देशों में है जो खुद को आज़ाद कहते हैं।

Machine Translated by Google

इस बाज़ार में दुकानों पर खुलेआम चौबीस से छब्बीस कैरेट सोया टंगा है। अरे बाप रे! इन पर तो शीशे का कवर ही नहीं है! ज़हर, अस्त्र और मीब। जब नमाज़ के लिए घंटी बजती है, तो दुकानदार दरवाज़े बंद किए बिना ही पास की मस्जिद की तरफ़ भागते हैं। किसी दुकान में कभी चोरी नहीं होती। है ना कमाल? चोर को तुरंत ढूंढकर पकड़ लिया जाता है, उसका हाथ काट दिया जाता है। बच्चों का शोषण नहीं होता और कोई देरी नहीं होती। शरिया के हिसाब से। केस, वकील, देरी, अपील, शक का फ़ायदा जैसी बेवकूफ़ी के लिए कोई जगह नहीं है। मर्डर, रेप, भीख मांगना - जो भी हो। शुक्रवार की दोपहर की नमाज़ के समय मस्जिदों के बाहर खड़े होकर पत्थरों से सिर कुचलते हैं। पूरा समाज मानता है कि ऐसे मुश्किल नियम और उनका पालन सामाजिक ज़िंदगी के लिए ज़रूरी हैं।

अमीजान, मुझे पता है कि तुम भी चूड़ियाँ नहीं पहनती हो। तुम्हारे हाथ में एक-दो चेन भी नहीं हैं। पाटा भी वही है। यहाँ बाज़ार में घूमते समय बस एक ही चीज़ बहुत मज़ेदार लगती है – इतनी सारी चूड़ियाँ देखकर तुम्हारी याद आती है। मैं तुम्हारे लिए कुछ चूड़ियाँ लाना चाहता हूँ। इंडिया में भी सोना नहीं मिलता। लेकिन यहाँ जितना शुद्ध है उतना होता भी नहीं। मुझे अपनी चूड़ी का नाप सेंटीमीटर में बता देना। गाँव आने पर मैं ले आऊँगा। क्योंकि वहाँ के सुनार चूड़ियाँ बनाते समय सोने में मिलावट करते हैं। इसके बजाय, अगर तुम यहीं से ले आओ तो अच्छा होगा। अगर एयरपोर्ट पर कोई दिक्कत हो, तो तुम बिना रिश्वत दिए निकल सकती हो, यहाँ काम करने वाले इंडियन मुझे बताते हैं...”

कहानी बहुत लंबी थी। उसमें उसके अंदर की आवाज़ गूंजी। 'मैं अपने भाई के लेटर के साथ अपने मम्मी-पापा से दूर रहने आई थी। घर के काम और खाना बनाने के साथ-साथ, छोटे नज़ीर की देखभाल के लिए रखी गई अमीना गरीब तबके से थी। हम दोनों रोटेशनल बेसिस पर कंस्ट्रक्शन साइट के बाहर रहते थे। रोते हुए बच्चे को शांत करने के लिए, वह उसे धमकाती, चिकोटी काटती और थप्पड़ मारती। यह बात मेरे दिमाग में भी आई थी, लेकिन इस बार कोई और रास्ता नहीं था। इस वजह से, आमिर उसे सुबह उसकी माँ के पास छोड़ देता और रात को घर वापस ले आता। चूँकि वे भी अपने पोते के लिए बहुत कुछ करते थे, इसलिए नज़ीर भी अपने दादा-दादी से ज़्यादा जुड़ गया। उसे उन्हें लाड़-प्यार करना बहुत पसंद था, और उसकी बातें ज़्यादा दमदार होती थीं! जहाँ हम दोनों थिएटर और सिनेमा के ज़रिए एक ज़्यादा मॉडर्न और प्रोग्रेसिव समाज बनाने की बात करते थे, वहीं हमारा बेटा अपने दादा-दादी की देखभाल में एक ट्रेडिशनल माहौल में बड़ा हो रहा था। उसे अपने मम्मी-पापा और दादा-दादी के बीच का फ़र्क भी समझ में आने लगा और उनके साथ वैसे ही बर्ताव करने और बात करने की समझदारी भी समझ में आने लगी जैसे कोई उनके साथ नैचुरली होता है।

जब मेरे दादा-दादी चले गए, तब भी वे मेरे घर नहीं आए। कम से कम माया तो आई।

Machine Translated by Google

अमरिया को झटका लगा होगा, यहाँ आने के बाद भी उसने उसे कुछ क्यों नहीं बताया? उसे यह आसान लगा होगा? "मेरी माँ की तरफ़ से मेरे दादा हैं, लेकिन आपने भी मुझे नहीं बताया!... वे बहुत छोटी सोच वाले हैं... वे दूसरे धर्मों को छोटा समझते हैं, वे मूर्ति पूजा करते हैं..." जिन दादा-दादी ने उसे पढ़ाया था। क्या उन्होंने उसे माया स्कूलों के बारे में कुछ नहीं बताया? पता नहीं, वह लिखता नहीं है! मुझे बाद में याद आया, वह हमेशा सच नहीं बोलता! फिर भी, बेटे का एक खत आया!' वह खुश था।

अनुभव किया।

Machine Translated by Google

4

एक दिन, वह हमेशा की तरह खेत में आई, और घर के सामने एक मोटरबाइक खड़ी थी। उसे दूर से देखकर उसे उत्सुकता हुई, यह कौन हो सकता है? यह कहकर वह घर आ गई। वे दोनों बरामदे में खड़े थे। दूसरा जलील था। वह हमेशा उसके काम में मदद करता था। जैसे ही उसने उसे देखा, उसने कहा 'सलाम आलेकुम'। दूसरा रघु था, कैमरामैन। वह भी असिस्टेंट था। उसे पहचानने के बाद, जलील ने अपनी जेब से एक पैकेट निकाला और उसे दे दिया। पैकेट पर लिखे नाम से उसे लगा कि आमिर ही वह है।

लामा से उसके लिए भी एक नाटा बनाने को कहकर, वह लिफ़ाफ़ा लेकर अपने कमरे में चली गई। हमें मिले हुए दो महीने हो गए हैं, क्या आमिर ने कोई चिट्ठी लिखी है? यह सोचकर मेरे मन में एक मीठी सी फीलिंग आई। वह ठीक से लिख नहीं सकता। वह पढ़ सकता है। उसने यह उडुशा में सीखा है। उसने उडुशा सिखाने की कोशिश की। लेकिन वह इसे अच्छी तरह से लिख नहीं पाया। इसीलिए उनकी बातचीत इंग्लिश में होती थी। वह इंग्लिश में चिट्ठियाँ लिखता था।

“प्रिय बीबी, मैं यह नहीं लिखूंगा कि मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ। लेकिन मेरे पास गुस्सा होने का समय भी नहीं है।

सरकार ने मुझे दो नाटक, 'अकबर महान' और 'रविर टीपू', मंचित करने और कर्नाटक के सभी थिएटरों और बड़े कॉलेजों में उन्हें दिखाने के लिए एक स्क्रिप्ट तैयार करने का काम दिया है। जैसे ही हिप्पी का नाटक पूरा हो जाएगा, मुझे गोल घूमत, सारनाथ, नालंदा मंदिर और ताजमहल पर नाटक बनाने का काम भी मिल जाएगा। मैं नाटक की ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता।

मुझे आज भी याद है कि हम दोनों पहले नाटक किया करते थे। अब हम यह काम साथ में कर सकते हैं। लेकिन मेरे पास टाइम नहीं है। इसलिए, तुम इन दोनों नाटकों की ज़िम्मेदारी ले लो। नाटक लिखो और डायरेक्ट करो। आगे चलकर, मैं मेन कास्ट, एक्टर और डायरेक्टर को ट्रेनिंग भी दूँगा। क्योंकि सरकारी स्कीम है, तो इसके लिए ज़रूरी पैसे मिल जाएँगे। इस वजह से, तुम बगलू आकर प्रोफ़ेसर शाना से मिलो।”

वह उत्साहित थीं। 'हाल ही में, मैं सिनेमा से जुड़ी हूं, इसलिए ड्रामा से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।'

Machine Translated by Google

आराम नहीं मिला। बगलुम में दूसरे नाटक भी होते हैं, लेकिन मुझे उन्हें देखने का भी समय नहीं मिला। इन दोनों नाटकों को लिखने में कितने दिन लगेंगे? और मेन कैरेक्टर के लिए हिस्ट्री पढ़ना बंद करने की ज़रूरत नहीं है। दोनों काम एक ही समय में किए जा सकते हैं। यह ठीक है। आप निमनमबलागल भी जा सकते हैं। आपको एक राजा का साथ भी मिलेगा। ऐसे लोग जो दोनों के अपने-अपने फील्ड में बिज़ी रहने पर मिलते हैं, हीरो के लिए अच्छे होते हैं।

वह प्रोफेसर शाना से मिलने गईं और खुश हुईं। उन्होंने कहा, "देखो, सरकार ने माया सयावन का यह प्याला उठा लिया है। सरकार इसके लिए जितना चाहे उतना पैसा लगाने को तैयार है। देश में फैल रहे जातिवादी कैंसर का इलाज कला और कलाकारों से होना चाहिए, इस माया विचार का महत्व सबको साफ है, यहां तक कि CM भी यह समझ गए हैं। इस काम को पूरे मन से करो।" और उन्होंने उनकी पीठ थपथपाई।

आमिर गांव में था। लेकिन उसके प्रति उसका गुस्सा अभी भी था। उसने कहा, "मुझे आज रात शूटिंग के लिए जाना है।"

"अरे! झूठ बोलोगे तो पकड़े जाओगे, तुम्हें पता भी नहीं। बगलुया स्टूडियो में शॉर्ट फिल्म की शूटिंग नहीं हो रही है, ऐसा बताया भी नहीं गया है। बीवी, तुम नर्स को बेवजह मामला दिखा रही हो – इसमें भी बहू खास है। क्या अपनी लापरवाही छिपाने के लिए गुस्से का पर्दा डाल रही हो?" यह कहकर उसने उसके गुस्से का पारा नीचे कर दिया।

उनसे मिलने के बाद वह नरसापुर लौट आईं और आया आया तपुसलताना के रेफरेंस खोजने लगीं। अपाजया संहत में इस विषय पर न केवल किताबें थीं, बल्कि अपाजनी का पंद्रह-बीस पेज का एक पैम्फलेट भी था, जो जल्द ही उनके हाथ लग गया। कुछ पढ़ने के बाद, वह एक बार बगलू गईं और लाइब्रेरी में बैठकर कुछ तपंकन ले आईं। इस समय आमिर गांव में नहीं थे, अमीनाबानो भी रामनगर में झील पर गई हुई थीं।

इसे पढ़ते हुए, वह सोच रही थी कि कर्नाटक के सेलारत और भारत के मुसलमानों ने उसे इतना बड़ा हीरो क्यों बनाया? और क्या वे आज भी ऐसा करते हैं? वह हैरान थी। अगर वह सच दिखाने वाला नाटक लिखता, तो प्रोफेसर शशि उसका साथ नहीं देते। सरकार भी उसे पैसे से मदद नहीं करती। राजनीतिक साज़िशों की वजह से टप्पू को शेर और शेरनी के रूप में दिखाने का आइडिया आया। चारा के किरदार को बैकग्राउंड में रखकर नाटक लिखना आसान था। अगर आप टप्पू को शेर और शेरनी के रूप में दिखाना चाहते हैं जो न सिर्फ शेर है बल्कि धर्म का गद्दार भी है, तो आपको खास टेक्नीक का इस्तेमाल करना होगा। लेकिन यह

Machine Translated by Google

जब वह इन विचारों से परेशान था, तो उसने आमिर को एक पत्र लिखा,

"अरे आमिर,

आप कैसे हैं? क्या आपको अपनी पत्नी की याद नहीं आती? मैं हर दिन आपके यहां आने का इंतज़ार करता हूं।

गांव के लोगों ने मुझे गांव की लड़की के तौर पर अपना लिया है। अगर तुम आती-जाती रहोगी, तो वे तुम्हें भी अपनी बहू के तौर पर अपना लेंगे। भले ही जाति का फर्क हो, मैं बॉर्डर पार करने की काबिलियत रखती हूं। अगर तुम यहां आओगी, तो तुम्हें लात पड़ेगी!

पिछले दो महीने महान कवि के बारे में पढ़ने और रिसर्च करने का समय रहा है। इस संदर्भ में, मुझे नाटक लिखने में आने वाली कलात्मक मुश्किलों का पता चला है। इसका यही कारण है। मुझे आमने-सामने बैठकर बात करने के बजाय इस संदर्भ में लिखना ज़्यादा आसान लगता है। लिखते समय, व्यक्ति ज़्यादा गंभीर होता है और बिना किसी दूसरी रुकावट के ज़्यादा साफ़ सोच सकता है।

कुछ पुराने लेखक – इसमें भी जूया हसौर संथानम के लोग इस तरह से टापू की तारीफ़ करते हैं, फिर क्लाइमेक्स आता है। इतिहास से जुड़े किसी टॉपिक पर लिखते समय, इतिहास को एनालाइज़ करते समय, क्या लिखने और नरेशन पर किसी लिमिट की ज़रूरत होती है? मैंने शुरू से ही लिखने और नरेशन की तारीफ़ की है। लेकिन अब मुझे एहसास हुआ कि इस तरह के ओरिजिनल लिखने की नकल करते हुए, मैं भी एक ऐसे ग्रुप का हिस्सा बन गया था जो दूसरों की मोरल और साइकोलॉजिकल भावनाओं को रौंदता था। और क्योंकि मुझे इसका पता नहीं था, इसलिए मुझे इस पर गर्व भी था। मैंने मॉडर्न सोच से पूरी तरह मुँह मोड़ लिया था, सोच की धारा के पीछे चल रहा था। मैंने उसी मतलब, उसी मोरैलिटी, उसी आइडियोलॉजी, उसी प्रोग्रेस के रास्ते और उसी हिस्ट्री के रास्ते पर पूरा भरोसा किया था जो यह ग्रुप मुझे बताता था। टीपू की कहानी उन कई कहानियों में से एक है जिसने पुरानी चीज़ों को रौंदा और मिथ को अपने कंधों पर ढोया।

भारतीय संदर्भ में, बाज़ारों, मंडियों वगैरह जैसी सार्वजनिक जगहों पर, मशहूर गायकों की लिखी रचनाएँ, जिनका कोई ऐतिहासिक बैकग्राउंड नहीं होता, ढोल पर गाई जाती हैं। मुसलमान – इसमें भी मुसलमान इन गायकों को पैसे नहीं देते और उन्हें बढ़ावा देते हैं। इसी तरह, टीपू को दिखाने वाले नाटक भी इस संघर्ष को महत्व देते हैं।

Machine Translated by Google

यह लिखा गया था। तब लोगों ने भी इसे सच्चा इतिहास माना। युद्ध के दौरान माओवादियों, हॉट बैंक के नेताओं, महिला कलाकारों, नाटककारों, फिल्म प्रोड्यूसरों और बाकी सभी ने टीपू को नेशनल हीरो बना दिया। टीपू इतना क्रूर था कि उसने दो छोटे बच्चों को बंधक बना लिया था, लेकिन वह आसानी से उस व्यक्ति को भूल गया जिसने ऐसे कैदियों को बंधक बनाया था! औरंगजेब के सेनापति मीर जुला ने असम के राजा को युद्ध में हरा दिया, और उससे लूटे गए सोने, सिक्कों, गहनों और कैश के लिए और भी ज़्यादा मुआवज़े की मांग की। उस मांग को पूरा करने के लिए राजा की बेटी और बच्चों और बुहागो हाने, बरगाहने, गडगुइनया उखान और बाद पा उखान के चार बेटों को बलपूर्वक युबंदी के रूप में ले जाया गया, औरंगजेब के आधिकारिक इतिहास (मिस्र-ए-अलंगीर, लेखक – साक मुताद खान, पांच साल, अल ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब (ओरिएंट लॉन्गमैन 1979, पृ.108) में हिजरी 1072.5 जनवरी 1603 का उल्लेख है और जदानुत सरकार को अपने कम से कम एक बेटे को महल में रखना पड़ा। एक और कहानी जो अकबर के साथ शुरू हुई थी वह यह थी कि सम्राट का पराजित राजा की बेटी के साथ संबंध था। यह भी उसे बंदी बनाए रखने का एक तरीका था! महाराणा नल पर भी अपने बेटे को अकबर के दरबार में भेजने के लिए दबाव डाला गया था। लेकिन राणा नल ने ऐसा नहीं किया। खुर्रम के दो बेटों - जो उसके पोते भी थे - दारा और औरंगजेब को कैदी बनाकर रखा। लेकिन मुगल बादशाह ने कभी अपने बच्चों का उतना ख्याल नहीं रखा जितना उसने विजेता के दो बेटों का रखा था। इन बच्चों को धार्मिक अत्याचारों का सामना करना पड़ा।

अगर टीपू को 'दुश्मन के खिलाफ लड़ाई' की वजह से नेशनल हीरो कहा जाना है, तो इतिहासकार और लेखक दुश्मन के खिलाफ लड़ने वाले मराठों को क्यों नहीं दिखाते? मराठों ने माना कि उनके सभी दुश्मनों में मराठा सबसे ताकतवर थे। टीपू को 'कर्नाटक का कुंवर' कहा जाता है, कर्नाटक का बेटा नहीं। ओड़िया काल में कर्नाटक की राजनीति की भाषा कठोर थी। टीपू ने इसे बदलकर फारसी भाषा लाई। आज भी खेती के संदर्भ में 'खतेखड़', 'पहानी', 'खानेसुमारी', 'गुडता', 'बरनमुने' जैसे शब्दों का इस्तेमाल होता है। आज भी खेती के संदर्भ में किसान के नाम के आगे 'बिन' लगाने का चलन टीपू के समय में सामने आया। वाकाटेगौड़ा के बेटे नरसिंह गौड़ा का ज़िक्र होने की जगह 'वाकाटेगौड़ा के बिना नरसिंह गौड़ा' का ज़िक्र किया जाता है।

गांवों के असली नाम भी बदल दिए गए हैं। पुरी का नाम सुल्तानपेठ हो गया। कालीकोट या आज का केरल का किलकोट, चंदगांव, चंदगांव, दिहासर, कोडगु।

Machine Translated by Google

जाफराबाद, दवे नाहली का युसुफाबाद, डिंडीगुल का खलीलाबाद, गुज्जर का फैजीहिसार, क्रिनिगढ़ी का फल-इल-आजम, हसौर का नज़राबाद, पेनुगड़ा का फबाद, संदगु का मुफराबाद, शिरचंटुमाबाद, सकलेशपुर का मंजराबाद - एक लंबी सूची दी जा सकती है। क्या ये चीजें तपुचनों की स्थिति को दर्शाती हैं या नहीं? मूल नाम बदलने के बजाय, एलामाइट साम्राज्य का नाम पूर्व की ओर फैल गया। औरंगजेब ने चटगांव को भी इस्लामाबाद में बदल दिया। केशवराज मंदिर को नष्ट करने के बाद, मथुरा का नाम भी इस्लामाबाद रखा गया। काशी का नाम बदलकर मुहम्मदाबाद कर दिया गया। लेकिन औरंगजेब ने ऐसा नहीं किया। सभी राजाओं ने ऐसा किया है। यह अकबराबाद बन गया। दिल्ली शाहजहाँनाबाद बन गया। गोलकाड़ा हादी रबाद बन गया। बीदर जाफराबाद बन गया। काला नेकनामाबाद। शहर का नाम बाद में इलाहाबाद (अलचंगाँव) रखा गया। आज के अलीगढ़ का मूल नाम कोम था।

माया अपजानी ने जल्दबाजी में भारत के उन गांवों की आठ पेज की लिस्ट बनाई है, जिनके नाम भारतीय उपमहाद्वीप के गांवों के असली नामों पर रखे गए हैं। इस लिस्ट के आखिर में उन्होंने लिखा, 'भारत के कोने-कोने में रहने वाले लोकल लोगों के सहयोग के बिना ऐसी जगहों के नाम बदलने की पूरी लिस्ट बनाना नामुमकिन है। मुझे ऐसी खाली ज़मीन पर गांव बनाने और उन्हें ऐसे नाम देने में कोई एतराज़ नहीं है। लेकिन किसी मौजूदा गांव का नाम बदलना और किसी ज़िंदा इंसान को ज़िंदा इंसान देना, ये दोनों ही बातें बिल्कुल मंज़ूर नहीं हैं।'

अपाजया समाहिन में मुझे 'टीपू सुल्तान की ज़िंदगी' नाम की एक मैन्युस्क्रिप्ट मिली। मुझे इसे जल्दी में फ़ारसी में लिखना पड़ा। उन्होंने इसे ज़िंदगी भर राज़ रखा था। कर्नल विलियम किपैक को यह श्रीरंगपटना महल के टॉयलेट में मिली। उन्होंने इसे टीपू के पर्सनल नौकर हबीबुल्लाह के तौर पर पहचाना, और तुरंत इसका अनुवाद टीपू की अपनी मैन्युस्क्रिप्ट के तौर पर किया। इसका ओरिजिनल और इंग्लिश ट्रांसलेशन लंदन में इंडिया ऑफिस में है।

इसे पढ़ने के बाद, यह और भी साफ़ हो जाता है कि बहुत सारी बातें हुई थीं। इसमें वह हिंदुओं को 'काफ़िर' कहते हैं। वह अंग्रेज़ों को 'वे' कहते हैं। लंबी दाढ़ी वाले आदमी सामने आते हैं। हम इस कविता में कवि के शब्द देखते हैं। मुस्लिम शासक ने कहा कि वह टापू को छोड़कर गाँव में कदम नहीं रखेगा; एक लंबी दाढ़ी वाला अरब यह कहता है। वह देखता है कि जो लोग मुस्लिम नहीं हैं उन्हें इस्लाम में बदल दिया जाना चाहिए और सभी गैर-मुस्लिमों को इस्लाम में बदल दिया जाना चाहिए।

इस छोटी सी किताब में भारत के मॉडर्नाइज़ेशन का नामोनिशान तक नहीं मिलता। वह बार-बार अपने रास्ते के बड़े कांटे, तिश (वह इसे हमेशा जातिवादी नाम 'तिति' से बुलाते हैं) को दूर भगाने की इच्छा पर ज़ोर देते हैं। सिर्फ़ इसी वजह से उन्हें मॉडर्निस्ट, एंटी-कास्ट और एंटी-इंडियन कहा गया है।

Machine Translated by Google

क्या इस किताब को आधार बनाकर उन्हें तनाना के पिता के तौर पर दिखाया जा सकता है? यह उन लोगों को नहीं दिया जाता जो इंटेलेक्चुअल ईमानदारी में विश्वास करते हैं। इसलिए, नाटक में ऐसी चीज़ों को दिखाना मुमकिन नहीं है।

मालाबार और कोडगु में हिंदुओं के खिलाफ लड़ाई में टीपू ने कोई बड़ी हिम्मत नहीं दिखाई। 1791 में, टीश के साथ एक बड़ी लड़ाई लड़ी गई। बड़ी संख्या में टीश को पकड़ने और दो बेटों को कैदी के तौर पर सौंपने के बाद, उसने श्रृंगेरी मठ में जाकर उन्हें हिंदू धर्म में बदलने की कोशिश की। आज, जिसे टीपू नास्तिक कहते हैं, उसे भी नास्तिक कहा जाता है! उसने अफगान राजा ज़मान शाह और तुक्का के खलीफ़ा को भारत पर हमला करने और उन्हें अपने कब्ज़े में लेने के लिए लिखा था। 1796 में, हसाऊ के महल को लूट लिया गया, और तिरपाल पर रखी कीमती किताबों और मैन्युस्क्रिप्ट्स को गाइड के तौर पर इस्तेमाल किया गया। मालाबार के मुसलमान मलयालम बोलते हैं, और तमिलनाडु के मुसलमान आज भी तमिल बोलते हैं; लेकिन हसाऊ के मुसलमान अभी भी उडबू बोलते हैं। वे बोलने या लिखने से मना कर देते हैं, क्योंकि उनके पतियों ने टीपू से उडबू-फ़ारसी सीखी थी! अगर आप अपने आर्मी अधिकारियों को गिरफ्तार कर लें और उन्हें ऐसा करने का निर्देश दें, तो भी आप टीपू की कुछ कविताएं पढ़ पाएंगे।

मैंने सैकड़ों घटनाओं को रिकॉर्ड किया है, जिसमें दूसरे धर्मों पर ज़ुल्म और इस देश के मूल निवासियों पर ज़ुल्म शामिल हैं। ये सभी बातें उन लोगों के लिए उपलब्ध हैं जो जानना चाहते हैं, और जिनकी वे जांच करना चाहते हैं। इस किताब में सभी डिटेल्स में जाने की ज़रूरत नहीं है।

ऐसे व्यक्ति को नाटक में रविर के रूप में कैसे दिखाया जा सकता है? आप भी एक कलाकार हैं, मुझे खुद ही बताइए!

आपकी प्रिय पत्नी।"

एक महीना बीत जाने के बाद भी आमिर ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसे पता था कि यह बहुत बुरा होगा, उसे यह बात पेट में जाते ही पता चल गई थी। लेकिन उसका रवैया पूरी ईमानदारी का था। इसी वजह से उसने अपना धर्म छोड़ दिया, उस अपजन को छोड़ दिया जिसने माँ और पिता की जगह ले ली थी, और शादीशुदा ज़िंदगी अपना ली। इतने सालों तक साथ रहने के बाद, वह उसे बताए बिना यह कैसे कर सकता था? अगर वह उससे प्यार नहीं करती, तो वह अकेले में बात करने आता, या वह उसे बात करने के लिए बुला सकता था, उसने सोचा। लेकिन उसने कोई वजह नहीं बताई, बस उस पर एक तरह की मेहरबानी दिखाई। उसे गुस्सा आ गया।

Machine Translated by Google

लेकिन दो दिन बाद उसे होश आया। यह सोचकर कि, "मुझे उससे मिलना चाहिए और बात करनी चाहिए," वह बागुलु के लिए निकल पड़ी।

वह गांव में था। वह घर में भी था। तीन महीने बाद भी, जब वह अपनी पत्नी से मिला, तो वह खुशमिजाज नहीं था। वह ऐसे बात कर रही थी जैसे वह खुद हो। वह हंसते हुए बोली, “वाह! लगता है सहाबियों के काम सुधर गए हैं!” कुर्सी के पीछे खड़ी होकर उसने रान को गले लगा लिया। वह उसे जितना हो सके उतना खाना दे रहा था। आखिर में, वह सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और उसे बताने लगी कि कागज़ पर क्या लिखा था।

उन्होंने बीच में टोकते हुए कहा, "हम इतिहास के बारे में बात नहीं करना चाहते, हम नाटक के बारे में बात करना चाहते हैं!"

“लेकिन आप ऐतिहासिक किरदारों का इस्तेमाल करके यह नाटक मंचित करना चाहते हैं।” अनजाने में उसकी आवाज़ ऊंची हो गई।

“आर्टिस्ट होना खुशी की बात होगी, लेकिन!” उनकी आवाज़ भी ऊँची हो गई। “अगर आप एक प्योर

आर्टिस्ट की तरह कुछ बनाते हैं, तो यह खुशी की बात होगी। ऐसा ही होना चाहिए! लेकिन जब कोई आर्ट सिर्फ़ खाने के लिए बनाई जाती है, तो वह प्योर आर्ट नहीं रहती। और मुझे लगता है कि इसका मकसद भी पता चल जाता है।”

“मैंने देखा है कि आजकल इलम के लिए तुम्हारा गुस्सा बढ़ रहा है।” “देखो, चलो

टॉपिक बदलते हैं। हमने यह कई बार कहा है कि एक आर्टिस्ट को धर्म से ऊपर उठना चाहिए। अब मुझे लगता है कि आर्ट में ‘साया’ भी बहुत बड़ा है। एक आर्टिस्ट की क्रिएशन साया का एक रूप होनी चाहिए। इसके अलावा, आर्ट को किसी और मकसद के लिए इस्तेमाल करना भी पाप है।”

बातचीत के दौरान उसके मन में जो विचार आए थे, उन्होंने उसे हैरान कर दिया था। उसके अंदर एक अजीब सी भावना उमड़ रही थी।

माँ की बातों से उसकी नाराज़गी कम नहीं हुई। वह उठा, बार में गया और सिगरेट सुलगाई।

'क्या हुआ? मैं गांव में इसलिए रुका हूं क्योंकि मुझे विडाल की कविताओं का कलेक्शन पढ़ना है। मैं हमेशा अपने रिश्तेदारों से मिलने जाता रहता हूं, जो मेरी पत्नियां हैं। जब भी मैं उन्हें कुछ बताने जाता हूं, तो वे कहती हैं, "क्या तुम साहब की उम्र के नहीं हो गए हो? तुम भी चले जाओ, मैं भी आऊंगा।" यह सोचकर मुझे और भी गुस्सा आया। क्या तुम इस गांव में जाकर रहना चाहते हो? मैंने कहा:! कोई कहीं और नहीं रह सकता।

Machine Translated by Google

वहाँ भी राजा रह रहा है। सिर पर ताबीज़ लगा रहा है! उसने ऐसा कहा। अब मुझे वहाँ जाकर रहना चाहिए? आमिर! और इस घर का दामाद? छे:! मैं कैसे समझूँ कि मेरे लिए यह कितना मुश्किल होगा!'

"खाना टेबल पर है।" अमीनाबानोन ने आकर घोषणा की।

"ठीक है. इतुजा." वह कार के पास गया, लेकिन अब वह एक कुर्सी पर बैठा है जहाँ वह नहीं जा सकता.

थोड़ी देर बाद, नरिज़ाया पास आया और हँसते हुए बोला, "ठंड हो रही है।"

"तुम खा लो. मुझे भी एक लेने दो."

"क्या! मैं इतनी दूर से आई हूँ..." पास आते हुए वह मुस्कुराई। "मुझे अकेले रहने की

आदत हो गई है। मुझे यही पसंद है। लेट जाओ! मुझे परेशान मत करो।" बिना उसकी तरफ देखे, वह उसके साथ बैठ गई।

वह दूसरे को यह बात समझाने की पहल नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि पिछली दो ट्रिप के अनुभव को देखते हुए इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। उसे भूख लग रही थी। हालाँकि, उसका घर में अकेले समय बिताने का मन नहीं था।

उसे एक और घटना याद आई। जब वह चार महीने पहले यहां आई थी, तो वे साथ में खाना खा रहे थे। अमीनाबानो घर पर नहीं थी। 'मैं सोच रहा था कि जूस बीफ का है या बकरी का।'

"मांस के टुकड़े से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, अमीनाबानो! इसीलिए जब तक तुम उसे काटो नहीं, तुम्हें कुछ समझ नहीं आता। आमिर, इसे खाओ और देखो कि यह किस तरह का मांस है।"

"का?"

"अगर वहाँ गोमांस है, तो मैं इसे नहीं खाऊंगा।"

उसने उसके चेहरे की तरफ देखा। कुछ देर सोचने के बाद उसने पूछा, "क्यों? क्या हुआ?"
"तुम बेवकूफ़ों जैसी हरकतें क्यों कर रहे हो?"

वह क्या करना चाहता है? माया भी उसे लात मारेगी।

"लाइफलाइन जैसी कोई चीज़ नहीं है। मैं माया विडाल की इकलौती बेटी हूँ।

Machine Translated by Google

बेटा भी नहीं। मैंने न तो उसका अंतिम संस्कार किया, न ही कोई और काम। मैं रस्म नहीं कर सका। लेकिन इससे पहले शनि ने मुझे माया का बीफ खाने के लिए मंदिर आने को कहा था। मंदिर में यह भी वादा होता है कि 'मैं यह गलती दोबारा नहीं करूंगा', है ना?

उसने तुरंत कुछ नहीं कहा। शर्म के दिनों में, बीफ़ का टॉपिक आता था, और मैं बहस करता था, 'आप पोर्क भी क्यों नहीं खाते?' अब, अगर उसने फिर से वही बहस शुरू की, तो मैंने खुद को इसके लिए तैयार कर लिया कि क्या होगा।

लेकिन इसने एक अलग बात कही, "अगर आपको छोड़ना ही है, तो आपको सारा नॉन-वेज खाना छोड़ देना चाहिए। अगर आप बीफ़ नहीं खाना चाहते, तो क्या यह एक तरह का अंधापन नहीं है?"

मैंने भी इस बारे में सोचा। इसका यही मतलब है, और मैं बचपन से ही शाकाहारी हूँ। बस इतना फ़र्क है कि अब भी कचप्पा और लम्मा शाकाहारी पति के साथ घर में रहते हैं। इस वजह से, जब से मैं इस घर में आई हूँ, मैंने एक दिन भी मांस नहीं खाया है।

मैंने जवाब दिया, "ऐमर, मैं तुम्हारी बात पूरी तरह समझता हूँ। अपने गाँव में मैं पूरी तरह शाकाहारी था। खाना तो अपनी पसंद की बात है, लेकिन यह असल में शाकाहारी नहीं है, बल्कि एक अलग तरह का है। इसलिए, इसके बाद, मैं यहाँ आने के बाद भी पूरी तरह शाकाहारी रहूँगा।"

"यदि आहार में इतना अंतर है, तो सह-अस्तित्व में एकता कैसे हो सकती है?"

"असंहणतोस? तर मग तूही शाकाहारी हो."

"लेकिन क्या देवताओं को मनुष्यों का भोजन बनने के लिए नहीं बनाया गया था?"

"यही बुनियादी फ़र्क है. यही इंसान का घमंड है. जो लोग ऐसा कहते हैं, वे धर्म का घमंड हैं."

उस दिन हमारी बात यहीं खत्म हो गई। मैंने उस दिन कुछ नहीं खाया। मैंने सिर्फ़ दस बजे खाना खाया। एक रात सोते समय मुझे एहसास हुआ कि इस खाने के बिना, हमारे साथ रहने में एक गैप बन रहा था।'

उसने अमीनाबानो को अपने लिए शाकाहारी डिश बनाने के बारे में नहीं बताया था। अब कौन जाने उसने क्या बनाकर टेबल पर रख दिया हो। यह सोचकर कि अगर हम तब मिलेंगे जब हालात पहले से ही खराब हैं, तो दूरी और बढ़ेगी, वह बिस्तर पर ही रही।

Machine Translated by Google

वह जाकर सो गई। काफी देर बाद भी वह उसके पास सोने नहीं आया। उसने उसे खाने के लिए भी नहीं बुलाया। 'यह मेरा गुस्सा नहीं है क्योंकि मैं वेजिटेरियन हूँ। मेरे पास्ट के बारे में जो ख्याल आ रहे हैं, वे मेरा गुस्सा हैं क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ! लेकिन उसे अच्छा महसूस कराने के लिए माया को अपने मन के ख्यालों को दबाना पड़ा और ड्रामा करना पड़ा? और इसके बाद, मैं रुककर क्यों नहीं सोचता कि मैं क्या कर रहा हूँ?'

बाद में उसे पता ही नहीं चला कि वह सो गई थी। जब वह उठी तो खिड़की से रोशनी आ रही थी। वह बिस्तर पर अकेली थी। उसे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था। 'आमिर मेरे साथ ऐसा बर्ताव कर रहा है!' वह उठी। चेहरा धोने और दांत ब्रश करने के

बाद, वह बाहर वाले कमरे में आई और उसे देखा। आमिर ने खाना खा लिया था। राशि ने उसे खाने के लिए नहीं बुलाया था। उसे ऐसा ही लग रहा था। वह सीढ़ियाँ चढ़कर नाज़िरा के कमरे में गई। कमरे का दरवाज़ा आधा खुला था। आमिर वहाँ सो रहा था, सिगरेट पी रहा था।

“तुम यहाँ क्यों सोये?” उसने सोचा।

"सॉरी! आप वहाँ आएँगे, मैं अमीना को सफ़ाई करने के लिए कहने गया था।"

"आज जब वह माया के लिए एक हेजेमोनिक एजेंट के तौर पर आएगी, तो मैं तुम्हें बता दूँगा। बस। तुम यहाँ क्यों सोए?"

"मुझे नहीं लगता कि एक हेजेमोनिक महिला इतनी हॉट होगी," वह उसे देखते हुए हँसा।

“आमिर! मैं नव्यान बयाको को ऐसे नहीं देखना चाहता।” उसकी आवाज़ में सख्ती नहीं थी, लेकिन उसमें आलोचना की झलक थी।

“इसमें क्या दिक्कत है? फेजेरियन को यहां आने में महीनों लग सकते हैं। कौन जानता है कि आपने वहां और क्या इंतज़ाम किए हैं! मैं उन्हें बेकार में क्यों तोड़ूं?”

उसे और भी गुस्सा आया। उसने सोचा, "तुम फिर से ऐसी ही बात कर रहे हो... लेकिन वह बोला नहीं।"

Machine Translated by Google

5

एक सुबह कचपन के पास एक पार्सल आया। हमारे गांव में एक पोस्ट ऑफिस था, लेकिन वह उसे भूल गई थी। वह बचपन से वहां नहीं गई थी। पूछने पर उसे पता चला कि तब से सात-आठ साल हो गए हैं।

वह बैंक गया। चिट्ठी मोटे अक्षरों में लिखी थी। वह किसकी चिट्ठी थी? उसे याद नहीं आ रहा था। उसने यह भी नहीं लिखा कि वह किसकी तरफ़ से आई थी।

मैंने पैकेट खोला और देखा, ब्रो. शाचैम्प.

उसका दिमाग़ कन्फ्यूज़ था. भले ही वह पाकिस्तान में था, लेकिन उसका दिल इंग्लिश में था.

"िय लमी,

यह पहली बार है जब मैं आपको लिख रहा हूँ। मुझे पहले कभी ऐसा मौका नहीं मिला और मुझे कभी इसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं हुई। इसीलिए मैं आपको लिखते समय लामी हनुक्का और रिज़्या का ज़िक्र करना भूल गया। लेकिन दोनों नाम बहुत सुंदर हैं।

इस बीच, मैं यहाँ नहीं था। मैं दो हफ़्ते पहले विदेश से लौटा हूँ। मैं पिछले शनिवार को आमिर से मिला था। वह मुझे आपके बारे में सब कुछ बता रहा था। जब से मैंने आपको देखा है, मैं बहुत दुखी हूँ, मैं समझता हूँ कि आपने मशहूर इतिहासकारों की बनाई गई भावुकता के आगे झुककर शॉर्ट फ़िल्म लिखने से मना कर दिया है।

अब तक आपने और आमिर ने मिलकर शॉर्ट फ़िल्में बनाई हैं। मुझे बहुत बुरा लगा कि उन्होंने यह शॉर्ट फ़िल्म किसी और से कॉपी की है। इतिहास में ऐसे लोगों ने कविताएँ लिखी हैं और वेदी पर नाचा है, भले ही इतने कम समय के लिए। विजयनगर ने खुद को खत्म कर लिया। यह मुसलमानों ने नहीं किया। हालाँकि कुछ मुसलमानों ने यहाँ के मंदिरों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया, लेकिन उन्होंने इस मामले में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। हाल की रिसर्च से पता चला है कि विजयनगर में शैव और वैनिव आपस में लड़ते थे और एक-दूसरे को बुरी तरह मारते थे।

क्या आपको कभी गाय ने लात मारी है? अब हम जो भी अस्पताल और पेशाब देखते हैं, वे सब अस्पताल ही हैं। लामी-नरसान्ह पेशाब

Machine Translated by Google

और विजय विला मंदिर इसके दो उदाहरण हैं। इसके उलट, शैवों के विपा मंदिर को ज़रा भी नुकसान नहीं हुआ। आज भी, यह उसी हालत में खड़ा है। ऐसा क्यों है? वहां के शैवों ने नरसंहार और विजय विला को तबाह कर दिया। शहर के रहने वाले तिपति - वैंवा - की नफ़रत बर्दाश्त न कर पाने की वजह से, जूया शैवों ने मुस्लिम राजाओं को बुलाया और उन्हें विजयनगर में महावा की जगह दिखाई। राजा दौलत कमाने की उम्मीद में यहां आए थे। इस मौके का फ़ायदा उठाकर, शैवों ने वैंवा मंदिरों और मूर्तियों को तबाह कर दिया। आज, कुछ जैन ग्रुप मुसलमानों के ख़िलाफ़ जाति का भेदभाव बढ़ा रहे हैं।

आप: मुझे बहुत खुशी है कि आप इतिहास में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं। मैं आपको मॉडर्न इतिहासकारों से मिलवाऊंगा। उनके मार्गदर्शन में, न केवल आप, बल्कि पूरे भारत का इतिहास फिर से पढ़ा जाएगा। इतिहास में भी इंसानियत की चाल पर रोशनी डालने की ताकत होती है, है ना?

आपका, एन.एस.एन.”

केलेया

हालांकि इससे उनके विचारों को कुछ बढ़ावा मिला, लेकिन इससे सोच के लिए कोई मज़बूत आधार नहीं बना। उन्हें इसमें 'मॉडर्न हिस्ट्री' के बारे में ज़्यादा समझ नहीं थी। टीपू सुल्तान पर रिसर्च और अपजानी की लिखी रचनाओं को पढ़ने के बाद, वह टीपू सुल्तान के विरोधी हो गए थे। इस वजह से, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाएँ। उन्होंने महल छोड़ दिया और डल चले गए।

लेकिन एक दिन, बारिश के दिन, उन्होंने इसे निकाला और पढ़ा। अपजा का यह विचार,

'सत्य की खोज ही इतिहास की खोज है', उनके मन में बस गया। इसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। 'पहले हमें देश का पूरा इतिहास समझना चाहिए। उसके बाद हमें शाह जैसे मॉडर्न इतिहासकारों से भी मिलना और चर्चा करनी चाहिए।'

इसी बात को ध्यान में रखते हुए, मैंने अपाजया नाथ संघ को खोजना शुरू किया। जो लोग भारत के अलग-अलग तरह के इतिहास में दिलचस्पी रखते हैं, उन्हें अपाजया विजयनगर के बारे में भी ज़रूर दिलचस्पी होगी!

बीच वाली शेल्फ़ में उसे वरयाया कायातलांसिविल की लिखी 'ए फॉरगॉटन एम्पायर' दिखी। उसे याद आया, 'मैंने इस किताब का नाम सुना है। लेकिन कहाँ?' उसे भारी मन से याद आया। मैंने यह किताब बढ़ा में विपा देवालय के सामने एक दुकान में देखी थी, हैप्पिली एवर आफ्टर। यह किताब एक लेखक ने लिखी थी।

Machine Translated by Google

माया में इतनी बड़ी किताब पढ़ने की हिम्मत कैसे हुई! इसमें कोई शक नहीं कि मैंने जो किताब पढ़ी, उसमें इस किताब का ज़िक्र है। जब मैंने 'ए फॉरगॉटन एम्पायर' का कवर खोला, तो मुझे अपाजा की हैंडराइटिंग की आठ पेज की एक छोटी सी मैन्युस्क्रिप्ट मिली। अपाजा की आदत थी कि वह हर किताब का अपना असेसमेंट और उस पर अपनी राय रखते थे। इसके अलावा, उन्हें हर सब्जेक्ट से जुड़ी किताबें रखने की भी आदत थी। इस वजह से, उन्होंने आस-पास रखी दूसरी किताबें भी देखीं। श्रीनिवास रे और बी. आर. गोपाल की किताबें।

वहाँ कई किताबें थीं जैसे 'ए हिस्ट्री ऑफ़ कर्नाटक', एन. वाकाटरमण्य की 'द डेल्ही सल्तनत', सुयनाथ कामत की 'ए कंसाइस हिस्ट्री ऑफ़ कर्नाटक', पी. बी. दसाई की 'कर्नाटक थ्रू द एजेस'। मैंने उनमें से कोई भी पढ़े बिना शॉर्ट फ़िल्म की स्क्रिप्ट लिखना शुरू कर दिया था! मुझे खुद पर शर्म आ रही थी। दो-चार किताबें पढ़ना भी काफ़ी है, मुझे आमिर की बातें भी याद थीं। मुझे वे सब चुपचाप पढ़ लेनी चाहिए थीं, उससे पहले मुझे हर किताब पर लिखे नोट्स पढ़ने चाहिए थे जो मैंने अपने लिए रखे थे।' उसने नोट्स हाथ में लिए और बेंच पर बैठ गई।

'क्या इतिहास का कोई मतलब है?' यह सिर्फ़ समय का सवाल है और एक तय समय के बाद इधर-उधर उड़ने का। लेकिन इतिहास की पढ़ाई ज़रूरी है, और उसकी खोज भी। इतिहास का सार खोजना, उसे चुनना और सच और सच्चाई पर राय बनाना, बहुत मुश्किल काम है। लेकिन हाल ही में, इस समय में भी, कुछ लोग जान-बूझकर इस रास्ते में बदलाव कर रहे हैं। इतिहासकारों के लिए इसे पार करके सच तक पहुँचना और भी मुश्किल हो गया है। इस संदर्भ में भी ऐसे बदलाव किए गए हैं। इसका एक हिस्सा यह है कि यहाँ के मंदिर और मूर्तियाँ मुसलमानों ने नहीं तोड़ी थीं, बल्कि शैव-वैनव लड़ाई के दौरान तोड़ी गई थीं, जो इस कहानी का भी हिस्सा है। क्योंकि ये वैनव मंदिर यहाँ बनाए गए थे। यह भी कहा जाता है कि कर्नाटक के शैव लोगों ने मुसलमानों का फ़ायदा उठाकर भगवान की मूर्तियों को तोड़ने का यह काम किया था।

यह मुस्लिम कट्टरता को छिपाने और कर्नाटक में शैवों को छिपाने के लिए किया जाता है। शैव राजा वैनाव मंदिरों या विनय पूजा को कैसे देखते थे?

फिर मैं मंदिर के आंगन में बैठ गया और खूब ध्यान किया।
मैं हवाई गया और वहां का सारा मज़ा देखा। जॉर्ज माइकल और फिलिप बी.
वैगनर का विजयनगर (पवित्र मंदिर की वास्तुकला सूची)
वॉल्यूम III शहर के बीच में मौजूद मंदिरों और धार्मिक स्थलों के बारे में है।

ि च २०, २१ चंमौळेर दवोलय (भ आह)े

Machine Translated by Google

चित्र 67, 68, 69 सोयसमर मंदिर (भ आह)।

ि च ३२९ लंग-शिव दवेालय (भ आह)े

ि च ३५२, ३५३ चं ि डकेर दवेालय (भ आह)े

चित्र 390, 391, 392 वीरभ देवालय समूह (चित्र 520) 'मूल' विपा

हमे कुंडा पर (चित्र 520)

इसके अलावा वीरशैव कवि चमरसा का मठ और दूसरी जगहें भी नष्ट कर दी गई हैं।

होपेट में हप्रिया रोड पर अनंतश्यान मंदिर और मालपांगुडी मंदिर दोनों को मंदिरों में बदल दिया गया है। होपेट-अनेगुंडी रोड पर सोमर पहाड़ी पर सोमर गुफा मंदिर को भी बदल दिया गया है। विपा मंदिर के पीछे 'अरसर गुफा' मंदिर को नहीं बदला गया है, और लंगा स्कूल और नंदी अनाथ हो गए हैं।

ऊपर दिए गए रेफरेंस को देखने पर यह साफ़ है कि हापुड़ में मंदिर हिंदुओं ने नहीं बनवाए थे, न ही यहाँ कोई स्कूल थे। इस सबूत के बावजूद, कुछ जानकार अपने फ़ायदे के लिए बहस करेंगे। लेकिन हापुड़ पर राज करने वाले राजाओं में कोई घमंड नहीं था, यह साबित करने के लिए नीचे दिया गया सबूत काफ़ी है।

1. विपा देवालय राय गोपुरम के निर्माता वैनाव कृन्दव राय थे।

2. विजया विलेज मंदिर के निर्माता शैव राजा दशुरा दवे राय थे।

3. अन्ना एल. पल्लापिकोला जॉन फ्रिज़ जॉर्ज माइकल ने सबसे पहले विजयनगर में रामचंद्र मंदिर का ज़िक्र किया था।

विपा मंदिर में आज भी पूजा होती है। मंदिर सही-सलामत है, शायद इसलिए क्योंकि यह मंदिर रानाथगांव की मुस्लिम सेना ने बनवाया था।

लमिना ने अपाजया कलेक्शन की सभी किताबें पढ़ीं। उसके बाद, उसने बगलुया लाइब्रेरी द्वारा सुझाई गई किताबें भी पढ़ीं। उनके सुझाव पढ़ने के बाद, वह अकेले होपेटा चली गई।

मैंने एक होटल में कमरा बुक किया और अपजानी और

Machine Translated by Google

उन्होंने देवलों का दौरा किया। विजयनगर का इतिहास उनकी आँखों के सामने लगभग साफ़ हो गया। यह सवाल कि क्या यहाँ होने वाली कभी न खत्म होने वाली हँसी पर कोई पूरी फ़िल्म बनाई जा सकती है, यह टॉपिक उनके मन में बना रहा।

इस तरह उसने शहर और उसके आस-पास की जगहों को घूमते हुए दो हफ़्ते बिताए। उसके बाद, वह बागलू लौट आई।

होटल से मैंने शना को फ़ोन किया, "सर, आपको आए हुए चार महीने हो गए हैं। मैं इस बात पर किसी भी मॉडर्न हिस्टोरियन से बहस करने को तैयार हूँ कि हपन के मंदिर शैवों ने नहीं, मुसलमानों ने तोड़े थे। मैंने इस बारे में सारे पुराण पढ़े हैं। मैंने पिछले दो हफ़्तों में हपन देखा है। क्या आप उन हिस्टोरियन को भी जानते हैं जिनके बारे में आप बात कर रहे थे?"

"कौन सा इतिहासकार? तुमने मुझे कब बताया?" आवाज़ आई।

"तुमने मुझे भी लिखा, क्या तुमने मुझे लिखा?" "ओह! यह सही है! अगर कोई

आर्टिस्ट रिसर्च में खो जाता है, तो क्या उसकी कला मुरझा नहीं जाएगी? लामी, अगर तुम ऐसे मुरझा गईं तो मुझे बहुत दुख होगा। मैं बाली जा रहा हूँ। वहाँ एक कॉन्फ्रेंस है। मुझे एक घंटे में निकलना है। मुझे अपना सूटकेस पैक करना है। रास्ते में मिलते हैं। बाय–" हनात ने फ़ोन रख दिया।

'अपाज्या संहत का हर श्लोक पढ़ने के बाद, उनके विचार और साफ़ होते जा रहे थे। उन्होंने जो शब्द और वाक्य बताए, वे मुझे समझ में आ गए। हाँ, उनके नोट्स में थे। भले ही कुछ शब्द इंग्लिश और हिंदी में थे, लेकिन यह साफ़ था कि उन्हें भाषा पर अच्छी पकड़ थी। उन्होंने जो श्लोक पढ़े, उनका मतलब निकालते समय कभी कोई गलती नहीं की। उन्होंने हर उस शब्द का मतलब ढूंढा जो उन्हें समझ नहीं आया, और किताबों में भी। उनके नतीजे और उनका एनालिसिस दिलचस्प थे। मैं पहले कभी हिस्टोरियन नहीं रहा था। लेकिन फिर भी, 'सोशलिस्ट', 'मॉडर्न मार्क्सिस्ट', 'मैटेरियलिस्ट', 'साइंटिफिक', खुद को बताने वाले आंदोलनों में हिस्सा लेते हुए, मैं इतिहास के बारे में अलग-अलग विचारों से भर गया था। अब मैं समझता हूँ कि इतिहास को समझने के लिए खुद को फैक्ट्स, आंदोलनों और आइडियल्स से अलग करके, जो घटनाएँ हुई हैं, उन्हें देखना ज़रूरी है।

आज जो चीज़ें बन रही हैं, उनसे खुद को अलग करके हम बीते हुए कल को कैसे समझ सकते हैं? बीते हुए कल की कई परतें, कई निशान, कई निशान हमें दिखाई देते हैं। लेकिन आज ने हमारे सिर पर अलग-अलग परदे बांध रखे हैं। इस वजह से यह हमसे छिपा रहता है। आज के हालात कुछ ऐसे हैं,

Machine Translated by Google

इतिहासकार अपनी खोई हुई जगह को पेश करते हुए आज के साथ-साथ आज के इतिहासकारों से भी बहस करने लगता है। अपजानी ने भी अपने कमेंट्स में इस बारे में लिखा है।

इतिहास में कोई खास रिदम या लय जैसी कोई चीज़ नहीं होती, यही आज का ट्रेंड है और यही आज का ट्रेंड है! जब साइंस की अलग-अलग खोजों की वजह से पूरी दुनिया में उथल-पुथल मची हो; जब जाति, धर्म, नैतिकता और सोच के सभी कॉन्सेप्ट पर फिर से सोचने का समय आ गया हो; जब सभी देश खत्म हो रहे हों और जब इंसानियत धरती और मंगल पर बसने की सोच रही हो। मुझे समझ नहीं आता कि इतिहास पर शा के विचार सुनकर हंसूं या रोऊं। मुझे भी हाल ही में यह समझ आने लगा है।

एक इंसान की लिखी किताब को कोई दूसरा कैसे बेहतर बना सकता है? भले ही वह कोख की बेटी ही क्यों न हो? यह नामुमकिन है! डिटेल्स का चुनाव, कॉन्टेक्स्ट और मतलब, सोच और अनुभव की भाषा, हर शब्द अलग है। सिवाय इसके कि मुझमें और अजेय में एक बुनियादी फ़र्क है।

अपजस का कवि वह है जो हर विषय, हर घटना को शांति से परखता है। इसमें फैंटेसी के लिए कोई जगह नहीं है। मेरा मन असल में फैंटेसी है। घटनाएं और विचार एक बात है, जबकि कल्पना को भरकर एक से दूसरी पर जाना दूसरी बात है। माया के इसी गुण की वजह से मैं एक कलाकार बना। मैंने नई-नई लाइनों, नए-नए गानों के ज़रिए फैंटेसी कहानियाँ कहने और उन्हें फैंटेसी के साथ खत्म करने का रास्ता चुना। लेकिन मैं अपनी यह ताकत सोशल मूवमेंट के हाथों में देना चाहता था।

खूबियों को परखे बिना और तर्कों को सपोर्ट किए बिना रिव्यू लिखना मुमकिन नहीं है।

ऐतिहासिक बैकग्राउंड पर कुछ सीन और कुछ गाने बनाकर मैं इस इतिहास को आकार दे सकता हूँ, कहानी लिख सकता हूँ। अगर मुझे कोई प्रोड्यूसर मिल जाए जो बहुत पैसा लगाए, तो मैं इसका इस्तेमाल करके एक बढ़िया मूवी भी बना सकता हूँ। लेकिन उससे पहले, मुझे इस नज़ारे के साथ फ़ोटो लेते हुए पूरे भारत में घूमना होगा।

Machine Translated by Google

6

यह गुस्से की तरह जल रहा है। लगातार। अगर गुस्से की आग है, तो मन भी ठीक नहीं रहता। अगर मैं सो भी जाऊं, तो आग बिना सहारे के फैलती है और जलती रहती है। नहीं तो, मैं टूटी हुई नींद से जागता हूं। क्या मुझे कुछ हो गया है? क्या यह कोई मानसिक बीमारी है? हाजी हमदुल्लान ने सोचा होगा। पुराने समय से लेकर अब तक, अरब से लेकर मिस्र, सीरिया, इराक, तुक्तान, फ़िलिस्तीन, खुरासान, ईरान, तूरान, अफ़गानिस्तान और कई दूसरे देशों का इतिहास, जिन्हें मैं नहीं जानता, वह अपने हाथों और उंगलियों पर बताता है। बादशाह औरंगज़ेब का इतिहास दरबार का मुँह है। भारत में सभी मुग़ल अधिकारियों से आने वाली सभी खबरों की छानबीन करने के बाद, और यह पक्का करने के बाद कि इससे बादशाह के मकसद को किसी भी तरह से नुकसान न हो, उसने इन खबरों को सही कैटेगरी में बांटा। उसे माया इतनी पसंद थी कि वह सीधे उसके पास चला गया। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसकी आँखों से प्यार उमड़ पड़ा।

मैंने अपने पिता को इस सपने के बारे में बताया था। उन्होंने कहा, “आग जल रही है। आग जल रही है। नरक का डर तुम्हें जागते हुए, सोते हुए और नींद में सताता है। इसका मतलब है कि अल्लाह की पूरी कृपा अभी तुम पर नहीं हुई है। तुम्हें ज़्यादा नमाज़ पढ़नी चाहिए। कुरान ज़्यादा पढ़नी चाहिए। क्या तुम अरबी नहीं पढ़ सकते? अरबी के बिना, तुम कुरान का मतलब कैसे समझ सकते हो? भले ही तुम मतलब समझ जाओ। अगर तुम असली मतलब समझना चाहते हो, तो तुम्हें अरबी समझनी होगी। लेकिन तुम फ़ारसी नहीं समझ पाओगे। फ़ारसी भाषा की भाषा है, अरबी भाषा की भाषा है। इसके बिना, धर्म की जड़ें तुम्हारे अंदर हैं, है ना? जब तक वे जड़ें पूरी तरह से जल नहीं जातीं, नरक का डर तुमसे दूर नहीं होगा।”

"हाजी साहब, आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सच है। मुझे नहीं लगता कि यह जल रहा है। मैंने आपको नहीं बताया कि यह जल रहा है।"

"क्या तुम पुराने आतंकवादी को मार रहे हो? क्या यह धर्म का अपमान नहीं है? अगर तुम लोगों को मारना चाहते हो, तो तुम्हें उन्हें मारना होगा..."

मैं अपनी अभी की हालत की वजह से गुस्से में हूँ। मैं एक गुलाम हूँ। एक कैदी। मैंने अपनी जान बचाने के लिए अपनी जान दे दी, लेकिन मैं एक गुलाम की तरह जी रहा हूँ... मैं गुलाम नहीं हूँ, मुझे अपनी आने वाली हालत के बारे में बात करने में शर्म आती है। आज मैं इस हालत में आ गया हूँ और

Machine Translated by Google

मैं आ गया हूँ। क्या इसका कारण मेरा पुराना धर्म नहीं है? अगर सब लोग इसी धर्म में होते, तो क्या वह खतरा खत्म हो जाता? हाजी हमदुल्ला धर्म पर बात करते समय कभी अपना आपा नहीं खोते।

"वज्जाहन, यह सच है कि इलम धर्म में नहीं आया। हज, गजनी, गोरी, मलिक, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोधी, मुगल पैदल भी आए, तो भी तुम्हारी ज़मीन चली गई। क्यों? तुम्हारा तुम्हारा नहीं रहा, क्योंकि अब तुम हमारे हो। इतना बड़ा देश! इतनी दौलत! फिर भी, एक-एक करके वे झुक गए और हार मान ली। इलम उनके चंगुल में फंस गया। हजारों, अगर लाखों नहीं तो, लोग मारे गए, गुलाम बनाए गए और खत्म कर दिए गए। इसके पीछे क्या वजह है? इतना बड़ा युद्ध, हजारों-लाखों जानें गईं, इसके पीछे क्या वजह है? उनका धर्म – असल में, धार्मिक होने की कोई वजह नहीं है, उनका बेवकूफी भरा व्यवहार, सोच और अंधविश्वास ही इसका कारण हैं। जैसे आसमान में अंधेरा छा जाता है, वैसे ही इन लोगों की सारी रोशनी, शैतान और पाखंडी गायब हो गए हैं। जो लोग अपने सिर पर लाल और पीला पाउडर लगाते हैं और मुट्ठी भर बाल गर्दन पर बांधते हैं, जैसा कि समझदार कहते हैं, आखिर में जीत उसी की होती है। बहादुर. ओरिजिनल भाषा में इसका क्या मतलब है?"

मैं हमेशा जीतता हूं... वगैरह।

"हम्म! बस यही। काफ़िर और काफ़िर। सिर्फ़ काफ़िर ही ऊपर उठ सकते हैं। इसका क्या मतलब है, जीत हमेशा ताकतवर की होती है? अनिलम धर्म की ताकत की वजह से, यह धर्म एक बड़ी ज़मीन पर जीत हासिल करने की कोशिश कर रहा है। क्या अब यह अफ़सोस की बात नहीं है?" हनत ने अपनी लंबी, चांदी जैसी दाढ़ी पर हाथ फेरा। हाजी हमदुला को याद आया कि वह जो बड़ी हिस्ट्री बता रहे थे, वह माया एक्सपीरियंस का

हिस्सा थी। इससे मैंने सिर हिलाया। अंबीर ने राजा नन्हर पर विचार किया, उनकी बेटी बादशाह की नौकरानी थी और इस आर्मी के हेड के तौर पर सर्विस स्वीकार की और अपने गाँव और राज्य की रक्षा की। उदयपुर के महाराणा ने इस अंबीर राजा को – अपनी आर्मी का कमांडर – अपॉइंट किया था। 'बादशाह अकबर को कोई कभी हरा नहीं पाया और इसके बाद भी कोई ऐसा नहीं होगा, जो मायामन के सामने सरेंडर कर दे और उनका महान सेनापति बन जाए...' वह तपचमा को कन्वर्ट करने गया था। हाड़ीघाट की लड़ाई हारने के बाद, तपचमा टिथ्या के जंगलों में छिप गया था और वहीं रह गया था। सेन, मालवा और गुजरात लंबे समय तक राजशाही सेना के नियंत्रण में थे।

लेकिन अरावली की पहाड़ियों में छिपा हमारा छोटा सा राज्य एक किला है! राज्य में किसी ने भी इसे कभी नहीं देखा था। सम्राट को नहीं पता था कि हमारा छोटा सा राज्य, जिसका किसी दूसरे बड़े राज्य पर कोई असर नहीं था, बहुत ताकतवर था।

Machine Translated by Google

बादशाह औरंगजेब को लगा कि वह बेवकूफ है। उसने जवाब देने में टाइम वेस्ट नहीं किया और मेरे पिता महाराज जयवीरसांग को मैसेज भेजा, 'बिना देर किए मुसलमान बन जाओ, वरना जंग के लिए तैयार रहो।' औरंगजेब ऐसा कोई नेगेटिव मैसेज नहीं भेजना चाहता था जिससे बादशाह नाराज़ हो जाए, और माया के पिता भी हमेशा ऐसी ही जल्दी में रहते थे। लेकिन अगर काइया को घेरते हुए, प्राचीर पर बंदूकें रखकर, और गेट पर यह बैरिकेड खड़ा करके ऐसा मैसेज भेजा जाए, तो कौन राजपूत शांत रहेगा? आया के गो हाना, हमारे घेरने वालों में कुछ हिंदू थे और मालाएं पहने सैनिक थे। इतना ही नहीं, हमारे अपने राज्य के किसान भी! एक और छोटा राजा इलम देख रहा है, हम उसकी मदद नहीं कर रहे, उसमें इतनी इंसाफ की समझ नहीं होगी! घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लेकर हमला करने वाले भी राजपूत थे। उनके आर्मी लीडर भी राजपूत थे! दूसरे अफगानी मुसलमान। वे लगातार देख रहे थे कि हिंद के सैनिक ठीक से और ईमानदारी से लड़ रहे हैं या नहीं। पैदल सेना के सैनिकों को युद्ध का मकसद भी ठीक से पता नहीं था और अगर पता भी होता तो उनके पेट के लिए कोई और काम नहीं था। पैदल चलना और युद्ध की पहली भावना को अपने दिल में लेकर चलना ज़रूरी हो गया, यही उनकी ज़िंदगी का एकमात्र तरीका था।

हम कब तक इस सबसे ताकतवर ताकत का विरोध करेंगे जो हम पर हमला कर रही है? मेरे पिता ने हमारे जनरलों, सेना के चीफ और दूसरे अधिकारियों को बुलाया और कहा, “दीवार गिराई जा रही है। शुचाधाई आज शाम तक अंदर आ जाएगा। एक ही रास्ता है कि दरवाज़ा खोलकर शु पर हमला किया जाए या उसके अंदर आने तक इंतज़ार किया जाए। शु के आगे सरेंडर करना और इतने सालों से अपना धर्म छोड़ना, उसके धर्म में बदलने का आखिरी रास्ता है। मैं किसी पर कोई रास्ता अपनाने के लिए दबाव नहीं डालूंगा। लेकिन हमें एक ही समय में अपना रास्ता अपनाकर कन्फ्यूज़ नहीं होना चाहिए। आइए हम दुनिया, भगवान के आगे सरेंडर करें, और जो कोई भी आना चाहे, एक साथ आएं! इस पर बात करने के लिए काफ़ी समय नहीं है। आइए हम सब एक साथ आएं और कोई फ़ैसला लें।”

चीफ मिलिट्री ऑफिसर विजय सिंह ने तुरंत कहा, “मीटिंग बुलाई गई थी, मीटिंग का मकसद ऋषियों को समझ आ गया था। इसीलिए हमने भी इसके बारे में सोचा था। ऋषि जौहर करते थे और सभी आदमी घोड़ों पर सवार होकर हाथों में तलवारें लेकर ‘हर हर महादेवा’ बोलते हुए चलते थे। शायद उन घोड़ों को मारकर हम भी कुर्बान हो जाएं।”

“क्या आप महिलाओं के लिए जोहर करने के लिए तैयार हैं?”

“हाँ। जैसा कि महाराणा ने खुद कहा था। कोई और रास्ता नहीं है.. वे हारे हुए लोगों की पत्नियों की कोई इज़्ज़त नहीं करते। यहाँ, ऊँचे घराने के अमीरों की पत्नियों को अमीर लोग ले जाते हैं। बाकी लोगों के साथ आम सैनिकों जैसा बर्ताव किया जाता है।”

Machine Translated by Google

वे आपस में बांट लेती हैं। कोई भी उन्हें ले जाए, ये औरतें इस घर की नौकरानी बनकर ही रहती हैं। हममें से कोई यह बेइज्जती कैसे बर्दाश्त कर सकता है? यही बात मर्दों के साथ भी है। अगर हम अपना धर्म बदल भी लें, तो भी हम गुलाम ही रहते हैं। या तो राजा के घर में गुलाम बनकर या उसकी पैदल सेना में सिपाही बनकर, या सेना की फौज में काम करने वाले मजदूर बनकर या फिर नीलामी और नीलामी में बिकने वाले जानवरों के तौर पर। ऐसी चीजें बेचने वाले भी उन्हें हमारे लिए काम पर ले जाते हैं। वे वहीं मर भी जाती हैं। कुश पहाड़ों को पार करने के बाद भी ऐसी गुलामों की अफगानिस्तान और दूसरे देशों के बाजारों में नीलामी होती है। क्या हमारे लिए इस जिंदगी के लिए लड़ना और 'हर हर महादेव' कहते हुए नदी में गिर जाना बेहतर है? यह हम सबकी राय है।

आखिर में यह तय हुआ कि मेन गेट बिना तलवार निकाले और बिना बाहर गिरे खोला जाएगा। हर एंट्री पर, एक कमांडर के नेतृत्व में सैनिकों का एक ग्रुप इकट्ठा होगा और वहां से अंदर आने वाले सैनिकों पर हमला करेगा।

दूसरे शब्दों में, इस वजह से किसी को भी हमसे जीतने की उम्मीद नहीं थी! लेकिन उम्मीद बस यही थी कि हम थोड़ी देर और टिके रहेंगे, इससे पहले कि हम हार जाएं और हार जाएं।

यह भी तय हुआ कि मेन दरवाज़ा खुलने से पहले जोहर चढ़ाया जाए। मेरी माँ, मेरी बहन, मेरी पत्नी माया, और परिवार की दूसरी औरतें, सभी जोहर चढ़ाने के लिए आगे आईं। उन्हें जगह देने के लिए बहुत जोश था। जगह में लकड़ी की बहुत सारी झोपड़ियाँ थीं।

मुझे देवता की तरह जीवन जीने के लिए राजकुमार बनाया गया था। मेरे पिता राज्य के लिए लड़ रहे थे। मेरी दादी, माँ, मेरी तेरह साल की बेटी शामला और दूसरी औरतें अपने बेवफा पतियों के बारे में सोचकर डरी हुई थीं। राजकुमार राजा का प्रतिनिधि भी था। उन सभी का रखवाला जिन्होंने अपनी पत्नियों के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। जबकि वह उनके लिए कुछ नहीं कर रहा था, वह उनसे कहता रहा, 'तुम भी जलकर मर जाओ, मैं भी एक राक्षस के हाथों मरूंगा', माया मन ही मन बेबस महसूस कर रही थी। कोई और रास्ता नहीं था, कोई मदद करने नहीं आएगा, यह राक्षस अपना हक पाए बिना नहीं रहेगा, इतनी सावधानी बरतने के बावजूद, तीन महीने तक एक राक्षस के साथ रहना, बेबसी के अलावा और क्या है!

आखिरी पल से पहले, लड़ाई से पहले, शहर के अंदर जाओ और अपनी दादी और माँ से मिलो, अपनी माँ को आखिरी बार गले लगाओ – अरे नहीं! नहीं तो तुम्हारा मन कमज़ोर हो जाएगा। इतना भी समय नहीं बचा है। मरने से पहले, अगर पूर्वी दीवार खंडहर हो जाती है, तो अंदर घुसे सैनिक सबसे पहले तुम्हें ले जाएँगे। मैंने सोचा, मैं तुम्हारे पास दौड़कर जाऊँ, और तुमसे कहूँ, “तुम भी जल्दी से परलोक जाओ, और अपने बुढ़ापे को काबू में रखना।” आदमियों ने पीछा किया।

Machine Translated by Google

"यह आ रहा है।" लेकिन हेम भी समझ गया कि मैं इस गंभीर स्थिति में नाकाबिल हो जाऊंगा।

मैं सत्रह साल का था, लेकिन मेरे पास एक जवान की सारी ट्रेनिंग थी। अभिमन्यु, जो सिर्फ़ सोलह साल का था, उसने ऐसा करने की हिम्मत नहीं की थी! सौ घुड़सवारों और तीन सौ पैदल सैनिकों के साथ, मैंने विणुमंदर को घेर लिया। मैंने मंदिर के चारों ओर पैदल सैनिकों का मुआयना किया, यह देखते हुए कि मंदिर में कौन से हथियारबंद लोग किन खंभों के पीछे खड़े हैं, कौन दरवाज़ों के पीछे खड़ा है, और कौन से योद्धा मंदिर में छिपे हैं। घुड़सवार कुछ दूरी पर तैनात थे। मंदिर पर चल रहे घोड़ों पर पीछे से हमला करना नामुमकिन था।

राजपरिवार ने धुआँ देखा। उन्होंने हवा और गरज को आसमान की ओर उड़ते देखा। 'हर, हर, हर, हर' के नारों से आसमान भर गया। अमेय परानी का भेष धारण करेगा। इसके बाद राजपरिवार के दूसरे लोग। इसके बाद दूसरे लोग चारों तरफ से हमला करेंगे। अजी, माँ और शामले की मौत के बाद ही दूसरे लोगों ने हमला किया होगा। माया के पेट में आग जलती हुई सी महसूस हुई। अब दूसरे लोग भी परेशान होने लगे थे। अब कोई पीछे नहीं हट सकता था। चाहे वे कितना भी जिएँ, एक ही रास्ता था, शुला को मारना!

मैं महाराणा के 'हर हर महादेवा' के नारे सुन सकता था। महाराणा ने दरवाज़ा खोला। क्या तलवार दरवाज़े के अंदर जाएगी? या वह मेरे बाहर आने का इंतज़ार करेगा? कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर लड़ाई की आवाज़ आई। मंदारैया, जिसे लड़ाई की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी, मुझे वहाँ छोड़कर अपनी हिम्मत नहीं दिखा सकता था। मैं उसके आने तक यहीं रहना चाहता था। वह पहले राजवा पर हमला करेगा। इसके बाद, मंदारैया यहाँ के हर घर पर हमला करके उसे खत्म करने के लिए एक टुकड़ी भेज देगा। आवाज़ सुनकर मैंने माया विजय पर हमला कर दिया। सोया की मुट्ठी की तलवार उसके हाथ में चमक रही थी। दूसरा राजा मारा गया। शाही महल की चीखें आसमान में गूंज रही थीं। लड़ाई शुरू हो गई है। पिताजी, इसमें हिम्मत रखो! उसकी मुट्ठी की सोने से जड़ी चमचमाती तलवार टूट जाती है, और घोड़े की जान उड़ जाती है।

तभी मंदिर में आया दूत चिल्लाया, “महाराणा गद्दी पर बैठ गए हैं। सूर्य ने राजा को जीत लिया है। काम पूरा हो गया है।” माया की छाती धड़कने लगी। उसके होंठ सिकुड़ गए। अब मैं क्या करूँ? मैं मंदिर नहीं जा सकती। मैं बिना पूछे मंदिर नहीं गई हूँ।

मैंने गर्दन घुमाकर देखा। दरवाज़ा खुला होगा। पवित्र जगह में उस जगह के रखवाले का हाथ से बना पेशाब था। चतुर्भुज। शंख-च-गदा-प। ब्रह्मांड का बनाने वाला

Machine Translated by Google

विनाशक शंकर से अलग हो जाओ! शांति! दादी, माँ, पिता को तपन कण के नाम पर जल छोड़ देना चाहिए। उनके प्राणों को कब्र में ले जाना चाहिए। लेकिन तब तक, मुझे जीवित रहना चाहिए।

जैसे ही यह बात मेरे मन में मज़बूत हो रही थी, मुझे डेव के पीछे सैनिकों के कदमों की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा तो अरब पठानों का एक ग्रुप था। वे कितने लंबे थे! मैं अपने घोड़े पर था, लेकिन फिर भी मुझे अपना सिर ऊपर उठाना पड़ा। मैंने 'हर हर महादेवा' चिल्लाया। लड़ाई शुरू हो गई। हम एक-दूसरे से लड़ रहे थे। फिर भी, उनकी लड़ाई ज़्यादा ज़ोरदार थी। उनके कपड़े भी जाति के हिसाब से पहने हुए थे। शिवाय की सेना भी छोटी थी।

उन्होंने पैदल सेना भेजने के बजाय पहले घुड़सवार सेना भेजी। उन्होंने राजकुमार को मारने के बजाय उसे ज़िंदा पकड़ने का फ़ैसला किया, तो कौन जाने! क्या यह उनके लड़ने के तरीके की वजह से हुआ? मैं माया सैनिकों से अलग हो गया। माया विजय के आगे के दोनों पैर कट गए और वह नीचे गिर गया। मैं उनके चंगुल में फँस गया। पेट में चाकू घोंपने से पहले ही उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मैं सत्रह साल का था। शायद मेरा अनुभव इसके लिए काफ़ी नहीं था। उनके हाथों से बचना नामुमकिन था। सोया फ़िस्ट की तलवार, गया का हार, ताबीज़ और तकिया देखकर उन्होंने मुझे राजकुमार के तौर पर पहचान लिया। उन्होंने मेरी तलवार और दूसरा सामान छीन लिया और मुझे पूरी तरह खत्म कर दिया।

फिर ग्रुप गुफा में घुस गया। अंदर लड़ाई शुरू हो गई। हम गिन भी नहीं पाए कि हमारे कितने आदमी मारे गए थे। हमें गुफा से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

कौन जाने यह कब तक चलता रहा! इस मनःस्थिति में समय का सही हिसाब समझ में नहीं आता। इसके बाद मरे हुए, अधमरे और आधे मरे हुए लोगों को अंदर से घसीटकर दरवाजे के सामने फेंका जाने लगा। इस जनसमूह में जो लोग अभी भी जीवित थे, वे गिरे हुए लोगों के कंबल के नीचे तड़प रहे थे। वे सभी दरवाजे के बीच में मरे पड़े थे। उनके बीस सैनिक भी मर चुके थे। इसी बीच अंदर से सात-आठ सैनिक बाहर निकले। उनके दांत, कपड़े और वस्त्र टेशू के सैनिकों के लग रहे थे। एक भारी पत्थर को एक विशालकाय व्यक्ति ने बाहर घसीटकर लाया। उसे भी दरवाजे के सामने लोगों के समूह के सामने फेंका गया। तब मुझे समझ आया, यह वेणु की मूर्ति थी। हमारा परिवार! हमारा क्या भाग्य है! पूरी मानव जाति बुद्धि की लड़ाई है! मेरे पेट में माया मचल उठी। इसके बाद इस समूह का नेता, एक हजार घुड़सवारों का मनसबदार, एजाज अहमद खान आगे आया। एक मज़बूत, भारी-भरकम आदमी, जिसके चेहरे, हाथों और सीने पर काले बाल थे, बड़े-बड़े दांत, घनी भौंहें, हाथ में तलवार, जो एक ही वार में किसी योद्धा की गर्दन काट सकता था! उसने अपने हल्के हाथ से मेरा बायां हाथ पकड़ा और मुझे इस लाश के पास खींच लिया। सत्रह

Machine Translated by Google

मैं वहां था, फिर भी मुझमें इतनी ताकत थी कि मैं चालशिया के ताकतवर मनसबदार के चंगुल से बच निकला। लेकिन उन्होंने मुझे हरा दिया था। उनके आस-पास चार सैनिक भी थे। इस वजह से मैं कुछ नहीं कर सका।

मनसबदार ने एक ही वार में उसकी खोपड़ी और चेहरा तोड़ दिया और मूर्ति की छाती पर खड़ा हो गया। मैं उसके नीचे खड़ा था। वह लोकल भाषा में बात कर रहा था। लेकिन एक शुद्ध राजस्थानी होने के नाते, मैं उसे आसानी से समझ गया, "अगर तुमने पहले इलम मान लिया होता, तो तुम्हें ज़िंदगी और शोहरत मिलती। तुमने अपनी जान गँवा दी है। अब अगर तुमने इलम मान लिया, तो तुम्हारी जान बच जाएगी, लेकिन तुम्हें गुलाम बनकर रहना होगा। अगर तुम्हें इलम नहीं चाहिए, तो यहाँ देखो! एक वार!" फिर उसने अपनी तलवार उठाई। उसने यह धमकी दी थी, लेकिन मुझे एहसास नहीं था कि जब तक मैं नहीं दूँगा, यह नीचे नहीं आएगी।

राजकुमार, जिसे इतने सालों से 'भविष्य के राजा' के तौर पर पाला-पोसा जा रहा था, युखलेस की सेना में था। नौजवानों की सेना के कई हथियार थे, जैसे भाले, गदा, तलवारें और खंजर। राजा पीछे हट गया था, और मुझे भी धीरे-धीरे पता चल रहा था कि मौत पास है। डर का एहसास कोई वहम नहीं था। उस समय, मैं जलते हुए महल में घुसने जैसे खेल आसानी से खेल लेता था। मुझे आग या खाई में कूदने जैसे एडवेंचरस खेल खास तौर पर पसंद थे। ऐसे में, बिना एक पल भी देर किए, मैंने अचानक कह दिया, 'मुझे राजगद्दी स्वीकार है,' मैं क्यों बुदबुदाया?

मैंने अक्सर इस बारे में सोचा है। मुझे लगता है कि जब पूरी दुनिया के रखवाले, सभी जीवों के रखवाले, महान विनय, मालाओं की माला, शंख-च-गदा-पा की माला से सजे हुए, अपने सिंहासन से नीचे उतरे, तो उन्हें मारे गए लोगों के पास फेंक दिया गया; उनके चेहरे और चेहरे का मज़ाक उड़ाया गया; उनके पैर उनकी छाती से दबाए गए, बेबस, इसके लिए अपनी जान गंवाने का क्या मतलब था? मुझे कितनी भी सख्ती से शिक्षा और निर्देश दिए गए हों, क्या मौत का सामना करते हुए भी, अचानक मेरे मन में जान बचाने की भावना आई? क्या मैं कायर हूँ जो मूल रूप से जीत के धर्म के लायक नहीं हूँ? थोड़ी ही देर में, आस्था के बनाने वाले, पालने वाले और तोड़ने वाले भगवान शंकर पर मेरा विश्वास टूट गया। भले ही मुझे उस धर्म की डिटेल्स नहीं पता थीं जिसे मैंने अपनाया था, मुझे यकीन हो गया कि यही वह धर्म है जो मुझे जीत दिलाएगा। यह भावना और मज़बूत हो गई कि ताकत ही धर्म है, अगर वह मज़बूत न हो तो क्या खतरा हो सकता है।

शाम तक किले में रहने वाले सभी लोग मुसलमान बन गए थे। जिन पुरुषों और महिलाओं का खतना हुआ था, उन्हें ले जाया गया। जिन महिलाओं का खतना नहीं हुआ था, उन्हें भी ले जाया गया।

Machine Translated by Google

बाकी लोग वहीं खड़े थे। वे इन सभी लोगों को दिल्ली या कहीं और ले जाने वाले थे। मेरे पिता और दूसरे हीरो मर चुके थे। शाही परिवार की औरतें – जिनमें मेरी माँ, बहन और पत्नी भी शामिल थीं – जौहर खान परिवार के रास्ते पर चली गई थीं, मुझे बाद में पता चला।

मेरी माँ को मुझे हमारे घर से एक मील दूर मनसबदार के घर ले जाना पड़ा। वह भी पैदल नहीं, घोवन। एक राजकुमार होने के नाते मैं तलवार खींचकर इलम लेने को तैयार था, तो मुझे यह सूट क्यों दिया जाए? जो आदमी मुझे घर ले गया, उसने मुझे नहलाया। उसने पसीने की गंदगी धोई। उसने मेरा शरीर पोंछा और मेरे शरीर पर खुशबू लगाई। वह मेरे लिए खाना भी लाया। लेकिन जब मैंने अपनी माँ, पिता, दादी और पत्नी को खो दिया है, तो खाने की परवाह कौन करेगा? "मनसबदार की पार्टी आई है, तुम भी खाना खा लो। वे थोड़ी देर में यहाँ आ जाएँगे।" सिपाही ने आह भरी। उसके चेहरे पर हल्की शरारती मुस्कान थी। मुझे इसका मतलब समझ नहीं आया।

मैंने चार निवाले खाने का नाटक किया। मैं सो गया। मैं बस बिस्तर पर लेट गया।

मनसबदार उसे जगाने के लिए थपथपा रहा था, और तवा जल रहा था। उसने भी नहाकर खाना खाया होगा। वह माया के बहुत पास बैठा था। मैं जल्दी से उठकर बैठ गया। “खाओ, जहान! क्या यही तुम्हारा नाम नहीं है? डरो मत।” माया ने हाथ हिलाकर कहा। तवे की रोशनी में माया की प्यारी नज़र ने माया का ध्यान खींचा। उसने आगे कहा, “तुलगोलग, तुमने सच में इलम वीकन की जान बचाई है! लेकिन जिसने इलम को स्वीकार कर लिया है, उसे एक अयोग्य शासक के सिंहासन पर, उसकी गोद से गोद सटाकर बैठने का अधिकार नहीं है। अगर मुझे फ़ारसी सुलेख की कला आती, तो मैं तुम पर सौ कविताएँ लिखता! तुम कितनी कोमल हो! तुम एक सुंदर फूल की उम्र की हो! तुम्हारी उम्र क्या है? पंद्रह या सोलह? मैं वह भाई हूँ जो तुम्हारे आधे चाँद जैसे कोमल चेहरे को चूमता है! मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा। अरे!” हनत ने माया गया को सोया की माला पहनाई।

मैं झिझक रहा था। माया के चेहरे पर शायद उत्साह का भाव था। वासना, सब कुछ।
मैं अपनी शर्म के लिए वैसे ही लड़ी जैसे जाल में फंसी लड़की अपनी शर्म के लिए लड़ी थी। ,
लेकिन मैंने उसे नहीं छोड़ा। उसे गुस्सा भी नहीं आया, वह शांत रहा जैसे उसे पता हो कि अगर वह गुस्सा हुआ तो मधुयान बन जाएगा।

मैं सोलह साल का था। मैं पिछले दो साल से चौदह साल की शामली के साथ दुनिया की खुशियाँ मना रहा था। शामली जैसी शरीफ़ लड़की के साथ मैं इतना खुश था कि जब भी दुनिया का कोई भी आदमी आता, मैं दौड़कर उसकी तरफ़ जाता। जैसा कि शाही परिवार का रिवाज़ था, मैं उसे शामला देवी कहता और वह धीरे से मुझसे कहती, "दूसरों के सामने मुझे देवी कहो। लेकिन जब हम अकेले होते हैं, तो मैं 'देव' नहीं बनना चाहता!" पहली बार मैंने उससे कहा।

Machine Translated by Google

मेरा मन एक फूल जैसा है। अगर यह इतना अच्छा और सुंदर न भी हो, तो भी एक बार मेल-फीमेल हीरो का नेचुरल अनुभव खुलकर हो जाए, तो कोई इस अननैचुरल परवर्शन से अनजान कैसे रह सकता है? और वे इस हीरो के बारे में क्यों लिखेंगे!

मुझे याद आया, मेरे टीचर हरगोपाल कम्युनिटी के मेंबर थे, और उन्होंने कहा था, "राजकुमार अभी छोटा है। इसलिए, मैं तुम्हें कालिदास, भवभूति, आसा और विमक की रचनाओं से इंट्रोड्यूस कराऊंगा। नहीं तो, तुम इस एक सोच को भी नहीं समझ पाओगे। राज और अलायंस का सब्जेक्ट तुम्हारे लिए इंपॉर्टेंट है। इसके बाद, मैं तुम्हें रचनाएं बताऊंगा। वेद और वेद ही मूर्तियाँ हैं!"

अब मेरा पेट मचल रहा था। मुझे उल्टी होने वाली थी। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ, "हं!"

गाँव के अमीर लोगों से उनकी दौलत, गहने, कीमती सामान और बर्तन लूट लिए गए। इन सभी चीज़ों को लकड़ी के बक्सों में पैक किया गया था। बक्सों को सील करने के बाद, बड़े बर्तन और दूसरी चीज़ें गाड़ियों में लाद दी गईं। इनमें से कुछ चीज़ों को कुछ कमंजनी लोगों को ले जाना पड़ा। एजाज मुहम्मद रोज़ सुबह काया जाते थे और शाम को लौटते थे। हालाँकि वह महल में रहना चाहते थे, लेकिन उन्होंने सूरत जाने का सोचा। माया के साथ कुछ समय बिताने के बाद वह सो जाते। नहीं तो, उन्हें दो हफ़्ते वहीं रहना पड़ता। उनके साथ जो बच्चे थे, उन्होंने कसम खाई कि वह उसी दौरान इस्लाम अपना लेंगे। माया के मन में डर पैदा हुआ। जब मैं भगवान के इतने करीब हूँ तो मुझे इस तरीके से इतना डर क्यों लगना चाहिए?

"पूरी मुस्लिम मर्द कम्युनिटी जिस चीज़ के साथ जी रही है, उससे तुम इतना क्यों डर रहे हो? अगर तुम मुस्लिम हो, तो तुम्हें ऐसा करने से कोई कभी नहीं रोक पाएगा। नहीं तो, धीरे-धीरे तुम्हें यह करना ही होगा।" मनसबदार ने मुस्कुराते हुए कहा। आज ही के दिन, ज़हर के बाद, मुझे 'ख़' किया गया था। दुखी होकर, मनसबदार मुझे हर दिन शर्मिंदा महसूस कराता था। 'ख़' के बाद, मुझे यह भी लगा कि मैं दूसरे मुस्लिम मर्दों के करीब नहीं रहा। मुझे लगा कि 'हम सब एक ही पंथ, एक ही जाति, एक ही मज़बूत समाज के सदस्य हैं, और हमारे धर्म का सार हमारा है'।

सच्ची कहानी ने मुझे बताया, "डरो मत। इससे आदमी की मर्दानगी बढ़ती है। चालीस नहीं, चार पत्नियाँ उसे ज़िंदगी भर चलने की ताकत देती हैं। वरना, पैगंबर मुहम्मद ने यह प्रथा क्यों शुरू की? इसका असली नाम 'सुत-ए-इमाम' है। मुहम्मद की प्रथा।"

Machine Translated by Google

दो हफ़्ते बाद, मनसबदार मुझे अपने साथ दलीला ले गया। वहाँ बहुत बुरी बदबू आ रही थी। सुवती के पूरे शरीर में इससे दर्द हो रहा था। धीरे-धीरे दर्द कम हो गया। मेरे माता-पिता, भाई-बहन और सभी रिश्तेदार एक ही धर्म के थे, यह बच्चों वाली कहानी मेरे मन में मज़बूत हो गई। इसके बाद, उनमें से कुछ को मार डालने का ख्याल समय-समय पर मेरे मन में आने लगा। यह मनसबदार ऐसा बर्ताव क्यों नहीं करता था, उसने कुछ क्यों नहीं किया, कुछ अलग और अलग बात मेरे मन में आने लगी। जब दलीला गया, तो मुझे राजा को कुछ दिखाना था, कि मैं एक राजकुमार था, कि मैं अपनी इज़्ज़त बनाए रखना चाहता था, कि मैं एक सरदार बनना चाहता था और चार पत्नियों की रखैल के साथ ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीना चाहता था। दलीला के माहौल में, महिलाओं के कल्चर की बहुत तारीफ़ होती थी। यहाँ दरबार में लोगों के पास छह जागीरें और जायदादें होती थीं। हर सरदार का अपना

महल होता था। उसमें महिलाओं के लिए एक अलग सेक्शन होता था। शरीयत धर्म के अनुसार, एक आदमी एक समय में चार पत्नियाँ नहीं रख सकता था। चार पत्नियों के होते हुए अगर उसे कोई जवान, खूबसूरत लड़की मिलती और वह उससे शादी करना चाहता तो पहली चार पत्नियों को तलाक दिए बिना ही उसे इस जगह ला सकता था। चार पत्नियों के अलावा इस महल में चार, आठ, दस या पंद्रह और पत्नियों को भी, इस समय, इस समय, इस समय रखने की सुविधा थी।

समय-समय पर, कलेक्शन ऑफिसर उन किसानों की पत्नियों और बच्चों को गांव में लाते थे जो या तो कैदी थे या टैक्स नहीं दे सकते थे। इन आदमियों को अपनी मर्ज़ी से पत्नियों के गुलामों को बिस्तर पर बुलाने का भी अधिकार था।

एक और क्रेडिट था। कोई सरदार कितना भी बड़ा और इज्ज़तदार क्यों न हो; महल या हवेली कितनी भी बड़ी क्यों न हो; उसकी सारी प्रॉपर्टी सरकार को सौंप दी जाती थी। शादी की खबर सुनते ही शाही दूत आता, मालिक की सारी प्रॉपर्टी गिनता और लिस्ट बनाता, और घर का सारा सामान, बर्तन और घोड़े ले जाता। इसमें से कुछ भी उसकी बीवियों और बच्चों के लिए नहीं रखा जाता था। बादशाह मेहरबान थे और उसे कुछ दिन रहने देते थे। नहीं तो सब भिखारी हो जाते। इस वजह से इन सरदारों के मन की हालत अलग है। नहीं तो हमारे लोगों के पास हमारे रखे हुए के अलावा कुछ नहीं बचेगा, इस वजह से हम और हमारे लोग जब तक ज़िंदा रहेंगे, इसी प्रॉपर्टी का मज़ा लेंगे, और इसी रास्ते पर चलकर बड़े महल और बड़े घर बनाएंगे, और ऐश करेंगे, यह भिखारियों की ज़िंदगी बन गई है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, दौलत कमाने का मुख्य तरीका लड़कियों को मांगना और उनके साथ मज़े करना होता है। कामोत्तेजक दवा करने वालों की कभी मांग नहीं रही। कुछ पुरुष न केवल लड़कियां चाहते हैं, बल्कि माया जैसे छोटे बच्चे भी चाहते हैं। ऐसी स्थिति

Machine Translated by Google

पूषा को नरम, खुले मुंह वाले मर्द बनाना और उन्हें ऊपर उठाना भी पसंद था। किसी ने इसे गलत काम नहीं माना और न ही नाराज़गी जताई।

मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मेरा यह मानना कि मनसबदार मुझे लड़ाई के मैदान में कमज़ोर होने की वजह से इस्तेमाल कर रहा है, गलत था। यह आदमी भी लड़ाई का शौक रखने वाला आदमी था। जब वह दिल्ली गया, तो उसे महल और वहाँ के माहौल में फेंक दिया गया। माँ और पिता को खोने की वजह से अकेलेपन का एहसास, पत्नी को खोने की वजह से अनाथ होने का एहसास, अपनी कोमल और दयालु पत्नी को परलोक भेजने के बाद एक ज़िंदा राजा होने का एहसास, इन सबके साथ, जवानी की ओर बढ़ती उम्र में दूसरों की गलत इच्छाओं का शिकार बनने का ख्याल अक्सर मेरे मन में आता था। मैं, जो शाही परिवार में पला-बढ़ा हूँ, और कलाओं में माहिर हूँ, मुझे नासमझ नहीं रहना चाहिए। इसके बजाय, मुझे एक आम सैनिक की तरह अपनी ज़िंदगी जीनी चाहिए, जहाँ भी हो सके बहादुरी भरे काम करने चाहिए। आज, अगर हो सके, तो मुझे बादशाह तक अपनी भावनाएँ पहुँचाने की बहुत इच्छा हुई। माया जैसी गुलाम के लिए बादशाह के सामने जाने का मौका मिलना नामुमकिन था, लेकिन माया भाभा का मन उस समय नहीं समझा।

जब मैं डाली पहुँचा, तो माया की मानसिक और शारीरिक तकलीफ़ दोगुनी, चौगुनी, या कई गुना बढ़ गई। मनसबदार एजाज मुहम्मद के कई नौकर भी इस जगह पर आते थे। वह मुझे बड़े गर्व से अपने सामने पेश करता था। जैसे ही वह मुझे देखता, उसकी आँखें उम्मीद से चौड़ी हो जातीं। वे फ़ारसी, तुक या अरबी में बात करते। इस दौरान, मैं इनमें से ज़्यादातर भाषाएँ समझ लेता था। बाद में, एजाज खुद मुझे इनमें से किसी एक आदमी के साथ दूसरे कमरे में भेज देता। चूँकि मैं गुलाम था, इसलिए मैं विरोध भी नहीं करना चाहता था। वह मेरे साथ दोनों तरह से मज़े लेता था। इस एनर्जी को पाने के लिए, माया की बारी थी कि वह जो कुछ भी करने को कहे, वह करे और चूँकि यह सब बिगड़ा हुआ था, कुदरती एनर्जी की कमी के कारण, इस बिगड़ी हुई एनर्जी का हर काम और ज़्यादा बिगड़ा हुआ और दर्दनाक होता था। इस इलाज के अलावा माया के लिए कोई और इलाज नहीं था। चूँकि मेरा नाम माया के गुलाम के तौर पर शहर की पुलिस को दिया गया था, इसलिए मेरे पास भागने के लिए कोई जगह नहीं थी। अगर मैं भागने की कोशिश भी करता, तो पुलिस वाले मेरा पीछा करके मुझे पकड़ लेते। अगर वहां से कुछ होता तो आस-पास के गांवों के पुलिसवाले भी वहां पकड़े जाते क्योंकि उन्होंने जानकारी दी थी। ऐसे लोगों को लाने वालों को दोनों पैर तोड़ने की धमकी दी जाती थी।

मैं सोच रही थी कि मैं उन दोनों की तरफ क्यों अट्रैक्ट होऊंगी? क्या मेरी कम उम्र इतनी बड़ी बात हो सकती है? कोई भी स्ट्रॉन्ग आदमी नौकरी मिलने पर सॉफ्ट हो जाता है। वह गिफ्ट देने के मूड में होता है। लेकिन कोई मेरे पास ऐसे क्यों आएगा?

Machine Translated by Google

मुझे हमेशा पता था कि मैं गुलामी या इस गलत सेवा से आज़ाद नहीं हो पाऊँगा।

एक बार मैंने अदलू कादर नाम के एक आदमी से पूछा, “क्या तुम सच में माया से प्यार करते हो?”

"अगर ऐसा न होता, तो क्या मैं तीसरी बार तुम्हें ढूंढने यहाँ आता? भले ही हर बार तुम्हारी इजाज़त मिलना मुश्किल था, फिर भी मैं एक बेवकूफ की तरह यहाँ आया, है ना?"

"लेकिन क्यों? मैं भी तुम्हारी तरह ही एक आदमी हूँ!"

“यह भी याद मत करो। यह खुशी की बात है। हर औरत अपने मन में प्यार की इतनी मीठी भावना पैदा नहीं कर सकती। तुम्हारा चेहरा मिठास और कठोरता के मेल से बना एक आकर्षक चेहरा है। यह हज़ारों में एक है। भले ही तुम्हारी मूंछों के लिए तुम्हारा प्यार कम हो जाए, तुम्हारी सुंदरता वैसी ही रहेगी।”

जब वह चला गया, तो मैंने खुद को आईने में देखा। मुझे हमेशा माया देखे पर गर्व था। “तुम इतनी खूबसूरत हो कि तुम ऐसे आदमी से शादी कर रही हो!” असंगा में बड़ों के साथ-साथ शामली की सहेलियाँ, जो उसकी उम्र की थीं, भी उससे कहती थीं, “अशामाली।” माया, जिसे वे पसंद करते थे, औरत कैसे हो सकती है? वह इतनी खूबसूरत क्यों थी? अगर थी, तो वे उसके बारे में इतनी गलत उम्मीदें क्यों रखते थे? इन लोगों के कल्चर और खूबसूरती को लेकर मेरे मन में जो बुराई थी, उसके साथ-साथ मैंने एक गड़बड़ भी कर दी थी।

एक दिन, मोइनुन तुरानी नाम का एक बड़ा सरदार एजाज़ से मिलने आया। वह लगभग पैंतालीस साल का था। उसकी नाक नुकीली थी। उसका रंग गोरा था। उसकी ग्रे रंग की नुकीली दाढ़ी थी। उसने एजाज़ से बात की। उसने मुझे बुलाया और देखा। मैंने जवाब दिया, "सलाम अलेकुम।" उसकी आँखों में सहमति दिखी। एजाज़ मेरे पीछे आया और मुझे माया के कमरे में जाने को कहा। मैं माया के कमरे में वापस आ गया। मैंने पजामा, कढ़ाई वाला कुर्ता, सोने के धागे से कढ़ाई वाली जैकेट और सिर पर काली टोपी पहनी हुई थी। थोड़ी देर बाद, मुझे फिर से वहाँ बुलाया गया।

एजाज की पहचान उसे दी जाती है, "यह दस हज़ार के मनसबदार सरदार मोईनुन तुरानी साहब हैं। सलाम। उन्होंने आपको माया से खरीदा है। आज से आप उनके गुलाम हैं। कीमत एक हज़ार पैसे है। यह समझने की ज़रूरत नहीं है कि आपकी कीमत कितनी है। फिर भी मैं आपको बता रहा हूँ। मैं आपको इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको पता चले कि एक गुलाम के तौर पर आपकी कीमत क्या है। आपकी उम्र और उससे ज़्यादा उम्र के एक आम गुलाम की बाज़ार कीमत पंद्रह से बीस पैसे होती है। इस गहने की कीमत क्या है? मनसबदार

Machine Translated by Google

"साहब दयालु हैं।"

मुझे हाँ या ना कहने का कोई हक नहीं है, मुझे जीने के अलावा किसी चीज़ का कोई हक नहीं है, यही बात मैंने इन पिछले सालों में समझी है। मैं कहता था, “मुझे बेच दो, अपनी ज़मीन दे दो,” लेकिन मुझे जहाँ भी जाऊँ, गायों और बकरियों के लिए वही काम करना है! मैं जहाँ भी जाऊँ, मुझे वही काम करना है। इस सोच ने मुझे भी यही सोच अपनाने पर मजबूर कर दिया है। मुझे यहाँ अपने दोस्तों को एंटरटेन करना है और उन्हें काम देना है। खाने, रहने, कपड़े वगैरह के मामले में मैं पंद्रह-बीस रुपये के गुलाम से बेहतर रहूँगा। मुझे ऐसा कोई काम नहीं करना पड़ेगा जिससे शरीर पर ज़ुल्म हो, चमड़ी कट जाए वगैरह। मैंने उस लेडी को सलाम किया जिसने मुझे इजाज़त दी थी और माया के कमरे में वापस चला गया।

मुझे एक घोड़ागाड़ी में ले जाया गया। यह लगभग दो सौ घोड़ों की गाड़ी थी। वे मुझे नौकरों के कमरे में ले गए जहाँ घोड़े रखे जाते थे और मुझे पूरा खाना खिलाया। खाने के बाद, उन्होंने मुझे एक बड़ी गोली निगलने के लिए मजबूर किया। मुझे पता था कि यह अफीम की गोली थी। "इसे क्यों खाएं?" मैंने भी यही सोचा। "चुप रहो। यह सरदार का कुम है।" मैंने सुना।

दो मज़बूत आदमी आस-पास खड़े थे। जगह नई थी। नया मालिक। मुझे उनका एटीट्यूड नहीं पता। बिना कुछ कहे, मैंने गोली निगल ली और पानी ऊपर आ गया। उन्होंने मुझे घर में घुमाया। उन्होंने मुझे मेड के साथ कमरे में सुला दिया। मुझे चक्कर आने लगे थे। मुझे अगली बात याद है। उनमें से हर एक के हाथ में एक मोटा लकड़ी का चिमटा था। एक और आदमी आया। उन दोनों ने मुझे ज़मीन पर गिरा दिया। उनमें से एक ने मेरे दोनों कंधे पकड़े। दूसरे ने मेरी पैंट खींचकर उतार दी। मेरे दोनों बॉल्स दबाए गए।

मुझे डर लगा। मेरे सिर पर रखा कंबल हट गया। मैं कांप उठा, “नहीं, नहीं!” मैंने कोशिश की। लेकिन मैं उन दोनों की पकड़ से बच नहीं सका। माया को बहुत पसीना आ रहा था। मुझे एहसास हुआ कि क्या हो रहा है। शायद बहुत समय पहले की बात है, मैंने एक चटक, एक चटक की आवाज़ सुनी। वहां से जो दर्द उठा, उसने स्वागा को जकड़ लिया और थोड़ी देर बाद गायब हो गया।

इसके बाद, मैं कई दिनों तक इस दर्द से परेशान रहा। मैं सदमे में था, बेहोशी की हालत में था। जो टेस्टिकल बाहर निकला था, उसमें एक दिन तक सूजन रही, जब सूजन कम होने लगी, तो मुझे कुछ समझ नहीं आया। जब मैं दूसरों की बातें समझने लायक होश में आया, तो एक सफेद चोगा, सफेद ट्यूनिक और सफेद दाढ़ी वाले आदमी ने कहा, "तुम्हारा दर्द अब उस पॉइंट पर पहुँच गया है जहाँ मैं इसे सह सकता हूँ। मैं तुम्हारे चेहरे से बता सकता हूँ। तुम लकी हो। तुम मरे नहीं हो। तुम्हारी जान नहीं जाएगी, मैंने ऐसे उपाय बहुत अच्छे से किए हैं। लेकिन मेरा एक साल का अनुभव बताता है कि ऐसे उपाय से तीन या चार लोगों की जान जा सकती है। मुझे बहुत दर्द हुआ और उससे पहले भी, मुझे दवा लेनी पड़ी थी।"

Machine Translated by Google

"यह हो रहा है।"

"लेकिन तुमने मेरे साथ क्या किया? क्या हुआ?"

“ओह! क्या तुम्हें अभी तक किक नहीं मिली? तुम्हें हिजड़ा बना दिया गया है। तुम्हारे अंदर का मर्दाना हिस्सा पूरी तरह से निकाल दिया गया है। इसके बाद, तुम आज़ादी से लोगों की सेवा में लग सकती हो। तुम्हें इन खूबसूरत औरतों में से किसी के साथ रखने में कोई खतरा नहीं है। अगर तुम इन औरतों की खुशियाँ अपने पास रख सकती हो, तो तुम भी किसी भी दूसरी औरत की तरह बेफिक्र और खुश ज़िंदगी जी सकती हो।”

अब मुझे सब कुछ साफ़ हो गया था। हालाँकि मैंने आफ़िया गुंगीता में भी वह लकड़ी का चिमटा देखा था, लेकिन मैं उससे थका नहीं था। मैंने अपने दो गाँवों में किसानों को भी अपने बैलों के पैर ऐसे ही बाँधते और ऐसे ही लकड़ी के चिमटे से बीज तोड़ते देखा था। अगर उन्हें इस तरह से ट्रेनिंग नहीं दी जाती, तो वे काम के दौरान गाय की तरफ़ भागते हैं और हल चलाने और गाड़ी खींचने जैसे दूसरे काम करते हैं। इसके अलावा, अगर बैलों में बीज लग जाता है, तो बैलों को अच्छी औलाद भी होती है। अगर खेत में काम करने वाले कमज़ोर बैल से अगली पीढ़ी पैदा होती है, तो वह कमज़ोर औलाद बनती है। किसी ने मुझे बताया था कि इस तरह से ट्रेनिंग दिए गए बैल गाय वगैरह देखकर भी जोश में नहीं आते। इस उम्र में, मुझे यह सब सुनकर शर्म आई और मैंने बेवकूफ़ बनने का नाटक किया। ये लोग अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए हिजड़े रखते हैं। लेकिन चूँकि समाज में ज़्यादा हिजड़े नहीं होते, इसलिए सिर्फ़ मज़बूत लोगों को ही पकड़कर हिजड़ा बना दिया जाता है, यहाँ तक कि हिजड़ों के नौकर भी आपस में बातें करते थे। लेकिन मुझे इस बात का बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि वे ऐसा कर रहे हैं, और मेरे मन में कभी यह ख्याल भी नहीं आया कि यह डबल कंपनी माया के पास भी आ सकती है। हिजड़ों के पकड़े जाने के बाद भी, जब हालात ठीक होते थे, तब भी मेरा मन कभी-कभी जाग जाता था। यह सोचकर कि हिजड़ा बनाए जाने के बाद भी वे जो चाहें कर सकेंगे, मेरे शरीर में दर्द होने लगता था।

जज ने कहा, “मनसबदार खुरानी साहब आपसे बहुत प्यार करते हैं! उन्होंने आपको हिजड़ा बनाने से पहले एक हज़ार रुपये में खरीदा था।”

"क्या चल रहा है?"

“पहले ही, संगीतल? हिजड़े के समय चार में से तीन मर जाते हैं। तुम्हारे भी मरने की संभावना थी। अगर तुम मर जाते, तो क्या उनके हज़ार फ़ीट बेकार नहीं हो जाते? लेकिन इस पर ध्यान दिए बिना, क्या वे उन्हें हज़ार फ़ीट तक घसीटते नहीं? प्यार नहीं तो दूसरे दर्जे को और क्या कहोगे?”

माया की आँखों में एक बार फिर आँसू आ गए। वह पूरी तरह से सोच में खो गई थी।

Machine Translated by Google

नहीं। क्योंकि दर्द कम हो गया था, इसलिए उन्होंने मारे जाने वाले लोगों की संख्या भी कम कर दी थी। कुछ देर के लिए मैं गूंगा हो जाता, फिर जाग जाता। एक बार जागने के बाद, मैंने सोचा, किसी दूसरे की सेवा के लिए किसी व्यक्ति को गुलामी में रखने का क्या मतलब है? गुलामी की भी एक सीमा होती है। अगर किसी आदमी को आदमी बनाना मुमकिन नहीं है, तो लोग जंजीरें तोड़कर फेंकने का क्या हक देते हैं?

डॉक्टरों ने मेरी जांच की। अंदर का घाव पूरी तरह से भर गया था। शरीर की अच्छी तरह जांच करने के बाद, मैं बच्चेदानी में जा सका। मोइनुन का महल इजाजा के महल से सात-आठ गुना बड़ा था। दवेगढ़ में हमारा महल उसके मुकाबले कुछ भी नहीं था। वरना, हमारा छोटा सा राज्य, जिसे दवेगढ़ कहते थे, कई सालों तक अरावली की छाया में छिपा रहा। इस सोच में पड़े बिना कि राज्य की सारी कमाई राजा के मज़े के लिए है, राजा उस समय से राज्य के काम-काज का ध्यान रखता था। राजा यह भी तय करता था कि सभी कबीले के मुखिया, मंत्री और बड़े-बुज़ुर्ग एक मीटिंग में कितना पैसा और खर्च इकट्ठा करेंगे। वह इस भावना से भी पेश आता था कि वह राज्य के सभी आदमियों और बच्चों का पिता है। इससे राजा की ख्वाहिशें अपने आप खत्म हो जाती थीं। यहीं से वह दस हज़ार का मनसबदार बन जाता था। दस हज़ार सैनिकों का सरदार। इसका मतलब यह नहीं था कि दस हज़ार सैनिक हमेशा उसके कमांड में रहते थे। वह सम्राट जितने सैनिक चाहता था, उतने सैनिक जुटाने के लिए ज़िम्मेदार था, ऐसा एक सरदार ने कहा। वह सम्राट के साम्राज्य के बल पर अपने सैनिकों का पेट पालता था और उसमें खुशहाल ज़िंदगी भी जीता था। जब पैसे कम पड़ते थे, तो वह अलग-अलग तरीकों से अपने साम्राज्य से पैसे इकट्ठा करता था। इस वसूली के लिए उसे गाँव वालों और किसानों को पकड़कर बाज़ार में गुलाम बनाकर बेचने का भी अधिकार था। इस नज़रिए से, वह अपने लिए राजा था! इस मनसबदारी के आगे सौ, हज़ार, दस हज़ार की संख्या इसी की ताकत दिखाती थी।

मोइन के महल के सामने औरतों का हॉल था। यह फ़ारसी स्टाइल की एक बिल्डिंग थी जिसमें एक बड़ा सा आंगन था। जब मैं दो आंगन पार करके अंदर गया, तो मुझे औरतों की हंसी सुनाई दी। इससे पहले, मैंने औरतों को कहीं नहीं देखा था। हालाँकि मुझे इस महल में भी यही सब देखने की आदत थी, लेकिन मैं हरे-भरे इलाकों में नहीं जा सका। दो महलों में कैद होने के बाद, मैंने किसी डॉक्टर को भी नहीं देखा था। सारी हरियाली औरतों की थी। उनमें कोई भी आदमी नहीं दिख रहा था। मैंने कुछ औरतों को सड़कों पर, खेतों में, बगीचों में काम करते देखा, लेकिन वे गोरी और बदसूरत थीं। वे इतनी पतली थीं कि कोई आदमी भी औरत और आदमी में फ़र्क नहीं कर सकता था। वे गुलाम भी थीं। ऐसी नीरस औरतों को देखने का मौका दिया जाता था। मेरे दिल में उदासी भर गई। इसके अलावा, मेरे मन में कोई और भावना नहीं आई।

Machine Translated by Google

लेकिन मोइनुना लोगों से नहीं डरता। तारीख उमोम वलंकरा ने निभाई थी। सोने, हीरे, जवाहरात, अलग-अलग कीमती गहनों और भारी रेशम से सजे गहनों को इतना चमकदार होने दो कि उन्हें कभी सूरज की रोशनी न लगे।

मोइनुन की चार पत्नियाँ थीं। हर एक के पास सात-आठ या दस-बारह नौकरानियाँ थीं। इन नौकरानियों को भी नौकर माना जाता था। वे भी प्रॉस्टिट्यूट थीं। वे सब एक ही जाति की थीं। वे सब अपनी मालकिन की सेवा करती थीं, उसके खाने का ध्यान रखती थीं, उसके कपड़ों का ध्यान रखती थीं, उसका बिस्तर ठीक करती थीं, उसके बालों की देखभाल करती थीं और उसे अगरबत्ती देती थीं। वे उसे खुश करने के लिए जो कुछ भी करने को कहती थीं, उसे करते-करते थक जाती थीं, जैसे गाना गाना, उसे खुश करना वगैरह। फिर भी, वे लगातार बोर होती रहती थीं। उन्हें लगातार चिंता रहती थी कि उनके पति उनके पास आने के बजाय दूसरों के पास जा रहे हैं। यह नौकरानियों को ही महसूस होना चाहिए था। उनके पतियों को ही अपनी मालकिनों को खुश करना पड़ता था।

एक बार मोइनुन साहब अपनी पत्नी जिमला बानू के पास आए। बेगम तिशिया होया। मोहन इसलिए आया क्योंकि भगवान ने उस पर कृपा की थी। उसने उसे बड़ी खुशी से बिस्तर पर बिठाया। वह भी उसके बगल में बैठ गया और धीरे से उसके हाथ-पैर सहलाए। उसने अपने नौकरों को उसे खुश करने के लिए बुलाया। उसने परफ्यूम लगाया और उसे चमड़े की अच्छी खुशबू दी। इसके बाद, वे चारों एक प्यारा गाना गाने लगे। चारों नाचने लगे। होस्ट गाने और नाच की धुन से मंत्रमुग्ध हो गया। मदन उसकी आँखों में खुशी देख रहा था। जिमला बानू को ऐसा लगा जैसे वह अभी धरती पर उतर आई हो। वह अपने पति के और भी करीब बैठ गई।

लेकिन होस्ट की नज़र चार डांसर्स में से एक - केशरबाई पर टिकी थी। वह सच में एक माहिर डांसर थी। बेगम साहिब भी उसे बहुत पसंद करती थीं। थोड़ी देर में होस्ट बेडरूम में जाने के लिए उठा। बेगम साहिब भी उठीं और वहीं रुक गईं। लेकिन मनसबदार आगे बढ़ा, केशरबाई का हाथ पकड़ा और उसे बेडरूम की ओर ले गया। बेगम साहिब की मायूसी उसकी आँखों से चाकू की तरह उतर गई और उसने केशरबाई पर सैकड़ों बार वार किए। लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था। अगर होस्ट के कानों में एक भी बुरा शब्द पड़ जाता, तो वह जानता था कि वह विरोध नहीं कर पाएगा। उसे कोड़े मारे जा सकते थे, तलाक दिया जा सकता था या उसके नौकर के सामने कोई और बेइज्जती की जा सकती थी। इसलिए उसने अपने होंठों को भींचा, अपनी भावनाओं को काबू में किया और नौकर से कहा, "तुम्हारी किस्मत तुम्हारे साथ हो। यह बात मनसबदार के कानों तक पहुँचे।"

केशरबाई का सम्मान करना अजीब और अस्वाभाविक लगता था और इसे दिखाना भी शर्म की बात नहीं थी। अगर केशरबाई ने मनसबदार को अपना गुस्सा बताया, तो नतीजे ये होंगे

Machine Translated by Google

वे बहुत गुस्सा होंगे। शायद वे गुस्से में मुझे तलाक दे देंगे। और वे उससे शादी कर लेंगे या उसके बाद, जब भी मैं उसे मांगूंगा, वे उसे मेरी मां के सामने बेडरूम में ले जाएंगे।

अपने दिल की यह आग मैं किसे बताऊँ? अगर बताऊँ भी नहीं तो शांत कैसे होगी? तीन दिन रुके बिना ही मैंने कंचनी को बताकर अपना दिल खोल दिया।

एक-दूसरे को अच्छे से जानने के बाद, नाहिदान ने मुझे यह भी बताया। नाहिदाल केशरबाई की पत्नी थी। हाँ, उसे बेगम साहिब का काम अच्छा लगता था। वह बेगम साहिब से भी नाराज़ थी जो अपने नौकरों से सर्विस लेती थीं और पैसे कमाती थीं। "मैं हमेशा गरम खाना खाती थी, रोज़ दो-तीन हिस्से मीट, सब्ज़ियाँ, मिठाई और दूसरी मीठी चीज़ें। मेरे पास करने को कुछ नहीं था। मुझे हर हाल में मेहनत करनी पड़ती थी। क्या होगा अगर मेरा वज़न नहीं बढ़ा? मुझे पूरे दिन मेहनत करनी पड़ती थी। मुझे अपने मूड के हिसाब से गाना, नाचना और खाना पड़ता था। क्योंकि मुझे स्लिम और फ्लेक्सिबल बॉडी चाहिए? क्या मेरे मन का मेरे खिलाफ़ जाना नैचुरल नहीं है? बेगम साहिब की मुझ पर साँप जैसी नज़र है। वह भी मुझसे नाराज़ है। लेकिन मेरे बिना कोठा कैसे चलेगा? अगर मेरी पत्नी है, तो मैं कोठा कैसे बनूँगा?" वह हँसी, उसकी भौंहें नाच रही थीं।

मैंने हिसाब देखा। चार पत्नियाँ और उसके गुलामों की संख्या। इनके अलावा, सोलह रखैलें। उन्हें 'बंदी' माना जाता था। हालाँकि शरिया के हिसाब से चारों जातियों में पत्नियाँ रखना मना था, फिर भी उन्हें कुछ बंदी रखने की इजाज़त थी। जो मिस्र के लोगों के मज़े के लायक होती थीं, गुलामों के बाज़ार में मन मोह लेने वाली सुंदरियाँ, राजा द्वारा तोहफ़े में दी जाने वाली औरतें, उन्हें रखैल या बंदी बनाकर रखा जाता था। ये नौकर या दासियाँ नहीं थीं। हालाँकि मेज़बान कभी-कभी इन नौकरों को देखते थे और उन्हें उन पर तरस भी आता था, लेकिन उनका मुख्य काम अपने मेज़बानों का ख्याल रखना था। शाम को, रसोइये तरह-तरह के मसालों की छोटी-छोटी प्लेटें लाते थे, जिन्हें नौकरानियों के कपड़ों से ढक दिया जाता था, और नौकरानियाँ लालच से छोटी प्लेटों से उन्हें ले रही थीं, जो भूखी न होने के बावजूद बड़े चाव से परोसी जा रही थीं।

यहां के रसोइयों की सैलरी ज़्यादा थी। जो लोग तरह-तरह के हलवे और दूसरी मिठाइयां बनाते थे, उनकी सैलरी और भी ज़्यादा थी। मनसबदारों का खाना हमेशा पब्लिक किचन में होता था। हर दिन वे एक अलग बेगम के साथ जाते थे। नौकरों, दासियों और कैदियों का बचा हुआ खाना भी गरीबों के साथ बांटा जाता था। यह इतना अलग-अलग नहीं होता था, और क्वालिटी थोड़ी कम होती थी, लेकिन फिर भी यह गरीबों का खाना नहीं था। पब्लिक किचन के बाहर, घुड़सवार और पैदल सैनिक अपना खाना खुद पकाते और खाते थे। दूसरी ओर, अंदर नौकरों का खाना खराब और बेस्वाद क्वालिटी का होता था। एक बार जब उन्हें इस स्वादिष्ट खाने की आदत हो गई, तो सभी को डर लगने लगा कि अगर वे यहां से चले गए तो उनका क्या होगा।

Machine Translated by Google

जनानाय सर्विस में माया समेत चौदह हिजड़े थे। उनमें से एक अबीसीनियाई था। लंबा, काला, घुंघराले बालों वाला। वह जमजत में हिजड़ा था। पाशी से। उसे नज़र नाम का नीग्रो कहा जाता था। वह दूसरे हिजड़ों के काम पर नज़र रखता था, उन पर उनके नाम लिखता था, और अगर कुछ गलत होता, तो वह सीधे ध्यान के पास जाकर उन्हें बता सकता था। वह जनानाय में किसी भी नौकर को ध्यान के पास भेज सकता था। इस शब्द का इतना वज़न था कि यह इस बात का इशारा था कि वह किसी पर भी उंगली उठाएगा। इस वजह से पूरा जनानाय उससे डरता था। यहाँ तक कि बेगमा भी उससे डरती थी। पाँच साल पहले, मठ में एक नौकर एक हिजड़े को धोखा देते हुए पाया गया था। हालाँकि वे दोनों जानते थे कि कुछ नहीं होगा, फिर भी उन्होंने अपना खेल जारी रखा। इस नज़ीर ने उन दोनों को इसी हालत में पकड़ लिया। वे दोनों डर गए थे। सवाल का सिर्फ़ एक ही जवाब था, वह थी मौत! लेकिन इस बार मनसबदार गाँव में नहीं था। वह सैया के साथ दक्कन चला गया था। अब यायिनवादा कौन करेगा? यह महान बेगम सुताना बानू के सामने हुआ था। सुताना बानू बेगम अपने ज़माने की औरत थीं। उनके हाथ में हमेशा माला होती थी, और वह पाँचों वक़्त की नमाज़ कभी नहीं छोड़ती थीं। लोगों पर उनका ही पूरा हक़ था। भले ही वह मोटी थीं, फिर भी मनसबदार ने उन्हें तलाक़ नहीं दिया। उनकी शादी का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता था? वह स्वभाव से दयालु थीं, और वह सबसे ऐसी बातें कहती थीं।

करण ने आगे बढ़कर दोनों चोरों से पूछताछ की। दोनों ने, अपने दोस्तों की नज़रों से बचकर, रिश्वत के तौर पर बचाए हुए पैसे लिए और उसे जननम में गुलाम के तौर पर काम करने के लिए भेज दिया। उसे गुलामों के बाज़ार में बीस रुपये में बेच दिया गया। जननम के आराम चले गए, लेकिन कम से कम उसकी जान तो बच गई, यह सोचकर वे दोनों चले गए।

माया की तरह बारह और लोग भी किरमरिया की तरह ही यहाँ लाए गए थे। वे दो मंज़िल के थे, और चार उसी घर के थे। उन्हें कम उम्र में कैदी बना लिया गया था और बच्चे के जन्म के बाद इलाज करवाने के बाद भी वे बच गए। क्योंकि कम उम्र में बच्चे का जन्म हुआ था, इसलिए उन्हें यह घटना याद नहीं थी और न ही उनके मन में इसे लेकर कोई कड़वाहट थी। इस वजह से वे बिना किसी विरोध के इस समुदाय में रहते थे। बाकी छह, जिनकी उम्र तीस से तैंतालीस साल थी, गौड़ समुदाय से थे। इस इलाके में, जहाँ कोई टैक्स देने वाला नहीं था, माँ-बाप अपने आप बच्चे पैदा करते थे और उन्हें चार साल के लिए बाज़ार में बेच देते थे! वे दलालों के हाथों बिककर यहाँ पहुँचे थे। वे इस घर से आगे कहीं नहीं गए जहाँ वे हर समय शांति से अपना खाना खा सकें। उनके पास अपने नियम-कानून मानने की समझ और दिमाग नहीं है। वे सिर्फ़ खाने, काम करने और सोने के रोज़ के रूटीन में ही खुश रहते हैं।

कुछ हिजड़ी योद्धाओं का भी ज़िक्र है। सुल्तान बबन का वज़ीर

Machine Translated by Google

इमान रेहान, कपूर हज़रदनारी, जो अलाउन का कमांडर था, और खदौशा, जो कुतुबुन मुबारक खिलजी का करीबी साथी था, सभी हिजड़े थे। वज़ीर वजहान मलिक सवार, जो एक हिजड़ा था, उसे सुल्तान महमूद ने जौनपुर के गवर्नर के तौर पर चौयानवामिया मलिक-उस-शाकिया के साथ गद्दी पर भेजा था। जल्द ही, उसने कोल (आज का अलीगढ़) से लेकर बिहार के पूर्वी हिस्से तक एक बड़ा इलाका हासिल कर लिया और सुल्तान उस-शरक के नाम से उस पर राज करने लगा। मुगल काल में, नज़ीर और वजा सारस नाम के कुछ हिजड़ों ने मनसबदार और सुभादार के तौर पर काम किया।

नज़ीर और वजा सरस, जो महल में चले गए थे, उन्हें ऐतमा खान या औबर खान (वसुदरबारी) कहा जाता था। एक ऐतमा खान, जिसने बाबर और मायुन की सेवा की थी, उसे अकबरंदली का सूबेदार बनाया गया। अकबर ने एक और ऐतमा खान को हजारी का मनसबदार बनाया और उसे पैसे के काम संभालने की ज़िम्मेदारी सौंपी। एक और ऐतमा खान को चार हजारी का मनसबदार बनाया गया और गुजरात का सूबेदार बनाया गया। औरंगज़ेब के तहत हिजाज़ के सरदार बटवर खान (मृत्यु 1698) को हजारी का मनसबदार बनाया गया। औरंगज़ेब की सेवा में रहने वाले चालीस अमीरों की लिस्ट, जिनमें से हर एक में कोई न कोई खूबी थी, मनुक यनांदली ने दी है। 'उसने कुदरती मर्दानगी की कमी को पूरा करने के लिए ऐसे काम किए होंगे।' लेकिन अगर वह सैनिक बन भी जाता और वहाँ अफ़सर भी बन जाता, तो भी उसमें सुल्तान या बादशाह की नज़रों में आने की हिम्मत नहीं होती। अगर मैंने अपने दिल और दिमाग से इतिहास का रुख मोड़ दिया होता, और इसका अंदरूनी मतलब समझा होता, तो यह ऐसे कल्चर को सपोर्ट करने जैसा होता जो बीज को तोड़कर नामर्द आदमी पैदा करता है! मुझे क्या करना चाहिए?'

माया के काम पर जाने के दो महीने बाद मैंने सुल्तान बेगम माया से बात की। उनकी इजाज़त के बिना उनसे बात करना बदतमीज़ी थी! अगर कुछ नया होता, तो थोरा बेगम को पता होता। एक तरह से, लोगों के रीति-रिवाज़ वही हैं, हनाज़ीर ने मुझे पहले ही बता दिया था। बोलने और भाषा के तौर-तरीकों की बारीकियाँ समझाने के बाद ही मुझे यहाँ अंदर आने दिया गया।

बेगम साहिब बिस्तर पर टिकी हुई बैठी थीं। बिस्तर पर बैठी नौकरानी ऊपर की तरफ़ आड़े कपड़े से बंधी दो रस्सियों को धीरे से फूँक रही थी। बेगम साहिब, जो जलती हुई अगरबत्ती को इधर-उधर हिला रही थीं, ने मुझे देखा और अपनी उंगलियों से मुझे पास आने का इशारा किया। मैं इज़्ज़त से दूर खड़ा हुआ और झुककर 'सलाम अलेकुम' कहा। उन्होंने गंभीरता से सोचा, "तुम हिजड़े हो, तुमने ऐसा क्यों किया?"

Machine Translated by Google

“बाद में। शेखिकसेन! मनसबदार साहब ने मुझे पहले खरीदा था। फिर वे मुझे इलाज के लिए यहाँ लाए।” मैंने आह भरी।

"तुम पकड़े गए हो। हाँ, सही?"

"हाँ।"

“तुम तो पहले से ही लोगों के धर्म में थे, है न? अगर तुम इस समय इस सच्चे धर्म में आ गए होते, तो यह सब नहीं होता। तुमने देर क्यों की?”

मैं उनसे क्या कहूँ? मैंने इस बारे में सैकड़ों बार सोचा है। मेरे पिता ने पहले सरेंडर क्यों नहीं किया? अगर वे पहले ही इलम चले गए होते, तो आलमगीर हमारे देश में नहीं आते। हम अपने देश के शासक बने रहते या बादशाह के जागीरदार, मनसबदार या सूबेदार बने रहते। हमने कमज़ोर देवताओं और बेजान पत्थर की मूर्तियों पर भरोसा करके अपनी जान गंवा दी। नहीं तो, मैं भी किसी महल में या अपने दो काँटों वाले महल में ऐसा ही एक बड़ा मठ बनाकर खुशी से रहता। यह बात मेरे मन में हज़ार बार आई थी। हर बार, इस कट्टर धर्म के खिलाफ़ गुस्सा उमड़ता था जिसे मैं पीछे छोड़ आया था। बेगम साहिबान्या या निम्नमपुहा, वही गुस्सा भड़क उठता था। बेगम साहिबा ने पूछा, "क्या आप पाँचों नमाज़ें बिना फालतू पढ़े पढ़ते हैं?"

“कोई नियमित बचत नहीं।”

"इसे रेगुलर करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा। कुछ राजा मनसबदार, सूबेदार बन गए हैं। तुम एक राजकुमार हो, है ना?"

बेगम साहिब की सलाह पर मेरे मन में विश्वास पैदा हो गया। मैंने रेगुलर नहाना भी शुरू कर दिया।

मोई के घर में आए मुझे चार साल हो गए थे। माया की ज़िंदगी में कुछ नहीं बदला था। जनाना, इस घर की जान, मेरी ज़िंदगी बन गई थी। न ही कंचनी, घर से निकाला जाना। जो बूढ़ी हो जाती थीं, उन्हें छोटे दरबारियों और मनसबदारों को बेच दिया जाता था। सिर्फ़ वफ़ादारी की भावना से, औरतों को बूढ़ी होने पर भी रखा जाता था और उनकी सेहत का ध्यान रखा जाता था। अगर उन्हें उस उम्र में बेचा भी जाए जब उनका चार्म खत्म हो गया हो, तो उन्हें कौन खरीदेगा?

Machine Translated by Google

लेकिन जो लोग निराशा और नाउम्मीदी से भरे हुए थे, उनका स्वागत नहीं किया जाता था। कुछ लोग बेपरवाह थे। ऐसी औरतें गांव के बाहर सतनपुर नाम की जगह पर जाकर रहने लगती थीं। बादशाह अकबर के समय से ही सतनपुर में आने-जाने वाले लोगों पर नज़र रखने के लिए एक गार्ड रखा जाता था। यहां आने वाले अमीर, मशहूर और अमीर लोग गार्ड को रिश्वत देते थे और यह पक्का करते थे कि उनका नाम लिस्ट में न आए। यह अमीर लोगों के लिए अपने परिवार को मनोरंजन के लिए ले जाने की पसंदीदा जगह थी।

सुल्ताना बेगम चार-पांच महीने में एक बार बादशाहिया बेगम के महल जाती थीं। बादशाहिया के महल से बुलावा आने के बाद भी वहां जाना और वापस आना आसान काम नहीं था। उनकी पालकी एक बड़े रेशमी कपड़े से ढकी हुई थी ताकि कोई उसे देख न सके। उसमें दोनों तरफ छोटी खिड़कियां थीं। अंदर से बाहर का नज़ारा दिखता था, लेकिन खिड़कियों पर पर्दे लगे थे ताकि बाहर से कोई उनकी आंखें न देख सके। पालकी को आगे चार ताकतवर हिजड़े और पीछे चार हिजड़े ले जाते थे। पालकी के चारों ओर तीर और भाले लिए दस हथियारबंद सैनिक थे। उनके पीछे शानदार कपड़े पहने नौकर-नौकरानियां थीं।

एक बार बेगम साहिब ने मुझे अपने साथ चलने को कहा। गेट पर सिपाहियों और दूसरों की जांच की गई और उन्हें अंदर जाने दिया गया। यह पक्का हो गया कि मैं सच में एक हिजड़ा हूँ। मुझे गुलाम की जांच करने के लिए भी रखा गया था। मेन गेट पार करके बाएं मुड़ने के बाद, पब्लिक हॉल में जाने से पहले बेगम साहिब और गुलाम की जांच की गई। एक हिजड़े ने मेरी भी जांच की। पालकी ले जाने वाले आदमियों को पब्लिक हॉल में जाने की इजाज़त नहीं थी। सिपाहियों को गेट पर खड़ा कर दिया गया।

अंदर से जननखाया का महल माया कपाना से थोड़ा बड़ा था। वहाँ अनगिनत गुफाएँ, बड़े और छोटे संगमरमर के महल थे। हर महल एक अलग बेगम साहिब का था। वहाँ छोटे बगीचे, झरने, फव्वारे थे। हर बेगम के पास कुछ नौकरानियाँ थीं। नौकरानियाँ लाल, हरी, पीली थीं, और उनके हाथ चमकते सोया सॉस से सने हुए थे! इससे मुझे लगा कि ये नौकरानियाँ राजकुमारियाँ थीं। मैं इतने सालों से इस महल में रह रहा था और मैं नौकरानियों और मालकिनों को उनके चेहरे देखकर पहचान सकता था, लेकिन फिर भी!

बादशाह औरंगजेब की तीसरी रानी सुल्ताना बेगम उनसे मिलने उदयपुर महल आई थीं। उन्होंने भी मिलने के लिए मैसेज भेजा था। बादशाह के पर्सनल अकाउंट में एंटर करने के बाद, मुझे यह जानकारी इस तरह समझ आई,

उदयपुर महल गुजरात की एक गुलाम लड़की है। पहले आओ

Machine Translated by Google

औरंगजेब ने प्रजा के बड़े भाई दारा शुको को अपने दरबार में लाया। राजा की चाल के बाद औरंगजेब प्रजा से ऐसी खूबसूरत औरतों को अपने दरबार में लाया और उन्हें अपने जाल में फंसाए रखा! महल ने भी हालात को पहचानकर अपना मन बदल लिया। आज भी बादशाह अपनी कोई बात बिना कहे नहीं जाने देते। हालांकि वह कभी-कभी बादशाह और दूसरों के साथ मुश्किल बर्ताव करते थे, लेकिन मैंने यह भी देखा है कि जो बादशाह खुद को भी दिल से नहीं लगाते थे, वे बिना किसी झिझक के दरियादिली से पेश आते थे।

मुगलों और उनके पुरखों का रिवाज था कि दूल्हे से मिलने जाते समय वे अपने साथ कुछ न कुछ ले जाते थे। जब दूल्हा अलविदा कहता था, तब भी कोई न कोई उसे ऐसा ही तोहफ़ा देता था। हर मुलाक़ात में सुल्ताना बेगम मोतियों, माणिक, मोतियों और मोतियों के हार से उदयपुर महल को देखती थीं। लेकिन तोहफ़ा कितना भी कीमती क्यों न हो, अगर पहना भी न हो, तो भी वह बादशाह की आँखों के लिए एक नज़ारा होता था, प्यारी रानी, जो रानी से भी पहले एक खास जगह रखती थी! एक बार, जब मैं उनसे मिलने जा रहा था, तो मैं कमरे के बाहर खड़ा था। मुझे अंदर बुलाया गया और उन्हें देखने को कहा गया। मैंने कहा, "मैंने महल देखा है।"

सुल्ताना बेगम माया की तरफ मुड़ीं और बोलीं, "मैंने महल साहब से तुम्हारे बारे में बात की थी। वह तुम्हें पसंद करते हैं। मैंने तुम्हें तोहफ़े में दिया है। महल साहब की हमेशा ईमानदारी और सच्चे दिल से सेवा करना। उन्होंने जो ज़हर तुम्हें दिया है, वह तुम्हारे मन में अमृत की तरह रहे।" महल साहब ने भी मेरी बात मान ली और सिर झुका लिया। उनके शरीर के हर हिस्से जैसे गर्दन, कान, नाक, सीना, माथा, धड़, हाथ, उंगलियां और कमर पर मोती, चांदी और सोना चमक रहे थे। जैसे ही उन्होंने सिर झुकाया, उनमें से कई मोती ऊपर उठ गए।

सुल्ताना बेगम, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं दो दिन के लिए कोई खास हिजड़ा हूँ, मतलब मैं कोई खास हिजड़ा हूँ। मुझे ऐसा भी लगा जैसे मैं मोई की बोरिंग भीड़ के बजाय बादशाह के बड़े ग्रुप में आ गया हूँ। वहाँ हर कोई जाना-पहचाना था। हर दिन एक जैसा था। जैसे-जैसे हम एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानने लगे, बेगम भी अपनी बातें दासियों और कंचनियों से शेयर करतीं। लेकिन मैं एक ही तरह का दुख सुन-सुनकर थक गया था। मैं सब्र से उनकी बातें सुनता रहा। मुझे माया पर भी पक्का यकीन था कि मैं किसी और को नहीं बताऊँगा।

बादशाह की जेल एक बहुत बड़ी जेल थी। यह एक शहर जैसा था जिसमें घूमा जा सकता था! लेकिन यहाँ एक बात मुझे खास लगी। पूरी जगह बातचीत और विचार-विमर्श की जगह थी। जो भी चर्चा होती थी या जो भी फैसला होता था, वह दवान-ए-आम और दवान-ए-खास में होता था। वहाँ का माहौल इतना गहरा था कि बाहर से समझना मुश्किल था।

Machine Translated by Google

भले ही यह एक कहानी थी, लेकिन वहां की खबर किसी तरह पब्लिक तक लीक हो गई। हालांकि वहां यह नियम था कि कोई भी किसी से पॉलिटिक्स के बारे में बात नहीं करेगा, फिर भी कुछ ग्रुप्स में इसके बारे में फुसफुसाहट सुनी जा सकती थी। और जल्द ही, वे फुसफुसाहटें पूरी कम्युनिटी के हर कोने तक पहुंचने लगीं।

Machine Translated by Google

7

शायद यह मेरी गलती है! पत्नी ने कहा, "उसे अपने कपड़े धोने चाहिए, कपड़े धोने चाहिए, खाना बनाना चाहिए या ये सब काम किसी और से करवाने चाहिए।" उसकी हवस शांत होनी चाहिए, और वह यह काम किसी और से नहीं करवाना चाहता। कोई भी पत्नी इसके लिए तैयार नहीं होगी। लेकिन मैं कैसे समझूँ कि यह सब उसकी पत्नी का काम है? दोनों की बनती है। आजकल, उसे खाना भी बनाना चाहिए, उसके कपड़े धोने चाहिए, और ये सब काम उसके लिए करने चाहिए, और काम करने वाली पत्नियों के साथ ऐसा ही होता है। चलो बस चलते हैं। अगर मुझे कभी-कभी उसकी हवस शांत करने के लिए बगलू जाना पड़ता है, तो मैं कभी-कभी नरसापुर क्यों नहीं आ जाती? दरवाज़े पर एक कार है। दो घंटे का रास्ता है।

इस गांव के माहौल में यहां आना अजीब लग सकता है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं है। हो सकता है सुवती ने ऐसा किया हो। लेकिन वह चार-पांच बार आया-गया है, इसलिए सबको इसकी आदत हो जाएगी। मुझे लगता है कि भले ही वह ऐसा कहता हो, लेकिन असली वजह यह नहीं है। मुझे यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं कि मैं सिर्फ अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए वहां जाऊं, बिना किसी और इमोशनल वजह के। इससे दोनों तरफ से गड़बड़ हो गई है।

इसी गुस्से की वजह से मैंने इस मुद्दे पर इस डॉक्यूमेंट्री के लिए स्क्रिप्ट भी नहीं लिखी। इतना ही नहीं, मैंने इस शॉर्ट फिल्म के लिए भी स्क्रिप्ट लिखी, जो मैंने रामामुथु से ली थी, और मैंने उसे बनाया! 'तुम्हारी शॉर्ट फिल्म, कुछ दूसरे शानदार कलाकारों की तरह, सच को दबाने, झूठ को सामने लाने का एक आम काम बन गई है। यह हिंदुस्तानी और पश्चिम ने नहीं किया है, सिर्फ इस देश में नहीं; यह अफगानिस्तान, अरब, तुर्कमेनिस्तान, इराक, ईरान, मिस्र और दूसरे देशों में भी किया गया है। एक बार नहीं, कुछ बार नहीं, यह हजारों बार किया गया है, इसे ढोल बजाकर पेश किया गया है। इसे छिपाकर पेश किया गया है। मैं पॉलिटिशियन से रिश्ता तोड़ने के बाद वैसा लिखने के लिए तैयार नहीं था जैसा तुम चाहते थे। मुझे लगा कि यह धोखा है। राममुथु ने तुम्हें वैसा नहीं दिया जैसा तुम चाहते थे। उसने तुमसे जो चाहा, ले लिया। ठीक है। तुम्हें सरकार से बहुत सारा पैसा मिला है। तुम्हें चार-छह दूसरी नौकरियां भी मिली हैं।'

क्या ज़रूरत पड़ने पर जाति कठोर हो गई? लेकिन वो माँ और पिताहीन कहाँ हैं जो साथ नहीं हैं?

Machine Translated by Google

नरसापुर में रहने के बाद मैं एक साल तक वृपम्पा नहीं गया था। गेगावा में कोई एजेंट नहीं था जो वृप ला सके। एक बार मैं बगलू गया और पेपर का दीवाना हो गया। मैंने थोड़े समय में इतने सारे पेपर पढ़े और इम्प्रेस हुआ। मुझे लगा कि मैं अतीत का इतिहास पढ़ने में इतना डूब गया हूँ कि मैं आज के इतिहास को भूल रहा हूँ। वापस आते समय, मैं कुनिंगल बस स्टैंड पर पेपर एजेंट से मिला और पूछा कि क्या हर दिन तीन अखबार और एक इंग्लिश पेपर नरसापुर पहुँचाया जा सकता है। मैंने उससे पूछा, "नरसापुर का बस स्टैंड कहाँ है? वहाँ बालाजी मार्केट है। मैं तुम्हें बस से वहाँ भेज दूँगा! मैं सुबह 3:30 बजे तक वहाँ पहुँच जाऊँगा।" मैंने तुरंत उसे आवाज़ दी और बस पकड़ ली।

हर दिन, जब मैं अखबार पढ़ना शुरू करता, तो एक गोली आती। तीन साल पहले, रामजंभूमी की जगह पर बाबरी मस्जिद गिरा दी गई थी। इस घटना को ज़िंदा रखने के लिए, अलग-अलग नेताओं, लेखकों, बुद्धिजीवियों और कलाकारों को लड़के से ज़्यादा लड़की में दिलचस्पी थी। यह वह दौर था जब भारत का हर नागरिक खुद को प्रोग्रेसिव या पिछड़ा हुआ समझता था। ऐसा लगता था कि हर कोई इसी जगह पर मस्जिद बनाने का सपोर्ट करने और प्रोग्रेसिव बनने की जल्दी में था। इस जगह पर मंदिर बनाने का आइडिया देने वालों को 'रंभा' कहा जाने लगा था।

एक दिन, सभी अखबारों के पहले पेज पर एक खबर छपी। अंदर के पेज पर भी वही खबर दोहराई गई। 'बाबरी मस्जिद गिराए जाने के तीन साल बाद भी, हमारे देश में क्रिमिनल अभी भी इन्वेस्टिगेशन और लीगल सिस्टम का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं और क्रिमिनल्स की तरह काम कर रहे हैं। इसके विरोध में, कर्नाटक के राइटर और आर्टिस्ट इस साल 6 दिसंबर को बगलुया उघा थिएटर में 'वीट' नाम का एक नाटक पेश करने जा रहे हैं। इसे सोच-समझकर लिखने वाले प्रोफेसर राममुथ ने लिखा है, इसे फिल्म डायरेक्टर कांतराज हेमाडी ने डायरेक्ट किया है, इसे तेजनाथ ने डायरेक्ट किया है, इसमें नेपाय, अनुराधा, मीना, वक्त जैसे जाने-माने आर्टिस्ट शामिल हुए हैं, और प्रोफेसर शैरी का आइडियोलॉजिकल सपोर्ट है...' ये वो विचार हैं जो शैरी ने कला और आर्टिस्ट की सामाजिक चेतना और ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी पर एक मीटिंग में पेश किए।

विचारक राममुट, कांतराज हेमाडी और इस ग्रुप के बाकी सभी लोग माया के जान-पहचान वाले थे। मैं भी इस ग्रुप से जुड़ा था। हिंदू इस जगह को 'रामजंभूमी' कहते थे और मुसलमान 'बाबरी मस्जिद' के नाम से इस झगड़े को जलाने में मदद करते थे, जिससे माया जल्दी ही आकर्षित हो गई। मेरे लिए यह सोचना मुश्किल नहीं था कि इस टॉपिक पर नाटक पेश करते समय वे कौन सी टेक्नीक इस्तेमाल करेंगे और किस बात पर ज़ोर देंगे। साहित्य, कला, आंदोलन और कम्युनिकेशन के बीच बहुत करीबी रिश्ता है,

Machine Translated by Google

बीते समय को याद करते हुए मुझे लगा कि यह इस तरह से लिखे गए नॉवेल को फिर से देखने का मौका है – इसे नॉवेल भी कहा जा सकता है, इसे एक सिंपल कहानी भी कहा जा सकता है, यह एक अच्छी कहानी भी है – और जो हो रहा था उसे फिर से देखने का मौका है। आमिर से मिले हुए मुझे तीन महीने हो गए थे। वहाँ ज़्यादा समय नहीं लगने वाला था।

बगलू पहले घर गया। उसने अमीनाबानू से कहा, “साहब नाटक देखने गए हैं।” जब वह मुझे दिया हुआ टी-रेड टॉट खा रहा था, तो मैंने उससे कहा कि मैं डिनर करने जा रही हूँ। फिर वह ऑटो लेकर स्टेज पर गया। भीड़ बहुत थी। मैं उनमें से कई लोगों को जानता था। जब मैं एक तरफ सीढ़ियों पर अकेला बैठा इधर-उधर देख रहा था, तो कोई माया के पास आकर बैठ गया। जब मैं इधर-उधर देख रहा था, तो उसने उस पर हाथ रखा और कहा, “रिज्या, है ना?” “मैं तुम्हें कुछ देर से देख रहा हूँ। मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ। तुम इतनी शर्मिंदा क्यों हो?” मैंने भी उसे पहचान लिया। रमाला, एक इंग्लिश लेक्चरर और ड्रामा करने वाली जो B.E.S. कॉलेज में पढ़ाती है। माया भी उसी उम्र की थी।

"यह कैसे हो सकता?"

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम बंगला छोड़कर गाँव क्यों चले गए। कौन जानता है कि तुम गाँव में कैसे रहते हो! मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता। मेरा परिवार गाँव में है। वहाँ की धूल, कीचड़, गंदगी, मक्खियाँ, गंदी हालत का तो कहना ही क्या। मैं वहाँ एक बार गया था और दो दिन रहा। टॉयलेट? अरे नहीं! मेरा पेट फूलने लगा। आखिर में, बगुला भाग गया। तुम वहाँ क्या कर रहे हो?”

“वहाँ और भी लोग रहते हैं, है ना?”

“टॉयलेट से नहीं, यार। देखो तुम्हारे बाल कैसे हैं। ठीक से बॉब नहीं किए हैं। डाई नहीं किए हैं। ऐसा नहीं लग रहा कि तुमने कई दिनों से अपने चेहरे पर मेकअप लगाया है। कोई फेशियल नहीं। तुम वहाँ क्यों गए?”

रमाला का व्यवहार पहले से ही बहुत लापरवाह था। वह सांस लेने से पहले ही सोच रही थी कि आगे क्या करना है। इतनी बेपरवाही से, मैंने सोचा, "तुमने इस नाटक में हिस्सा क्यों नहीं लिया?"

“ओह! क्या तुम राममूत का नेचर नहीं जानती? वह अपनी बात सुनने वालों को बाहर निकाल देता है। मैं आज उसे सुनने के लिए इस जगह पर क्यों आई हूँ? एक और बात। तुम्हें पता होना चाहिए, वह! इसका पूरा विज़न तुम्हारा है, मेरी प्यारी।

Machine Translated by Google

होटल दिखाए गए, वे एंटी-प्रोपेगैंडा नहीं करते! इसलिए टिथंस में राजा हेमद का नाम पड़ा।"

"इस नाटक के लिए पैसे कहाँ से आए?" मैंने धीमी आवाज़ में सोचा।

"आप इनर सर्कल से हैं। क्या आपको नहीं पता?" "आपने मुझे

बताया क्योंकि मैं अभी फील्ड में हूँ, है ना?"

"क्या आपने हंजे अमीर को छोड़ दिया?"

"शिट! मैं अब इनर सर्कल में नहीं हूँ, बस इतना ही मतलब है। क्या तुम्हें पता है? मुझे बताओ।"

उसका हाथ अपने हाथ में लेकर और राज़ रखने की कसम खाते हुए, आसिया ने ज़ोर

दिया। "ये सब बातें। शाना जानती है। वे चाहे जो भी तय करें, पैसा कहीं न कहीं से तो आता ही है।"

उसी समय, तुरहियों की आवाज़ सुनाई दी, जो नाटक के शुरू होने का इशारा थी। स्टेज पर लाइटें धीमी हो गईं, और स्टेज रोशन हो गया।

यह नाटक हाल ही में शुरू की गई वैचारिक नाटक तकनीक का उपयोग करके लिखा गया था। राममूत्र को कभी भी रचनात्मक नाटककार नहीं माना गया। एक निश्चित विषय और एक अलग स्क्रिप्ट लेकर नाटक तैयार करना असंभव है। मंच पर, पाँच लोग, एक इतिहासकार, एक महामाया गांधी, एक हिंदू नेता, एक महिला और एक दलित, वकीलों की वेशभूषा में एक पंक्ति में खड़े थे। अदालत में जज के आने की घोषणा की गई और वह आ गए। हंगामा हो गया। इसके बाद, उन्होंने कहा, "आरोप लगाए जाने चाहिए।" मंच के दूसरी ओर, पुलिस ने लाल कृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, गिरिराज किशोर और अशोक संघ को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया। जज ने पहला आरोप पढ़ा।

"मुख्य आरोपी! तुमने इस आदमी को मारकर सौ गुना ज़्यादा पैसे पाने की कोशिश की है। अब बाबर की बनाई मस्जिदों की दीवारें हटाकर तुमने इतिहास की दीवारों को सामने ला दिया है। क्या इस तरह इतिहास की दीवारें हटाकर नया इतिहास बनाना मुमकिन है? चलिए, इस नतीजे पर पहुँचते हैं।"

इस दौरान, दस से पंद्रह लोग आकर यायुमुता के पीछे चुपचाप खड़े हो गए। गुफा के पीछे, पूंछ और मास्क वाले कुछ बंदर थे।

Machine Translated by Google

भेष बदले हुए लोग खड़े रहे।

बाद में हिंदू नेता के वकील ने अपने आरोप पेश करते हुए कहा, "सहनशीलता हमारे धर्म का सार है। आप हिंदुओं को राम के नाम पर नफ़रत फैलाने वाले लोग कैसे मान सकते हैं? इसके अलावा, आपने हर इंसान के दिल में रहने वाले राम के आध्यात्मिक सार को एक भौतिक प्राणी के लेवल तक गिराने को भी पाप बना दिया है।"

इसके बाद महामाया गांधी के भेष में वकील ने कहा, “नाथुराई ने माया को गोली मारी थी, इस बार मैंने इस राम को मारा, वह माया की बाहों में था। ऐसा राम मंदिर बनाकर तुम उसे भी गुलामी में डाल रहे हो। जिसने मुझे मारा, वह अब तुम्हारी जान ले रहा है और माया भाइयों के घर उजाड़ रहा है। तुम भी अपने अंदर झाँककर देखो। यही तुम्हारे लिए सही रास्ता है। यमुना तुम्हें चाहे कोई भी रास्ता दिखाए, मैं तुम्हें मारने की कोशिश करूँगा।”

चौथा बंदर-वकील था।

“आप भी अपने धर्म को फिर से ज़िंदा करने के लिए राम को आगे ला रहे हैं। इसके पीछे का कारण भारत में सामने आ गया है। पटिया के नाम पर राम ने सीता के साथ जो अन्याय किया, वह जब तक रहेगा, तब तक चलता रहेगा। जबकि भूमिकंदक्षेत्र के आधे लोग इस बात का विरोध कर रहे हैं कि जब तक यह राम संस्कृति खत्म नहीं होगी, तब तक औरतें शादी नहीं कर पाएंगी, आप भी वही संस्कृति इन लोगों पर थोपने की कोशिश कर रहे हैं। इस देश की औरतों के साथ जो अन्याय हुआ है, वह दुनिया के किसी और समाज की औरतों के साथ नहीं हुआ है। इसे रोकिए।”

इस पर नाटक में मौजूद सभी लोग चिल्लाए, "अरे!" "अरे!" यायमुत ने टेबल पर दस्तक दी और कहा, "चुप हो जाओ! अरे!"

आखिर में दलित वकील आगे आए और कहा, “शुंटापियाकेली जैसे लोगों को मारने वालों का साथ देकर और राम मंदिर बनाकर, आप भी इस देश के मूल निवासियों, दलितों को और कुचलने की संस्कृति को जारी रखने की योजना बना रहे हैं। आपको भी मेरे इस आरोप का खंडन करना चाहिए।”

सारे इल्ज़ाम इस तरह से लिखे गए थे कि वे मज़ेदार लगें और हंसी पैदा करें। कहानी से शुरू हुआ, और हर नाटक में क्रिटिक्स हंसे। उमा भारती, जो हमेशा अपने गुस्सैल पति को परेशान करती थीं, बहस के बीच में हंस पड़ीं, “आप एक अकेली औरत होकर राम का साथ कैसे दे सकती हैं जो आपके साथ नाइंसाफ़ी कर रहा है?”

नाटक देखकर मुझे राहत महसूस हुई। तीन साल पहले मैंने ऐसा नाटक कभी नहीं देखा था।

Machine Translated by Google

मैं इसकी तारीफ़ करता। शायद मैं इसे डायरेक्ट करता, इसमें एक्टिंग करता। लेकिन तब भी मैं ऐसी चीज़ की बुराई करता। अब, मेरा मन किया कि चार-छह बार उठकर चला जाऊँ, लेकिन फिर भी मैं काँटे के आगे हार न मानने के पक्के इरादे के साथ वहाँ बैठा रहा। आख़िरकार, मुझे समझ आने लगा कि कौन काम करने आया है।

डॉ. शाई कहीं नहीं दिख रहे हैं। हेहे, हमेशा ऐसा ही होता है! मुझे सब कुछ करवाना है, लेकिन आसिया कारकोल कुछ नहीं कर रही हैं। मैं वहां मौजूद नहीं रहना चाहती। आमिर चार लाइन नीचे, दाईं ओर बैठा है। मैं उसे तभी देखूंगी जब वह घूमेगा। वह भी तब जब वह ध्यान से घूमेगा। नहीं तो, वह मुझे पहचान भी नहीं पाएगा। नाटक खत्म होने के बाद, मैंने उसके साथ घर जाने का फैसला किया और नाटक फिर से देखने की कोशिश की।

तमिल राज में इस तरह का इल्ज़ाम लगाया जाता था; इस आदमी ने मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती बनकर नाटक को धमाकेदार तरीके से खत्म किया। नाटक में इन लोगों के साथ-साथ दूसरे लोगों ने भी बड़ी जीत की तरह ताली बजाई। उनमें से कुछ आमिर को बधाई देने लगे। आमिर, जो इस मूड में थे, मुझे तुरंत पहचान नहीं पाए। मुझे पहचानने के बाद भी उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं आई। मैंने कहा, "चलो साथ में घर चलते हैं।" इस पर, सात-आठ लोग सोचने लगे, "यह क्या है मैडम? आप हाल-फिलहाल में दिखी नहीं हैं। मुझे लगा आप बगलू के बाहर रह रही हैं। क्या यह सच है?"

कार चलाते समय आमिर की बोलती बंद हो गई थी। मुझे भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। घर पर हाथ धोते समय मैंने सिंक में शीशा देखा। रमा हँसी, पर यह सच नहीं था। माया के सिर के बाल धागे की तरह घने थे और उलझ गए थे। उसका चेहरा भी सूखा था। भले ही वह गाँव में रहती थी, पर बाल डाई करने या दिन में दो बार मेकअप करने में कोई बुराई नहीं थी। पर उसे इसमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं लग रही थी। क्यों? क्या यह बात कि उसे इतिहास में दिलचस्पी थी और एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इनका एक-दूसरे से कोई लेना-देना हो सकता है?

हम डाइनिंग टेबल पर एक-दूसरे के सामने बैठे और खाना शुरू किया। इसके लिए मटन ग्रेवी थी और माया के लिए दाल सांभर। मैंने बात छेड़ी, "तुम इतनी खराब डाइट क्यों लेने को तैयार हो?"

यह परेशानी के लायक नहीं है, उसने यानमाया को मतलब से देखा।

"मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ!" मैंने उसकी ओर देखते हुए सोचा।

Machine Translated by Google

"कौन सा अथानासियस को बुरा लगा?"

“इसमें क्या अच्छा था? न तो कंपोज़िशन में मेहनत, न ही प्लॉट। इस पूरी कहानी में, बाबर से जुड़ी मस्जिद को गिरा दिया गया, बस यही कामयाबी थी। असली मंदिर की जगह पर वही मंदिर गिरा दिया गया, और उन्हीं पत्थरों और ईंटों से मस्जिद बना दी गई, बस इतना ही।”

"उन्होंने असली चम्बाउ मंदिर पर कब्ज़ा कर लिया, उन्होंने यहाँ-वहाँ थोड़ा बदलाव किया और इसे राम मंदिर बना दिया, यह ठीक है!" आमिर गुस्से में रहे।

“यह आपके JNU कोड इतिहासकारों द्वारा बनाया गया अलगाववाद है। उसी अलगाववाद को आज के नाटक में कोड इतिहासकार वकील राममुट ने उजागर किया है। वह उन लोगों में से एक है जो इतिहास को शुरू से पढ़े बिना इतिहास पर कला बनाते हैं। पिछले तीन सालों से, दिन में बारह घंटे, मैं इतिहास और उस पर आधारित किताबें पढ़ रहा हूं। माया अपजानी ने पिछले बाईस सालों से जो कदम उठाए हैं, वे भी माया पर आधारित हैं। संगम में लिखा है कि हिंदुस्तान, खुरातान, सांख्य जैसी जगहों पर मूल बौद्ध मंदिर मुसलमानों द्वारा नष्ट नहीं किए गए थे। क्या आप जानते हैं? बुखारा, समरकंद, खोडन, बाव, बामियान, काबुल, भानी, कंधार, बेरम, जलालाबाद, पेशावर, चरस, ओहद, तशीला, मुटन, मीर पुखास, नगरपाकर, सियालकोट, येनगर, कन्नौज, अवती, अयोया, वाराणसी, सारनाथ, नालंदा, विमशील, वैशाली, राजगीर, ओडाटन पुरी, चुरट, चंपा, पहाड़पुर, जगल, जाजनगर, नागाजुनकडा, अमरावती, कांची, अरसमु, दवेग्री, भच, वल्लभी, क्या इगमार, खंभात, पाटन, जालोर, चांवटी, इभानमल, विवान, नागोर, ओइस्यान, अजमेर, बैराट, विलियर, चंदेरी, मांडू, धार के जैन और बौ देवों को एक साथ खत्म करने वाली लड़की थी? एक JNU रिसर्चर तो कहानियां बनाकर यह यकीन दिलाता रहेगा कि शिवराज ने ऐसा किया, है ना?” सीताराम गोयल की 'हिंदू मंदिर: उनका क्या हुआ?' इस चैप्टर के दो वॉल्यूम पढ़ने के बाद, पेज पर लिखी लाइनें मेरे दिमाग के सामने पिघल गईं।

आमिर ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। बात करने के लिए कुछ भी नहीं था। मैं पिछले तीन सालों से इतिहास पढ़ रहा हूं, और मुझे लगता है कि उनका उत्साह खत्म हो गया है।

खाने के बाद, मैंने टेबल लगाया, दांत ब्रश किए और सोने चला गया। काफी देर बाद भी आमिर नहीं आया। यह पहली बार नहीं था जब मैं अपनी मां से अलग कमरे में सोया था। अगर मैं उसे समझाने भी जाता, तो वह वहीं होता। यह असंचाल की बेइज्ज़ती जैसा लगा, और शर्मिंदगी भी। फिर भी, मैंने सोचा, कम से कम हमें आना तो चाहिए।

Machine Translated by Google

मैं इस बेइज्ज़ती से कैसे छुटकारा पाऊं? मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह किस कमरे में है। मैंने अलमारी में देखा। वह वहां नहीं था। मैं गेट पर गया। दरवाज़ा थोड़ा खुला था। हम्म! लगता है वह यहीं सो रहा है। उसे अभी तक नींद नहीं आई होगी।

मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे दरवाज़ा तोड़कर अंदर जाना चाहिए? मैं सोचूंगा, मैं वहां सो रहा हूं, तुम यहां क्या कर रहे हो, क्यों? नहीं! सब एक ही है! दुविधा फिर वहीं खड़ी हो गई। इससे मुझे गुस्सा आ गया है और मैं चुपचाप इसके रास्ते पर चलकर यहां आ गया हूं। यह मेरी अपनी गिरावट है। इसे खींचकर मैं खुद को और कितना नीचे खींचूंगा?

मैं बस पलटी और बिस्तर पर लेट गई, एक तरफ दूसरी तरफ। मुझे याद आया कि रमाला से हाथ धोते समय मैंने शीशे में कैसा देखा था। क्या यह इस बदसूरत व्यवहार का कारण हो सकता है? चालीस से ज़्यादा उम्र की महिलाओं के साथ ऐसा ही होता है। अपनी सुंदरता बनाए रखने की जद्दोजहद, बालों को रंगना, वज़न बढ़ने का खास ध्यान रखना, बाथरूम में तराजू रखना, हर आठवें दिन नर्सरी जाना। और क्या होगा अगर मैं खुद को दिखाने की कला में लग जाऊं! और अचानक सारे तरीके छोड़ दूं, डाली? यह खुद को आकर्षक बनाना उसके आकर्षण के लिए कुछ खास नहीं करता। क्या यह एक आदमी का बेफिक्र काम है? क्या यही वह चीज़ है जो उन्हें आकर्षित करती है? लेकिन उन्हें पति-पत्नी जैसी चीज़ों से क्यों जूझना पड़ता है? कोई भी बेडरूम के अंधेरे, अंधेरे कमरे में अपनी अंदर की भावनाओं और विचारों को क्यों शेयर करना चाहेगा? उसने कहा। मुझे उसके पास जाकर यह हल निकालना चाहिए। पति-पत्नी को क्या हो गया है?

आदर करना?

दरवाज़ा पहले से ही खुला था। उन्होंने उसे धक्का देकर खोला और अंदर चले गए। हल्की रोशनी में वह सोया हुआ लग रहा था। वे अंदर गए और उसके पास बैठ गए। उन्होंने अपने हाथ उसकी छाती पर रखे और सोचा, “तुम यहाँ क्यों सोए?”

वह बोला नहीं।

“बोलो! मुझे पता है। क्या तुम नाराज़ हो कि मैं यहाँ अक्सर नहीं आता? ओह, एक और किताब, एक और किताब, बस इतना ही। वैसे भी, मैंने एक नॉवेल लिखना शुरू कर दिया है। मैं एक और साल में अपनी रीडिंग और राइटिंग खत्म कर लूँगा। तब तक, चाबी लो। क्या तुम कभी-कभी आते-जाते नहीं हो? तुम भी एक आर्टिस्ट हो। मैं तुम्हें इस मूड के बारे में क्या बताऊँ?” फिर भी वह कुछ नहीं बोला।

“तुम कितने गुस्से में हो? गुस्सा करना बंद करो! अब तुम कोई खरपतवार नहीं हो।” फिर मैंने अपने होंठ उसके होंठों पर रखे और उसे ज़ोर से किस किया। वह अभी भी ठंडा था। कुछ समय शांति में बीता।

Machine Translated by Google

चला गया। फिर मैंने मन में सोचा, “इतना गुस्सा होने की क्या वजह है? मुझे बताओ। अगर मैंने कुछ गलत किया है, तो मैं उसे सुधारने के लिए तैयार हूँ।”

"आजकल आप इलम से इतने नाराज़ क्यों हैं?"

"गुस्सा? वह इससे बाहर निकलने का रास्ता खोजना चाहता था, लेकिन वह अपने दिल में गुस्सा या लालच नहीं रख सकता। मैं तुमसे कसम खाता हूँ, मेरे दिल में कोई गुस्सा नहीं है।"

"तो आप कह रहे हैं कि यह यहाँ टूटा, वहाँ टूटा, इस दिशा में टूटा, उस दिशा में टूटा।"

“अगर कोई मुझे दिखा दे कि उसने इसे तोड़ा है, तो मैं भी करने को तैयार हूँ। भले ही मैंने इसे तोड़ा हो, इतिहासकार जगह, संख्या और दूसरी डिटेल्स का रिकॉर्ड रखते हैं। भाइयों के अवशेषों के सबूत मैप से अच्छी तरह मेल खाते हैं। इस बीच, हिंदुओं ने अपनी ही किताबें तोड़ दी हैं, और शैवों ने इतिहासकारों का एक गैंग बना लिया है जो लगातार वैष्णवों के बारे में और वैष्णवों ने शैवों के बारे में झूठ बोलते रहते हैं। मैं तुम्हें किताबें लाकर देता हूँ। चुपचाप बैठकर उन्हें पढ़ो। सब कुछ पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। जितना मैं पढ़ सकता हूँ, उतना पढ़ो। तुम्हें भी सब कुछ समझ में आ जाएगा।”

“नहीं! तुमने एक मुस्लिम से हाथ मिलाया। तुम वहाँ से बाहर नहीं आना चाहती।” फिर वह यानांकुस की ओर मुड़ी।

“अरे, तुम क्या कर रहे हो? सत्य की खोज और शक्ति की खोज के बीच का अंतर समझो।”

इस पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैं कुछ देर वहीं बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "मुझे नींद आ रही है। चलो!"

मैं इसके बारे में और सोचना नहीं चाहता था।

जब हम एक ही बिस्तर पर सो रहे थे, तब भी माया के मन में आमिर का कोई ख्याल नहीं था। वह उन पॉलिटिकल पहलुओं के बारे में सोच रही थी जो ऐतिहासिक कहानियों पर आधारित लिटरेचर बनाते समय ज़रूरी होते हैं। टीपू सुल्तान के जीवन पर बनी फिल्म और नाटक जो हमने अभी देखा है और शाम को देखा गया नाटक 'वीट', दोनों में कोई बुनियादी फ़र्क नहीं है। ये दोनों कलाकृतियाँ कंपोज़िशन के मामले में एक जैसी हैं। लेकिन उन्होंने 'वीट' को भी चारे का ज़रिया बनाया है। लिटरेचर का विषय ऐतिहासिक हो या आज के ज़माने का, लेखक का पैशन सिर्फ़ पॉलिटिकल होना चाहिए। चाहे वह किसी विषय पर की गई रिसर्च हो या माया स्क्रिप्ट पर आधारित हो!

Machine Translated by Google

जब मैं गहरी नींद में सो गया तो यह विचार मेरे मन में मजबूती से बैठ गया।

Machine Translated by Google

8

जब खोजा और मोइनू को जाना भेजा गया, तो किसी ने मुझे पत्नी की तरह इस्तेमाल नहीं किया। इससे माया का गलत इस्तेमाल बंद हो गया। मुझे लगा था कि खोजा का ऐसा इस्तेमाल नहीं होगा। लेकिन यह सच नहीं था। असलियत यह थी कि मोइनू को खोजा का इस्तेमाल करना पसंद नहीं था। सिवाय इसके कि वह एक जवान औरत थी। बेगम, कंचनी और नौकरानियां मिलाकर, कम से कम सौ थीं। इसके अलावा, बाकी सब माया जैसे थे या खोजा के ही घर में थे। इस वजह से, उसके साथ गलत व्यवहार करने वाला कोई नहीं था। जब बादशाह जाना गए, तो उदयपुर महल के अधिकारी माया के लिए खास तौर पर लालची थे।

बादशाह के दरबारी तुर्किक और फ़ारसी भाषाएँ इस्तेमाल करते थे। राजकाज की भाषा फ़ारसी थी। वज़ीर, फ़ौजदार, कोतवाल सभी सरकारी भाषा बोलते थे। हालाँकि बादशाह, जिनका सेना से संपर्क था और जो सीधे सैनिकों से बात करते थे, कुछ हद तक लोकल भाषा समझते थे, लेकिन बादशाह की भाषा फ़ारसी या अरबी थी। बेगमों और कंचनों से उम्मीद की जाती थी कि वे बादशाह से यही भाषा बोलें। हालाँकि इन सालों में मैं कुछ हद तक फ़ारसी समझ गया था, लेकिन मुझे इसके मतलब की बारीकियाँ और पवित्रता समझ नहीं आई। जब मैंने अपनी बात सुनी, तो मैंने सोचा, "यह बादशाह मेरी जाति का नहीं है, उसने अपना नाम बदल लिया है या लोकल है।" एक खास आकर्षण था कि कोई भी मुझसे आसानी से प्यार नहीं करेगा, भले ही मेरा रंग, नाक और आँखें अलग हों। फिर भी, मैं एक सेकंड-क्लास हिजड़ा था। लोकल मुसलमान अरबी, तुर्की या फ़ारसी बोलने वालों को नीची नज़र से देखते थे। मुझे यकीन था कि अगर मैं फ़ारसी और अरबी में माहिर भी हो गया, तो भी मैं कुछ पायदान ऊपर जा सकता हूँ।

“फ़ारसी, तुर्की और अरबी ठीक से सीखो,” इंडस्ट्रियलिस्ट ने मुझे चेतावनी भी दी। जनानखाया के मुख्य हिजड़ा अधिकारी नज़र को बताकर माया के लिए एक टीचर रखा गया।

हादुल्ला कुफ़ अखबार के चीफ के ऑफिस में एक ऑफिसर के तौर पर काम करते थे। सभी राज्यों से राजधानी में आने वाली जानकारी को यहां फिल्टर किया जाता था और ज़रूरी जानकारी बादशाह के ध्यान में लाई जाती थी। इस तरह, यह तय करने के लिए भी यहां भेजा जाता था कि कौन सी जानकारी सीक्रेट रखनी है और कौन सी नहीं। इन सभी चीज़ों को फिर ध्यान से इकट्ठा करके यहां स्टोर किया जाता था। इस वजह से, यहां सीक्रेसी के मामले में कई सख्त नियम थे। इसी के तहत, बाहरी लोगों को इस ऑफिस में आने की इजाज़त नहीं थी।

Machine Translated by Google

सारी जानकारी का इस्तेमाल बादशाह और उनकी सरकार का इतिहास लिखने के लिए भी किया जाता था। इस ऑफिस में काम करने वालों को इतिहास के साथ-साथ फारसी, तुर्की और अरबी की भी पूरी जानकारी होनी ज़रूरी थी। पहले, यहां के इंचार्ज ताकतवर हुदुल्लाह कुफासरा को मुझे पढ़ाने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन जब बादशाह की पत्नी उदयपुरी महल ने दिलचस्पी दिखाई, तो उन्होंने मुझे पढ़ाने की ज़िम्मेदारी ले ली।

हालांकि सुवती ने महल की सरकार की खातिर यह ज़िम्मेदारी मान ली थी, लेकिन जल्द ही वह माया के लालची हो गए। क्योंकि दरबार का काम बहुत ज़्यादा था, इसलिए वह वहाँ पढ़ाई नहीं कर सकते थे। वह बाहर एक महल में रहते थे। जुमा मस्जिद के दूसरी तरफ़। जब मेरा मूड खराब होता था, तो मैं उनके घर पढ़ने जाता था। उनका महल भी उतना ही सुंदर था। उसके चारों ओर दो मीटर ऊँची दीवार थी, बीच का आँगन था। हम अंदर गए और मदन में गए। बीच के आँगन के आगे, मदन के दरवाज़े थे जो मदन से दिखते थे। यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि मदन में कौन आता है और कौन बाहर जाता है। जो लोग बाहर नहीं आते थे, उनकी चाबियाँ लेने और उन्हें अंदर आने देने या बाहर भेजने के लिए एक मज़बूत गार्ड था।

मैं मदाना डिपार्टमेंट में, रोशन कोने में पढ़ता था। जैसे ही मैंने स्कूल के पहले दिन, साठ साल के उस आदमी को देखा, मुझे माया के लिए उसका आकर्षण दिखा। मैंने किसी तरह अपने मन में जमा हुए उत्साह को दबा लिया।

उन्होंने मुझसे मेरी जानकारी के बारे में पूछा। मैंने बिना कुछ छिपाए उन्हें बता दिया। उन्होंने यह भी कहा, “अगर तुमने पहले हमारा नेक धर्म अपना लिया होता, तो गुलामी का यह समय तुम पर नहीं आता। अब भी, अगर बादशाह और उनके साथी तुम पर मेहरबानी करते हैं, तो वे तुम्हें गुलामी से आज़ाद कर देंगे।”

"उन्होंने कहा कि माया को अच्छा लगेगा, लेकिन गुलामी से आज़ाद होने के बाद मैं क्या करूंगा, कहां जाऊंगा?"

लेसन शुरू करने से पहले मुझे मिठाई और शरबत दिया गया। लेसन के पाँच-छह दिन बाद, एक दिन माया ने मुझे खाना, पानी और सहारा देना शुरू कर दिया। क्या मैं इस मासूम से दिखने वाले इंसान को देखकर भी ऐसा महसूस कर सकता था? माया को थोड़ा अफ़सोस हुआ। लेकिन उसकी थोड़ी नम आँखों में एक अलग ही भावना दिखाई दी। मैंने उसके चेहरे को हैरान, उदास हालत में देखा। वह इससे खुश नहीं थी। उसने मन ही मन सोचा, “तुमने अपने माता-पिता को अपनी शादी के बारे में बताया, क्या यह सच है?”

Machine Translated by Google

मुझे इसका मतलब समझ नहीं आया। माया ने फिर पूछा, “क्या तुम अपने माता-पिता के इकलौते बेटे हो? या गोद लिए हुए हो? क्या उन्होंने कहीं से कोई बेटा गोद लेकर उसे अपना बना लिया और राजकुमार बना दिया? या किसी ने उसे बेटा दिया? मुझे उसके बारे में सच पता है।”

“आपको यह शक क्यों है, उतादजी?” मैंने सोचा।

“पहले माया, कुरान की कसम खाओ!”

“पवित्र कुरान की कसम! मैं अपने माता-पिता का इकलौता बेटा हूँ। अगर वे गोद लेना चाहते, तो माया के चाचा के बेटे या मेरी बड़ी बहन के बेटे को गोद लेते। यही कानून है और अगर उन्होंने इतने सालों में मेरा ख्याल रखा होता, तो माया का नाम कभी न कभी मेरे कानों में ज़रूर आता।” मुझे यह बात फिर याद आई और मैंने कहा। फिर मैंने सोचा, “तुम्हारे मन में यह शक क्यों आया?”

“चलो! चलो। पढ़ाना शुरू करो।” मुझे

उससे कहलवाने का कोई हक नहीं था। मैं इस बारे में दोबारा सोचना नहीं चाहता था। एक महीना बीत गया। एक दिन वह मुझसे मिलने आया। उसका एक बेटा था। अपनी पहली पत्नी से। जब वह छह साल का था, तो वह शुक्रवार की मस्जिद गया और रास्ते में खो गया। मैंने बहुत ढूँढा, लेकिन वह मुझे नहीं मिला। वह खो गया था, किसी ने रस्सी फेंक दी थी, कौन जाने! उसका रंग, नाक, आँखें, चेहरा और गाल बिल्कुल माया जैसे थे। अगर वह वहाँ होता, तो माया भी उसी उम्र की होती। लड़के की माँ दुख से मर गई। दूसरा बेटा हुआ, और बच्चे हुए; लेकिन इस लड़के की याद उसके दिमाग में ताज़ा रही। कभी-कभी वह याद मुझे नींद में भी सताती थी। वह मेरी पत्नी को लात मारता था, जो मुझ पर पागल होने का इल्ज़ाम लगाती रहती थी। “अगर वह लड़का ज़िंदा होता, तो वह तुम्हारे जैसा दिखता, लेकिन अगर उसे पता चल जाता, तो वह पीछे मुड़कर तुम्हें देखने की ज़हमत भी नहीं उठाता। इसलिए मैं तुम्हारे साथ ऐसे ही रहूँगा,” असंसांगुन ने मुझे चेतावनी दी।

बादशाह औरंगजेब के पिता शाहजहाँ की मौत की खबर लोगों में तेज़ी से फैल गई। किसी को भी साम्राज्य के मामलों के बारे में खुलकर बोलने की कोई गुंजाइश नहीं थी। पिछले बादशाहों की मौत कोई सीधी-सादी पॉलिटिक्स का मामला नहीं था, बल्कि पूरी तरह से उस समय की पॉलिटिक्स से जुड़ा था। बादशाह औरंगजेब ने अपने भाइयों को हराकर जेल में डाल दिया था, और गलती से अपने तीन भाइयों को मार डाला था। इसमें भी उसने उनमें से एक को धोखा देकर जेल में डाल दिया, उसे ज़हर दे दिया, और कुछ सालों बाद आखिर में सरेंडर कर दिया। उसने पिछले आठ सालों से भाइयों को बिना मारे जेल में रखा था। अब वह

Machine Translated by Google

वे बुढ़ापे में अचानक मर गए थे। ये सारी बातें एक-एक करके आपके कानों में पड़ीं।

मुझे इस पूरी सिचुएशन को लेकर डर लगने लगा। फिर मुझे कुछ जानने की इच्छा हुई। एक दिन, मैंने मन ही मन सोचा, सिर्फ़ हमारे स्टडी रूम में ही नहीं, बल्कि जब आस-पास कोई नहीं था, तो मैंने सोचा, “मुझे नहीं लगता कि बादशाह शाहजहाँ भगवान के महल में गए हैं...”

राजा ने जवाब दिया, "मैं हमेशा सम्राटों की कसमों का ज़िक्र करता हूँ। उन्हें तो गद्दी पर बैठने के बाद से अपनी कसमें मिली भी नहीं हैं, और कौन जानता है कि मिलेंगी भी या नहीं!"

"क्या हुआ? मुझे समझ नहीं आ रहा।"

“बादशाह की ताजपोशी के बाद, अगले बादशाह को एक बिड दी जाती है। इसके बाद, हर तख्कानी का ज़िक्र इस बिड के साथ किया जाता है। पुजारियों से भी उम्मीद की जाती है कि वे इसका ज़िक्र उसी तरह करें। नहीं तो, उन्हें बादशाह की बेइज्ज़ती करने की शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।”

“इन पिछले राजाओं के क्या विचार थे?” मैंने सोचा, इस विषय पर बोलने का मौका पाकर मैं बहुत खुश था।

“मुगलों ने हंडन में ‘फड़समकानी’ की स्थापना की, बादशाह बाबर ने, उनके उत्तराधिकारी मायुन को ‘जाट अयानी’, उनके उत्तराधिकारी अकबर को ‘आशा अयानी’, उनके उत्तराधिकारी सुल्तान नन जहांगीर को ‘जाट मकानी’, और शाहजहां को, जिन्हें अभी तक यह टाइटल नहीं दिया गया है। कौन जानता है, यह टाइटल कौन देगा?”

“क्यों? ऐसे शक की क्या वजह है?” मैंने मन ही मन सोचा। उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने कहा, “मैं पवित्र कुरान की कसम खाता हूँ, जो तुमने मुझे बताया है, मैं किसी और को नहीं बताऊँगा।”

हुदुला साहब कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। उन्हें एक बार माया धर्म का अंदाज़ा हुआ। उनकी लंबी उंगलियों ने दाढ़ी से कुछ छुआ। उनकी नज़र इतिहास में कहीं दूर चली गई। फिर उन्होंने शांति से कहा, “तुम कुछ नहीं जानते, मैं नहीं मानता। कुछ लोग, दरवाज़े के लोग, वो लोग जो बादशाह को पसंद नहीं करते, कुछ फुसफुसाते हैं। यानी, बादशाह को भी यह पता है। लेकिन बादशाह, मोहम्मद और औरंगज़ेब जो कुछ भी करते हैं, मुसलमान धर्म के लिए करते हैं, यह हर मुसलमान जानता है। उलेमा रहे हैं।

Machine Translated by Google

सेना ही सहारा है। अगर जीत की लड़ाई में तेजकल न होता, तो इलम पवित्र नहीं होता। इतना ही नहीं, हिंदू ज़मीन पर काफ़िरों, धर्म और ऐसी ही चीज़ों के बीच लड़ाई होती। इलम कुछ ही समय में गायब हो जाता। लेकिन इलम गायब हो सकता है। ऐसा कोई धर्म नहीं है। इसीलिए मुहम्मद और औरंगज़ेब आलमगीर जीते और गद्दी पर बैठे।”

“कृपया इस लबादे में थोड़ी और चमक लाइये, उतादजी!”

“हाँ! जब आएगा तब बताऊँगा। अब यह दरवाज़ा! कैसा आदमी है! इसके पिता अकबर महान की मिसाल हैं। इस मुगल दरबार में पहले से ही एक ग्रुप था। वे अकबर महान की तारीफ़ करते थे, उसे आइडियल कहते थे। वे धर्म के सारे फ़र्क छोड़कर आम उसूलों को खोजते और उन पर चलते थे। वे फरीसियों से बाइबिल, फारसियों से ज़ाद अवत, यादों से तमूद और हिंदुओं से वेदों पर बात करते थे। इस तरह वे लोगों के धर्म, वेदों और जैनियों के धर्म में एक जैसी बातें ढूंढते थे। कोई किसी का धर्म न बदले, कोई चाहे तो अपने असली धर्म में वापस जा सकता है, जजिया पर कोई टैक्स नहीं है। तीर्थ यात्रा पर कोई टैक्स नहीं है। चाहे तो अपने असली धर्म में वापस जा सकता है। वे बना सकते हैं, वे मंदिर बना सकते हैं। एक या दो! अरे! अगर तुम बादशाह भी बन जाओ, तो इतना बैलेंस कैसे रख सकते हो? इसे कैसे बढ़ा सकते हो? अकबर एक धर्म है! भले ही तुम्हारा रिश्ता हो तुम्हारे प्यारे, क्या तुम्हें उन्हें अपनी पूजा करने का मौका देना चाहिए? क्या तुम्हें उन्हें अपने महल और मंदिर बनाने की इजाज़त देनी चाहिए? अगर इलम धर्म की पवित्रता शाही परिवार में नहीं बची, तो यह राज्य में कैसे रह सकती है? लेकिन कौन जाने किसने जोबा के पागलपन का दरवाज़ा बंद कर दिया! उसने समूद, सूफ़ीवाद और वेद सीखना शुरू कर दिया! वह लाल दास नाम के एक हिंदू पुजारी के पास जाने लगा। वह समद नाम के एक मुस्लिम साधु के पास जाता था। जिहाद आया, यह कहते हुए, "हमें किसी धर्म के ख़िलाफ़ नहीं लड़ना चाहिए, हमें अपना धर्म किसी पर नहीं थोपना चाहिए।" वह कहता रहा, "दूसरे धर्मों के लोगों पर जज़िया लगाना धर्म नहीं है।" विद्वानों ने तय किया कि अगर ऐसे विचारों वाला आदमी अगला सम्राट बना, तो इलम खतरे में पड़ जाएगा। यह सही है या गलत?"

मैंने सिर हिलाया. यह स्वाभाविक था. नहीं तो, वह बात करना बंद कर देता.

“शॉर्ट में, जो दरवाज़ा उन्हें रास्ते में रोकने आया था, वह हार गया। बादशाह शाहजहाँ ने सभी बच्चों को मैसेज भेजा, ‘आइया के पास आओ, मैं तुम सबको खुश कर दूँगा।’ मान लो, अगर आलमगीर इस पर यकीन करके चला जाता? तो उसे उसके तातार सैनिकों ने मार डाला होता। औरंगज़ेब शाह! वह भी नहीं गया। पहरेदारों ने आइया के दरवाज़े बंद कर दिए और उसे अंदर से ले गए। आर्ट बहुत मज़बूत है। इसे गिराने में टाइम लगता। डेलिलाह

Machine Translated by Google

भागा हुआ दारा फिर से सैय्या वापस जाने की कोशिश कर रहा था। चालाक आलमगीरों ने कायत की ओर बहने वाली यमुने नदी को रोक दिया। शाहजहाँ महाराज के पास सरेंडर करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। उन्होंने कायत को कैद कर लिया और अपना गार्ड बिठाकर उसे सबक सिखाने के लिए डाली के पास गए। विजया ने मुराद को धोखा दिया, जो हैरान था, और उसके करीबी लोगों को रिश्वत दी। इस शक में, उसने उसे भी कैद कर लिया। वहाँ, एक और तरीका इस्तेमाल किया गया, काज़ी ने खुद उसे जान से मारने की धमकी दी और उसे मार डाला गया। यहाँ, दारा को राजपूताना, संध और कच्छ भागने पर मजबूर होना पड़ा। आखिर में, उसे गिरफ्तार कर लिया गया और दलित के पास लाया गया। डाली की गलियों में उसे बेइज्जत किया गया और टॉर्चर किया गया। उलेमा ने उसे मौत की सज़ा सुनाई, उस पर इल्ज़ाम लगाया कि उसने इलम के साथ बुरा बर्ताव किया था। वे कहते हैं कि यह औरंगज़ेब का भी सुझाव था। दलिया रायवान, जिसे मरे हुए लोगों ने मार डाला था, उसकी लाश को महल में ले गया और उसे दिखाया कि अगर वह शाही परिवार का सदस्य होता तो उसके साथ क्या होता। ऐसे काम बादशाह अकबर की बुरी परंपरा का आखिरी हिस्सा नहीं बने, बल्कि

धम्म की नींव चकनाचूर हो गयी।

इसके बाद मुझे भी कहीं से कुछ बातें समझ में आईं। अय्यास के आने के बाद, उन्होंने कैदियों को ज़िंदगी भर के लिए बंदी बना लिया, और फिर मुहाउन आलमगीर गाज़ी की मदद से खुद को बादशाह बनाने लगे। यह सब बहुत जल्दी में हुआ। इसी दौरान छोटा भाई - मुराद - भी मौत के मुंह में समा गया। बाकी दोनों भाई भी मारे जाने या भागने की फिराक में थे। यह भी डर था कि ये दोनों मिलकर एक-दूसरे को मार डालेंगे। इस वजह से, मुगल साया के लायक ताजपोशी का कार्यक्रम करना मुमकिन नहीं था। पहले साया की राजधानी आदानगर थी। उस समय, शाही तरीके से ताजपोशी किए बिना बादशाह बनना पूरा नहीं होता था। मैंने कितनी भी कोशिश की, रानी की शान को भुलाया नहीं गया। लेकिन जहाँ रानियाँ कैद थीं, वहाँ ऐसा करने का ख्याल थोड़ा परेशान करने वाला था। रानी को छोड़कर, सभी सामंत, गवर्नर और दूसरे देशों के नुमाइंदे समारोह में मौजूद थे। वे सब आकर शान की तारीफ़ करते, लेकिन अगर रानियों को कैद कर लिया जाता तो वे आपस में बहस करते। उन्हें यह भी डर था कि बाद में वे अपने-अपने देशों में जाकर यही अफ़वाह फैला देंगे। क्या वे शाहजहाँ को ज़हर दे देंगे? अगर उसने रोज़ाना खाने में से एक मुट्ठी ज़हर खा लिया होता, तो हतारा मर जाती। अगर भाई-बहन रिहा हो जाते, तो शायद वे एक दिन फिर बाहर आते और उसे कत्लेआम के बारे में बताते। हतारा के पिता ऐसा कुछ नहीं कर सकते थे। तो फिर उसे बिना वजह क्यों मारा? बादशाह औरंगज़ेब के दिमाग में बस यही सब था, लेकिन कुछ और भी था, जो कोई नहीं समझ पा रहा था। पवित्र कुरान की कसम खाने के बाद भी उसने कभी वह कसम नहीं तोड़ी। वह आज भी उसे निभाता है। लेकिन आज भी कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकता कि वह अंदर की साज़िशों से क्या हासिल कर लेगा।

Machine Translated by Google

राजा भी हमेशा दलित में नहीं रहना चाहते। जवान लोग हमेशा घूमते रहते हैं, और जब वह जनायत में आया, तो माया भी साथ आ गया। हेम को यह भी पता था कि जब भी युया जाएगा, छोटा जनाना उसके साथ जाएगा। लेकिन अब पूरा जनाना आयलत चला गया था। उसका साइज़ और महक माया की सोच से भी परे थी। वह चलती-फिरती राजधानी बन गई थी। एक ग्रुप पहले आगे बढ़ता। ज़रूरत के हिसाब से उन्हें डराया-धमकाया जाता। जैसे ही जनाना वहाँ पहुँचता, दूसरा ग्रुप अगली मंज़िल के लिए तैयारी करने लगता। हदुला सुफ़ानी ने मुझे बताया, बादशाह औरंगज़ेब के ज़माने में जनाना के पास सौ घोड़े, पाँच सौ ऊँट, चार सौ बैल और खाना ढोने वाली सौ गाड़ियाँ थीं। इसके अलावा, लड़ाई के लिए पाँच सौ या छह सौ सिपाही, राजा की कंटीली झाड़ियाँ और पत्थर हटाने के लिए पाँच सौ आदमी, पानी ढोने के लिए सौ आदमी, रास्ते में काम के लिए बढ़ई, लोहार और मोची को ले जाने के लिए सौ आदमी और केरोसिन इकट्ठा करने के लिए डेढ़ सौ आदमी थे। इस समय महाराजा जनानखा जाते थे। अब तो पूरा जनानखा भाग रहा है! हर ग्रुप में दो हज़ार मवेशी, चार हज़ार ऊँट, हज़ारों सिपाही... मुझे सबका हिसाब करना था। मैंने सोचा था कि यह हिसाब बाद में किया जाएगा, जैसा हुदुला साहब ने मुझे बताया था। चूँकि महल और महल के बीच रास्ता बनाने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए पत्थरों, काँटों और झाड़ियों से रास्ता बनाने की ज़रूरत नहीं थी। मंडपों में, दवान-ए-आम और दवान-ए-खास के लोगों के लिए अलग-अलग रास्ते थे। बादशाह के खास मेहमानों के लिए भी खास रास्ते बनाए गए थे। रास्ते दस गज़ लंबे, दस गज़ चौड़े थे, चाय के प्यालों से सजे हुए थे। हर बेगम का अपना, ज़मीन पर तीन अंगुल मोटा। अंदर सोया और चाँदी के धागों से बुनी हुई आकर्षक चीज़ें थीं। डिज़ाइन ऐसा था कि पुजारी के अलावा कोई भी अंदर या बाहर नहीं देख सकता था। पुजारी, सिपाही और नौकर कोई भी औरत की तरफ नहीं देखता था। अगर किसी को कोई शक होता, तो पहले उसकी खाल उधेड़ दी जाती थी। फिर वे सोचेंगे कि आगे क्या करना है।

हम दो हफ़्ते बाद अही आया पहुँचे। साइज़ जितना बड़ा, स्पीड उतनी ही धीमी!

महल में भी राजकुमारी से मेरा मिलना-जुलना कम नहीं था। रजिस्टर करने और जानकारी लेने का ऑफिस भी वहीं था। राजकुमारी की ज़रूरतों के हिसाब से सरकार ने एक महल बनवाया था। वहाँ फ़ारसी, अरबी और तुर्की भाषाएँ भी पढ़ाई जाती थीं। यहाँ भी मैं उनसे उनके महल में मिलता था। माया रोज़ दोयावन से हाथ मिलाती थी। माया पर उसका भरोसा इतना बढ़ गया था कि वह माया के कान में कुछ ऐसी बातें बता देती थी जो वह किसी और को नहीं बताती थी। अगर राजकुमारी की किसी बात में कोई उलझन होती, तो वह उसे दूर करने की कोशिश करती।

Machine Translated by Google

वे माया से इस बारे में भी बात करते थे कि कौन से उपाय इस्तेमाल किए जा रहे हैं, उनकी ज़रूरत कहाँ है, और कुकुना को दलपति का टाइटल कैसे दिया गया।

दक्षिण में कोंकण नाम का हिस्सा। एक पहाड़ी इलाका जिस पर मराठा नाम के कबीले का राज था। वहाँ शिवा नाम का एक सरदार मुगलों के खिलाफ डटा रहा, अरे! मुगल सेना में मैदान में आमने-सामने लड़ने की ताकत नहीं थी, लेकिन मुश्किल रास्ते पर वह बिजली की तेज़ी से मुगल सेना की संपत्ति लूट सकता था, इस सेना से बचकर भाग सकता था और उसके सैनिक बहुत वाक्पटु थे। उसका नाम लेते ही मुगल ही नहीं, बल्कि आस-पास के दूसरे इलाकों के सैनिक भी डर जाते थे। मुस्लिम राज को उखाड़कर हिंदू राज्य की स्थापना भी अहम है। उसने सूरत से लेकर मुसंडी तक मुगलों के कंट्रोल में व्यापार कर रहे फारसियों को लूटा, एक बड़ा बंदरगाह बनाया और दिखा दिया कि फारसियों की नज़र में मुगल बेकार हैं। उसने विजयपुर के सुल्तान के भेजे एक बड़े सेनापति अफजल खान से खुद मिलने का फैसला किया और उसे लोहे के भाले से मारकर योद्धा को भगा दिया, ऐसा कहा जाता है।

ऐसे बहादुर सरदार को कुछ कब्ज़ा करने और सबको मारने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। अम्बेरी का यह राजकुमार। उसके पिता गुज़र गए और आठ साल की उम्र में उसे मुग़ल सेना में जनरल का पद दिया गया। तेरह साल की उम्र में वह अम्बेरी की गद्दी पर बैठा और मुग़ल सेना का हिस्सा बनकर बड़ा होने लगा, और लड़ाइयों में भी हिस्सा लेने लगा। चूँकि वह मुलियन समाज में बड़ा हुआ था, इसलिए वह वहाँ के रीति-रिवाज़, तुर्क-फ़ारसी-उर्दू भाषा, धर्म और रीति-रिवाज़ के साथ-साथ उनके कानून और रीति-रिवाज़ों से भी वाकिफ़ था। बादशाह औरंगज़ेब को उस पर बहुत भरोसा था। वह उससे दस साल बड़ा था। वह हमेशा बादशाह के साथ उसके भाइयों और उसके बेटों के साथ गद्दी के लिए लड़ी गई लड़ाइयों में रहा था। इसके पीछे का कारण, उसके लिए उसका प्यार? डर कि अगर मैं उस दानव के पीछे नहीं गया, तो वह मुझे रौंद देगा? कौन जाने! दानव भी कभी नहीं समझ पाए।

जय सिंह दक्षिण की ओर गया। वह दिन भर शिवाजी को हराने में सफल रहा। उसने विजयपुर के अदल शाह से यह भी कहा कि अगर शिवाजी विद्रोह में उसकी मदद करते हैं, तो उसे दलीदरबार में जगह दी जाएगी। उसने गोवा में तैनात पुर्तगालियों को भी यह कहकर मना लिया कि अगर शिवाजी, जिनके पास एक शक्तिशाली नौसेना थी, हार गए, तो वह समुद्र पर उनके साथ करीबी रिश्ता रखेगा। उसने दक्षिण के दूसरे छोटे राजाओं को भी मना लिया कि जय सिंह उन राजाओं में से है जो दरबार में हैं। उसने कहा कि वह सबको हरा देगा, इसलिए वह उनका ध्यान रखे। इसके अलावा शिवाजी के सेनापति, जिसके पास तीन हज़ार घुड़सवार थे,

Machine Translated by Google

अमाजी, उनके दो भाइयों और एक और सेनापति कहार कोली को उस समय भारी रिश्वत दी गई और उन्होंने शिवाजी को धोखा देने की साज़िश रची। कुल मिलाकर, शिवाजी के पास पुरंदर के साथ शांति समझौता करने के अलावा कोई चारा नहीं था। शिवाजी ने मुगलों की तरफ से लड़ाई लड़ी, और वे सभी राजपूत थे।

इस समय भी शिवाजी को मुगलों पर पूरा भरोसा नहीं था। अगर शिवाजी सरेंडर कर देते, तो बादशाह औरंगजेब उन्हें सारे दक्षिणी इलाके सौंप देता, यह मुगल प्रस्ताव जय सना ने उनके सामने रखा। शिवाजी अपने साथियों की चेतावनी को नज़रअंदाज़ करते हुए, चेतावनी सुने बिना ही अय्या के पास आ गए। शिवाजी को अय्या दरबार में वह सम्मान नहीं मिला जो जय सना ने उन्हें दिया था। गुस्से में शिवाजी महल में उन पर चिल्लाए, जिससे बादशाह को गुस्सा आ गया। वह कुछ करके इसे खत्म करना चाहते थे।

आपका गुस्सा

उन्होंने पहले ही घाट बना लिया था। अब उन्हें एक आसान वजह मिल गई है। असमन्दुल्लाह ने कहा, "अब उन्होंने इसे बैन कर दिया है। हमें देखना होगा कि वे इससे कैसे निपटेंगे।"

शिवाजी के पकड़े जाने की खबर सिर्फ़ जनैया में ही नहीं, बल्कि पूरे शहर में फैल गई थी। यह आस-पास के इलाकों में भी फैल गई। पूरी राजधानी शिवाजी को ऐसी हालत में फंसाने की बादशाह की चालाकी से इम्प्रेस थी। बादशाह शाहजहाँ में यह चालाकी कहाँ थी? क्या दारा, शुजा, मुराद में थी? अल्लाह की मेहरबानी से! वही काबिल था, वही था जिसने उसे मुगल सल्तनत की गद्दी पर बिठाया। सबने शुक्रगुजार होकर दुआएँ कीं।

शिवा के पकड़े जाने की खबर पूरी दुनिया में फैल गई। बादशाह औरंगजेब का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया! इसके साथ ही, यह फतवा भी जारी कर दिया गया कि 'शिव' शब्द के आगे 'जी' नहीं लगाना चाहिए। इस बारे में और ज़्यादा नफ़रत से बात होने लगी और लोगों में उसे देखने की उत्सुकता बढ़ने लगी। लेकिन क्या हो सकता था? अगर कोई उसे उस घर के आस-पास घूमते हुए भी देख लेता जहाँ उसे कैद में रखा गया था, तो मौत की सज़ा मिलने का डर था!

इस समय, अफ़गानिस्तान में यूसुफ़ ज़ई और दूसरों ने बगावत कर दी थी। इसे कुचलने के लिए, बादशाह ने शिवा को भेजने का फ़ैसला किया, जिसे पहाड़ों में लड़ने का अनुभव था, और उसे वहीं खत्म कर दिया। उसे लगा कि सारा इल्ज़ाम बागियों पर डाल दिया जाएगा। लेकिन इस समय, शिवा बीमार पड़ गया। वह बिस्तर पर भी चला गया। बादशाह को यह भी उम्मीद थी कि बीमारी की वजह से वह अपने आप पागल हो जाएगा। ऐसे में शिवा ने अपने देश से लाए सभी सैनिकों को अपने देश भेज दिया। एक सैनिक को लेकर कोई क्या कर सकता था?

Machine Translated by Google

इस साल गर्मी बहुत ज़्यादा थी। शायद दिलीपा आया की गर्मी हमेशा से ही गर्म रही होगी। हम सब पसीने से तर-बतर होकर उठे। हम सो नहीं पाए, हमें बहुत पसीना आ रहा था! घर के चारों तरफ़ विंडस्क्रीन लगी हुई थीं। हर घंटे उन पर पानी डाला जाता था और वे भीग जाती थीं। छत पर लगा एक हाथ और तीन हाथ लंबा हवा वाला पंखा हमारे सिर पर लगातार ठंडा पानी डालने लगा। बेगमा और उनकी सेवा में लगे लोगों को ठंड की वजह से पसीना नहीं आता था। अगर आता भी, तो वह जल्दी गायब हो जाता। लेकिन उन्हें ठंड की कोई परवाह नहीं थी। उन्हें हमेशा गर्मी की चाहत रहती थी। ऐसे में घर के पैरों में कभी भी खुशी की कमी नहीं होती थी।

गर्मियां खत्म हुईं और बारिश का मौसम आ गया। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, वैसे-वैसे बारिश भी बढ़ती गई। बारिश ज़ोरों से होने लगी और गांव की औरतें भी अपनी झोपड़ियों से बाहर निकल आईं। सबने अपने कपड़े बारिश में भिगोए। बारिश आने से पहले ही यमुना लाल हो गई। तीन दिन में नदी का बहाव इतना बढ़ गया कि वह नदी के किनारे तक पहुंच गई। हालांकि यमुना वैसी ही थी, लेकिन औरत की सुंदरता नदी की सुंदरता से ज़्यादा सुंदर थी।

एक दिन अचानक खबर आई। खबर आई नहीं, देखते ही सब शहर छोड़कर भाग गए। पंजत का राजकुमार बिना किसी को बताए भाग गया था। बादशाह ने अपने तेज़ घुड़सवारों को दक्षिण भेजा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ। अब कैद किए गए पहरेदारों की जान नहीं बचेगी। यह शिवा जितना उन्होंने सोचा था, उससे कहीं ज़्यादा फुर्तीला, चालाक और चालाक निकला था। बादशाह के पहरेदार, जो बिना हाथ में तूरी डाले भाग गए थे, एक-दूसरे को शिवाजी के भाग जाने की कहानी सुना रहे थे, जिससे यह और भी मज़ेदार हो गया था। लोग आपस में बातें कर रहे थे, "अगर यह शिवाजी सही-सलामत अपने देश पहुँच गया, तो बादशाह का दक्षिण पर हमला करने का प्लान कभी पूरा नहीं होगा।"

शाही दरबार में बादशाह का जन्मदिन धूमधाम से मनाने के बाद, शाही दरबार दिल्ली के लिए निकल गया। बादशाह की वापसी भी शान से हुई। उदयपुर महल में पहले की तरह रौनक थी। मैं उनसे फ़ारसी में बात कर सकता था। मुझे उनके महल के युद्ध विभाग में एक छोटा सा प्रमोशन मिला था। इससे मुझे उनके महल में समय बिताने का मौका मिला। मैं न सिर्फ़ दिल्ली की अलग-अलग इमारतों को देख सका, बल्कि अलग-अलग समय में बने दूसरे शहरों को भी देख सका।

माया लता मेरे पास आईं, दिल्ली कोई शहर नहीं है। यह अलग-अलग पुराने कबीलों का जमावड़ा है। मैं जहां भी जाती थी, मुझे कोई न कोई इतिहास ज़रूर मिलता था। मैं हिंदुओं से मिलना चाहती थी और हर हिस्से के इतिहास के बारे में जानना चाहती थी।

Machine Translated by Google

वापस आने पर, बादशाह ने अपने राज में एक के बाद एक एलामाइट कानून लागू किए। उनके परदादा, बादशाह अकबर ने अपने पहले के बादशाहों के लाए कुछ एलामाइट कानूनों में ढील दी थी। उन्होंने कुछ कानूनों को हटा भी दिया था। उनके बेटे, बादशाह जहाँगीर, उनके जितने धार्मिक नहीं थे, लेकिन वे पूरी तरह से धार्मिक भी नहीं थे। हालाँकि उनमें से कुछ ने मंदिर तोड़ने और उन पर मिट्टी फेंकने जैसे काम किए थे, लेकिन बादशाह शाहजहाँ ने महल से मूर्तियों को हटाने का बहुत बड़ा काम किया, जैसा कि हिंदू कहते हैं। उन्होंने सरकार को नए मंदिर बनाने और पुराने मंदिरों को तोड़ने से भी सबके सामने मना कर दिया था। बादशाह शाहजहाँ ने गुलाब, धूप और ढाक का पाठ जैसे कई तरीके अपनाकर अपने दरबार में धार्मिक रस्में शुरू कीं। जो लोग इसके लिए तैयार नहीं थे, उन्होंने राज्य की ताकत का गलत इस्तेमाल भी किया। जो लोग ऐसा कर पाते थे, उन्हें एक खास टैक्स देना पड़ता था। शमीर ला हौरी और मोहम्मद अली संधि नाम के दो खास अधिकारी नियुक्त किए गए थे ताकि जो लोग खुशी-खुशी धर्म अपना लेंगे, उनकी शादियाँ कर सकें। बादशाह औरंगजेब, जिसने यह काम अपने दिल में नहीं किया था, बल्कि अपने दिमाग में किया था, उसने एक के बाद एक कदम उठाए और इसे हकीकत बना दिया।

बादशाह औरंगज़ेब ने कुरान को इतनी बारीकी से पढ़ा था कि उसका एक-एक शब्द उसकी ज़बान पर था। ऐसे लोग समझ गए थे कि मतलब और सारे ज़िक्र उनके दिमाग में नहीं रहेंगे। अल्लाह ही असली बादशाह है और जो बादशाह इस ज़मीन पर राज करता है, वही अल्लाह का सच्चा नुमाइंदा है, और अल्लाह के चारों और दीन का सार है। अगर कोई अल्लाह के अलावा किसी और को बादशाह मानता है, तो उसे गद्दार माना जाएगा। यह कोई बड़ा गुनाह नहीं है। इसका सिर्फ़ एक ही जवाब है! मौत! अल्लाह के बताए रास्ते पर चलना जिहाद है। जो राज (दार-उल-हब) इसे नहीं मानता, उसे लाला जिहाद कहते हैं! जंग के बाद, जो लोग अल्लाह पर यकीन नहीं करते, वे उन लोगों के गुलाम बन जाएँगे जो यकीन करते हैं। इलम राया का फ़र्ज़ है कि वह दुनिया के लोगों को इस्लाम की तरफ़ लाए और दूसरी चीज़ें न करे। पवित्र कुरान कहता है, “जंग के बाद, उन लोगों को मार डालो जो अल्लाह के साथ दूसरे भगवानों पर यकीन करते हैं, जहाँ भी तुम उन्हें पाओ... लेकिन अगर वे मुँह मोड़ लें, तो उनके रास्ते पर चलो।” कुरान आगे कहता है, “अगर वे अपनी गलती से दूर हो जाएं, तो उनसे कहो कि उन्हें मार डालें। अगर वे अपने धर्म से दूर हो जाएं, तो उनसे तब तक लड़ो जब तक वे पूरी तरह से अल्लाह के सामने सरेंडर न कर दें।”

जो मुसलमान नहीं है, उसके पास कोई पॉलिटिकल पावर नहीं है। वह मुस्लिम देश में नहीं रहना चाहता। अगर वह रह भी जाए, तो भी काफी होगा। वह हालत भी गुलामों जैसी है।

Machine Translated by Google

यह बहुत ज़्यादा नहीं होगा। इसे जिमी कहते हैं। क्योंकि वह राज्य में खास ज़िम्मेदारी (जिमा) के साथ रह सकता है। उसे कोई भी ऐसा अधिकार नहीं मिलेगा जो एक आम मुसलमान को मिलता है। इसके अलावा, चूंकि उसे मुली राज्य में रहने की छूट मिलती है, इसलिए उसके लिए एक खास टैक्स देना पड़ता है। इसे जजिया कहते हैं। अगर असली मुसलमानों को यह खास ज़मीन टैक्स में छूट दी जाती, तो वह भू-उक-खर्च-यानंद देखता। सेना के खर्चों के लिए एक और तरह का टैक्स देना पड़ता है। सिर्फ़ मुली ही लड़ सकता है। जो मुली नहीं है, वह सेना के निचले रैंक में काम कर सकता है। लेकिन वह घुड़सवार या सेना का अफ़सर नहीं बन पाएगा। उसे व्यवहार, बोलचाल और रहन-सहन में एक जैसा नहीं होना चाहिए। उसे अच्छे से नहीं रहना चाहिए, उसे महंगे कपड़े नहीं पहनने चाहिए। उसके पास तलवार नहीं होनी चाहिए। इस आदमी को हर मुसलमान से नहीं लड़ना चाहिए। इस आदमी की दरबार में मुसलमान जैसी हैसियत नहीं है। वह जा नहीं सकता, त्योहारों में हिस्सा नहीं ले सकता। वह नए मंदिर नहीं बना सकता। वह पुराने मंदिरों की मरम्मत नहीं कर सकता। उसे अपना सिर झुकाना चाहिए और जज़िया देना चाहिए। पवित्र पैगंबर (S) ने अपने अनुयायियों से कहा है, “उन लोगों से लड़ो जो हमारे धर्म को नहीं मानते जब तक कि वे तुम्हें लाकर जज़िया न दें!” (कुरान 9-29) इसे मानते हुए, एक मुसलमान को ऊँची जगह पर बैठना चाहिए। एक मुसलमान को कुछ भी नहीं खाना चाहिए लेकिन ज़मीन पर थूकना भी नहीं चाहिए। उसे इसके लिए कोई अफ़सोस नहीं दिखाना चाहिए। अगर कोई मुसलमान किसी गैर-मुस्लिम को मारता है, तो यह कोई गुफ़ा नहीं है। क्या मतलब है, यह एक अपमान है, एक अन्याय है, भले ही यह एक छोटे से अपराध के लिए हो, लड़की को अपने धार्मिक विश्वासों के लिए आगे आने दो।

"इस बार क्यों नहीं किया? तुम बताओ।" वह हँसा, उसका दिल अभी भी तेज़ी से धड़क रहा था। फिर भी, मैं दुखी हुए बिना नहीं रह सका। माया की तरफ देखते हुए उसने कहा, "तो मैं हमेशा कहता हूँ, तुम्हें इतिहास पढ़ना चाहिए। इतिहास में कुछ बातें हर दौर के सभी पतियों की हैं। उनमें से हर एक की अपनी अलग कहानी है। चार सौ साल पहले, हमारे इतमश नाम के राजा इसी दलित में राज करते थे। उस समय, हम इतने मज़बूत नहीं थे। आस-पास कई राजा थे, चंबल में झांसी, नरवत-वहरे में परहार, रणथंभौर में चौहान, दक्षिण में जालौर, पश्चिम में यादव, दक्षिण में बयाना, थंगीर, अजमेर और दक्षिण में दिल्ली। हालात कैसे थे? ऐसे में, उलेमा सुल्तान इतमश के पास गए और मैंने सोचा, 'तुम लड़कियों के खिलाफ जिहाद क्यों नहीं छेड़ते? तुम एक समझौता क्यों नहीं करते कि अगर तुम उनसे शादी नहीं करोगे तो मरने को तैयार हो? तुम अपने धर्म और उसूलों के हिसाब से क्यों नहीं चलते?' जानते हैं इस समय सुल्तान ने क्या कहा? 'अभी भारत में हम लड़कियों से भरी थाली की तरह हैं, चुटकी भर नमक की तरह हैं। जब हम आस-पास के देशों से शादी करेंगे तो यहां लड़कियों की संख्या और भी बढ़ जाएगी, हम और भी मज़बूत हो जाएंगे,

Machine Translated by Google

इसके बाद तुम भी मारे जाओगे। शांत रहना।' तुमने हेतु से क्यों कहा? जब तक बादशाह शाहजहाँ ज़िंदा थे, तब तक बादशाह औरंगज़ेब का दिल्ली की राजनीति पर पूरा कंट्रोल नहीं था। अब दिन का चूहा भले ही भाग गया हो, लेकिन दिन पर हमारा कंट्रोल है। मुग़ल ही बहादुर हैं।

"लेकिन जय सिंह जैसे राजपूत तो हैं, है ना?" मैंने मन ही मन सोचा।

"ये कैसा राजपूत है? सिर्फ़ नाम का राजपूत! राजा तो वो है जब बादशाह उसे राजा बनने की मेहरबानी दे! जो चले गए, वो भी राजा बन गए! अब, अगर दिन में चलो, तो बिना वजह सोचे चले जाना चाहिए। इन लोगों से कभी कोई खतरा नहीं है जो पावर में हैं और दौलत के लिए राजा और सेनापति बन गए हैं। ये सब सोच बादशाह ने छिपाई थी और इसी सोच ने उसे पूरे देश को जीतने के लिए हिम्मत वाले कदम उठाने पर मजबूर किया है। कुछ साल! बाद में देखोगे। गुजरात से बंगाल तक, थानेसर से गोवालका तक, उसके आगे पूरा देश... पता भी नहीं, हर जगह मस्जिद की मीनारें आसमान तक पहुँच जाएँगी। गरीबों की दीवारें गिरा दी जाएँगी और उनके पत्थर मक्का की सड़क पर फेंक दिए जाएँगे। "क्लास में आलमगीर बादशाहों के लिए एक खास जगह रिज़र्व है।" ये कहते हुए हुदुला के चेहरे पर चिंता की लकीरें आ गईं। जैसे क्लास में रिज़र्व जगह उन्हीं के लिए होनी चाहिए!

मुझे फतह के साफ़ नतीजे देखने को नहीं मिले क्योंकि जनाना शहर और दिल्ली, जहाँ मैं रहता था, पहले ही पूरी तरह से मुस्लिम बन चुके थे।

उदयपुर महल कितना भी सुंदर क्यों न हो, बादशाह के पास कई पॉलिटिकल काम होते थे। दूसरी बेगमों और खुमाओं (रखवालों) को इसमें थोड़ा समय लगता था। ऐसे में उदयपुर महल साहिब बादशाह से झगड़ती थीं, लेकिन यह एक तीखे झगड़े में बदल जाता था। यह कोई बड़ी बात नहीं थी। बेगम साहिब को भी अच्छी तरह पता था कि उनका बादशाह से – और औरंगज़ेब से भी – यह तीखा झगड़ा चल रहा है।

हालांकि उनके मनोरंजन और मन बहलाने के लिए कुछ नौकरानियां थीं, लेकिन उन्हें अक्सर ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीने की इच्छा होती थी। इसका मतलब था कि वह कभी-कभी दरबार की कुछ शाही बेगमों को शुभकामनाएं भेजती थीं। ऐसी बेगमें सुबह आती थीं, पूरे दिन रुकती थीं और मज़े करती थीं। बादशाहों की पत्नियों के उलट, शाही बेगमों को बाहरी दुनिया के जाति-व्यवस्था के बारे में बहुत कम पता था।

Machine Translated by Google

एक बार उदयपुर महल की बेगम ने मुझे फ़ोन किया और कहा कि मैं दशद खान के महल में जाऊँ और शबाना बेगम से कहूँ कि वह अगले दिन उनसे मिलने आएँगी। मैंने शबाना बेगम को देखा था। मैं उनके महल को भी जानता था। वह तुगलकाबाद आती थीं। क्योंकि पैदल दूरी ज़्यादा थी, इसलिए मैंने एक घोड़ा माँगा और उन्होंने तुरंत मान लिया। दूरी इतनी ज़्यादा थी कि यह एक आशीर्वाद था।

दिल्ली के विजेता पुराने शहर में रहने के बजाय अपने वंशजों को बसाना चाहते थे। क्योंकि पिछली लड़ाइयों में पुराना शहर – भले ही वह मुस्लिम शहर था – राख में मिल गया था। चारों ओर समतल इलाका भी फैला हुआ था। इसके अलावा, युद्ध में पकड़े गए हजारों या लाखों गुलाम बिना मज़दूरी के काम कर रहे थे। इस वजह से दिल्ली के चारों ओर पुराने शहर फैले हुए थे। हालांकि ये पुराने गांव थे, लेकिन पूरी तरह से वीरान नहीं थे। युद्ध के बाद कुछ लोग अपने पुराने घरों की मरम्मत कर रहे थे। कुछ अमीर जो दरबार से दूरी रखते थे, उन्होंने भी अपने पुराने घरों की मरम्मत करके वहीं रहना शुरू कर दिया था। वरना, आसपास का इलाका मुस्लिम था। पुराने सुल्तानों की बनाई मस्जिद भी पास में ही थी। डर था कि अगर बादशाह की नज़र उस पर पड़ गई, तो वह उसे तेयू भेज देगा। इसके अलावा, इसके पीछे एक सावधानी वाली सोच भी थी, क्योंकि दरबारियों के बीच झगड़े फैल रहे थे।

मुगलों के दिल में घूमना-फिरना तो बहुत था। लेकिन इस खूबसूरत दिल में घूमने का मौका मुझे कम ही मिला। कुतुब मीनार को छोड़कर वहां घूमने जैसी कोई चीज़ नहीं थी। वरना इतनी लंबी दूरी तय करने के लिए मुझे घोड़े की ज़रूरत थी। घोड़ा मिलने का मौका भी कम ही मिलता था। अगर बेगम साहब चाहतीं, तो ही मुझे घोड़ा मिलता था।

मुझे एक शानदार घोड़ा दिया गया था। मुझे युद्ध के लिए पाला गया एक बढ़िया अरबी घोड़ा कौन देगा? घोड़े को भी प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है। जब मैं राजकुमार था, तो मैं हिजड़ा बन गया था और मैंने जो घोड़ा लिया था, उसके बारे में बहुत कुछ भूल गया था। अब, एक शानदार घोड़े पर सवार होकर, मैं अपने बालों और कपड़ों को हवा में उड़ाते हुए दौड़ने का मज़ा ले रहा था।

अमीर दशदखान के महल का मेन दरवाज़ा बंद था। लेकिन अंदर का दरवाज़ा लॉक नहीं था। मैंने दो-तीन बार ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया, फिर भी किसी ने नहीं खोला। इस दरवाज़े के पीछे एक बगीचा था। वहाँ से मैं महल के सामने वाले दरवाज़े में घुसा। मैं बादशाह की पत्नी को छोड़कर एक हिजड़ा था। इस वजह से मैं चौंक गया और अंदर चला गया। उसी समय, एक जवान औरत मेन दरवाज़े से बाहर का दरवाज़ा खोलने आती दिखी। काले कपड़े में एक बच्ची थी। लहंगा-अंगिया-दपुआ। कपड़े मुस्लिम थे, लेकिन शाही नहीं थे। कोई गुलाम या नौकरानी थी।

Machine Translated by Google

ऐसा होना चाहिए। नहीं तो, वह सामने के बगीचे में क्यों आई होगी और सामने का दरवाज़ा क्यों खोला होगा? मदाना में भी कोई तो होगा ही।

वह मेरे चेहरे के पास गया। चेहरा जाना-पहचाना लगा। मुझे लगा कि मैं भी बहुत जाना-पहचाना लग रहा हूँ। लेकिन उसने कहाँ देखा था? क्योंकि मैं उसे नहीं देख रहा था, इसलिए उसने माया को भी देखा, उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था। उसने उसे ज़रूर पहचान लिया होगा। उसका चेहरा खुला, लाल हुआ, और फिर काला हो गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। माया भी काँपने लगी। उसने अपने होंठ दाँतों तले दबाए और होश में आई। गर्कन मुड़ी और शिकार किए हुए हिरण की तरह अंदर भागी। उसकी अचानक हरकत से झोपड़ी में मौजूद बच्चा रोने लगा। वह महालया के किसी कमरे में भागी और गीचंदू के अंदर जाने की आवाज़ सुनी।

मैंने भी उसे पहचान लिया था। मेरे हाथ-पैर भी झनझना रहे थे। मैं पसीने से भीगा हुआ था। मेरा सिर दर्द कर रहा था। खड़ा नहीं हो पा रहा था, इसलिए मैं ज़मीन पर बैठ गया।

तभी महल से एक नौकरानी अंदर आई. उसने भी वैसे ही कपड़े पहने थे. लहंगा-अंगिया-दुपुआ. मैंने सोचा, “कौन? मुझे क्या देखना चाहिए?”

"मैं एक हिजड़ा हूँ..." मैंने बुदबुदाया।

“तो फिर मैं समझ गया। वरना, मैं गेट पार करने की हिम्मत नहीं करता। तुम्हें क्या चाहिए?” “उदयपुर महल

साहिब ने शबाना बेगम साहिब के लिए मैसेज भेजा है। मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।”

"अंदर आ जाओ।" वह मुझे आंगन पार करके उस औरत के पास ले गई जो आंगन पार कर रही थी।

विदाई सुनकर शबाना बेगम साहिब का चेहरा दया से चमक उठा। महल साहिब के हिजड़े गुलाम होने के नाते, मेरी खास सेवा की गई। नौकरानी मेरे लिए पानी लाई। मुझसे कहा गया कि खाकर चला जाऊँ। घोड़े से भी कहा गया कि वह मुझे दाना-पानी दे।

वह बेगम साहिब से कहना चाहती थी कि वह सबसे पहले जिस नौकरानी को देखती है, उससे मिलना और बात करना चाहती है, उसे बुलाना चाहती है। लेकिन क्या वह सच में वही थी? क्या उसके जैसा कोई और हो सकता है? नहीं। वरना, मुझे देखते ही उसके चेहरे पर एक के बाद एक इतने तरह के भाव नहीं आते। उसकी आँखों में आँसू नहीं आते। वह होंठ काटकर भागती नहीं। उसने जौहर किया था, है ना? वह यहाँ ज़िंदा कैसे आ सकती है? क्या उसके जैसा कोई और नहीं हो सकता?

Machine Translated by Google

'विट' नाटक देखने के बाद मैं छह महीने तक बगलू नहीं गया। औरंगज़ेब और इस संदर्भ में ओरिजिनल कामों को पढ़े बिना, मैं सोच भी नहीं सकता था कि माया को किताब में कैसा लगेगा। मैं किताब में एक जगह रुक गया, उस समय के बारे में सोचते हुए जो मेरे दिमाग में आया था। मेरा बगलू जाने का मन हुआ। मैं चला गया। मैंने सोचा भी नहीं था कि आमिर का गुस्सा शांत हो जाएगा। लेकिन मुझे पता था कि अगर मैंने इसे ऐसे ही छोड़ दिया, तो हमारे बीच दूरियां बढ़ जाएंगी। मैंने मन बना लिया था कि मैं अगले आठ-दस महीनों में लिखना खत्म करके बगलू लौट जाऊंगा। साथ ही, मेरे मन में यह भी याद आया कि मैं नरसापुर के इस गांव, अपाज के इस घर और अपाज के घर के इस कमरे को हमेशा के लिए नहीं छोड़ूंगा। "यह मेरा घर है, यह मेरा गांव है" का एहसास और मज़बूत हो गया था।

जब बगलुया घर पहुंचा, तो शॉपिंग करने वाली औरत घर में थी। मैंने उससे पूछा। फिर मैंने सोचा, "अमीनाबानू कहाँ है? मुझे भूख लगी है। क्या तुम मेरे लिए कुछ खाने को बनाओगी?"

"यहां खाने-पीने को कुछ नहीं है। अब साहब शिवाजी नगर में रहते हैं। वहां जाकर खाना बनाने में बहुत समय लगता है। इसलिए अमीनाबानू ने अपनी नौकरी छोड़ दी। मैं कभी-कभी यहां का दरवाज़ा खोलकर इस जगह की सफ़ाई करती हूं। यहां कोई नहीं रहता।" उसने उन्हें बताया।

मैंने उसकी तरफ देखा, मैं चाहती थी कि वह कुछ और कहे। उसने मेरी नज़रों से बचने की कोशिश की। लेकिन वह बच नहीं सका। मैंने दोहराया, "मुझे सब कुछ बताओ!"

"तुम चाहते हो कि मैं इसके साथ क्या करूँ? मुझे लगा कि तुम जानते हो। अगर तुम अपने दोस्तों को नहीं बताना चाहते, तो मैं तुम्हें बता दूँगा—"

"आपकी शपथ!"

"सर, आपने दूसरी लड़की से शादी कर ली है। लड़की स्कूल में पहली बार पढ़ रही है। उसके माता-पिता शिवाजीनगर में बस स्टैंड के सामने फल बेचते हैं। वह पच्चीस साल की है। वह शिवाजीनगर में आपके घर के पास की रहने वाली है।"

एक बेबसी सी महसूस हुई। मेरा सिर ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। इन सभी लड़कियों ने शरीयत माध्यमिक का इस्तेमाल किया था जिसे अब तक मर्दों ने रखा था! मेरे माता-पिता शिवाजीनगर में रहते थे, जो वराया के बाहरी इलाके में एक घर था। इस गाँव में पढ़े-लिखे लोगों के अलावा मुश्किल से ही कोई था। वे दोनों ग्रेजुएट थे। चूँकि वे चिपाटा से रिश्तेदार थे, इसलिए सब उन्हें अच्छी तरह जानते थे। इसी वजह से उन्हें इस जगह दूसरी पत्नी लाने में शर्म आ रही होगी! शायद

Machine Translated by Google

मुझे भी डर लगा होगा। किसी वजह से, अजनबी होने का एहसास मेरे मन में बस गया।

बिना कुछ कहे मैं बेंच पर बैठ गई। नौकरानी हँसी, "मुझे अगले घर में काम पर जाना है।"

मैं उठा और बाहर चला गया। मेरा मन किया कि शिवाजीनगर के घर जाकर उसका कॉलर पकड़ लूँ और उसके बारे में सोचूँ। मैं उसके बारे में सब कुछ जानता था। तो क्यों न बात करूँ? कम से कम मैं फ़ोन पर तो बात कर पाऊँगा। मैंने डायरेक्टरी नंबर ढूँढा और उसे फ़ोन किया। उसने फ़ोन उठाया।

"अमर!"

"ह!ं"

"आपने दूसरी शादी कर ली, यह ठीक नहीं है।"

यह बात हमारी टीमों पर भी लागू होती है। शायद हमें इस बारे में तुरंत सोचना चाहिए था।

मैंने फिर से ज़ोर से सोचा. बात वहीं रह गई, "लेकिन तुम्हारा तलाक़ नहीं हुआ है."

इसका क्या मतलब है? 'क्या मैंने तुम्हें छोड़ नहीं दिया है?' या 'क्या मैं दो और शादी करना चाहता हूँ?', 'तुम्हें किसी और से शादी करने के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है?', 'क्या मैं तुम्हें किसी भी वजह से तलाक दे सकता हूँ?'

अब मैं अकेला हूँ। मैं माया को दोष दे रहा हूँ। इसके अलावा, मैं फ़ोन दूर रखना चाहता हूँ।
एक आवाज़ आई.

शबाना बेगम को बिना कुछ बताए, बिना सोचे-समझे मैंने घोड़े पर हमला कर दिया। क्या ऐसा हो सकता है कि वह जौहर होने से पहले पकड़ा गया हो? अगर ऐसा है, तो वह माया की बहन, माँ, दादी को पकड़कर किसी के घर गुलाम, नौकरानी... या कैदी बनाकर ले गया होगा... मैं सोचता हूँ:! माया के पिता के उसे छोड़ने के बाद भी वह अपनी बेटियों को कैसे छोड़ सकता है? यह पता लगाने के बाद कि उसका जौहर पूरा हुआ या नहीं... लेकिन यह समझने का क्या मतलब था? मैं, जो यह सोचकर शांति से जी रहा था कि उसका जौहर पूरा हो गया है, अपने ही नतीजे पर पहुँचा। क्या मुझे अब सच पता चल सकता है? क्या होगा अगर मैं महल साहिब को कोई वजह बताऊँ और दवे गढ़ जाऊँ? या अगर मैं हुदुला के दरबार में थोड़ी पूछताछ करूँ? शायद हुदुला को इसके बारे में पता हो।

Machine Translated by Google

अगर आपको नहीं पता, तो वे डॉक्यूमेंट्स देखकर बता देंगे। जो लोग मुश्किल में हैं, वे भी राजपूताना के सूबेदार से जानकारी ले सकते हैं। मुझे खुद पर गुस्सा आया। इतने सालों तक मैंने यह क्यों नहीं सोचा? सभी औरतें जौहर में थीं और सभी आदमी आर्मी में थे, मैं बिना जमा किए पैसों से जी रहा था। क्यों? अगर हालात कुछ और होते, तो मैं यह बर्दाश्त नहीं करता, है ना?

उस दिन से मेरा मन बेचैन हो गया। मैं अंदर ही अंदर खो गया और बैठ गया। मुझे किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे खाने का स्वाद नहीं आ रहा था। मैं सो नहीं पा रहा था। मैं अपने दोस्तों से बात भी नहीं करना चाहता था।

दूसरे दिन शबाना बेगम आईं। हम एक दिन रुके। राशि भी बहुत खुश थी। दूसरे दिन हम वापस चले गए। रास्ते में हमने माया को कहीं छोड़ दिया, उसे एक अच्छी नज़र से देखते हुए। हालाँकि मेरा मन उससे इस बारे में बात करने का था, लेकिन मैंने उसे दबा रखा था। इच्छा को दबाना गुलामी का पहला नियम है, है ना?

दो हफ़्ते ऐसे ही गुज़र गए। शाम को माया मलकान उदयपुरी महल साहिब ने फ़ोन करके हुक्म दिया, "मैं तुम्हें एक दगीना दूँगी। ग़ौवन जाकर शबाना बेगम साहिब को दे दो। काम रिस्की है। आज यहाँ आ जाओ, वो गया में थीं। मैं भी वही बनाना चाहती हूँ। सुनार को दिखाने के लिए रखी थी। आओ, हम इसे गिफ़्ट में देने के लिए तैयार हो जाएँ। लेकिन यह मुझे ठीक नहीं लग रहा। अब काम हो गया है। लेकिन यह बात इस कान तक नहीं पहुँचनी चाहिए।"

मैं अपनी बात संभालने की कोशिश कर ही रहा था कि उसने कहा, "मैं सोच रहा था कि तुम्हें एक मैसेज भेजूं। लेकिन मैसेज नहीं आया। चार दिन बीत गए। अल्लाह की मेहरबानी है कि तुम इस तरह भी आ गए! हमारी नौकरानी तबस्सुम तुम्हारी बीवी थी, मुझे नहीं लगता। मुझे उसके अतीत के बारे में कुछ नहीं पता। हमारे खान साहब उसे बेचने लाए थे, वहां वह छह महीने के बेटे की मां थी। यह औरत उसके हाथों में क्या कर रही है! उसे यहां जनाया की सेवा के लिए लाया गया था। यहां, दो साल बाद, एक और बेटी पैदा हुई। अब पांच-छह महीने का बेटा है। मैं क्या कर सकता हूं? मुझे इसे सहना होगा! उस दिन तुम महल साहब का मैसेज भी लाए थे, वहां उन्होंने दरवाजा खोला था। तुम ग़बन घटना पर दौड़े हुए आए। वह कांप रही थी, सोच रही थी कि उससे गलती हो गई है, और अगर दूल्हे को पता चला, तो वह बिना लड़े नहीं बचेगा। मुझे यह सब कुछ नहीं पता था। जब मैं महल साहब से मिलकर लौटा, तो मुझे बुखार था। कोई और भी था। मेरे कानों पर जादू सा हो गया। लेकिन मुझे इसके बारे में ज़्यादा पता नहीं था। ऐसी बहुत सी नौकरानियाँ हैं, ऐसे किसी का क्या होगा। मैं उन्हें हर जगह कहाँ रखूँगा? लेकिन चार दिन पहले, मैं बिना जाने तालाब के दूसरी तरफ़ कूद गया।

Machine Translated by Google

वह मारी गई। पीछे के आंगन में काम कर रही नौकरानी उसके पीछे कूदी, उसने अपना पैर गड्ढे में डाला और उसकी चोटी खींची। इस समय वह छटपटा रही थी, कह रही थी, 'मुझे जाने दो! मुझे जाने दो'। दूसरे गुलाम भी भागे। उन्होंने उसे बाहर निकाला। उसके पेट में ज़्यादा पानी नहीं गया था। अगर गया होता, तो उन्होंने उसे भी बाहर निकाल लिया। यह सब होने के बाद, मुझे पूरी खबर पता चली।"

मैं अवाक रह गया। कुछ पलों के बाद, मैंने सोचा, "क्या मैं उनसे मिलूंगा? क्या मुझे उनसे बात करने का मौका मिलेगा? काश!"

"ठीक है. मैं कर दूँगी. तुम भी इंतज़ार करो." यह कहकर बेगम बाहर चली गईं. थोड़ी देर बाद,

बगल वाले कमरे से नौकरानी आई और बोली, "महालय, वहाँ उजले हिस्से में एक जानवरों का बाड़ा है. मैं तुम्हें दिखाती हूँ. वहीं रुको. तबस्सुम वहाँ आएगी."

मैं उसके पीछे गया। गायें एक लाइन में बंधी थीं। उनके सामने उनका चारा था। वे दूध और मीट लेने जा रही थीं, उसने सोचा। बछड़ा वहाँ नहीं था। उन्हें कहीं और रखा गया होगा। जब मैं यह सोच ही रहा था, तो शामली, लो-कट ब्लाउज और हुड पहने, वहाँ आ गई। पास आने के बावजूद, उसने माया की तरफ नहीं देखा। हमारी नाकामी का काला साया उसे ढक रहा था। मैं सोच रहा था कि मैं बात कहाँ से शुरू करूँ। मैंने अपनी कहानी सुनानी शुरू की, यह सोचकर कि अगर मैंने उससे किसी भी तरह का सवाल किया, तो उसे दर्द होगा, इसलिए मैंने उसे अपनी कहानी सुनानी शुरू की। "मुझे विनू की लड़ाई के लिए अपॉइंट किया गया था। मेरे बनाए ग्रुप ने मुझे पकड़ लिया। माया के ठीक सामने विनू की मूर्ति तोड़ दी गई। मनसबदार ने मुझे साँप की तरह इस्तेमाल किया, और मुझे दूसरे लोगों के बारे में भी ऐसा ही लगा। उसने एक और खरीदा और उसे हिजड़े के घर में काम पर लगा दिया। फिर उसने मुझे एक बेगम साहिब, बादशाह की बेगम को दे दिया। अब मैं उसी घर में हूँ।"

मेरा सच सुनते हुए उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। जब मैंने अपना आखिरी वाक्य पूरा किया, तो उसने मेरी तरफ देखा। मुझे देखते हुए उसकी आँखों में आँसू भर आए। अब मैं उसे बिना किसी भाव के देख रहा था।

उसने सोचा, "तुम्हारे पास खंजर था, है ना? जब उसने तुम्हें पकड़ा तो तुमने उसके पेट में क्यों नहीं घोंप दिया?"

यह जादू मुझ पर अचानक से हुआ। मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी।

Machine Translated by Google

'क्या वो मुझे बेइज्जत करने के लिए ऐसा करने की सोच रही है? लेकिन हाँ, मैंने ऐसा क्यों किया? माया के पास एक खंजर था। मैंने उसे अपने पास यह सोचकर रखा था कि अगर हम एक-दूसरे से लड़ने के लिए साथ आएँगे, तो यह काम आएगा। सरेंडर करने के बजाय, यह सोच कि हमें मार डाला जाए, क्या माया में ज़रा भी इज़्ज़त नहीं थी? क्या उसे यह डर नहीं था कि अगर हम पकड़े गए, तो हमारी ज़िंदगी बर्बाद हो जाएगी? थी। फिर भी, उसने अपने पेट में चाकू घोंपने के बारे में क्यों नहीं सोचा? मौत का डर? अपने पेट में चाकू घोंपकर मौत के हवाले कर देने का डर? वह ऐसी ज़िंदगी क्यों नहीं जी पाएगी जिसमें उसे लगे कि वह बेवकूफ़ है? अब तक जो घटनाएँ हो रही थीं, उनकी रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि उसे देखते हुए, उसके बारे में सोचना नामुमकिन था।'

मैं हैरान रह गया। मुझे समझ नहीं आया कि वह क्या सोच रहा है। माया से तीन हाथ दूर बैठी वह हँसी, "तुमने अपने पेट में चाकू क्यों नहीं मारा, मैं समझती हूँ। आज जब तुमने मुझे बाहर बगीचे के पास देखा था, तो क्या तुम सबसे पहले मुँह के बल नहीं आए थे? उस दिन चौक में आग जल रही थी। सास, ननद, दादी और सब उसमें हिस्सा ले रहे थे। उसके बाद राजपरिवार के दूसरे सदस्य भी हिस्सा ले रहे थे। आग और भी भयानक होती जा रही थी।

“मैं लाइन के आखिर में खड़ी थी। शाही खानदान की बहू, राजकुमारी! असल में, मुझे पहले कूद जाना चाहिए था। मुझे निदान महाराणा के कपड़े और पैसे आग में फेंक देने चाहिए थे। मुझे नहीं लगता कि आग से सिर में दर्द होगा या आत्मा जल्दी मर जाएगी। मुझे कुछ चीखें सुनाई दे रही थीं। फिर भी, मेरा मन आगे बढ़ता रहा। मैं जौहर करने जा रही थी, यह सोचकर कि आत्मा ‘हर’ बनकर शंकर के पास जाएगी। लेकिन हवा मेरे शरीर पर चल रही थी। मेरा पूरा शरीर जलने जैसा लग रहा था। मैं डर के मारे पीछे मुड़ी। मैंने पाया कि माया के कदम मेरा पीछा कर रहे हैं। मैं भागने की कोशिश कर रही थी, फिर भी मैं वहाँ से निकलने की कोशिश कर रही थी। कहते हैं कि जो मासूम लोग उनके हाथ लगते हैं, उन पर ज़ुल्म किया जाता है और उन्हें गुलाम बनाया जाता है। यह झूठ होगा, क्यों? इतनी करीबी बहन। या मुझे कभी कोई ऐसा नहीं मिलेगा जो मुझे लड़की के रूप में देखे, क्यों? कुछ ऐसे भी हैं जो धरती के राजाओं जैसे हैं। ऐसे विचार मेरे मन में आ रहे थे। मेरी नज़रें जलती हुई लपटों पर टिकी थीं जो मेरे मन में धड़क रहा था। मौत का डर एक बार चला गया था, कि फिर से मरना उतना ही आसान था। अगर मेरा मन चला जाता, तो मैं बच नहीं पाता, कुछ बुरे ख्याल मेरे सामने आते रहते। लेकिन मौत की किस्मत यूं ही नहीं हुई। बल्कि उस घटना को लेकर मेरे मन में जो शर्म आ गई थी, उसने मुझे खाई में कूदने पर मजबूर कर दिया। लेकिन जब मैं ना कह रहा था, तब महबूब दौड़कर आया और मुझे बचा लिया! कौन जानता है ऐसा डर फिर कब आएगा!”

जब मैंने सुना कि मृयु आखिरकार मौत के डर से पीछे हट गया है, तो मुझे बिल्कुल भी गुस्सा नहीं आया। सभी देवता हार नहीं मानते, और सभी मनुष्य उनके हाथों में हैं।

Machine Translated by Google

तलवार लेकर मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और मेरा दिल भी नहीं पसीजा। अगर ऐसा होता तो इतनी बड़ी संख्या में दास-दासियाँ कैसे आतीं? नहीं तो गाँव में इतनी बड़ी संख्या में लोग क्यों रहते? मैंने पास में रखी खंजर पेट में घोंपकर अपनी जान नहीं दी। इसलिए मैं भी उसकी तरह मौत से डर गया। जैसे ही वह मेरे सामने आया, मेरा दिल उसके लिए दया से भर गया।

"आगे क्या हुआ, मैं नहीं सोचूंगा। तुम्हारा मन परेशान हो जाएगा। मुझे यह भी पता है कि तुम्हारे जैसे जवान कैदियों के साथ क्या होता है। उसके तीन बच्चे थे, और मेरी उनसे शादी नहीं हुई थी। मैंने उस दिन इस बच्चे को उसकी गोद में देखा था।" "बच्चा पैदा हुआ है, लेकिन यह भी नाइंसाफ़ी है! मालिक

का गुलाम पर पूरा अधिकार होता है, वजह भी पता है। गुलाम चाहे तो मना नहीं कर सकती और इसका दूसरा नतीजा यह है कि बेगमों में इस बारे में हमेशा मतभेद रहता है। कुछ गुलामों को इसमें शैतानी मज़ा भी आता है। लेकिन माया को किसी राज्य की राजकुमारी के तौर पर, मरे हुए आदमी की तरह देखना नाइंसाफ़ी है! माया ने मुझे कभी हिम्मत नहीं हारी। उल्टा, मैंने उसे एक इमोशनल लकड़ी की बाली समझा है। इसीलिए, मुझे हमेशा लगा है कि वह कोई पराई है। लेकिन एक बात बताऊं। माया ने जो पहला बच्चा उसके लिए पाया, वह तुम्हारा है। मेरे पहले मालिक ने मुझे सारा हिसाब बताया था, ताकि कपल की ज़िंदगी खुशहाल रहे। "आह। तुम पेट में रहते हुए लड़की बन गए थे, इसलिए वह भी लड़की हो गई। मैंने उसका नाम इहाम रखा है।"

अचानक माया के सीने में एक गर्म एहसास हुआ। एक गर्म एहसास जिसने उसे अपनी सांस रोक लेने पर मजबूर कर दिया, बस इतना कि वह इसे सह सके, एक सुखद एहसास। भले ही मोइनुन्ननमाया ने माया पौष के लकड़ी के चिमटे को तोड़ दिया था, माया रा कुछ समय के लिए ज़िंदा था! वह अब छह साल का रहा होगा। उसने मन ही मन हिसाब लगाया। शामली, जो उसके सामने तीन हाथ दूर थी, माया के बच्चे की माँ थी, एक हीरो का खूबसूरत एहसास जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था, उसके मन को खुश कर गया। वह पास जाकर अपनी माँ से हाथ मिलाना चाहती थी। लेकिन मुझे यकीन था कि यहाँ कोई मुझे देख रहा होगा। भले ही मैं नामर्द थी। औरतों का यही तरीका था। सिर्फ़ इसी वजह से अपनी माँ से हाथ मिलाना, मौत का कारण बन सकता था।

मैंने सोचा, "क्या उसे यहाँ लाने के लिए यह काफ़ी होगा?" छह साल के लड़के का माथा, नाक, ठुड्डी, चेहरा और शरीर का पोस्चर बन जाता है। अगर वह माया के साथ नहीं भी है, तो भी वह अपने पिता, दादा, माँ, दादी या अपने माता-पिता या दादा-दादी के साथ हो सकता है! या अपनी माँ की तरह...

वह मेरी तरफ मुड़ा। उसकी आँखों में आँसू थे। "ऐसी हालत में हमें बच्चे को बड़ों के सामने लाना पड़ता है, क्या यह दुख की बात है? हम अपना दुख समझ सकते हैं। लेकिन

Machine Translated by Google

"मैं उसे एक राजकुमार की तरह पालना चाहता था, लेकिन उसे गुलाम मांओं और विधवाओं के बच्चे के तौर पर बड़ा होना पड़ा, और मुझे बहुत दुख हो रहा है। हे भगवान! और किन शब्दों में हमें सुकून मिलेगा?" मैंने आह भरी और वहां से चला गया।

वह हँसी, "इस वजह से मैं दुखी नहीं हूँ। यह स्वाभाविक है कि आप अपने बच्चे को देखना चाहें। लेकिन माया के तब से दो बच्चे हो चुके हैं। आप उन्हें देखना नहीं चाहते थे।"

मेरा मन दुख से भर गया था। माया के मन में जो साधारण सी भावना बन रही थी, उसने उसके दिल में बहुत खुशी पैदा कर दी थी। हेम यह भी जानता था कि इतने सालों तक जाना में रहने के बाद औरतों की भावनाएँ बदल जाती हैं। लेकिन मैं इस मामले में उसके मन का रिएक्शन नहीं समझ पाया।

उन्होंने आगे कहा, "शादीशुदा या गोद ली हुई पत्नी, नौकरानी या बच्चों की देखभाल करने वाली से पैदा हुए सभी बच्चों के अधिकार एक जैसे होते हैं। शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चों का स्टेटस अलग होता है, जबकि शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चों का स्टेटस एक जैसा होता है। बच्चों के मामले में भी, मांएं शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चों के साथ लगातार भेदभाव करती हैं। शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चे हमेशा मायके से आते हैं। इस वजह से, शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चों को शादीशुदा औरत का प्यार मिलना बहुत कम देखने को मिलता है। लेकिन शादीशुदा औरत से शादी करके आई पत्नी, भले ही वह शादीशुदा न हो, ऐसे बच्चों की ज़िंदगी को मुड़कर भी नहीं देखती। वह कहते हैं, शादीशुदा औरत कितने बच्चों को प्यार कर सकती है! इस वजह से, शादीशुदा औरत से पैदा हुए बच्चे उसके अपने बच्चों जितने ही होते हैं। माया शादीशुदा औरत को बच्चे देती है, लेकिन सच तो यह है कि "उनके मां-बाप नहीं होते। मालिकों ने उन्हें कभी गोद में नहीं लिया या लाड़-प्यार नहीं किया।"

मुझे यह नहीं पता था। मेरे दिल में एक तेज़ दर्द हुआ, "मैं बच्चों को भी वहीं बुला लूँगा।" लेकिन इसका भी कोई मतलब नहीं है, "मैं इसे बस फेंक दूँगा।"

मुझे अभी भी नहीं पता कि मैं इस बारे में क्या सोचता हूँ। तो फिर मुझे कैसे पता चलेगा कि अन्याय से पैदा हुए इन बच्चों के बारे में मैं क्या सोचता हूँ?

उन्होंने आगे कहा, "जब मुझे पता चला कि तुमसे सबसे बड़ा बेटा हुआ है, तो मैं कितनी खुश हुई, पता है? उन्होंने उसका नाम इहाम रखा, लेकिन मेरा मन उसके लिए कोई और नाम ढूंढ रहा था। विनुवाप सिंह, नारायण सिंह, उदयभाकर सिंह जैसे कुछ नाम दिमाग में आ रहे थे। मेरी दीन-हीन हालत बच्चे विश्वान को प्यार करने में डूब रही थी। मुझे उन बच्चों के लिए भी वैसा ही प्यार महसूस हो रहा था जिन्हें रेप से इकट्ठा किया गया था। अगर मैं उन्हें पास लेकर प्यार न करूँ, तो वे कौन होते, यह एहसास भी मेरे मन में उठ रहा था।"

Machine Translated by Google

मैंने उसकी तरफ देखा। वह, जो दोपहर में भाग गई थी, अब बेधड़क मुझे अपना राज़ बता रही थी।

"मुझे पहले कभी किसी को यह बताने का मौका नहीं मिला, और मुझे नहीं लगा था कि कोई समझेगा। तुम अचानक मुझसे मिल गए। एक औरत अपने पति के अलावा मुझे यह किसके बारे में बता सकती है?" माया उसे देखकर हंस पड़ी।

“शामला, तुम मुझसे मिल चुकी हो। तुमने मुझे अपना पति मानकर अपना मन खोल लिया है। माया को भी मेरे मन में नई एनर्जी महसूस होने लगी है। लेकिन हालात ऐसे हैं, मेरे पति ने मुझे कोई ताकत नहीं दी है। उसके बिना, मैं पति होने का एहसास कैसे पैदा कर सकती हूँ? उसके बिना, मैं गुलाम हूँ। जब तक मेरा मालिक मुझे आज़ाद नहीं करता, मैं गुलाम हूँ! माया जैसे कई गुलाम अपनी पूरी ज़िंदगी गुलामी में जीते हैं। यह आज़ादी जो कभी किसी को नहीं मिली, माया उससे डरती है, मैं उसके बारे में कैसे सोच सकती हूँ? जब तक तुम्हारा मालिक तुम्हें आज़ाद नहीं करता, तुम भी गुलाम हो। आज कुछ हुआ और हम आमने-सामने आए, हम एक-दूसरे से बात कर पाए। मुझे यकीन नहीं है कि मुझे अपनी पूरी ज़िंदगी में ऐसा मौका फिर मिलेगा। मैं अपने बच्चों को एक बार आँखें बंद करके देखूँगी और चली जाऊँगी। क्योंकि सिर्फ़ इमोशनली डिपेंडेंट होकर ही कोई थोड़ा जी सकता है। पूरी ज़िंदगी जीना नामुमकिन है...”

जब मैं आधे रास्ते पर था, तो जो नौकरानी मुझे झोपड़ी में छोड़कर गई थी, वह दौड़कर आई और बोली, "अमीर साहब वापस आ गए हैं। वह आपसे पूछताछ कर रहे थे। जल्दी आइए।"

यह सुनकर शामली का चेहरा डर गया। माया से कुछ कहना नहीं चाहती थी, इसलिए वह जल्दी से उठी और चली गई। उसके पीछे की आकृति को देखते हुए मुझे भी लगा कि इसके बाद यहाँ रुकने में खतरा है। मैं जल्दी से उठ गई। अगर उदयपुरी साहिब का नाम लिया जाए, तो कोई खतरा नहीं है। लेकिन गोवा में क्या कर रहे थे, किसने सोचा होगा? सिवाय इसके कि घोड़ा दरवाज़े के बाहर एक पेड़ से बंधा है। क्या होगा अगर आमिर का घोड़ा चला गया हो? हालाँकि मुझे डर लग रहा था, मैंने दिखाया नहीं, लेकिन मैं दरवाज़े की तरफ़ चली गई।

जब घौवन वापस भाग रहा था, तो मुझे दशद खान और शामली की याद आई, जो उसे नानी कहते थे। मुझे हैरानी हुई कि मुझे शामली क्यों याद आई, जो बहुत समय से जी रही थी और अभी भी बच्ची थी। मुझे याद आया कि वह तीन बच्चों की माँ थी, एक छह महीने का बच्चा, और भले ही उसने बहुत सारे कपड़े पहने थे, शामली अभी भी खूबसूरत थी। मुझे एक पल के लिए लगा कि मुझे दशद खान के पेट में चाकू घोंपकर उसे मार देना चाहिए था.. मुझे उसे एक हज़ार रुपये बेचकर, उसका बीज फोड़कर नामर्द बना देना चाहिए था, और तुरानी के सीने में चाकू घोंप देना चाहिए था... मेरा मन ऐसे ही भटकने लगा।

Machine Translated by Google

घोड़े वापसी की गंध के कारण भाग रहे थे।

आज शाम मैं मुहम्मद हुदुल्ला के घर भी नहीं जा पाया। दूसरे दिन जब मैं गया, तो उसने मुझे खुशी-खुशी खबर दी, "बादशाह ने काशी विवेरा मंदिर को तोड़ने का हुक्म दिया है।" यह सुनकर माया बहुत दुखी हुई। मैं जानता था कि हर मुस्लिम राजा, नवाब और सूबेदार ने अपनी-अपनी राय में जितने चाहे उतने मंदिर गिरा दिए, मूर्तियां तोड़ दीं और मंदिरों के पत्थरों और मूर्तियों को मस्जिदों की नींव के तौर पर इस्तेमाल किया। अकेले इस इलाके में इस तरह बने मंदिरों की संख्या पंद्रह से बीस हज़ार होने का अंदाज़ा है, जैसा कि हिंदुओं ने खुद नदी देखकर कहा था। मुगलों ने इस इलाके में मंदिर बनवाया और बादशाह ज़हरान और बाबर ने अयोध्या में राम मंदिर को गिरा दिया। गजनी, गोरी, गुलाम, तुगलक, निज़ाम शाही और कुतुब शाह ने हिंदुओं की धार्मिक गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया और कहा, “इस लगातार खतरे में, पापी बादशाह अकबर को छोड़कर, बाकी सभी शासकों ने पापी लोगों के मंदिरों को बहुत नुकसान पहुंचाया है। बादशाह अकबर की आत्मा नरक में तड़पती रहेगी। आलमगीर बादशाह पापी है! उसने पकड़े जाने तक खुद को घेरे में रखा था। अब देखो! उसने मौका मिलते ही काशी वीर मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया है! इसके बाद, लोगों की प्रतिक्रिया देखने के बाद, वे मथुरा मंदिर को तोड़ देंगे। यह मेरी भविष्यवाणी है जो सच होगी। आप भी देखेंगे!”

उस रात मुझे नींद नहीं आई। इन देवताओं को छोड़े हुए सात साल हो गए हैं, जिनकी पूजा नहीं की जा सकती। इनके बनाए मंदिरों पर घर नहीं बने। फिर भी ये मंदिर हर जगह खत्म हो रहे हैं! इन देवताओं के मंदिर तोड़े जा रहे हैं और इन अवशेषों के आधार पर मंदिर बनाए जा रहे हैं। जैसे ही नज़र जाएगी, मंदिर दिख जाएंगे, इसमें कोई शक नहीं। मैं शहर से ज़्यादा दूर नहीं गया। लोग कहते हैं कि कुछ लोग खत्म हो गए हैं। लेकिन कुछ और खत्म होने बाकी हैं। यही हमें तब तक करना है जब तक पूरी दुनिया खत्म न हो जाए। बादशाह औरंगज़ेब इस काम के लिए पूरी तरह जागा हुआ था। अब माया की ज़िंदगी में, माया इस दुनिया के बहुत करीब है, सिर्फ़ दिल में! उसके जैसा समझदार कोई दूसरा नहीं है। पूरी हिस्ट्री की डिटेल उसकी मौत में है। किस राजा के करियर की डिटेल्ड जानकारी किस किताब में है, इसे डिटेल में कौन समझ पाएगा? सिवाय उनके जिन्हें माया से इतना लगाव है! उसने कहा है कि इसमें और कुछ होने की कोई वजह नहीं है।

Machine Translated by Google

कल शामली से मिलने के बाद माया का मन पूरी तरह बदल गया था। अब जब से सुना कि काशीवीरा परिवार मदद के लिए आया है, वह हर तरफ से माया से हारने लगी थी। अब मैं न इधर की रही, न उधर की! मैं धूल से लथपथ होकर ज़मीन पर गिर पड़ी, और धरती पर मेरी जान चली गई। लेकिन जब मैं शामली से मिली और टिपानेला आई, तो मैं उससे भी पूरी तरह आज़ाद हो गई।

दूसरे दिन मैंने सोचा, मुझे काशी जाकर वहाँ की ज़िंदगी अपनी आँखों से देखनी चाहिए। मुझे इस ज़िंदगी में हिस्सा लेने की ज़रूरत नहीं है और मुझे इस पर कोई शक भी नहीं है। मेरे दिल ने अभी तक इलम को पूरी तरह से मना नहीं किया है। माया गाँव में इस मूर्ति के गिरने से कुछ मज़बूत धागे अभी तक टूटे नहीं हैं। अगर मैं काशी की ज़िंदगी अपनी आँखों से देखूँ, तो शायद वे भी टूट जाएँ और कम से कम इलम पर मेरा भरोसा और मज़बूत हो जाए। यह गाँव के लोगों की सोच से मेल खाता है।

ऐसी

जगह! इसीलिए बादशाह ने पहले इस जगह को हराने के बाद, इसके बाद कई दूसरी जगहों पर हमला करने का प्लान बनाया है। हिंदू भी कहते हैं, बादशाह आलमगीर इतने महान हैं कि वे बिना हाथ में किताब लिए कुरान की हर लाइन सुना सकते हैं! मुझे भी काशी मंदरा राजवंश का सदस्य बन जाना चाहिए। इस तरह, मुझे भी सम्मान मिलेगा। मैं संतों के इस ग्रुप का हिस्सा बनूंगा। मैं भी संतों के इस ग्रुप का हिस्सा बनूंगा।

Machine Translated by Google

9

एक बार की बात है, लैम बैठी अपनी लिखावट देख रही थी। कचपा खेत में गया हुआ था। एक अनजान चरवाहा गायों का गोबर हटाकर गोशाला साफ कर रहा था। अगर वह इस लिखावट को और कलात्मक बनाने जाती, तो इसकी सुंदरता की कड़वाहट कम हो जाती, और अगर वह इतिहास में इसकी सुंदरता की कड़वाहट बनाए रखना चाहती थी, तो उसे कलात्मक सुंदरता का लालच छोड़ना पड़ता। कौन सा रास्ता अपनाए, यह सोचकर उसका मन दुख रहा था।

यह अचानक नहीं हुआ। यह लिखना शुरू से ही उसे परेशान कर रहा था। आखिरकार, वह लिखना छोड़कर खेतों में काम करने लगी।

तब से हर दिन ऐसा ही होता था। सुबह वह माया, एशेता जाता और थोड़ी देर टहलने के बाद नहाकर अपने घर वापस आ जाता। हर दिन नारियल के पेड़ों की लाइनों के बीच से गुजरते हुए उसे अपने आप याद आ जाता था कि किस पेड़ पर कितनी फलियाँ हैं, किस फली में कितने नारियल लगे हैं और हर फली में लगभग कितने नारियल हैं। खेत के बाकी सारे काम वह खुद ही करता था। ज़रूरत पड़ने पर बाड़ भी बनवा लेता था। वह इस बारे में उससे बातचीत करने के लिए भी काफी समझ गया था।

एक सुबह, जब मैं टहल रहा था, तो एक जवान लड़का दौड़ता हुआ आया। वह बहुत उत्साहित था। मैं उसे अपने घर ले आया, “तुम्हारा जुआ आ गया है। वह धान के खेत में बैठा है। देवताओं ने मुझे भेज दिया है, और बिगिन ने तुम्हें बुलाया है!”

यह भी अनएक्सपेक्टेड था। वह थोड़ी एक्साइटेड भी थी। नज़ीर से मिले हुए उसे दो साल हो गए थे! नज़ीर, जो सऊदी अरब में काम कर रहा था, गया खेपेला आ गया था, जहाँ वह इन विडाल के साथ नहीं रहती थी। फिर भी, वह बगलू चली गई और रहने लगी। उसने ध्यान रखा था कि उसे सुई बोरिंग न लगे। हालाँकि उसने आमिर से झगड़ा नहीं किया था, लेकिन नरसापुर में रहने और महवा के विडाल की दौलत देखकर हिस्ट्री में दिलचस्पी लेने की वजह से दोनों के बीच दूरियाँ आ गई थीं। फिर भी, जब लड़का सुई के पास आया, तो दोनों में से किसी को कोई अफ़सोस नहीं हुआ। जब लड़का उसके सामने होता, तो आमिर ज़रूरत के हिसाब से पी से बात करता। जब वह नहीं होता, तो दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं होती थी।

Machine Translated by Google

'अब नजीर बगलुत कहाँ उतरा? क्या वह एयरपोर्ट से सीधे मलेरिया गया? क्या वह शिवाजीनगर गया? क्या उसने गाँव वालों को बताया कि वह आ रहा है? यहाँ कोई फ़ोन नहीं है। लेकिन उसके आने से पहले ही गाँव वालों ने एक और शादी कर ली! उसने इस बारे में क्या सोचा?'

इन विचारों को मन में घुमाते हुए वह घर की ओर मुड़ी।

घर के सामने एक नई, चमकदार, काली टोयोटा लैंड क्रूज़र खड़ी थी। उसमें मॉडर्न अरबी दाढ़ी वाला एक आदमी बैठा था। लामी घर की चौखट पार करके अंदर गई। वहाँ, फ़र्श पर, मस्जिद के सफ़ेद कालीन के सामने, जनमाज़ नाम की एक छोटी सी मस्जिद थी, जिस पर नज़ीर नमाज़ पढ़ रहा था। उसने एक अरब आदमी का पजामा पहना हुआ था, जांघों तक लंबा ट्यूनिक, दो अंगुल लंबी चमकदार दाढ़ी, दाढ़ी से छोटी मूंछें, और अपने करीने से कटे बालों पर नमाज़ के समय पहनी जाने वाली सफ़ेद टोपी। उसने उसकी तरफ़ देखा। लेकिन वह नमाज़ पढ़ते समय अपना ध्यान नहीं खोना चाहती थी, इसलिए उसने अपनी नज़र वापस मस्जिद की तरफ़ कर ली।

उसने अयास्का का दरवाज़ा खोला और अंदर चली गई. कमरा साफ़-सुथरा था. वह अपनी लिखने वाली कुर्सी पर बैठ गई.

थोड़ी देर बाद, नज़ीर कंबल में लिपटा हुआ कमरे में आया। उसने उसे सामने वाली बेंच पर बैठने को कहा।

सोफे पर बैठकर उन्होंने कहा, “क्या आपको पता है कि नमाज़ पढ़ने के बाद कितनी ताकत महसूस होती है? अल्लाह के अलावा कोई दूसरा भगवान नहीं है। इंसान को किसी और के आगे झुकने की ज़रूरत नहीं है, ऐसी ताकत होती है! अगर कुछ और करने को नहीं है, तो जमूद, अगर जमूद नहीं, तो दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ना ही काफ़ी है। दुनिया की कोई ताकत उन्हें हरा नहीं सकती। मैं कभी, गलती से भी, नमाज़ नहीं छोड़ता।”

अब तक वह उदमुर्त में बात करता था। उसके माता-पिता दोनों उदमुर्त कलाकार थे, तेज़ ज़बान वाले। हमारा समाज भी उदमुर्त था। वह उदमुर्त में था, बस। लेकिन अब वह उदमुर्त में बोल रहा था। उदमुर्त में बहुत सारे अरबी शब्द और अरबी उच्चारण और लहजे, अरबी स्टाइल में। हालाँकि उसे इनमें से कुछ शब्दों का मतलब समझ नहीं आया, लेकिन उसने उन्हें संक्षेप में समझ लिया, "प्रार्थना इंसान को शांति देती है। यह उसे बेवकूफ बनाती है। अगर यह भावना बढ़ रही है, तो किसी दूसरे भगवान के आगे झुकने का कोई कारण नहीं है, इसका मतलब यह क्यों होगा कि वह इतना बड़ा हो गया है?"

फिर उसने उदास नज़रों से उसकी तरफ़ देखा. फिर उसने कहा, “मेरी प्यारी, इतनी दूर से

Machine Translated by Google

मैं आ गया हूँ। माँ से बात करके अच्छा नहीं लग रहा। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि तुमने भी टॉपिक हटा दिया है। तुमने दूसरे भगवानों की पूजा नहीं छोड़ी है, मैं समझता हूँ कि तुम किसी वजह से बोल रहे हो। अगर कोई जान-बूझकर अंधेरे में रहता है, तो कौन
क्या करेंगे आप?"

'जो लोग एक भगवान को मानते हैं और जो एक से ज़्यादा भगवानों की पूजा करते हैं, वे क्या करते हैं?' मैं चार साल से यह पढ़ रहा हूँ। इसके कई उदाहरण हैं, यह किसी तरह का हाइप है, मुझे इस बारे में डिटेल में बताना होगा,' मैंने सोचा। फिर भी, मैंने उससे कहा, "बेटा! इस कमरे में रखी किताबें देखो। तुम्हारे दादाजी ने बाईस साल तक पढ़ाई की है। वह पिछले चार साल से भी पढ़ रहे हैं। एक पूजा, अनेक पूजाएँ और अलग-अलग कल्चर ऐसे सब्जेक्ट हैं जिन्हें सीरियसली समझने की ज़रूरत है। मुझे देखने दो! तुम कैसे हो? तुम सऊदी कैसे हो? मुझे बताओ।"

"अमीजान, अल्लाह की मेहरबानी! वो देश जहाँ पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पैदा हुए। इस देश में इतनी दौलत है जितनी दुनिया के किसी और देश में नहीं है। देश की दौलत सोने, चाँदी, हीरे, जवाहरात, हवाई जहाज़, रॉकेट या लोहे में नहीं है, वो तेल में है! अगर एक बैरल तेल की कीमत पाँच डॉलर बढ़ जाए, तो सभी अमीर देशों की कीमतें तेज़ी से गिर जाती हैं। देखते ही देखते ये देश लोहे के हो जाते हैं। ये जहाज़ गरीबों के देश में है। इसमें भी, जहाँ पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इकट्ठा हुए, वो देश जिसे वेटिकन ने पाक किया, वो सऊदी अरब में है। रहमदिल अल्लाह अपने देश पर मेहरबान क्यों नहीं हो सकते? और भारत पर भी! जब हम प्लेन से उतरते हैं, तो हमें गरीबी, बीमारी और भूख का सामना करना पड़ता है। हम पूरे दिल से इस्लाम कबूल नहीं करना चाहते, बल्कि पॉलिटिक्स के लिए। "मुसलमानों को मनाने और अंदर से बहुत से लोगों को धर्म पर बनाए रखने के लिए इतना कुछ। फिर दौलत कैसे बढ़ेगी?"

"बेटा, तुमने अमेरिका में पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग में M.E. किया है। बताओ, ज़मीन के अंदर का तेल कैसे इस्तेमाल होता है? जो तेल कई साल पहले ज़मीन में दबा था, वह बहुत समय बाद क्रूड ऑयल बन गया। मैंने इसके बारे में कहीं पढ़ा था। तुम्हें डिटेल्स में दिलचस्पी होगी। आज जहाँ रेगिस्तान हैं, वहाँ कभी इन मुस्लिम देशों में खुशहाल ज़िंदगी थी। जैसा धरती कहती है, तुम इसे अल्लाह की मेहरबानी बता रहे हो। अरब के बच्चों को यह कहना शोभा नहीं देता।" उसे गुस्सा आया। अगर कोई और ऐसी बात कहता, तो वह उसे ज़ोरदार डांटकर नज़रअंदाज़ कर देता। लेकिन उसकी माँ ही उसके धर्म की अहमियत कम कर रही थी। यह बर्दाश्त करना मुश्किल था। उसने कहा, "मुझे किसी को यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि ज़मीन

के अंदर मिनरल ऑयल कैसे बनता है। लेकिन जिठमवादी इकट्ठा हुए, इस देश में इतनी ज़्यादा मात्रा में मिनरल ऑयल कैसे बनता था? भारत में क्यों नहीं, जहाँ बहुत से लोग पूजा करते हैं? अगर तुम खुलकर सोचो,

Machine Translated by Google

मुझे जवाब आसानी से मिल गया। अल्लाह के पास जाने के लिए भी अल्लाह की कृपा ज़रूरी है। अगर अल्लाह की मुझ पर कृपा होती, तो मैं बेइज़्ज़त हो जाती। नहीं तो, मैं जहन्नुम में चली जाती। एक माँ के तौर पर, मुझे तुमसे प्यार है, मेरा लगाव है। लेकिन मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?" अरब देशों में भी, जो भारतीय लड़कियाँ काम के लिए सऊदी अरब जाती हैं, उन्हें भी वहाँ की सादगी पसंद आती है, इसलिए

मैंने सुना है कि ऑफिस, फैक्ट्री जैसी पब्लिक जगहों पर भी लोग अपना काम छोड़कर अज़ान सुनते ही वहाँ नमाज़ पढ़ने दौड़ पड़ते हैं। उनमें से कुछ अपनी सीट पर बैठकर नमाज़ पढ़ते हैं या कुछ नहीं करते। लेकिन, मैंने कुछ लोगों से सुना है कि भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमान जो वहाँ काम के लिए गए हैं, वे हर बार पास की मस्जिद में यह दिखाने के लिए दौड़ पड़ते हैं कि वे अरबों से ज़्यादा मुसलमान हैं। सुवाती के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा, और बाद में यह उनका गहरा विश्वास बन गया होगा। ऐसे बच्चे में नैतिक नज़रिया और उदार भावना होती है। एक-दो दिन बनाने के लिए काफ़ी नहीं हैं। वरना, अगर आप लगातार बहस करने लगेंगे, तो रिश्ते खराब हो जाएँगे। धर्म के लिए, अपने भाइयों, माता-पिता, पत्नी और बच्चों को छोड़ दो; और खुद शिकार बन जाओ: जो इस मकसद से जुड़ गया है, वही धर्म है!

विषय बदलते हुए उन्होंने पूछा, “बेटा, तुम क्या खाने वाले हो?”

“आपको यहाँ क्या मिलता है?”

“यहाँ का मेन खाना छोले का स्टू है। ऊपर से चावल। अगर आपको चपातियाँ चाहिए, तो आप किसी को कुंगल भेजकर आटा मँगवा सकते हैं। भाई पिछवाड़े से आते हैं। शिवाय भी वहीं है। शिवाय के अलावा, घर में दूध, दही और घी काफ़ी है।”

"तुम अलग होने जा रहे हो। तुम मांस खाते हो, है ना?"

मैं उसकी बातों से चौंक गया। लेकिन मैं यह नहीं कहना चाहता था, 'मैं अकेला नहीं हूँ, मैं एक मुसलमान हूँ।' जब इस्लाम में मेरा विश्वास डगमगा गया है, तो मैं उसे कुछ क्यों बताऊँ?

उन्होंने कहा, “हम अलग-थलग हैं और हम मांस खाते हैं, लेकिन हम इसे हर दिन नहीं खाते हैं। हम अपने किचन में मांस नहीं पकाते हैं। हम इसे बाहर के किचन के बगल वाले कमरे में या किचन के बगल वाले कमरे में पकाते हैं। बर्तन अलग हैं। घर की औरतें इसे नहीं पकाती हैं। वे इस किचन में चावल और चना पकाती हैं। हमारे रोज़ के खाने में मांस नहीं होता है। वे इसे कड़ाही में या तंदूर में उगाते हैं। वे इसे चावल पर डालते हैं। मांस पकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले बर्तन और बर्तन धुले और साफ किए जाते हैं।

Machine Translated by Google

“वे इसे घर की छत से लटकाते हैं। इसका मतलब है कि मांसाहार मना है! यह जानवर के खिलाफ है। क्या आपके दादा गांधी भारत नहीं आए थे? उन्होंने मांसाहार पूरी तरह से छोड़ दिया था। अब से, मैं भी इसे छोड़ दूंगा। इस दुनिया में हर किसी को जीने का अधिकार है। भगवान इंसानों के खाने के लिए नहीं बनाए गए थे, यह एक धार्मिक प्रथा है।”

उन्होंने एक-दो बार कंधे उचकाए और कहा, “कोई भी मिलिट्री नज़रिए वाला आदमी हेनोसे को नहीं मारेगा।”

वह यहाँ बहस को बढ़ाना नहीं चाहती थी। कुछ लोगों की तरफ देखते हुए उसने कहा, “मैंने लामा से चावल और कुछ पतली सब्ज़ियाँ बनाने को कहा था। मुझे अच्छा लगता। अगर आप यह नहीं कर सकते, तो मेरे पास एक गाड़ी है। किसी होटल में जाकर खा लो। आपका
मुझे!

इस पर उसने कुछ नहीं कहा। वह अंदर गया और लम्मा को चावल और सब्ज़ी पकाने को कहा। चावल पकने तक उसने उसे किचन में अकेला रखा। इसके बाद, उसने उसे हाथ धोने के लिए पानी नहीं दिया और वह खाने लगा। उसने अपना खाना माँगा। उसने चावल और सब्ज़ी एक प्लेट में रखकर दही के साथ उसे दे दी। चावल और सब्ज़ी को दो बार मिलाने के बाद, उसने चावल पर दही डाल दिया। मैंने उससे पूछा, “तुम इतना कम क्यों खा रहे हो? ठीक से खाओ!” उसने भी कहा। वह हिला नहीं, लेकिन वह इमोशनल हो गया। खाने के बाद, उसने उसके आराम करने के लिए अपना बिस्तर लगा दिया। उसने टैक्सी ड्राइवर को खाने नहीं दिया, लेकिन उसने भी खा लिया।

जब तक वह पहुँची, नज़ीर खाना खत्म करने के थोड़ी देर बाद ही सो गया था। याया के बिस्तर के पास कंबल ओढ़कर बैठा वह सोच रहा था, "तुम दुनिया में कहाँ पहुँची हो?"

“शेरिफमहल होटल में।”

“क्यों? क्या तुम अपने पिता के साथ नहीं रहीं?” उसने सोचा।

“मैंने पहले लैंडलाइन पर कॉल किया था, लेकिन उन्होंने कहा कि यह फ़ोन काम नहीं कर रहा है। तुम्हारे पास यहाँ फ़ोन नहीं है। मैंने दो दिन तक इस बारे में सोचा। आखिर में, मैंने अपने दोस्त इतियाज़ को कॉल किया, जो शिवाजीनगर के पास रहता है। उसने मुझसे पूछा, ‘क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे मम्मी-पापा ने किसी और से शादी क्यों की? अब वे यहाँ एक बड़े घर में रहते हैं। अपनी पत्नी के साथ नहीं। अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें उनका फ़ोन नंबर दे सकता हूँ। मुझे बाद में फिर कॉल करना।’ मैं हैरान रह गया। उसने कहा, ‘तुम्हारी माँ अपने मम्मी-पापा के घर में रह रही है। तो तुम्हारे मम्मी-पापा क्या करेंगे? अगर वे किसी मुस्लिम औरत से शादी भी कर लें, तो वे कुछ भी करेंगे,’”

Machine Translated by Google

मोहा का आदमी यहाँ बात कर रहा है।' मैंने उससे नंबर लिया और अबाजान से बात की। वह खुश लग रहा था। उसने कहा, 'वह एयरपोर्ट आता है। लतमाय पहले जैसा ही है। एक दिन के लिए एक मैच्योर औरत का होना ही काफी है ताकि वह खुश रह सके।' हालाँकि दूसरी पत्नी माया से छोटी है, लेकिन माया के सामने उसे दिखावा करने की कोई वजह नहीं है। मैं 'मेहरम' का रिश्तेदार हूँ। अगर मैं वहाँ उतर गया, तो तुम भी मुझसे मिलने आओगे। वहाँ मुश्किल होगी, इसलिए अबाजान ने कहा, 'हेमाया आया।' वे एयरपोर्ट आए थे। हमने भी कहा, 'लतमायेंको, शरीफ़ महलमायराहिन।' वह भी नहीं हिला। उसने उसे घर ले जाने या बीबी से अपना परिचय देने की भी हिम्मत नहीं की। उसे शायद झिझक हुई होगी।"

वह अपने बच्चे से उन दूसरी चीज़ों के बारे में बात नहीं करना चाहती थी जो उसने की थीं।

अब नज़ीर थोड़ा नरम हो गया था। धामा की कठोरता एक तरफ हो गई थी, और उसका मन करीब आ गया था। उसमें यह बदलाव शायद उसकी माँ के पकाए हुए चावल की वजह से हुआ होगा।

“सुी कती आह?े” ितनंिवचारलं.

"छह सप्ताह।"

“क्या आप होटल मायेक्षला में रुके हैं? यहीं रुकिए। अगर आप चाहें तो समय-समय पर हमसे मिलने बगलू आ सकते हैं।”

उसने कुछ कहा नहीं।

“यहां से कुनिंगल के लिए रोज़ सात बसें हैं। वहां से, हर दो घंटे में बगलू के लिए बसें हैं। अगर आप वहां रुकना चाहते हैं तो एक दिन के लिए टैक्सी किराए पर ले सकते हैं।”

फिर भी उसने कुछ नहीं कहा। चुप्पी आधी-अधूरी सहमति थी, और उसने भी कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद, उसने सोचा, “क्या तुमने रिश्वत के बारे में सोचा है?” उसने इस पर भी कुछ नहीं कहा। उसने फिर वही सोचा, और फिर उसने पूछा, “सोचने का क्या मतलब था?”

विदेश में रहने वाले बच्चे अपने आने के दिन की जानकारी अपने मम्मी-पापा को देते हैं। यहाँ सात-आठ लड़कियाँ ऐसा नहीं करतीं। लड़का उनमें से किसी एक को चुनता है, उससे शादी करता है और अपनी पत्नी बना लेता है। यह बात उसे भी पता थी। लेकिन यहाँ हालात अलग थे। पिछले चार साल से लड़की का समाज से कोई संपर्क नहीं था। सिवाय दुल्हन के।

Machine Translated by Google

दूसरी बात खत्म हो गई। नज़ीर दूसरी जाति की लड़की से शादी नहीं कर सकता। ऐसा माहौल नहीं है जहाँ कोई लड़की आज़ादी से किसी लड़के से मिल सके और अपने लिए फ़ैसला कर सके। लेकिन फिर भी, अगर वह ऐड दे कि उसकी अमेरिका, M.E. या सऊदी अरब में पेड जॉब है, तो लड़की मिलना मुश्किल नहीं होगा, उसने कुछ देर सोचा। वह बिना धर्म के किसी मॉडर्न परिवार की लड़की क्यों नहीं ढूँढ़ सकता? लेकिन क्या वह ऐसी मॉडर्न लड़की को अपनाने के लिए तैयार होगा? इस बारे में कुछ कहने के लिए उसने मुँह खोला, लेकिन वह सो गया था।

वह उसे घूरती रही। एक अरब पति की दाढ़ी, जिसे लड़की कहा जा सकता है, उसी पति का पजामा और लंबा ट्यूनिक। वह ड्रेस जिसे देखकर हमें लड़कियों की याद आती है। भारत में, आजकल कुछ लोग अपनी लड़कियों के साथ ऐसा ही कर रहे हैं। और वह एक सऊदी नागरिक है! अमेरिका में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, उसे सऊदी अरब में नौकरी मिल गई। क्या यह एक इत्तेफ़ाक हो सकता है?

'जब मैं वहाँ था तो कितना अच्छा लगता होगा! मैं बिना किसी धार्मिक असर के आज़ादी से जीना चाहता था! मैं भी अपनी आज़ादी को उसी तरह बढ़ाना चाहता था। लेकिन मुझे शूटिंग, ट्रैवलिंग और लोकेशन के लिए लगातार घर से बाहर रहना पड़ता था। मैं अपना दिमाग पूरी तरह से नौकरों के भरोसे छोड़ने को तैयार नहीं था। इस वजह से, मेरे कहने पर, मुझे शिवाजीनगर घर छोड़ना पड़ा। मैं वहाँ इसलिए नहीं आया क्योंकि मैं एक पक्का मुसलमान था। क्या आपको पता है? 'इनटॉलरेंस कोई धर्म नहीं है' ईमानदारी के बारे में है? फिर भी, मैंने नहीं सोचा था कि वह इतना कट्टर धार्मिक आदमी होगा।'

वह बहुत देर तक वहीं बैठी रही। एक घंटे

तक अच्छी नींद लेने के बाद, उसने अपने बिस्तर पर सोने की कोशिश की। उसने अपना बिस्तर बदला और फिर से सो गया। वह उठा। उसने जल्दी से उसकी तरफ देखा, जैसे वह कुछ भूल गया हो। उसने सोचा, “क्यों? क्या हुआ?”

“शाम की नमाज़ का समय हो गया है,” उसने कहा, और घर के पीछे वाले घर की तरफ़ तेज़ी से गया। वह याया के पीछे-पीछे गई। मोआ ने उसके हाथों में थाली डुबोई और उसके 'इस्तेमाल' के लिए जगह बनाई। 'फिक्स्ड' गाड़ी 'बिमला' को हटा दिया गया। दोनों हाथ कलाई तक धोए गए। मैंने अपने दाँत ब्रश किए, चूल्हा भरा, पानी से नाक धोई, अपनी दाढ़ी की जड़ों में उंगलियाँ रगड़ीं, उंगलियाँ आपस में फंसाईं और उन्हें धोया। दोनों कान धोए गए। पहले दाहिना पैर, फिर बायाँ पैर धोया गया। यह तीन बार कहने के बाद, शू ने अरबी में दुआ पढ़ी:

“अहदुअलाइलाह इललाहवदलाशरीकलव अहदुअ मुहमद अदु... मी

Machine Translated by Google

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई नहीं है। वह एक है। उसका कोई साझी नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! मुझे अपनी नज़र में गुनाहगार बना लो। मुझे उन लोगों में से बना लो जिन्हें तुमने चुना है। मैं तुम्हारी पवित्रता चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि तुम्हारी इबादत में अल्लाह के अलावा कोई नहीं है। मैं तुमसे माफ़ी चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पास गुनाहगार बनकर लौटता हूँ।"

तो वह 11 तारीख की सुबह मस्जिद में आया। उसने झुककर सिर पर सफ़ेद टोपी पहनी और एक लाइन में नमाज़ पढ़ी। वह अपनी सारी 'फ़ज्ज' भूल गया था। उसे नमाज़ पढ़ते देखकर उसे याद आया, 'अल्लाह के अलावा कोई नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।' यह सुनकर उसने 'अहादु अलाइलाहाइला...' वगैरह पढ़ा और फिर 'अस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाह' कहा और दाएँ-बाएँ सिर झुकाया, और नमाज़ खत्म हो गई।

वह सिर झुकाए एक स्टूल पर बैठ गया। उसने सोचा, "चाय पियोगे?" वह मान गया। वह चाय बनाने के लिए किचन में गई, तो कछपा ने हिचकिचाते हुए कहा, "माँ! तुम भी हमारे किले की बेटी हो। भले ही तुमने बाद में अपनी जाति बदल ली हो, पर तुम अब भी हमारी हो। इसीलिए तुम भी किचन और घर में घूमती हो, पर तुम अब भी वहीं हो। तुम्हारा बेटा जमजात है। उसे घर में लाने से क्या शिवतंत्र के दौरान हमारे घर का पानी गंदा नहीं हो जाएगा? अब देखो! मुझे प्याले से अपने पैर धोने पड़ रहे हैं। मुझे छह जग पानी खींचकर पैरों में भरना पड़ रहा है। देखो, मैं गुस्से में हूँ।"

उसे बहुत पसीना आ रहा था। यह सवाल उसके दिमाग में नहीं आया था। यह समय कछपा से बहस करने का नहीं था। वैसे भी, हम कितनी भी बहस कर लें, कछपा या लम्मा को बदला नहीं जा सकता। अगर वे बदल भी गए, तो गाँव के दूसरी जाति के लोग नहीं रहेंगे। अगर वे ज़बरदस्ती कुछ करने गए, तो वे यह कहे बिना नहीं रहेंगे, 'क्या तुम अपनी जाति बदलने की कोशिश कर रहे हो?' और अगर बहस इस लेवल तक पहुँच गई, तो घर रहने लायक नहीं रहेगा। वह सावधान हो गई। उसने धीरे से कहा, "माया नहीं आ रही है, कछपा! तुम, जैसे घर में एक बाल्टी और एक बाल्टी रखते हो। दोनों लेटेक्स के बने हैं। यह गरीबों और ज़रूरतमंदों के लिए नहीं रहेगा। नहाने का पानी भी वहीं रहेगा।" कछपा यह बात समझ गया।

वह नज़ीर की चाय लेकर अयहर को देने गई। चाय पीते हुए उसने सोचा, "क्या तुम सऊदी में किसी लड़की से नहीं मिले? क्या तुम्हारे जान-पहचान वालों, दोस्तों या साथ काम करने वालों में से किसी ने तुम्हारी बेटी के बारे में सोचा है?"

"मैं सऊदी नहीं हूँ!" वह ज़ोर से हँसा।

Machine Translated by Google

"लेकिन मैं एक लड़की हूं, है ना?"

“सऊदी खुद को दूसरों से बेहतर समझते हैं। वे अपने बेटों को शादी के लिए नहीं देते। अगर कोई लड़की तैयार हो जाती है, तो वे उसे मार देते हैं। इसके अलावा, वहां दहेज भी लाखों में है। कुछ सऊदी आदमी जो उससे शादी करने के लिए काफी ताकतवर नहीं होते, वे सीरिया, इराक से पत्नियां लाते हैं। यहां के आदमी भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश से घर में नौकरानी के तौर पर काम करने गई औरतों का रेप करते हैं और उन्हें अपनी तीसरी या चौथी पत्नी बना लेते हैं। सऊदी लोगों की इस दुनिया में हमेशा ऊंची जगह रही है।”

“इलम अयूम, गुटनिरपेक्ष लोगों के लिए मिलकर रहने का एक उदाहरण है, तो?” “हर किसी को अपने देश से

जुड़ाव महसूस होता है। सऊदी अरब में भी कुछ कबीले हैं। हर कबीला अपना समझता है। वे अपने बच्चों को दूसरे कबीले में भी नहीं भेजते।”

“तुम सऊदी अरब में क्यों रहते हो? क्या तुम्हें कहीं और नौकरी नहीं मिल सकती?”

“हाँ, लेकिन तुम्हें ऐसी सैलरी कहीं और नहीं मिल सकती। बाकी सभी देशों में, टैक्स की आड़ में तुम्हारी इनकम का एक तिहाई या एक चौथाई हिस्सा चुरा लिया जाता है। सऊदी अरब में कोई टैक्स नहीं है। अगर मौका मिला, तो यूरोप और अमेरिका से भी लोग काम के लिए सऊदी अरब आएंगे।”
"वे जाने के लिए तैयार हैं।"

Machine Translated by Google

10

कर्नाटक में बुद्धिजीवी या विचारक के तौर पर जाने जाने वाले N.S.N. शशि धीरे-धीरे पूरे भारत में एक विचारक के तौर पर जाने जाने लगे। उनकी क्रांतिकारी विचारधारा, किसी भी विषय को लॉजिकल लेवल पर एनालाइज़ करने की क्षमता, विवादित सोच, सच्ची भाषा और वाक्पटुता ने उन्हें बहुत जल्द आम लोगों और आम लोगों के बीच पॉपुलर बना दिया। वे 'दुनिया की आर्थिक स्थिति' से लेकर भारत के आध्यात्मिक इतिहास तक किसी भी विषय पर लगातार अपने विचार ज़ाहिर करते रहते थे, वहीं उन्होंने ऐसे भाषण भी दिए जो कलंक-विरोधी, अस्वीकृति-विरोधी वगैरह जैसे सभी मॉडर्न कामों का सोर्स या नतीजा थे। उन्हें एक समाज सुधारक के तौर पर भी शोहरत मिली। वे जल्द ही एक अधिकारी बन गए। उसी तेज़ी से प्रभुभूषण और फिर पीवभूषण भी हुए। अब उनके फॉलोअर्स पूछने लगे थे, 'कोई भारतीय बन गया है। हमारे प्रोफेसर भारतीय क्यों नहीं बने?' इस पर प्रोफेसर शशि ने जवाब दिया, 'क्योंकि अवॉर्ड की वैल्यू बढ़ती है, अवॉर्ड की वजह से वह बड़ा नहीं हो जाता, सच को समझे बिना आप भी अगले लेवल तक नहीं पहुंच पाएंगे।' अगर आप सोचेंगे कि इंसानी इतिहास पर अपनी छाप छोड़ने वाले को कौन सा अवॉर्ड मिला है, तो वह आपको खुद ही मिल जाएगा।' उन्होंने अपने दस फॉलोअर्स से कहा, और विलेन की तरफ देखते हुए कहा। इन फॉलोअर्स से उन्हें मतलब समझ आया, यह बात दूसरे लोगों में भी फैली और उनके लिए उनकी इज्ज़त और भी बढ़ गई।

तान्या मनाताली की इमेज इंटरनेशनल होने की एक और वजह थी। वहां से M.A. की डिग्री लेने के बाद, वह डॉक्टरेट करने के लिए ऑक्सफ़ोर्ड चले गए। वह अपने साथ एक इंग्लिश पत्नी भी लाए थे। उस समय खबर आई थी कि ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसरों ने शिया के बैकग्राउंड और टैलेंट से इम्प्रेस होकर उन्हें अपनी बेटी इनाम में दी थी। क्योंकि माता-पिता को अपनी बेटी को 'ठीक' करने के लिए किसी पर भरोसा नहीं था, इसलिए यह खबर झूठी थी, और कई लोगों का मानना था कि वह एक ऐसे आदमी की बेटी है जिसने अपनी मर्ज़ी से उससे शादी की थी। कुछ लोगों के मुताबिक, इनमें से एक या दोनों कहानियाँ सच हो सकती हैं। लेकिन किसी ने इस पर मज़ाक भी किया, अगर वह ऑक्सफ़ोर्ड से ग्रेजुएट है, तो वह बागुलस जैसे बड़े शहर में बिना कुछ किए कैसे रह सकती है? क्या उसे कोई टीचिंग पोजीशन नहीं मिल सकती थी? क्या वह घर पर बैठकर सेक्युलर कल्चर से मिली पढ़ाई को बर्बाद कर देगी? वह अपनी पत्नी के लिए नौकरी कैसे ढूंढ सकती है?

Machine Translated by Google

क्या यह सच नहीं है? यानी, यह सब बातें चालीस साल पहले होती थीं। अब ऐसी बातों में किसी को ज़्यादा दिलचस्पी नहीं है। सुवती-सुवती भी नई पीढ़ी के भाषण सुनने, लोगों की नज़रों में आने के लिए आते थे। हाल ही में, वह किसी काम में नहीं दिखते थे। कभी-कभी, कुछ किताबें खरीदते हुए दिख जाते थे, बस! हर रविवार, बाज़ार जाना और अपनी जान-पहचान की औरतों से दो घंटे बातें करना उनके रूटीन का हिस्सा बन गया था। हालाँकि उन्होंने अपने पड़ोसियों से जान-पहचान बना ली थी, लेकिन उनसे पक्की दोस्ती नहीं हुई थी। वह नौकरानी से बात कर सकते थे, बस। चूँकि कैथोलिक माता-पिता अपने बच्चों का धर्म बदले बिना उनसे शादी करने के खिलाफ थे, इसलिए उसके बाद उनके साथ उनके अच्छे रिश्ते नहीं रहे। इसके बाद, मैं माता-पिता से मिलने दो बार विदेश गया। भले ही मैंने दूसरी जाति के बच्चे से शादी की, मैंने अपना धर्म नहीं छोड़ा, वे ऐसा ही बर्ताव करते थे। उसके बाद, हम साथ रहने लगे, और कोई दिक्कत नहीं हुई।

प्रोफेसर शाना का एक बेटा था। उसका नाम डैगेंट था। वह दस साल की लड़की थी, एना। डैगेंट का रंग अजीब था। वह एक इंडियन जैसा दिखता था। एना अपनी माँ जितनी गोरी नहीं थी, लेकिन वह गोरी थी, और उसके बाल लाल थे।

डगेंट ने कंप्यूटर इंजीनियरिंग में B.E. किया। उन्होंने कंप्यूटर साइंस में MBA किया और कैलिफ़ोर्निया में एक्सपीरियंस लेने के बाद इंडिया लौट आए। वहां एक बड़ी कंपनी में दो साल काम करने के बाद उन्होंने अपनी कंपनी शुरू की। पिछले साल उनकी कंपनी का टर्नओवर 100 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। कंपनी को अमेरिका, जर्मनी और इंडिया जैसे बड़े देशों से ऑफर आने लगे। एक दिन, वह इंफोसिस और विश्वास जैसी बड़ी कंपनियों से कॉन्टैक्ट करेंगे और वही करेंगे। उनकी पंजाबी पत्नी बिबिता कंप्यूटर एक्सपर्ट थीं। कंपनी का ज़्यादातर मैनेजमेंट उन्हीं की देखरेख में होता था। डगेंट कंपनी के डेवलपमेंट और विदेश में इसके काम को देख रहे थे। सरकार ने हाल ही में इस कॉर्पोरेट बिल्डिंग के एक्सपेंशन के लिए पांच एकड़ ज़मीन अप्रूव की थी और दोनों ने आर्किटेक्ट के साथ बैठकर इस बिल्डिंग की ज़मीन पर बात की थी। प्रोफेसर ने खुद पांच एकड़ ज़मीन के अप्रूवल के लिए मुझसे कॉन्टैक्ट किया था। क्योंकि उनके चार अनऑथराइज़्ड एडवाइजर थे! इसके अलावा, उन्होंने इलेक्शन फंड में लाखों रुपये दिए थे। इस समय यह भी खबर आई थी कि प्रोफेसर ने खुद यह सारा पैसा हैंडल किया था। भारत में अगर आपको सरकार में कोई काम करना है, तो आपको पैसे देने पड़ते हैं, इसमें किसी को खास महसूस करने की कोई वजह नहीं है। लेकिन, पहले से ही सोशलिज़्म और कम्युनिज़्म के दबदबे वाले समाज में, कुछ लोग उन प्रोफेसरों के खिलाफ हो गए जो सोशल एक्टिविस्ट और थिंकर के तौर पर जाने जाना चाहते थे, और वे

Machine Translated by Google

उन्होंने मीडिया के ज़रिए उनकी बुराई करना शुरू कर दिया, कहा, 'उनका बेटा कैपिटलिस्ट है, उन्हें इसका पूरा सपोर्ट है, उन्होंने रिश्वत लेने में उनकी मदद की है...' वगैरह-वगैरह।

लेकिन प्रोफेसर को ऐसी किफ़ायत की तारीफ़ करना कभी पसंद नहीं था। उन्होंने कहना शुरू किया, "मैंने हमेशा डेमोक्रेसी में विश्वास किया है। मैं हमेशा उस फ्यूडल सिस्टम के खिलाफ रहा हूं जो उस पर अपने विचार थोपता है क्योंकि वह मेरा बेटा है। मैंने अपने माता-पिता के छोटे विचारों से खुद को आज़ाद किया है और इससे बाहर निकला हूं। ऐसे में, मैं अपने बेटे की राय को रौंदता हूं और कहता हूं, 'तुम्हें यह करना चाहिए था!' मैं इतना मतलबी कैसे हो सकता हूं? अगर मैं ऐसा नहीं करना चाहता था तो मैं इस फैसले का विरोध करता, मैं इस पंजाबी लड़की से शादी कर लेता। इसके उलट, मैंने यह फैसला बस एक आम बात के तौर पर लिया है। अब लिबरलाइजेशन की वजह से हजारों प्राइवेट कंपनियां फल-फूल रही हैं। नतीजतन, वर्कर्स की संख्या बढ़ रही है। कैपिटलिस्ट वर्कर्स का शोषण करेंगे। अगर वर्कर्स में नाराजगी अपने पीक पर पहुंचती है और शांति चाहिए, तो यह कदम भी ज़रूरी है। जहां भी इंडस्ट्रियलाइजेशन अपने पीक पर पहुंचता है, वहां कम्युनिज्म आ जाता है, यही मैं इस कहानी में छिपा रहा हूं। मेरा बेटा भी इंडिया में कम्युनिज्म के लिए एक छोटा सा कदम उठा रहा है, और माया के फैंस इस पर एक शॉट लगाकर गर्व महसूस कर रहे हैं। इसके अलावा, एक बात और है कि मैं माया के बेटे के साथ नहीं रहता। मेरा किसी बिज़नेस से कोई लेना-देना नहीं है। उसे किसी को रिश्वत देना जायज़ नहीं है। इसमें भी मैंने रिश्वत के लिए अपना फ़र्ज़ निभाया है, ऐसी सोच वाला इंसान ही इतनी नफ़रत भरी बात बोल सकता है। मेरे पास उन लोगों के ख़िलाफ़ कोर्ट जाने के अलावा कोई चारा नहीं है जो ऐसी बातें आरोप लगाते हैं, लिखते हैं और छापते हैं।"

फिर भी कुछ सोशलिस्ट उनसे नहीं डरते थे। उनके लेटर्स पर उनकी रिक्वेस्ट का जवाब नहीं आया। फिर उन्होंने उसे प्रिंट करके बांटा। उन्होंने तय टाइम में इसे चार वॉल्यूम में प्रिंट किया। यानी प्रोफेसर्स को पता था कि यह हंगामा कब तक चलेगा। और तो और, इस हंगामे की वजह से प्रोफेसर्स के सर्कल में उनका नाम और भी अहम हो गया। पहले कम्युनिस्ट पार्टी उन्हें अपनी मीटिंग्स में बोलने के लिए नहीं बुलाती थी। नतीजतन, प्रोफेसर्स को भी बुलाया जाने लगा। अपने भाषणों में उन्होंने कहा, "देश की इकोनॉमिक ग्रोथ मुमकिन है। लेकिन बिजनेसमैन का प्रॉफिट लिमिटेड होना चाहिए और समाज की भलाई पक्की होनी चाहिए। हमें अपनी ज़िंदगी महामा गांधी की सोच के हिसाब से जीनी चाहिए। मतलब: सबसे पहले, गांधी और जनता में कोई फर्क नहीं है। दोनों ही महामा हैं।" इसके बाद उन्हें कई इंडस्ट्रियल कामों, पोस्ट-ग्रेजुएशन और दूसरी पब्लिक मीटिंग्स में बुलाया जाने लगा। ऐसी मीटिंग्स में और बाद में उनके बेटे, जो उनमें शामिल होते थे,

Machine Translated by Google

और बहू को वहां आने वाले बड़े बिजनेसमैन और सरकारी अधिकारियों से मिलवाया गया।

बाईस साल का। समझ तो नहीं पाता था, पर समझ भी नहीं पाता था। क्लास में खूब पढ़ता था, अच्छे नोट्स बनाता था, और इंग्लिश में B.A., M.A. किया। बहुत जान-पहचान होने के बावजूद, उसके टीचर भी उसे अच्छी नौकरी नहीं दिला पाए। अगर वह चाहता, तो उसे नौकरी पर रख सकता था और अच्छी सैलरी दे सकता था। लेकिन उसका प्रोफेशन कंप्यूटर था। उसका बड़ा भाई आर्ट्स साइड से था। वह अपने खाली समय में छोटी-मोटी नौकरी भी करने लायक नहीं था। इसके अलावा, वह अपनी कंपनी में किसी भी रिश्तेदार के आने के बहुत खिलाफ था। इस वजह से, प्रोफेसरों ने लड़की को एक प्राइवेट कॉलेज में कम सैलरी पर पार्ट-टाइम लेक्चरर की नौकरी दिला दी।

साथ ही, उन्होंने उसे 'आपकी अपनी खोज' के रूप में समाचार दिया, लेकिन उसमें ऐसा करने की शालीनता नहीं थी। फिर प्रोफेसरों ने अपने बोर्ड से बात करना शुरू किया। लेकिन इसका भी कोई फायदा नहीं हुआ। यद्यपि बगलू एक बड़ा 'महानगर' था, लेकिन लाया के संदर्भ में कोई भी एक या दो कदम से आगे जाने को तैयार नहीं था। लड़की की माँ अंग्रेज थी। घर का माहौल ऐसा था कि हिंदू रीति-रिवाजों के लिए कोई सम्मान नहीं था। जिस अधिकारी ने पिया धर्म-वंतया को पूरी रकम देने का अनुबंध किया था, वह ऐसा नहीं कर सकता था और वह इस तरह के आचरण में विश्वास भी नहीं करता था। यद्यपि कैथोलिक मां अपने दोनों बच्चों को हर रविवार को बिना भुगतान किए स्कूल ले जाती है, लेकिन बच्चों को हाईस्कूल में पहुंचने पर इस खतरे के बारे में भी पता चला। वह बी.ई. है। सीखते समय उसे एहसास हुआ कि 'हमारे पूर्वजों की कोई सीमा नहीं है'। अमेरिका में, उसने समझा कि एक विशेष समाज में रहने के कई चरण हैं और इस बारे में शिष्टाचार और विचार हैं। दलीला ने आई.आई.टी. से कालेया बिबताया धमक को दवाली, भांगड़ा और करवाचौथ से गुज़रना पड़ता है। उसे बार में लाया गया, सुंदर शेरवानी पहनाई गई, फेटा से बांधा गया, और बड़ी धूमधाम से उसकी शादी कर दी गई। ऑफिसर, एना और मैडम भी इसमें शामिल हुए।

एना के मन में धर्म को लेकर बहुत कन्फ्यूजन था। यह लड़की उसके सबसे बड़े बेटे के दस साल बाद पैदा हुई थी। इस वजह से वह अपनी माँ की सबसे पसंदीदा बेटी थी। उसकी माँ ने शुरू से ही इस लड़की के मन में धर्म की अहमियत भर दी थी, जो हमेशा उसकी गोद में रहती थी। उसे हर दिन जीसस की मौत, घूंघट पहनने और हर रविवार को बिना चूके चर्च जाने की भी आदत हो गई थी। पादरी ने बताया था कि उसकी आँखों के सामने क्रॉस पर जीसस की मूर्ति दिखाई देगी।

Machine Translated by Google

लड़की के माथे पर बान का आकर्षण महसूस करने के बाद, वह कंपास बॉस से चूड़ी माथे पर पहनकर घर लौट आई। लेकिन एक पल में, उसके मन में एक दोषी भावना घर कर गई कि 'हमने कुछ भयानक किया है'। पिता ने लड़की से कहा, "प्यारी! क्या तुम्हें इस बुतपरस्त निशान की ज़रूरत है? और अगर तुम चाहती हो, तो चाँद के आकार का एक निशान ले आओ।" लेकिन चाँद के आकार का बान बाज़ार में नहीं मिलता था। अगर उसे मिल भी जाता, तो वह दूसरों से अलग महसूस करता क्योंकि उसके पास वह होता था। उसके बाद, उसे लगा कि कोई बान न होना ही उसकी पहचान है, असंतिल को लगा।

उनका रंग, उनके बालों का रंग। उनके नाम, उनके धर्म और उनके धर्म में फ़र्क तब और बढ़ गया जब वे कॉलेज गए। 'जब स्कूल-कॉलेज बंद होते हैं, पूरा गाँव गौरी और गणपति का त्योहार मना रहा होता है, हमारे घर में कुछ नहीं होता। पापा भी मम्मी से कुछ करने को नहीं कहते। यानी, पापा अगर कहें भी तो मम्मी नहीं सुनतीं, हाहा! पापा का बर्ताव अलग है। सनाया वाले दिन घर से कोई उन्हें डिनर पर बुलाता है। मम्मी भी ऐसे बैठी रहती हैं जैसे घर में कोई मौत हुई हो।'

पिछले साल गणेश उत्सव के दौरान, नौकरानी ने अना को शाम की आरती के लिए अपने घर बुलाया। अपनी माँ को कारण बताए बिना, अना अपने घर चली गई, जहाँ गणेश की कहानी सुनाई जा रही थी। घर को केले की डालियों, शेवंतिया की मालाओं और पत्तों से बने तोरण से सजाया गया था, जिसे फलों और फूलों से सजाया गया था। गौरी को एक ऊँचे आसन पर और उनके बेटे गणपति को सामने थोड़ी नीची सीट पर बिठाया गया था। यह दृश्य उसे आकर्षित कर रहा था। कहानी सुनाई जा रही थी कि घर की बेटी गौरी बच्चे को जन्म देने के लिए घर आई थी, और गणेश आ गए थे। पाँच दिनों तक माँ और बेटी को घर में लाड़-प्यार से रखने के बाद, गौरी ने उन दोनों को अपने पति के घर बलि के लिए भेज दिया।

कहानी सुनकर वह इतनी अभिभूत हो गई कि उसे अपनी माँ और पिता के लिए भी गहरा लगाव महसूस हुआ। कहानी के बाद गौरी और गणपति की आरती की गई। बाद में, उसे एक कमरे में अकेले बैठाया गया और दोपहर के भोजन के लिए बनाए गए कद्दू और पोली खाते समय, वह यह सोचकर चिंतित हो गई, 'मेरी माँ घर पर ऐसा नहीं करती है।' उसी वर्ष, पलटनंतिया और आठ अन्य लोगों को गोकुलम के लिए उनके घर आमंत्रित किया गया था। उसी दिन, कृण्या को बिस्तर पर लेटे हुए कितना लाड़-प्यार किया जा रहा था! ऐसा आपने कितनी बार किया है! इस कृत्य में, प्रेम फूल की तरह उमड़ रहा था। इस कारण, कुछ लोग खुशी के लिए खाने से थक गए थे। वास्तव में, आठ या दस साल बाद भी, इस घर में सास का आनंद उमड़ रहा था। वह खुशी आने वालों ने साझा की।

Machine Translated by Google

वे अलग-अलग तरह का खाना खाते थे। वह कृणा की कहानी के बारे में भी थोड़ी-बहुत जानती थी। 'युवा पांडव देवी से हार गए थे! और वे उसे भगवान की तरह पूजते हैं। वह एक भिखारी है, एक चोर है, एक झूठा है! जो उसे भगवान की तरह पूजता है वह एक घटिया इंसान है!' इसी तरह, चर्च में उपदेशक कभी-कभी ज़िक्र करते थे। जो लोग भिखारियों, झूठे और चोरों की ऐसी भीड़ बनाते हैं, वे भी झूठे और चोर ही होंगे, है ना? लेकिन वह खुद पलटा को जानती थी। एक बहुत खूबसूरत लड़की। उसके पिता एक सरकारी हॉस्पिटल में बड़े डॉक्टर हैं। वह मरीज़ों से रिश्वत लिए बिना सुबह तक ऑपरेशन करते हैं। अगर आप प्राइवेट बिज़नेस करते हैं, तो आप हर महीने लाखों कमाएंगे, लेकिन जब आपके हाथ में पैसा और शोहरत होती है, तो आप सरकारी नौकरी में भी उसी सैलरी पर जी रहे होते हैं। गरीब लोगों को भी भगवान मानना चाहिए। अगर ऐसे लोग इस भगवान की पूजा करते हैं, तो इसका क्या मतलब है? वे अनजान नहीं हैं। उन्होंने इंग्लैंड में F.R.C.S. किया है और कुछ साल अमेरिका में भी किया है। मेरे दिमाग में सब कुछ गड़बड़ हो गया। 'इस दुनिया में भगवान क्यों है? इस दुनिया में दो भगवान हैं, शिव! भगवान कैसे हो सकते हैं? मैं कहता था। इन लोगों को भगवान का कोई डर नहीं है, कोई सम्मान नहीं है, कोई डर नहीं है! एक माँ और वह बच्चा जिसे उसने अपनी कोख में पाला है? इसका क्या मतलब है? शिव:!

अपने मन की उलझन के बारे में अपनी माँ को भी मत बताना। उलझन से बाहर निकलने के बजाय, वह बस यही कहेगी, "नहीं, यह बात अपने मन में मत लाओ। इससे यीशु के लिए तुम्हारा प्यार कम हो जाएगा। फिर तुम किस तरह के नरक में जाओगे, पता है?" यह कहते-कहते उसकी आँखों में नरक ही दिखने लगता है।

विडाल एक महान संत के तौर पर जाने जाते हैं। वे हर जगह भाषण देते हैं। कॉलेज की गैदरिंग में एक बार उन्हें बुलाया भी गया था। वे तब तक खुश नहीं होते जब तक हर दिन कम से कम एक गुलदस्ता घर न ले आएं। इसके अलावा, वे शॉल, नारियल और फलों की टोकरियों के बारे में भी बात करते हैं। शाम को हम चाय के बारे में बात करते हैं और दूसरे दिन वृपम के बारे में। मैं कभी उनसे इस टॉपिक पर बात करना चाहता था। लेकिन मेरी माँ ने माया के सामने मुझे चेतावनी दी थी, “माया और माया, जीसस के बारे में बात फैलाने की कोशिश मत करो। अपने मैसोकिज़्म से सिर्फ़ अपना फ़ायदा होने दो।”

जो भी हो, डैडी सच में मम्मा से डरते हैं। आज भी, “नहीं, सर! जादूगरों, मुझे जाने दो!” हनत ने मम्मा का कंधा थपथपाया, जिससे सिचुएशन का टेंशन पूरी तरह कम हो गया। उसने माया को जीत की नज़र से देखा, जैसे वह इस स्किल से अपनी पीठ थपथपा रहा हो। जब से यह सब हुआ है, मैं घर पर उनसे इस बारे में बात नहीं कर सकती। मैं उनसे घर के बाहर नहीं मिल सकती। उन्होंने मुझे पूरी तरह से मम्मा के भरोसे छोड़ दिया है!

Machine Translated by Google

उनके डर का एक और कारण था। वे किसी दोस्त या किसी प्यारी औरत से मिलते, लेकिन एक-दूसरे से नहीं मिलते। तब भी वे वहीं खड़े होकर हाथ पकड़कर बातें करते। इस पर दोनों के बीच खूब बहस होती। इस पर वे कहते, “तुम्हें इसकी इतनी परवाह क्यों है? तुम दुनिया में बड़े हुए हो। क्या किसी को ऐसा करना गलत लगता है, गाल पर या माथे पर?”

इस पर मेरी माँ गुस्सा हो जातीं और कहतीं, “लेकिन यह इंडिया है! यहाँ कोई भी तुम्हारी तरह मेरी गर्दन नहीं चूमेगा या मेरे साथ खड़ा नहीं होगा। यहाँ कोई भी बिना वजह मुझसे मिलने नहीं आएगा। मुझे तुम्हारा काम नहीं पता, तुम्हें क्या लगता है?” इस पर, “औरत! तुम्हारा नाम तो एक डिस्क्रिप्शन है...” वह धीरे से मेरी माँ को चूमते हुए कहते। मैं अपने बेटे के साथ हो रही इस सब बातों से शर्मिंदा होकर माया के कमरे में चली जाती। एक बार, मेरी माँ ने मिसेज़ रॉबिन्सन से कहा, “अगर मैं आती, तो अजनबी बन जाती। मैं कैथोलिक नहीं हूँ। इतने सालों से इस देश में रहने के बाद, मेरा इस देश से पूरी तरह से संपर्क टूट गया है। मुझे क्या करना चाहिए?” मिसेज़ रॉबसन मेरी माँ की एंग्लो-इंडियन दोस्त हैं जो अक्सर हमारे घर आती हैं।

धर्म और भगवान से जुड़ी ऐसी एक्टिविटीज़ के एक-दो साल बाद, अन्ना मंदिर जाकर कुछ हद तक खुश हो गईं। अगर उनकी जिज्ञासा जाग जाती, तो वह ज़िंदगी भर एक जगह के बजाय कई जगहों पर जातीं। वह कॉलेज में किसी टीचर से बात कर सकती थीं। वह कई दूसरी जगहों पर जाकर अपने डाउट्स दूर कर सकती थीं। वह कॉलेज की लाइब्रेरी में सही किताबें ढूंढकर पढ़ सकती थीं। लेकिन उनका नज़रिया ऐसा नहीं था।

एक सुबह दस बजे, लामी शिवाजी नगर के पास शरीफ महल होटल के पास रानी का इंतज़ार कर रही थी। एक कार उसके पास से गुज़री और तेज़ी से रुक गई। उसने इधर-उधर देखा, सोच रही थी कि कार किसके लिए रुकी होगी। वहाँ कोई नहीं था। कार पीछे से आई और उसके बगल में रुकी। आगे की बाईं खिड़की नीचे हो गई। प्रोफ़ेसर शशि कार चला रहे थे। उन्होंने उसे देखा और कहा, "मैंने तुम्हें पहचाना भी नहीं। मैंने तुम्हारे चेहरे पर लात मारी। तुम कहाँ गई? चलो। मैं तुम्हें जाने देता हूँ।" फिर उन्होंने साइड का दरवाज़ा खोला। वह अंदर बैठ गई और दरवाज़ा बंद करके खिड़की ऊपर कर ली। क्योंकि वह टिंटेड ग्लास थी, इसलिए उसे अंदर कुछ नहीं दिख रहा था। अंदर AC चल रहा था। एक मॉडर्न कार जो मुस्कान की तरह शान से हिल रही थी!

“मैं समझता हूँ कि तुम गाँव में रहते हो, हर समय किताबें पढ़ते रहते हो। क्यों? बगुले को छोड़ने का क्या हुआ?” उसने सोचा।

“मुझे बस स्टैंड जाना है। मैं कुंगल जा रहा हूँ। मुझे कहीं ऐसे ही छोड़ दो!”

Machine Translated by Google

“मैं वहीं हूँ। आप हमारे गाँव के अकेले रिप्रेजेंटेटिव हैं। हमें मिले हुए बहुत दिन हो गए हैं, असल में, चार साल हो गए हैं। चार साल तो हो ही गए होंगे, है ना? चलो सुख-दुख की बातें करते हैं। बाद में चलते हैं। अब हम कहाँ चलें? बताओ। बगलू में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम अकेले में बैठकर शांति से बातें कर सकें। क्या हमें जंगल में बैठना चाहिए?”

उसने सिर हिलाया। उसने उसके कंधे पर थपथपाया और कहा, 'गुड मॉर्निंग!'

"एक हाथ से ऐसा मत करो। यह एक बग है।" उसने अपनी नाराज़गी दिखाते हुए कहा।

“क्यों? अगर तुम्हें एसिड मिल गया, तो क्या तुम्हें डर है कि अखबार में ‘प्रोफेसर शशि और फिल्म स्टार में सुलह हो गई है’ जैसी खबर छप जाएगी?” उसने उसके कंधे पर हाथ का दबाव बढ़ाते हुए सोचा।

उसे यह सब कुछ अजीब लगा, लेकिन उसे तुरंत कुछ समझ नहीं आया। उसने आगे सोचा, "तुम गांव में रहती हो, है ना? तुम अपने बाल डाई क्यों नहीं करती? तुम अपने चेहरे पर मेकअप क्यों नहीं करती? किसी को भी ज़िंदगी से प्यार नहीं खोना चाहिए। मुझे देखो!"

कार में बैठे-बैठे उसने उसे देखा। उसके कानों पर थोड़े सफेद बाल थे और बाकी सारे बाल अधेड़ उम्र की औरत के लिए काले रंगे हुए थे। सोशलाइट पति ने अपनी बाकी दाढ़ी रंग ली थी, बीच में कुछ सफेद बाल छोड़ दिए थे। यह सिर्फ़ नर्सरी वाले ही कर सकते थे, यह दर्दनाक था। थिएटर-सिनेमा इंडस्ट्री में अपने बर्ताव की वजह से, उसका उससे मिलने आना बहुत स्वाभाविक था! उसे उस पर दया आ रही थी।

“सर, आपके बच्चे क्या करते हैं?” “बेटा एक

कॉउचर कंपनी चलाता है। यह लिखा हुआ है।”

“आपकी पोती क्या कर रही है?”

‘क्या यह सोचकर मुझे बेवकूफ़ जैसा महसूस नहीं होता? उनसे डरने की कोई वजह नहीं है।’ उनका जवाब असलियत जैसा है, लेकिन ऐसा होने की उम्मीद कम है, “मेरा बेटा और बहू कंपनी को बढ़ाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। हमारा चार साल का पोता है। मेरी बहू दूसरा बच्चा नहीं चाहती। उसका काम का बोझ बढ़ रहा है, और वह दूसरे बच्चे को पालने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं है। अगर हर कोई अपने करियर के लिए यही फ़ैसला करने लगा, तो मुझे चिंता है कि इस धरती से इंसानियत खत्म हो जाएगी!”

Machine Translated by Google

"इसका मतलब है कि आप एक और पोता चाहते हैं, है ना?" अब उसे भी कहीं न कहीं अपनी आवाज़ मिल गई थी।

"मैंने अपनी फीलिंग्स नहीं बताईं। तुम्हें पता है मैं कभी अपने लिए नहीं सोचता। तुम्हारे विचारों की वैल्यू तभी होती है जब तुम खुद हो।" जब वह मेट्रोपोलिस से कार चला रहा था, तब भी उसकी आँखों में उदासी दिखने लगी।

"और लड़की?"

"मुझे इसी बात की चिंता है। मैं एक लेक्चरर के तौर पर काम करता हूँ। तुम्हें अपने सोलमेट को ढूंढते हुए चार साल हो गए हैं। लेकिन अपने सोलमेट को ढूंढने का ख्याल तुम्हें अभी तक अपने देश में नहीं आया है। यहाँ का समाज अभी तक नहीं बदला है। यहाँ लोग अभी भी मोनोगैमस शादियों में रहते हैं। खैर, अगर मुझे फैसला करना है, तो ऊनो दे ओलम!"

उन्हें बगीचे में एक बेंच मिली। टिथंबस्तना ने कहा, "कुछ लोग इस बगीचे पर भी लोन लेना चाहते थे। मैंने 'बगीचा बचाओ' मूवमेंट शुरू किया और इस बगीचे को बचाया। पता नहीं क्यों? मुझे सरकार से डर लगता है और माया से गुस्सा आता है।"

उसके मन में एक अलग ही विचार चल रहा था।

"ऐसी जगह पर बैठने से मन का बहाव अलग-अलग दिशाओं में बहने लगता है। इसीलिए बगीचों को शहरों की आत्मा कहा जाता है। कैसी सोच चल रही है?"

"आपकी बेटी कितने साल की है?" उसने सोचा।

"अणा ितचंनाव. िवसरलीस? अावीस."

"मुझे याद है। गोरी, यूरोपियन दिखने वाली तुम्हारी माँ जैसी, है ना?"

"वह बिल्कुल अपनी दादी जैसी दिखती है। मैंने उसे पहले भी देखा है। वह बहुत सुंदर है! एलिज़ाबेथ भी सुंदर है। क्यों? क्या कोई लड़का है जो जानता हो?"

"मेरा बेटा भी शादी करना चाहता है। वह बीस साल का है। वह यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास में केमिकल इंजीनियर है और सऊदी अरब में उसकी अच्छी सैलरी वाली नौकरी है। वह अभी-अभी यहाँ आया है। हाल ही में उसका अमेरिकियों से ज़्यादा कॉन्टैक्ट नहीं रहा है। आपको पता होगा कि यानंद के साथ क्या हुआ। बेटे के लिए पत्नी ढूँढ़ना एक प्रॉब्लम बन गई है।"

Machine Translated by Google

“आमिर, मैंने इस आसन के बारे में सुना है। अगर मुझे पहले पता होता, तो मैं इसे आसन को नहीं देता। तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?”

"मुझे नहीं पता कि कहाँ जाना है। मैं अभी इस बारे में बात नहीं करना चाहता। नज़ीर के लिए एक अच्छी लड़की ढूँढना ज़रूरी है।"

“वह ज़रूर अच्छा दिखने वाला लड़का होगा, यार! आपका बेटा!”

मैंने उस जगह से एक फ़ोटो ली और यान्या को दी। यान्या के चेहरे पर उसे देखकर खुशी के भाव थे। चलो अपनी भौंहें चढ़ाते हैं। उन्होंने कहा, "वाह! सोशल इंटेलिजेंस दस्तॉय।"

“नहीं! यह एक पारंपरिक दाढ़ी है। इस मामले में भी, यह खास तौर पर सऊदी है!”

“इलम और समाजवाद में कोई विरोधाभास नहीं है। क्या इलम भी ‘बांटकर खाने’ के सिद्धांत पर आधारित नहीं है?”

'सर! आप यह कानून भी जल्दबाज़ी में बना रहे हैं, इसीलिए। इसके उलट, अमीर और गुलाम ही इस समाज की बुनियादी इकाई हैं। आपको गलत संदर्भ में और गलत जगह पर भाषण देने की आदत है...' वह कुछ कड़ा कहना चाहता था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। यह बहस का समय नहीं है।

प्रोफेसर की भौंहें अभी भी उठी हुई थीं। फिर उन्होंने कहा, "बेटा, तुम सऊदी अरब में बहुत पैसा कमा रहे हो, लेकिन फिर भी तुम एक पुरानी साड़ी लाए हो?"

"मैं यह या वह खरीदना चाहता हूं, लेकिन मुझे यह पसंद नहीं है।"

“यह अच्छी बात है! बच्चों से कभी कुछ मत लेना। मैं भी लेना चाहता हूँ। आमिर इस बारे में क्या सोचते हैं?”

“मुझे नहीं पता। लेकिन वह इसे नहीं ले रहा होगा, इसीलिए उसे इस घर में रहने में झिझक महसूस हुई और वह होटल चला गया।” जब उसने यह देखा, तो कुछ भाई आए और बोले, 'नज़ीर की इन माता-पिता के लिए कितनी ज़िम्मेदारी है, उसे पता होना चाहिए!'

“मैंने खुद एक अलग जाति, एक अलग देश की लड़की से शादी की है। वह भी चालीस साल पहले। मुझे माया लड़की के किसी से भी शादी करने पर कोई एतराज़ नहीं है। फिर भी, मुझे लगता है कि अगर बेटा भारत में होता तो बेहतर होता। क्योंकि पीढ़ियों के रीति-रिवाज़ और सोच पीढ़ियों को पता होती है। बेटा नहीं होना चाहिए, यही माया पत्नी की मर्ज़ी है।

Machine Translated by Google

"ये सब चीज़ें रीति-रिवाज़ के हिसाब से होती हैं, और मकसद भी पता होता है। सिर्फ़ गे लोग ही जानते हैं। पहले लड़का और लड़की एक-दूसरे को पढ़कर सुनाते हैं, मिलते हैं।" उन्होंने कहा।

लड़का और लड़की पादरी के घर पर मिले। दोनों एक-दूसरे को पसंद करते थे। कोई और शर्त नहीं थी। नज़ीर की बस एक शर्त थी, 'शादी से पहले लड़की की शादी रीति-रिवाज से होनी चाहिए।' इसके बाद भी लड़की अपने पति के साथ घर में रहेगी, लड़के की यह शर्त भी लड़की ने बिना देर किए मान ली। उसकी माँ ने एतराज़ किया, "अगर मैं जीसस का साथ छोड़ दूँगी तो मुझे नर्क जाना पड़ेगा, पता है क्यों?"

लड़की ने जवाब दिया, "मैं एक तरफ छोड़कर दूसरी तरफ सरेंडर कर रही हूँ! अगर वे दुश्मन मुझ पर हमला करने आएंगे, तो ये दुश्मन मुझे बचा लेंगे। मुहम्मद (PBUH) तुमसे ज़्यादा ताकतवर हैं। उन्होंने किसी तरह मुझे धोखा दिया है। अगर कोई तुम्हारे इस गाल पर मारे, तो दूसरा गाल भी आगे कर दो, जीसस ने कहा, 'तुम्हें मुझे मारना जायज़ नहीं है, और मुझे मारने वालों से लड़ना भी तुम्हारे लिए जायज़ नहीं है।'"

उसकी माँ ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसकी बेटी के साथ ऐसा कुछ हो सकता है।

प्रोफेसर ने नजीर से कहा, "अगर वह चाहे तो लड़की बन सकता है। लेकिन तुम्हें भी जल्दी शादी कर लेनी चाहिए।"

"अंकल, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैंने एक लड़की से शादी कर ली है, लेकिन इसके बाद सऊदी वाले मुझे काम देने से मना कर देंगे। पहले उसे एक लड़की से शादी करनी होगी और फिर किसी मौलवी से शादी का सर्टिफिकेट बनवाना होगा। उसका नाम, उसका धर्म, उसका पति – सब कुछ लड़की की शादी के आधार पर तैयार होना चाहिए। नहीं तो उसे हिस्सा नहीं मिलेगा और आप भी मारे जाओगे। इस सिंपल शादी का क्या मतलब है? इसकी ज़रूरत किसे है?"

"मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ। मैंने ही तुम्हारी सास के नक्शेकदम पर चलकर पहल की थी। मैंने ही तुम्हारी माँ को बेटी पैदा करने के लिए हिम्मत दी थी। अब, जब वो वहाँ हैं, तो तुम्हारे पिता ने कुछ और किया है। अगर सादी शादी होती, तो वो ऐसा बर्ताव नहीं करते। आज तुम कितना भी सोचो, तुम मुझे आज कैसे बता सकते हो कि भविष्य में हालात कैसे बदलेंगे, तुम अपना मन कैसे बदल सकते हो? बेटी के पिता होने के नाते, मैं इस बारे में चिंता नहीं करना चाहता?" उन्होंने बीच-बीच में शांत होने की कोशिश करते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता कि माया ऐ और विडाल माया के बीच क्या हुआ। मुझे माया ऐ पर क्रश है और अरे, माया विडाल ने माया ऐ को तलाक नहीं दिया है। क्या यह तारीफ़ नहीं है? आइए इन दोनों के बीच के रिश्ते को एनालाइज़ करते हैं।

Machine Translated by Google

"मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?" वह भी धीरे से हँसा।

"क्या आपको सऊदी अरब या संयुक्त अरब अमीरात के अलावा कहीं और नौकरी नहीं मिल सकती?"

“अंकल, बात ये नहीं है! मैं सलमा से प्यार करता हूँ। जब तक वो ज़िंदा रहेगी, मैं उससे प्यार करता रहूँगा। अगर आप जैसा जीनियस इस पर यकीन नहीं करता, तो दूसरे कैसे करेंगे? क्यों? आप समझते नहीं? सलमा आपकी बेटी का नाम है। उसे भी ये नाम पसंद है!” ये कहकर उसने अपनी सास के माथे पर हाथ रख दिया। इसके बाद, उससे बात करने का कोई मतलब नहीं था, ऑफिसर दौड़ता हुआ आया।

फिर गयावर ने लड़की से यही बात कही, “मेरे हिसाब से पहले शादी कर लो। फिर शादी कर लो। फिर अगर वह कोई और काम करने जाएगा तो उसे रोका जा सकता है।”

वह हँसी, "डैडी! अगर हम एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करेंगे तो ज़िंदगी कैसी होगी? अगर हम शादी से पहले एक-दूसरे पर भरोसा दिखाएँगे, तो शायद हम भरोसा तोड़ देंगे।"

“चलो अलग हो जाते हैं। चलो दूसरे बेटे को ढूंढते हैं।”

“डैड, मुझे अपने नज़ीर पर क्रश है। चिंता मत करो, और ऐसा कुछ मत कहो, लेज़, उसे देख लिया जाएगा। आखिर एक पत्नी अपने पति के साथ रहना चाहती है, है ना?” उसने धीरे से कहा।

वह आठवीं में ऐसे इंसान से कैसे प्यार कर सकता है? उसने सोचा। फिर उसे याद आया, 'जब तुम इंग्लैंड में थे, तो एलिज़ाबेथ के बारे में तुम्हारी भी यही फीलिंग थी। तुम्हें हदें भी नहीं पता थीं। जब दुनिया के सभी सबसे पढ़े-लिखे मुसलमान मुसलमानों के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं, तो तुम्हारी बेटी उनके अधिकार के आगे क्यों झुकेगी? यह बहुत समझदारी की बात नहीं है, लेकिन बेवकूफी भी नहीं है! इतनी आसान सी बात समझने में कोई दिक्कत नहीं है। तुम ऐसा क्यों करते हो?'

'पूरे देश ने इस बारे में सोचा और महीने की 12 तारीख को बच्चे को जन्म देने का फैसला किया। अब वह बाईस साल की है। वह दस या बारह साल से भूखी रही होगी। पुरानी दुनिया में, सोलह साल बाद, वह इसे पूरा करने के लिए कुछ करने के लिए तैयार हो गई। वह यह भी जानती है कि इस मामले में किस बात की चिंता करनी है। इसलिए, यह दबी हुई भूख उसके फैसले लेने में कोई अहम भूमिका नहीं निभाती। यहाँ यही हुआ है। सिवाय इसके कि उसकी माँ एक प्रैक्टिसिंग कैथोलिक है। नज़ीर को देखकर, वह इसके लिए बहुत भावुक हो गई। इस वजह से, उसने अपने हर कदम पर अपनी सहमति दी। वह माया से बहस करने के लिए भी काफी हिम्मती हो गई, जिसने उसका साथ दिया। वह राजा के जुए में अपनी पूरी ज़िंदगी कुर्बान करने से डरती थी।

Machine Translated by Google

कोई ज़रूरत नहीं, जबकि अनपढ़, सभ्य दुनिया चिल्ला रही है; मेरी बेटी ऐसी क्यों हो गई, जबकि कुछ दुनियावी औरतें इस विषय पर माया फैलाने वाले भाषणों की वजह से माया जैसी हो रही हैं?

उन्होंने लामी से यह भी कहा, "तुम्हें शादी करने से पहले अपने बेटे से शादी करने के लिए कहना चाहिए।" हेमना ने भी उन्हें मना लिया। होटल जाकर उन्होंने हेमना को भी मनाने की कोशिश की। उन्होंने कहा, "अमीजान, शादी शरिया से जुड़ी है। अगर तुम शादी करने से पहले शादी कर लोगी, तो क्या यह सिर्फ़ दिखावा नहीं होगा?"

"नमकवातेनहेरे! दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।"

"तुमने ही कुछ तोड़ा है। शरिया कानून के अनुसार, पति और पत्नी दोनों के बराबर अधिकार हैं। शादी के कॉन्ट्रैक्ट में एक क्लॉज़ यह भी है कि, 'अगर मैं तुम्हें तलाक़ देता हूँ तो मैं तुम्हें इतने पैसे दूँगा।' अगर तलाक़ होता है, तो तय किए गए पैसे लेकर पूरे देने चाहिए। शादी एक कॉन्ट्रैक्ट है, है ना?"

"तुम्हारे पापा ने किया! अगर उसकी तरफ़ आकर्षण कम हो जाए, तो तुम एक-दो और क्यों नहीं करते?"

"अगर मैं ऐसा करता भी हूँ, तो मुझे सब कुछ पीछे छोड़ना होगा, जिस पर कोई सवाल नहीं है। मैं कभी भी ऐसा काम नहीं करूँगा जिससे इस धर्म का उल्लंघन हो। इलम में मेरा विश्वास गहरा है, ऊपरी नहीं।"

मैंने उससे इस बारे में ज़्यादा बात नहीं की, लेकिन वह मेरे पास आया। 'यह मेरी गलती थी। इसके लिए मुझे किसी गरीब परिवार की लड़की ढूंढनी चाहिए थी। मैं एक पढ़ी-लिखी और मॉडर्न परिवार की पत्नी चाहता था, इसलिए मैंने प्रोफेसरों से रिश्वत की बात उठाई। वह मेरी सभी शर्तों पर मेरे साथ रहने को भी तैयार हो गई है। लेकिन क्या उसे भविष्य का पूरा अंदाज़ा होगा? क्या प्रोफेसरों ने मुझे इसके बारे में बताया होगा? चाहे वह किसी की भी बेटी हो, उसके साथ कोई नाइंसाफ़ी नहीं होनी चाहिए।'

होटल से बाहर आते ही उसने ऑफिसर्स को फ़ोन किया और उन्हें बताया कि क्या हुआ था। फिर उसने कहा, "मैं माया को घर नहीं लाना चाहता। किसी को मत बताना कि मैंने तुमसे फ़ोन पर बात की है। तुम अपनी बेटी को बताओ। पहले शादी हो जाने दो, और फिर उससे कहना कि उसका हाथ थामे। चाहे पूरी दुनिया टूट जाए, उसे इसके लिए तैयार रहना चाहिए!"

"ऐसा नहीं हुआ, इसीलिए मैंने आपसे बात की।"

Machine Translated by Google

“क्यों? क्या इस व्यक्ति पर इतना भरोसा है?”

"यह ऐसी बात नहीं है जिसके बारे में हम फ़ोन पर बात कर सकें। जब हम मिलेंगे तो मैं आपको सब कुछ बता दूँगा।"

एना सलमा को सऊदी गए दो महीने हो गए थे, फिर भी प्रोफेसर का दिल कम नहीं हुआ था। 'मैं अपनी बेटी को ठीक से पढ़ाऊंगा नहीं, न ही उसे अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत दूंगा, न ही उसकी ठीक से देखभाल करूंगा।' उनकी बेटी ने कैथोलिक धर्म छोड़ दिया था, यह उनके लिए बहुत अफसोस की बात थी। पति का पत्नी पर गुस्सा इसलिए भड़क गया था क्योंकि उसने उसके दिमाग की साफ सोचने की ताकत को कमजोर कर दिया था। उल्टा, उनकी बेटी इसी धर्म के एक ऐसे आदमी के पास चली गई थी, जिसने इस्लाम को ठुकरा दिया था, जो पुराने समय से ही पवित्रता का धर्म रहा है, और इसके लिए उसके पिता जिम्मेदार थे, इसलिए उनकी पत्नी गुस्से में थी। घर में सन्नाटा छा गया था। चूंकि बूढ़ी औरत एक औरत थी, इसलिए उसने इस सन्नाटे को तोड़ने के बारे में सोचा भी नहीं। घंटी की जरूरत नहीं लग रही थी।

लड़की चली गई और प्रोफेसर को अपनी मां की याद आने लगी। जब उन्होंने उसकी तरफ देखा तो पाया कि इन दोनों बातों का आपस में कोई लेना-देना नहीं है। 'अचानक उनके दिमाग में आया, कोई कवि होता है, मां लड़की को अपने महल में इकट्ठा करती है। क्या यह सच है? मां की उम्र क्या है? पैंसठ। जब मैंने उसे इकट्ठा किया था तब वह पंद्रह साल की थी, हां! उन दिनों ऐसा ही होता था। मैं इकलौता बेटा था। बहुत समय हो गया, पर मैं अकेला रहता था। चार लड़कियां भी ऐसे ही रहती थीं। जब तुम इस दुनिया से बाहर कदम रखती हो तो पूरी दुनिया बदल जाती है। यह क्या एलिज़ाबेथ है! उन्होंने कहा, 'बदलने की कोई ज़रूरत नहीं है। साड़ी पहनो, माथे पर कुमकुम लगाओ, हाथों में चूड़ियां पहनो। अगर तुम इतना कर लो तो तुम्हारी मां तुम्हें अपनी बहू के रूप में स्वीकार कर लेंगी।'

लेकिन उसने उनकी भी नहीं सुनी। इसके बजाय, उसने कहा, "आप भी माया पर कोई नियम मत थोपिए!" उसे तिनमबगाला के बड़े चर्च के फादर का ख्याल आया। वह चिल्लाया भी, "नहीं! नहीं! नहीं! किसी भी ऐसे इंसान को मत बुलाओ जो बाहर से आता हो!" इस वजह से वह उसे गाँव नहीं ले जाना चाहता था।

मैं हर तीन साल में एक बार उनसे मिलने जाता था। जब मैंने उन्हें पैसे देने की पेशकश की, तो उन्होंने वह भी मना कर दिया, और कहा, “नहीं! हम उन्हें सिर्फ़ उतना ही इंसानी खून देंगे जितना हमारी ज़रूरतें पूरी हो सकें।”

मैंने अपनी माँ से पूछा, “अम्मा, मुझे बताओ कि तुम्हें कैसा कुत्ता चाहिए। जब अगली खेप आएगी तो मैं उसे तुम्हारे पास ले आऊँगी।” उन्होंने कहा, “मुझे कुत्ते से क्या करना है? तुम तो दुनियादारी वाले आदमी हो, तुम्हारे बच्चे हैं। तुम ही हो जो मुझे पैसे देते हो।”

इस बार सैलरी भी बहुत अच्छी थी! सिवाय टीश टंडन के जो घर चलाती थी।

Machine Translated by Google

वह था।

अगर झगड़ा न हुआ होता तो रिश्ते इतने खराब नहीं होते।

मैं एक मॉडर्न विचारक के तौर पर मशहूर होने लगा था, इसी दौरान एक घटना हुई। मैंने एक लंबा आर्टिकल लिखा था जिसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि हमारे ऋषि-मुनि भी बीफ़ खाते थे। जब आर्टिकल छपा, तो छप गया। घर पर एक बड़ी भीड़ भी आ गई। अगर पुलिस गार्ड न होता, तो उस दिन माया परिवार सदमे में नहीं होता। अगर मेरी जान भी न जाती, तो मेरे हाथ-पैर न टूटते। बिना किसी झिझक के, मैंने अगले अंक में एक और आर्टिकल लिखा। उसमें लिखा था, “बीफ़ खाने वालों और न खाने वालों, दोनों को इस बारे में सोचना चाहिए। अगर बीफ़ न खाने वाले इसे खाने वालों को मना करेंगे, तो यह उन्हें बाहर रखने जैसा होगा। इससे भविष्य में देश का बंटवारा भी हो सकता है। भारत के बाहर भी बीफ़ को टैबू नहीं माना जाता। जब मैं विदेश में रहता था, तो मैं इसे रेगुलर खाता था। अब भी, जहाँ भी मौका मिलता है, खा लेता हूँ। मैं भारतीय नहीं हूँ, किसे इनटॉलेरेंस का हक है?...”

जब तक यह आर्टिकल पब्लिश हुआ, कंजर्वेटिव लोगों का गुस्सा शांत हो चुका था। पुलिस की जगह अब सरकार ले रही थी। हम भी कभी-कभी सेमिनार के ज़रिए इस टॉपिक को ज़िंदा रख रहे थे।

इसके बाद मुझे गांव लौटे तीन साल हो गए थे। मैं कलेनहाली के समाजसेवी काशगौड़ा की बेटी के पास जाना चाहता था। अगर मैं नहीं जाता तो गांव के लिए प्यार कैसे बढ़ता? अगर वहां जाकर मैं अपने मम्मी-पापा से नहीं मिला तो गांव वाले चुप नहीं रहेंगे, मुझे चिंता थी। गांव से बहुत से लोग मिलने आए थे, वह भी सोच रही थी, 'क्या मैं गांव से वापस आते ही जाऊंगा?'

लंच के बाद, मैं तीन बजे कर्नांगवी गया। मैंने घर में कदम रखा। अंदर, मेरी माँ पोर्च पर बैठी फूल पलट रही थीं। पहले तो उन्होंने मुझे पहचाना नहीं। इस समय तक, मैंने जे.पी. के कपड़े पहनना शुरू कर दिया था। मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ! मैं हूँ!"

अंदर से आपा आए। उन्होंने पूछा, “क्या तुम गौड़ा की बेटी से मिलने आए थे? रुको!” उन्होंने कहा और अंदर चले गए। उन्होंने अंदर से पैसे लिए और फिर बाहर आ गए। उनके सामने खड़े होकर उन्होंने पूछा, “आपने लिखा है कि मैं बीफ खाता हूं। क्या यह सच है?”

अचानक आए इस ख्याल ने मुझे बांध दिया। लेकिन, सावन ने तुरंत कहा, “सर, मुझे फॉरेन पॉलिटिक्स में कुछ कहना और लिखना है। आप भी

Machine Translated by Google

"क्या आप वहां रहते हैं?"

"लेकिन क्या तुम पुलिस को सच बताओगे? तुम्हारी ज़बान में कितना दम है? तुम इंसान हो, है ना? जमादाता के माता-पिता तुम्हारे सामने हैं। अब बताओ, क्या यह सच है?" उसने मन ही मन सोचा।

मुझे भी गुस्सा आ रहा था। मैंने कहा, "मैं आपसे मिलने आया था। मान लो, अगर मैंने गलती से इसे खा लिया, तो क्या होगा? चीन और मंगोलिया जैसे देशों को छोड़कर, जहाँ गाय और मवेशी नहीं पाले जाते, दुनिया में हर जगह बीफ़ खाया जाता है। क्या आपको पता है कि आपके देश में भी कितने लोग इसे खाते हैं? एकानंदसु के खाने पर कंट्रोल करना फासीवाद है! यह डेमोक्रेसी नहीं है!..."

"उम! तुमने डायग्नोसिस मान लिया। मैं तुम्हें सारे पैसे दे दूँगा और तुम्हारी माँ को ले जाऊँगा। वे घर से बाहर चले गए। मैं गुस्से में बैठ गया और कार स्टार्ट कर दी।

बाद में, मैंने काशा गौड़ा से सारी खबर सुनी। मैं उसे उनके घर ले गया और उन्हें पढ़कर सुनाया। मैंने इस लड़की को मुसलमान बनने में मदद की, तो वह उसके साथ बड़ा क्यों नहीं हुआ? ओह, यह नरसंहार करने वाला गांधीवादी। गांधी गाय की पूजा करने वाला है। जब सोच की धारा आगे बढ़ती है, तो सबसे करीबी रिश्तेदार भी दूर-दूर चले जाते हैं। हर महान आदमी जो दुनिया को रास्ता दिखाता है और उसे आगे बढ़ाता है, वह जंगल में दिखता है। उसके माता-पिता और भाई-बहन नरक में जाते हैं। अगर इन महान लोगों ने इमोशन दिखाया होता, तो वे महान आदमी नहीं बन पाते! इन ख्यालों के साथ, मुझे पिछले पच्चीस साल भी याद आ गए।

अगर शादी तय हुई होती, तो माँ की याद मुझे इस तरह परेशान नहीं करती, कौन जाने! वो कैसे किसी चीज़ से जुड़ रही हैं? मैंने सोचा। इस घटना के बाद, मेरे माता-पिता का सारा प्यार और ज़िंदगी सिर्फ़ चार बेटियों और नाती-पोतों के लिए रह गई। बातें तो होती हैं, लेकिन रिश्ता नहीं रहा। मैं पचास साल का हूँ। कितना समय हो गया! कौन जाने क्या हुआ! मैं यहीं होता। आसानी से सौवां साल भी पार कर लेता। लेकिन कुछ भी हो जाए, मैं इस त्योहार में हिस्सा नहीं ले पाऊँगा। इतने सालों से दूर के परिवार पर यह शक कैसे किया जा सकता है? यह कैसा धर्म है जो इंसान का मांस खाने या न खाने को इंसानी रिश्तों से ज़्यादा ज़रूरी मानता है? यह धर्म टुकड़ों-टुकड़ों में कटा हुआ है, इस पर चाहे कितने भी आर्टिकल लिखे गए हों, चाहे कितने भी भाषण दिए गए हों, यह ऐसा है जैसे इसका कोई निशान ही न हो।

उसकी जिंदगी बर्बाद हो गयी।

Machine Translated by Google

11

प्रोफेसर शाना को अमेरिका से एक मैसेज मिला। उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ़ नॉर्थ-ईस्टर्न इंडिया में अलग-अलग देशों के बीच विचारों के लेन-देन पर दो हफ़्ते के सेमिनार के दौरान दो महीने के लिए भारत आने का रिक्वेस्ट किया गया था। इस बुलावे के पीछे भारतीय विचारक – टॉम का हाथ था, जो US के हालात पर नज़र रखने में बहुत अच्छे थे, किसी भी तरह की विचारधारा को हवा नहीं देते थे। उन्हें वह बातचीत भी याद थी जो उन्होंने भारत आने पर इस बारे में उनसे की थी। वह बोर भी हो रहे थे। उन्हें अनुभव हुआ था कि वह जितना ज़्यादा समय अमेरिका घूमेंगे, बोरियत उतनी ही दूर होती जाएगी। नहीं तो, डॉलर बहुत होंगे। कार भी बदली जा सकती है।

लेकिन एक प्रॉब्लम थी। उसने बनारस में एक सेमिनार में कीनोट स्पीच देने का इनविटेशन पहले ही एक्सेप्ट कर लिया था। उसे यह भी डर था कि वहाँ उसे ज़्यादा एक्सपीरियंस नहीं होगा। जो उसने हज़ार जगहों पर कहा था, वही यहाँ भी कहेगा। इंडिया के सभी कॉलेज के बच्चे ऐसा ही सोचते हैं। उसने पैसों की वजह से इसे एक्सेप्ट किया। इस समय, अगर अमेरिका का कारण बताने पर वह पकड़ा गया, तो उसका नाम खराब हो जाएगा। इस वजह से, वह कैलेंडर देख रहा था, सोच रहा था कि सेमिनार खत्म करने के बाद वह कब अमेरिका के लिए निकल सकता है। वह बस चल रहा था, अमेरिका जाने से पहले, उसे यह पक्का करना था कि 'US एम्बेसी से ट्रिप का इनविटेशन' की खबर यहाँ के सभी अखबारों में खास तौर पर एडवर्टाइज़ हो। चाहे वह अपने बिज़नेस में कितना भी आगे बढ़ जाए, चाहे उसे कितना भी पैसा मिल जाए, चाहे उसने उसकी कितनी भी मदद कर दी हो, वह उससे पैसे लेने के लिए कभी तैयार नहीं था। वरना, उसे लगता था कि वह कभी बराबर नहीं हो पाएगा। वह उससे मिलना चाहता था, गॉस्पेल के बारे में बात करना चाहता था, उससे पूछना चाहता था कि क्या उसे मदद चाहिए। लेकिन उसे उससे कभी कुछ नहीं चाहिए था। वह जानता था कि एलिज़ाबेथ उससे पैसे मांग रही है। 'वरना, औरतों में घमंड कम होता है! लेकिन इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। समझदार लोग उसके खिलाफ जाएंगे। अगर उसकी अपनी फाइनेंशियल सिचुएशन होती, तो उसे भी घमंड होता। अगर उसकी अपनी फाइनेंशियल सिचुएशन होती, तो वह माया के साथ रहने के बजाय अलग रहती! यह भी इतना आसान नहीं है! वह कैथोलिक है..'

मन, जो इधर-उधर भाग रहा था, उसे वापस उसकी असली जगह पर ले आया। इसी समय, दो इंटेलेक्चुअल प्रोफेसर उससे मिलने आए। एक लंबी, नुकीली दाढ़ी, बिखरे बाल, एक चेस शर्ट, जीसस। भविष्य में कर्नाटक में एक इंटेलेक्चुअल कॉन्फ्रेंस होने वाली थी,

Machine Translated by Google

उनकी हत्या करने का आइडिया उतान प्रोफेसर का था। वह यह रिक्वेस्ट करने के लिए दो बार यहां आया था। वे दोनों जान-पहचान वाले भी थे। कल्चरल-मटीरियल या मॉडर्न मूवमेंट के सभी ग्रुप प्रोफेसरों को जानते थे। उनके आशीर्वाद से वे प्रोफेसरों से जान-पहचान बढ़ा रहे थे।

माता-पिता ने प्रोफेसरों को उनके आने की जानकारी दे दी है। प्रोफेसरों ने पहले भी 'सोच ही शक्ति है, विचारहीनता दमन है' जैसे दार्शनिक तर्क दिए थे। जब मैं विष्णु को सिगरेट देते हुए सुन रहा था, तभी फोन की घंटी बजी। उन्होंने कहा, "क्या तुमने नहीं देखा? सुविधा के लिए खरीदा गया फोन तुम्हारी एकता को कैसे तोड़ सकता है।"

घाटी के उस पार से एक आवाज़ सुनाई दी, “सर, मैं फुसफुसाकर बोल रही हूँ। आपकी माँ वारया.”

“ओह? हॉट? सच में?” बैठा हुआ आदमी बोल नहीं पाया। “क्या हुआ?”

“हाल ही में, उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। गाँव में मेडिकल सर्विस अच्छी नहीं हैं, इसलिए विशाली तानी को तुमकुर ले जाया गया। वे दोनों पिछले एक महीने से वहीं थे। थोड़ी दया आई। डॉक्टरों ने कहा था कि इस उम्र में और कुछ नहीं किया जा सकता। कोई दाह संस्कार करने आया था। दामाद भी बच्चे जैसा है, उसे करने दो, डॉक्टरों ने हमसे कहा था। बाकी काम गाँव में हो जाएगा। मीना और जलजई भी आ गए हैं। उनके पति और बच्चे सात दिन में आ रहे हैं, मैं समझता हूँ। विशाली आंटी और उनके पति यहीं हैं। वे आज सुबह घर आए। उन्होंने कहा, 'कम से कम आप उन्हें फोन करके बता तो दो। अगर कोई यह भी बताता है कि माँ चली गई हैं, तो भी सब बेकार हो जाएगा।' उन्हें लगता है कि वे कुछ भी करें, बच्चे का हक है। इसलिए वे बसनकुनिंगल आकर फोन करते हैं।”

"मैं जल्द ही जा रहा हूँ! मैं अभी वापस आता हूँ! क्या तुम ठीक हो?" उसने बिना सोचे-समझे कहा।

“रुको। चलो। रुको,” उसने फ़ोन रखते हुए कहा।

नहीं, प्रोफेसर को जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने कहा, “मुझे माफ़ करना! मेरी माँ गुज़र गई हैं। कुंगालन छह मील दूर एक गाँव है। मुझे तुरंत वहाँ जाना होगा।”

उन्होंने यह भी कहा, "यह हमारी कार है। हम आपको वहां ले जाएंगे।" , "सर!" बिना ज़्यादा सोचे।

Machine Translated by Google

प्रोफेसर कारमेजान बैठ गए।

जब कार गैराज से बाहर आई तो सब लोग बातें कर रहे थे। फिर उन दोनों ने मन ही मन सोचा, "आपकी उम्र क्या थी, सर? जिस माँ ने आप सबको एक साथ लाया, वह सच में महान है!"

चर्चा के विषय पर, प्रोफेसर ने अपनी माँ के हर गुण को याद किया और दर्शकों से कहा, “शंकराचायणी ने अपनी माँ के महत्व को न केवल उनके गुणों के मामले में, बल्कि उनके चरित्र के मामले में भी दिखाया है। वह दूसरे तपस्वियों की तुलना में ज़्यादा मानवतावादी थे, और इसलिए ज़्यादा विचारधारा वाले थे।”

सबसे पहले, कार को लामिया के घर ले जाया गया। उन्होंने उसे अपने साथ चलने के लिए कहा। उसने कहा, "आपके परिवार में ज़रूर कुछ दिक्कतें होंगी। जब मैं वहाँ आऊँगी तो क्या करूँगी?"

“आप कहीं की नहीं हैं। आपको आना चाहिए था,” उन्होंने कहा। इतने सालों के बाद, विडाल के सामने खड़ा होना मुश्किल हो रहा था, इसलिए उन्होंने उसे बुलाया, और वह जल्दी से बाहर आ गई। उनके साथ आए लोगों ने भी अपना परिचय देते हुए कहा, “मैडम, आप मुझे नहीं जानतीं, लेकिन मैं आपको जानता हूँ। पूरा देश आपको जानता है...” वगैरह।

सुबाना भाऊजी सोफे पर बैठे थे। उन्होंने उन्हें तुरंत नहीं पहचाना क्योंकि उन्होंने शेव कर रखी थी। पिछली बार मिले हुए 25 साल हो गए थे। उन्होंने पूछा, “क्या आप अब आए हैं?” फिर उन्होंने उन्हें पहचान लिया। “अंदर आइए। अंकल अंदर बैठे हैं।” फिर सुबाना भाऊजी को अंदर ले जाया गया। उनके साथ आए दो लोग भी उनके पीछे-पीछे अंदर आए। क्योंकि वे कोमा में थे, इसलिए उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे कोई बूढ़ा आदमी सदी के आखिर का इंतज़ार कर रहा हो। उनकी नाक थोड़ी सूजी हुई लग रही थी, उनकी ठुड्डी उभरी हुई थी, ठुड्डी झुकी हुई थी, गाल सफेद थे, उनकी धोती घुटनों तक थी, शरीर पर कपड़ा था और कंधे सफेद कपड़े से ढके थे। प्रोफेसर ने थोड़ा झुककर प्रणाम किया और दूर खड़े हो गए। सुबाना भाऊजी उनके पास गए और उनके कान में चिल्लाए, “आप आ गए! नारायणराव!”

शाई “ओह!” फिर उसने कहा, “क्या सब ठीक है?”

ोफेसर “ह”ं हणाल.े

दोनों में से किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। तभी विशाली अंदर से आई। मीनाई और जलजाई भी उसके पीछे-पीछे आईं। “क्या तुम आ गईं, एना? विहनी के बच्चे ठीक हैं?” उन्होंने बड़े उत्साह से पूछा। चारों के चेहरे सफेद पड़ गए थे।

Machine Translated by Google

शेषानी ने बच्चे को बैठने को कहा। वे दोनों लकड़ी के पलंग के एक किनारे पर बैठ गईं। लामी और बगलू से आई दोनों लड़कियां फर्श पर चटाई पर बैठ गईं। सुबाना भाऊजी भी एक खंभे से टिककर बैठ गईं। प्रोफेसर ने कहा, “मैं समझ गया कि मां को हार्ट अटैक आया है। अगर मुझे पता होता, तो मैं बगलू को ले जाकर उनका ऑपरेशन करता। माया कुछ हार्ट अटैक स्पेशलिस्ट को जानती है जो विदेश से सीखकर आए हैं।”

“आपके डॉक्टर ने कहा है कि ऑपरेशन से कोई फ़ायदा नहीं होगा!” विशाल की आवाज़ ज़ोर से उठी। फिर से सन्नाटा छा गया। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। फिर विशाल ऐसी आवाज़ में हँसा जिसे विडाल सुन सकता था, “आह, मैंने पहले ही एना को होश में ला दिया है। मेरा दामाद अपने बेटे के साथ ऐसा नहीं करना चाहता। उसे यह तब करना चाहिए था जब वह बेटा था। है ना?”

पिता किसी से बात कर रहे थे। वह शायद कुछ सोच रहे थे। फिर उन्होंने कहा, “कोई कुछ भी करे, मरने वाले को कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वे अपने पाप-पुण्य के हिसाब से जो चाहें करते थे। उनके बच्चे नहीं हैं, वे क्या करें? ये सब रीति-रिवाज़ आने वाली पीढ़ियों के लिए हैं। जो लोग ये सब करते हैं, वे मरने वाले पर कोई एहसान नहीं करते। वे सिर्फ़ खुद पर एहसान करते हैं!”

"फिर भी, सब यही सोचते हैं कि बेटा है तो अगला कदम उसे ही उठाना चाहिए।" मीना हंस पड़ी।

"अगर वह ऐसा करना चाहता है, तो उसे पहले इसे लेना होगा।"

“क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाए और जो पाप मैंने जाने-अनजाने में किए हैं, उन्हें मिटा दिया जाए?” सुबाना भाऊजी अपनी सास के पास आईं और ऐसी आवाज़ में हंसीं जिसे वह सुन सकते थे।

“यह कोई जानबूझकर या अनजाने में किया गया पाप नहीं है। जान-बूझकर धर्म फैलाना, यह कहना कि ‘मैंने गाय काटी है – मैं कर रहा हूँ – मैं फिर करूँगा!’ पाप है। उसने आर्टिकल्स का कलेक्शन छापा है! उसने ऐसे भाषण दिए हैं। वह यहाँ आया है और हमसे बहस की है। इसीलिए उसने मुझसे दूरी बना ली है। अगर वह ऐसा करना चाहता है, तो वह सिर्फ़ बेवकूफ़ों की तरह काम नहीं करेगा।”

इस पर सुबाना भाऊजी भी चुप हो गईं। बहनें भी चुपचाप बैठी रहीं। बेटे ने जो किया, वह उसने चीफ को भी नहीं बताया। और हमें क्या करना चाहिए, अफसरों ने सोचा भी नहीं। 'पच्चीस साल पहले हुई घटना को ध्यान में रखकर हम आज ऐसा कर रहे हैं! हमें सोचना चाहिए कि क्या करना है, क्योंकि उसके आगे के कामों का कोई सपोर्ट नहीं मिलेगा, यह अफसोस की बात होगी। चे:! यह हमारी गलती है। हमें अपनी गाड़ी लेकर आना चाहिए।'

Machine Translated by Google

"मुझे डैगेंट को फ़ोन करके एक कार और एक ट्रेन भेजनी चाहिए थी। वे दोनों बातें करने में बिज़ी थे। इसलिए मुझे अब उनकी तरफ़ नहीं देखना चाहिए।" उसे एहसास हुआ कि उनकी तरफ़ देखना और भी मुश्किल था क्योंकि लैमी भी वहीं बैठी थी।

सुबाना भौजानी ने मन ही मन सोचा, “बताओ, वे कैसे आए?”

"लेकिन तुम भी बात कर रहे हो! क्या यह बात मेरे दिमाग में आई है?" उसने सोचा।

इस उम्र में भी, हमारे बीच धार्मिक मामलों पर बहुत मतभेद होते हैं, इसलिए मीना ने कहा, “क्या गलत है! क्या हमें इस बारे में सोचना भी चाहिए? हर कोई इसी तरफ से सोच रहा है। मुझे बताओ!”

कुछ दूसरे लोग, जो आँखें बंद करके बैठे हैं, कुछ याद कर रहे होंगे। बाद में उन्होंने कहा, “मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मरे हुए लोग पहिये की तरह नहीं होते। इस वजह से मेरी बात ही आखिरी है। क्या विपासाएँ यह काम करने आएंगी, उनके बारे में सोचो। मुझे इस पाप के लिए दो तरह की सज़ा दिखती है। एक तो वह सज़ा जो काउंसिल, पंचायत या कोटा देता है। यही सज़ा है। दूसरी वह सज़ा जो इंसान अपने पापों के लिए खुद को देता है। इसे सज़ा कहते हैं। पहले, इन दोनों सज़ाओं को मिलकर दिया जाना माना जाता था। अक्सर, पंचायतें भी बचाव के लिए नहीं आती थीं, बल्कि इंसान के हाथों से पाप होता था और इंसान खुद सज़ा भुगतता था। सज़ा दो तरह की होती है। एक तो उस इंसान की सज़ा जिसने अब तक पाप किया है और दूसरी यह वादा कि वह दोबारा ऐसा नहीं करेगा। एस. जानबूझकर किए गए पाप के लिए, कोई चुपके से भी सज़ा ले सकता है। लेकिन जानबूझकर की गई गलती के लिए, पूरे समाज को समझना चाहिए। इतना ही नहीं, पाप का नतीजा नहीं होता। उसे भुगतकर खत्म करना चाहिए। सज़ा से मन शुद्ध होता है, और लोग रिजेक्ट हो जाते हैं, बस! पाप को भी दो तरह से एनालाइज़ किया गया है। अनजाने में, बिना किसी उम्मीद के किया गया पाप, और जान-बूझकर, जानबूझकर और किसी इरादे से किया गया पाप! अनजाने में किए गए पाप के लिए कम सज़ा काफ़ी है; लेकिन जान-बूझकर किए गए पाप के लिए सज़ा कड़ी होनी चाहिए। इसने गाय को विक्टिम बनाया है, और इसमें गाय भी विक्टिम है। मैं इतना कहना चाहता हूँ, भले ही यह अनजाने में हुआ हो। उसने यह पाप अनजान बनकर और दुनिया को बेवकूफ बनाकर किया है। इसलिए, पूरी दुनिया को यह समझना चाहिए। किए गए पाप को सबके सामने कबूल करना चाहिए और उसके बाद, सबके सामने यह वचन देना चाहिए कि वह यह पाप दोबारा नहीं करेगा। पुराने ज़माने में, इस पाप के लिए बारह साल के वनवास और तपस्या का नियम था। बारह साल के बाद, वनवास से ज़िंदा और ठीक-ठाक लौटने की उम्मीद कम थी। बाद के ऋषियों और मुनियों ने इस बारे में बहुत कोशिश की। इससे उन्हें अपनी गलती का एहसास भी हुआ।

Machine Translated by Google

यह काम उन्हीं वृषों और वाणी से करना चाहिए। जंगल जाने के बजाय उसे कुछ दिन सिर्फ फल खाकर, गांव के लोगों से मिलकर और पूजा-पाठ करके गुजारने चाहिए। इसके बाद होम-हवन करके अगले कर्मकांड पूरे कर लेने चाहिए। नहीं तो तुम भी विप शशि से बात करो और जैसा वह कहे वैसा करो।" यह कहकर बचा हुआ शशि खूंटी पर टंगे कैलेंडर को देखने लगा।

आगे कोई नहीं बोला। भाई, "क्या बात कर रहे हो?" पूछना तो चाहता था, लेकिन विशाली चुप रहा। उसे जो कहना था, वह कह देता, इस बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं था। अपनी उम्र में भी मैंने देखा कि धर्म कितना सख्त था, प्रोफेसर उसमें शामिल थे, और दूसरी तरफ, मुझे लगा, मुझसे ऐसी गलती कैसे हो गई? मैं अपनी कार क्यों नहीं लाया? एक तरफ, मुझे लगा कि ऐसी हालत में पापा से बहस करना बेकार है। दूसरी तरफ, मुझे ज़ोर से लगा कि इस उम्र में भी, भले ही मेरी पत्नी चली गई हो, मैं धर्म पर बहस करने के लिए बड़ा हुआ हूँ और मैंने इस उम्र में अपनी माँ को खो दिया है और उन्होंने सच में सब खो दिया है। मुझे अपनी हार का एहसास बहुत तेज़ी से हुआ।

'अभी कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। एक तो, हमारे बारे में ऐसा कुछ नहीं है। उन्होंने हमें कुछ करने के लिए कहा भी नहीं। एक दिन गुज़र जाने दो और हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं। नहीं तो, अगला प्रोसीजर सात दिन बाद ही शुरू होगा, ठीक है!'

वह उठा और बोला, "मुझे बहुत काम था। लैमी का फ़ोन आया था, इसलिए मैं दौड़कर आया।" जाने से पहले उसने सबको हाथ हिलाया और दूर से नमस्ते किया। वे दोनों उसके पीछे-पीछे चले गए। उसकी बहन भी उसके पीछे-पीछे आई और कहती रही, "कुछ खा लो... कम से कम थोड़ी कॉफ़ी तो पी लो..." वगैरह। उसने उनसे कुछ कहा और कार स्टार्ट करने को कहा।

गांव के बाहर काम कर रहे किसान ने कहा, "सर! यह बात आपके ध्यान में आई है। मैंने बीफ और वील पर आपका निबंध भी अपने कलेक्शन में ले लिया है। ऐसा लगता है कि कुछ मॉडर्न ऑर्गनाइज़ेशन, पॉलिटिकल पार्टियां, मुस्लिम लीग, इंडियन नेशनल फेडरेशन, धार्मिक एसोसिएशन वगैरह इसके बारे में लिख रहे हैं।"

"हमारे धर्म में कितना जंग लग गया है, यही एक रास्ता है! माँ मानी जाने वाली माँ के मांस का टॉपिक यहाँ माँ के साथ असली रिश्ते से ज़्यादा ज़रूरी होता जा रहा है। इस पर एक असली आर्टिकल लिखा जाना चाहिए और शांति के लिए एक और अपील की जानी चाहिए।" प्रोफेसर ने कहा। जो औरत सच दिखाकर भाग गई थी, वह अब वापस आ गई थी।

दूसरे राजा ने उससे कहा, "तुम इतने अद्भुत और विचारशील क्यों हो गए हो?"

Machine Translated by Google

"अब किक मारने का समय है।"

“सर, हम दोनों ने सुबह से कुछ नहीं खाया है। आपको भी भूख नहीं लग रही है। चलो कुछ चटपटा खाते हैं।”

वह भी हँसा, “हाँ, मैं भी खाना चाहता हूँ।”

"क्या मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं?" ड्राइवर ने सोचा।

“नॉन हेजे! ओटेट के तौर पर!”

बार और रेस्टोरेंट में बैठे हुए प्रोफेसर को चक्कर आने लगा। उन्हें लगा कि वह गिरने वाले हैं। उन्हें किसी सहारे की ज़रूरत थी वरना वह इससे बाहर नहीं निकल पाएंगे। उन्होंने सोचा, “क्या मुझे एक पेग ऑर्डर करना चाहिए?”

“बिल्कुल नहीं, सर! लेकिन उन्हें यह करना ही होगा। मुझे खलिहान में जाना है और ऑफ-सीज़न में जाना है। इससे मुझे भी...”

प्रोफेसर ने प्लेट लाकर टेबल पर रखी देखकर सोचा, "क्या आपके होटल में बीफ मिलता है?"
"आप क्या बना रहे हैं?"

“आपको बगुले मिलेंगे। अगर हम उन्हें भी यहाँ रखने की कोशिश करेंगे, तो लोग होटल को ब्लॉक कर देंगे। यहाँ आपको बकरियाँ और खरगोश मिलेंगे। एक समय था जब पोर्क पर भी विचार किया जाता था। क्यों, सर, आपको ऐसा क्यों लगता है?”

“कुछ नहीं। बस ऐसे ही सोचा।” प्रोफेसर हंसे। अपने दोनों साथियों को देखकर, वह बहादुरी से मुस्कुराए।

फिर मैं डेस्क के पीछे वाली बड़ी सीट पर सो गया।

जब हम घर पहुँचे, तो अपनी बातें और फीलिंग्स थोड़ी शेयर करना आसान था। अपनी बातें और फीलिंग्स किसी के साथ शेयर करना उनका आम एक्सपीरियंस था, क्योंकि वे ज़्यादा क्लियर हो जाते हैं। लेकिन अब जो बातें और फीलिंग्स उभर रही थीं, उन्हें वे किससे शेयर करते? इतना ही नहीं, मुंबई-दिल्ली-हैदराबाद-कोलकाता में ड्रामा के बाहर भी बहुत से लोग थे जो उन्हें ड्रामा का मास्टर मानते थे। लेकिन यह फीलिंग किसी से शेयर करने की नहीं थी। अगर हम ऐसा करते, तो हमारी इमेज खराब होती। वे सब हमारी बुराई करते। वे हमारी बुराई ऐसे करते जैसे मूर्तियों की करते हैं! अगर हम अपने मन की सारी बातें उड़ेल भी दें, तो भी कोई ऐसा नहीं होगा जो हमें तराजू में न तौलेगा।

Machine Translated by Google

काश!

'मुझ पर कुछ नहीं रहता, बस यादें रहती हैं – ख्याल, एहसास। शरीर, शरीर के अंग, सब कुछ तब तक खाली है जब तक वह काम नहीं कर रहा है। यह एक श्राप बन गया है, क्योंकि इसका कोई मतलब नहीं है। मौत और बाकी सब चीजें इसलिए बनाई गई हैं ताकि मौत होती रहे... मैं इस बारे में कितना भी सोचूं, मेरा मन नहीं भरेगा। मुझे अपनी मां की याद सताने लगी। मैं सबसे बड़ा बेटा हूं। अगर कोई मुझसे कहे कि सिर मुंडवा लो और वो सब करो, तो मेरी पत्नी, बहन, मां, मां के बच्चे और सारे गांव वाले खुश हो जाएंगे। मैं खुद से कहता था कि मैंने भी मरने वाले की जान बचाई है। मैं अपने कामों में और शॉर्टकट ढूंढकर और भी जान बचा सकता हूं। आखिर हम कुछ चीजें दिमागी तौर पर तो कर ही रहे हैं, है ना? भले ही बड़े ऑफिसर का बेटा बंदर जैसा हो, उसे 'गोजरवाना' ही कहते हैं, है ना?

इसके बिना यह अनुभव भी अलग होगा। क्या कारण है, किस समय क्या किया जाता है, मंदिर में क्या किया जाता है, मंदिर में क्या किया जाता है, मंदिर में क्या किया जाता है, मंदिर में क्या किया जाता है, मंदिर में क्या किया जाता है, यह सारी जानकारी आसानी से मिल जाएगी। बाद में, इस पर आधारित लेख लिखे जा सकते हैं।

मैं अपनी पत्नी को नहीं बताता कि मैं क्या सोचता हूँ। एक साल हो गया है जबसे मैंने उससे बात करना पूरी तरह बंद कर दिया है, सिर्फ़ यही वजह नहीं है। मैं बीफ़ खाने के पाप से छुटकारा पाने की कसम खाता हूँ, लेकिन अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो यह उस पर सही खाना खाने का इल्ज़ाम लगाने जैसा होगा। कौन सा दूसरा जानवर मुझे गाय जितना मीट देता है? मुझे बकरियों से दस गुना भी नहीं मिलता और खरगोशों से एक भी नहीं। मैं बीफ़ भी नहीं खाना चाहता, लेकिन मैं इंसानों को क्यों खाऊँ? सभी जानवरों की ज़िंदगी इंसानों जैसी होती है, इसलिए ये सभी विचार निसग्धमा के लिए पूरी तरह से बेतुके हैं। अगर हिरण नहीं होंगे, तो क्या बाघ ज़िंदा रह सकता है, अगर मेंढक नहीं होंगे, तो क्या साँप ज़िंदा रह सकता है? इस दुनिया में कितने जानवर पत्ते खाकर ज़िंदा रहते हैं! पूरी सृष्टि, पूरा यूनिवर्स, सब कुछ भगवान ने इंसान के लिए बनाया है, और जबकि उस धर्म का आइडियल यह है कि थोड़ा मीट अच्छा है, इस इनटॉलेरेंस का क्या मतलब है, "असिनिस्ट" शब्द का क्या मतलब है। वह लवर नहीं है, वह पत्नी भी नहीं हो सकती। ऐसी औरत से बहस करने का कोई मतलब नहीं है।

शाम को फ़ोन बजा. यह कोई लोकल कॉल नहीं थी. दिल्ली से थी. उसने फ़ोन उठाया. दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई, “सर, कुंगलन बोल रहा हूँ. आपकी सुबाना भौजी बोल रही हैं.” फिर सुबाना भौजी की आवाज़ आई, “तुम भी, जयराम, गया आए हो. याद है? मीनाई का बेटा. मासमये कंप्यूटर इंजीनियर है. मासन अपनी माँ के साथ कार चलाकर गया आया है. कितनी बड़ी कार है! इससे मैं, ही, मीनाई, जलजाई सब इकट्ठा हो गए और तुमसे बात करना चाहते हैं.”

Machine Translated by Google

मैं आ गया हूँ। अगर मैंने दिल से सब कुछ किया भी, तो मेरा बेटा ऐसा कैसे होगा? मैं अभी भी अपनी माँ का एहसानमंद हूँ। मैं कुनिंगल में विपा शान से भी मिला और इस बारे में बात की। उसने भी कहा कि ज़माना बदल गया है, मैं शेषा जितना जानकार नहीं हूँ। मैंने उसकी बहुत सुनी बातें। चलो देखते हैं तुम भी चुप हो सकते हो या नहीं! मेरे सारे रिश्तेदार आ जाएँगे। नहीं तो घर में सोने की जगह नहीं मिलेगी। मर्दों को सुबह सोना पड़ेगा। तुम भी वहीं सोओगे। अगर तुम तीन दिन वहाँ रहे, तो कोई तुम्हारी मदद के लिए भी नहीं आएगा। फल तो बहुत हैं, और ऊपर से, वे तुम्हें फराला के नाम पर बहुत सारे पैसे भी देंगे। मुझे लगता है, इस बात को बड़ा न बनाते हुए, बिना किसी को पता चले यह किया जा सकता है। बाद में, दूसरे तरीके भी किए जा सकते हैं। रुको। उससे बात करो।"

इसके बाद विशाल. मैंने कभी नहीं सुना था कि फ़ोन पर उनकी आवाज़ कैसी लगती है. वो भी हँस पड़ीं. फिर मीना और जलजई भी हँस पड़े. आखिर में जयराम ने कहा, "अंकल, शायद आपको याद न हो. लेकिन मैंने आपको कई बार टीवी पर देखा है. भाषण देते हुए, चर्चा में हिस्सा लेते हुए, पब्लिक के मुद्दों पर बात करते हुए, किसी बड़े आदमी की मौत के बाद शोक जताते हुए. आपने ये भी देखा कि मैंने तुरंत अपनी पत्नी को दिखाया, देखो हमारे अंकल, तो! आपने मेरी दादी का जन्मदिन भी मनाना मुमकिन कर दिया. मैं अचानक चला गया हूँ. सुबह बाज़ार जाऊँगा. 14 तारीख को वापस आऊँगा." लमी ने भी कहा, "मुझे भी लगता है कि आपको अब आ जाना चाहिए. नहीं तो आपके गाँव से आपका रिश्ता हमेशा के लिए मिट जाएगा. मातृभूमि और जन्मभूमि एक ही है."

ना?"

जब वे सब बातें कर रहे थे, तो प्रोफेसर के मन में भी विचार साफ होने लगे। 'झोपड़ी में तीन दिन रहना और तीन रात सोना एक अलग अनुभव होगा। तब भी, ऐसा लगा जैसे किसी घर में घुस आए हों, लेकिन वह लामी का घर था। जब मैं छोटा था, तो हम इस झोपड़ी में बहुत खेलते थे और बहुत सारे खेल खेलते थे! कभी-कभी हम झोपड़ी में झपकी भी ले लेते थे। क्या यह कुछ लोगों के दोपहर के आराम करने की जगह नहीं है जो मवेशी पालते हैं?'

उन्होंने कहा, "ठीक है, लेम! तुम मुझे सब कुछ बता रहे हो। मैं अगली सुबह आऊँगा।"

फ़ोन रखने के बाद प्रोफ़ेसर ने सिगरेट जलाई और खिड़की से बाहर देखने लगे. अब उनका मन सच में हल्का हो गया था. 'जयराम कितना सुंदर बोलता है! माया की कहानियाँ भी टीवी चैनलों पर क्यों दिखाते हैं?' मेरा दिमाग़ तेज़ी से चल रहा था. हमारा रिश्ता कहाँ खत्म होगा? मैं उसका मामा हूँ. वो उसकी माँ का भाई है! माया के बारे में मेरे मन में बात बन रही थी. मैं फिर से मासा के पास जाऊँगा, मुझे उसके घर जाकर वहीं से वापस आना चाहिए.'

गाना सुनते समय उन्हें भाषा की एक खासियत का एहसास हुआ।

Machine Translated by Google

यहां दो-दो मतलब हैं। क्योंकि नाया की बेटियां दया पर ली जा रही हैं, इसलिए बहुएं भी विधवा हो गई हैं। इसी रामायेवा की संतान में जो कमियां पैदा हुई हैं, उन्हें छोड़ दें तो यह कितनी अच्छी बात है! यह जयराम कितने साल का होगा? 20-30? यानी चार-पांच साल और। ओह! इस घर में उसके लिए कितना अच्छा बेटा था!' यह बात जो उसके मन में आई, उसे इतनी अच्छी लगी कि वह कुछ देर तक इसी बारे में सोचता रहा।

बिस्तर पर लेटे-लेटे एक और ख्याल आया। वरना, दलिया गांधी-इटान वाले कई सालों से मंथली मैगज़ीन के लिए आर्टिकल मांग रहे हैं। 'गाय और गांधी का मतलब' टाइटल के नीचे कहा गया है कि चूंकि खेती के लिए गाय-बैल ज़रूरी हैं, इसलिए सिर्फ़ मशीन से जुताई ही नहीं, बल्कि गाय के गोबर का इस्तेमाल भी ज़रूरी है। ऐसी खेती से होने वाली पैदावार खेती के कामों के लिए अच्छी होती है। इस नज़रिए से, सबसे पहले गोहत्या पर रोक लगाना ज़रूरी है.. अगर यह आदमी आर्टिकल लिखेगा, तो वह कामयाब होगा। यह मुश्किल है कि कोई सोचने-समझने वाला इंसान वहाँ आर्टिकल पढ़ेगा। मान लो कोई पढ़ ले, तो कहेगा, 'गांधी के मतलब में जो सच है, मैंने इस आर्टिकल में बताया है, यह मेरी राय है, इसके अलावा कुछ और मानने का कोई कारण नहीं है।' मुझे अगले ही दिन लेख लिन के लिए निकलना था और अगले दिन अपने होमटाउन जाना था, इसलिए मेरा मन शांत हो गया और मैं गहरी नींद में सो गया।

सुबह अखबार पढ़ने के बाद मैं एक आर्टिकल लिखने बैठा। जब मैं एक पैराग्राफ पढ़ रहा था, तभी फ़ोन बजा, “सर, यह आ गया!”

“फ़ोन पर आवाज़ पहचानने की सुविधा काम नहीं कर रही है।”

"मैं कल तुम्हारे साथ तुम्हारे गांव आया था, है ना?"

“बोलो. क्या बात है? मैं एक आर्टिकल लिख रहा हूँ.”

“देरी के लिए माफ़ करना! लेकिन मुझे आपको बताना था, सर! यहाँ कुछ लोगों ने सुना है कि आप अपनी माँ की देखभाल के लिए अपने गाँव जा रहे हैं। उनका प्लान है कि CID को आपके गाँव भेजा जाए और आपकी हरकतों पर कड़ी नज़र रखी जाए और फिर एक बड़ा आर्टिकल लिखा जाए। मैं आपको बता रहा हूँ।”

"क्या तुमने पहले से तय कर लिया था कि मैं नहीं जाऊँगा? तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया?"

“मैंने आपको बताया था, सर! लेकिन वे कहते हैं, आप नहीं जानते कि वह किस तरह का इंसान है। वह दिखाने के लिए अलग-अलग मास्क पहनता है और कुछ अलग करता है। उन्होंने मुझे यह सब सीक्रेट रखने की चेतावनी दी है।”

Machine Translated by Google

“लेकिन आपको उन्हें यह क्यों बताना है कि मेरी माँ मर चुकी है और मैं शादी करने के लिए गाँव गया हूँ? यह एक पर्सनल मामला है, है ना?”

“रासी पटमई, मैं भी कुछ ऐसा ही कहने वाला था। मैंने आज सुबह हुई घटना का ज़िक्र एक उदाहरण के तौर पर किया था ताकि पता चले कि दिल कितना खराब होता है। मैं तुम्हें बताना चाहता था कि तुम इतनी मुश्किल हालात में कितनी बहादुरी से लड़ती हो!”

“पटना कौन जा रहा है?”

“आप इन सबका क्या करेंगे, सर?”

“कलेंहाली के काशोगौड़ा, रामराज, आनंदपा बिडगरेहाली और जया नासुर सभी वहाँ होंगे। है ना?”

"आप सब कुछ जानते हैं, सर! आपकी सी.आई.डी. भी काम करती है..."

“CID की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं देखता हूँ कि माया की मदद से उज्जदा में आने वाले और माया के खिलाफ़ हो जाने वाले बुरे लोगों का क्या करना है। कोई भी ऐसे किसी का भी आर्टिकल कहीं भी पब्लिश नहीं होने देगा। माया का यह आर्टिकल भी नहीं।” प्रोफ़ेसर गुस्से से आग-बबूला हो रहे थे। फ़ोन रखने के बाद, थोड़ी देर बाद उनका गुस्सा शांत हुआ। उन्होंने सोचा, ‘क्या इस आदमी का नाम लेकर उसके बारे में इतना हंगामा करना सही है? या यह गलत है? चलो मैं रानडे को भी समझाता हूँ, मुझे भी गुस्सा आ रहा है! मैंने कह दिया और ठीक है। मुझे कर्नाटक के इन बेकार लोगों से परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। मुझे ऑल इंडिया लेहल, इंटरनेशनल लेहल में काम है।’ उन्हें भूख लगी थी। मैं अंदर गया और कैथरीन को खाना बनाने के बारे में बताया और उसके लिए रेड टॉट और एल बनाया। मैंने उसके साथ टॉट खाया, कॉफ़ी पी और अपने कमरे में वापस आकर सिगरेट सुलगाई। ‘भड़वा! मुझे इस काले बालों वाले काशगौड़ा से प्यार हो गया है। मैं सालों से अपनी माँ या पिता से नहीं मिला हूँ! मुझे इस लड़की से प्यार हो गया था। माया के साथ अभी भी मेरा अच्छा चल रहा है। मैं हिलना नहीं चाहता था, लेकिन मैं इस चुनाव में खड़ा हुआ। मैं निराश था। मैंने उसे सपोर्ट नहीं किया, मैं आपको बता रहा हूँ! अगर मैं उसे पूरी तरह खत्म नहीं करूँगा, तो मैं यह नहीं कर पाऊँगा।

मैं कंप्यूटर के सामने बैठ गया, लेकिन आर्टिकल आगे नहीं बढ़ा। मैं रुक गया और आगे कोई आइडिया नहीं सोच सका। मैंने पंद्रह मिनट तक सोचा, "अगर आर्टिकल नहीं लिखा तो क्या होगा? अगर नहीं लिखा तो क्या होगा?" वह उठा और बिस्तर पर गिर पड़ा। "जो भी हो, औरतों की ज़िंदगी बच्चों से ज़्यादा दामादों पर बीतती है! कोई कह रहा था कि दामादों और दामादों का प्यार औरतों को नहीं रोकता। किसी वजह से, उनकी ज़िंदगी अपने देवर पर बीतती है। उसने भी अपने बाल बनवा लिए थे। उसने सब ठीक किया था। वह बदमाश

Machine Translated by Google

मैं काशगौड़ा के आस-पास रहता हूँ। मैं इस बात पर पूरा ध्यान रखूँगा कि मैं गाँव कब आया, कहाँ रुका, क्या खाया, किससे बात की और क्या कहा। मैं हर चीज़ के बारे में आर्टिकल लिखना बंद नहीं करूँगा, यहाँ तक कि मैंने अपने बाल कहाँ धोए, किन लोगों से मिला, कितने पैसे दिए, किस गाय की पूजा की और किसे तोहफ़े में दी। अगर मैं लिखना चाहूँ, तो मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं चुप भी नहीं रहूँगा। 'शंकराचायणी ने भी अपनी माँ के लिए ऐसा किया, संन्यास और धर्म को साथ रखा,' मैं उसी पर आर्टिकल लिखूँगा। माँ होने की अहमियत जाने बिना, मैं उनकी नाक साफ़ करने के कल्चर को मुट्ठी में पकड़कर ज़ोर से हिलाऊँगा।' यह सोचकर वह एक्साइटेड हो गया। उसने एक नई सिगरेट जलाकर इस एक्साइटमेंट को सपोर्ट किया।

शाम को एक और फॉलोवर आया। 'गाँव में सुबाना भाऊ से कह देना, मैं गया जाकर अपनी माँ को पैसे दान करूँगा! अगर ऐसा हुआ, तो मेरी माँ सीधे विष्णु के चरणों में जाकर उनके पास पहुँच जाएगी!' उसने फिर कहा: मुझे फिर से पैसे के लिए इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। मुझे किसी को कुछ नहीं बताना है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ या क्या कर रहा हूँ। सब ठीक हो जाएगा। गाँव में सब लोग चौदह तारीख तक चुपचाप बैठे रहेंगे। माया भी बगल में मेरी हरकतों पर नज़र रखेगी। मैं जहाँ भी जाऊँगा, वे यह खबर फैला देंगे कि चोन याई ले गया है, चोन कान आया है। इस वजह से मुझे चौदह तारीख तक बगल में ही रहना होगा। मुझे आने वाले हर फ़ोन कॉल को उठाना होगा। उसके बाद, मुझे गया जाना है और एक दिन वापस आना है। नहीं तो, मैं पटना लौट जाऊँगा। सिंह ने एक बार कहा था, "एक दिन 'मैटेरियलिज़्म और मोशन' सब्जेक्ट पर दो लेक्चर होंगे, तो उन्हें फ़ोन करके बता देना, और उन्हें पटना-बैंगलोर-पटना फ़्लाइट का टिकट दे दिया जाएगा। उन्हें दोनों लेक्चर के लिए दस हज़ार रुपये का मानदेय भी मिलेगा। मानदेय से पटना से उनके रहने की जगह तक की फ़्लाइट का खर्च भी निकल जाएगा।"

उसने तुरंत अपनी डायरी निकाली और पटाया को फ़ोन किया। वह उससे मिला। उसने अपने सामने कैलेंडर देखा और दो दिन लिख लिए। “मुझे बताओ कि तुम किस फ़्लाइट से आ रहे हो। मैं एयरपोर्ट आ जाऊँगा।”

डॉ. सिहाही एक मैटेरियलिस्टिक थिंकर हैं, एक मॉडर्निस्ट हैं। एक बार उनके जाल में फंस गए तो गया नहीं जा सकते। पहले वे पटाया जाएंगे, वहां से सीधे गया जाएंगे। वहां से टैक्सी लेकर गेट-हाउस जाएंगे। उन्होंने कहा, “कौन सा प्लेन लूंगा, मैं अभी पहुंचा भी नहीं हूं। कैसे भी आऊं, अगले दिन पटाया जरूर पहुंच जाऊंगा। मैं गेट-हाउस भी आऊंगा। चिंता मत करो। मैं गेट-हाउस पर ही रुकूंगा।”

भले ही गांव ने चौदह दिनों तक वैकुंठ समाराधना मनाई, लेकिन बगलू गांव से बाहर नहीं गए। इसके उलट, उन्होंने इन दिनों में चार समारोहों में हिस्सा लिया। उन्होंने दो पब्लिक स्पीच दीं। यह सब टीवी पर दिखाया गया। यह कहानी अखबार में फोटो के साथ भी छपी।

Machine Translated by Google

गांव से भी किसी ने फोन नहीं किया। बहन, जीजा, लामी – किसी ने भी नहीं! उसने तय किया, बाद में इन सभी लोगों को बता दूंगा, कि मैं आपके परिवार को भिक्षा देने गया था।

हालांकि प्रोफेसर के हिंदी में कई दोस्त थे, लेकिन वह बड़े शहरों में घूमते रहते थे। वह एयरपोर्ट, गेट-हाउस या होटल, टैक्सी स्टैंड पर साइन बोर्ड वाले लोगों या किसी वॉलंटियर से ही बात कर पाते थे, इसलिए वह हिंदी ठीक से नहीं समझ पाते थे। वह मुश्किल से ही समझ पाते थे कि दूसरे क्या कह रहे हैं। लेकिन वह सिर्फ हिंदी बोल पाते थे। वह इंग्लिश को हिंदी में ट्रांसलेट करने की कोशिश करते थे, और अगर उन्हें ऐसा करने में कोई दिक्कत होती, तो वह मुश्किल शब्दों का इस्तेमाल करके कुछ कहने की कोशिश करते थे।

लेकिन उन्हें पंडितों से बात करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। भारत में, देश के अलग-अलग हिस्सों से लोगों से बात करने के लिए सिर्फ़ पंडित ही उनके पास आते थे। उनसे मिलने वाले पंडितों ने अपनी अंग्रेज़ी और पंडितों की भाषा का इस्तेमाल करते हुए कहा, “पांच हज़ार रुपये। मैं एक पैसा या एक पैसा भी गिफ़्ट में नहीं मांगूंगा।” प्रोफ़ेसर तुरंत उनके मानदेय के लिए मान गए।

काम से पहले उसे बाल कटवाने थे। प्रोफेसर ने कहा, “मैं पूरा सिर नहीं मुंडवाऊंगा। बस मुझसे कहो कि मेरे बालों का एक हिस्सा मुंडवा दूं।” पिता ने कहा, ‘ठीक है’, थोड़ा हिला, सिर पर पानी के छींटे मारे और नाई के पास गया। उसने नाई को कोई निर्देश नहीं दिए और नाई के सामने लाइन में खड़ा हो गया। प्रोफेसर को बहुत लगा कि इन बदमाशों को घबन में आकर उनके हाथों नहीं पड़ना चाहिए था। ‘सुबाना भौजानी कितना भी करे, मुझे गांव जाकर एक दिन काम करना चाहिए था। जाकर मैंने न सिर्फ अपनी बहन और भाई को, बल्कि खुद को भी परेशान किया। मैं बूढ़ा हो गया हूं। राम कब पैदा होंगे, कोई नहीं कह सकता। ‘जब मैं जिंदा था, तो उसने मेरी मां के लिए भी कोई काम नहीं किया, वह मुझे पानी भी कैसे देगा?’ आसन ने सोचा, क्या गलत हुआ? क्या शंकराचार्य भी यहां आए हैं? पंचायत को इस बारे में सोचना चाहिए।

अचानक उसे होश आया। 'ओह! तुमने यह क्या कर दिया?' उसने हाथ से दरवाज़े की तरफ़ देखा। नाई ने गाल से लेकर दरवाज़े के किनारे तक दाढ़ी साफ़ कर दी थी। वह घबराकर चिल्लाया, "आईना! आईना! आईना!"

पिता को कुछ समझ नहीं आया। वे बार-बार 'आईना', 'आईना' वगैरह दोहराते रहे। वे उलझन में सोचने लगे, "क्या?" वे कुछ और कहते रहे, पर उन्हें समझ नहीं आया। वे फिर चिल्लाए, "पांडा! पांडा! पांडा को बुलाओ!" यह बात माँ की समझ में आ गई। वे पांडा को ढूंढने चले गए। नदी के किनारे आठ-दस पांडा थे।

Machine Translated by Google

वे अपने ही व्यापारियों से पैसे ले रहे थे। दूसरी तरफ बस स्टैंड पर पाँच-छह व्यापारी इंतज़ार कर रहे थे। आखिर में, जब मनचाहा व्यापारी वहाँ मिल गया, तो नाई उसे घाट पर ले आया। प्रोफेसर ने गुस्से में उससे कहा, “देखो, इसने कैसा बेवकूफ़ रखा है!”

पान को कुछ समझ नहीं आया। उसने शांति से सोचा, "क्या हुआ, सर?"

"आपको सारे बाल हटाने की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ़ चार बाल ही हटाने हैं, है ना?"

अब उसे याद आया, “हाँ, हाँ! मैंने तुमसे कहा था।” और नाई की ओर मुड़कर उसने हिंदी में कुछ कहा।

उन्होंने नाई से कहा, “यहां असली फैशन कट करने के लिए कोई सैलून नहीं है और मैं भूल गया कि आपने क्या कहा था। मैंने हजारों लोगों के बाल काटे हैं। कोई भी ऐसा नहीं करता सिवाय पूरे सिर के बाल हटाने के। यह भी मुझे पता है।” उन्होंने कुछ ऐसा ही कहा। उन्होंने उस ऑफिसर से कहा जिसे इंग्लिश में बात करने की इजाज़त नहीं थी और कहा, “अब हमें क्या करना चाहिए, सर? अब आकर बाकी साफ कर दीजिए। ऐसे में, हम मेरे लिए भी इसका इंतज़ाम कर सकते हैं। लेकिन ये नाई बिल्कुल नहीं सुन रहे हैं।”

“नहीं! मुझे कुछ नहीं करना है। मेरे पास पैसे हैं। मैं चला जाऊंगा!” प्रोफेसर हंसे।

“कुठलेपैस?े”

“जो पाँच हज़ार तुमने मुझे दिए थे।”

“वो कहाँ हैं? क्या बड़े साहब ने तुमसे पहले नहीं ले लिए? मेरा काम तो उनके बताए हुए काम करना है।”

“फ्रॉड! यह सरासर फ्रॉड है! मुझे मेरे पैसे वापस दो। नहीं तो मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगा।”

“पुलिस कहाँ है? तुम यहाँ वही करने आए हो जो तुम्हारे पिता ने किया था! तुम अपनी बात बदल रहे हो। और तुम मुझे पुलिस से भी डरा रहे हो?”

जब यह सब चल रहा था, तो पांडा के आस-पास दस-बारह लोग जमा हो गए। उन्होंने उसे प्रोफेसर का समय भी बताया। उसने यह भी कहा, "नाई ने कुछ भी नहीं छोड़ा है।"

Machine Translated by Google

अगर आपको ऐसा हेयरकट चाहिए, तो आपको सैलून जाना चाहिए। अब आप कुछ नहीं कर सकते। बिना समय बर्बाद किए, बचे हुए बाल और दाढ़ी हटा दें और अगले स्टेप पर आगे बढ़ें। सबकी देरी
"नहीं।"

प्रोफेसर ने साफ की हुई जगह को एक बार फिर छुआ। उन्हें पता था कि ऐसा करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है।

सब कुछ खत्म करके वह होटल चला गया। 'जब मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा, तो मुझे उस दिन बरामदे में बैठे सुबाना भौज का चेहरा और सिर याद आ गया। मैंने सोचा, अगर ऐसा है, तो मुझे नाई से नाराज़ नहीं होना चाहिए।' लेकिन बहुत देर सोचने के बाद भी मुझे समय नहीं मिला। मुझे वहीं टोपी खरीद लेनी चाहिए थी। मुझे गांधी टोपी नहीं चाहिए। मुझे जेपी टोपी भी नहीं चाहिए। काली टोपी क्यों? कोई बात नहीं, मुझे इस अवतार में निदान सिंह को कुछ समझाना ही होगा। बहुत सोचने के बाद मैंने तय किया कि उन्हें बताऊं कि सिर पर कैसा इन्फेक्शन हो गया है, सारे बाल हटाए बिना दवा स्किन तक नहीं पहुंचेगी, डर्मेटोलॉजिस्ट ने कहा है।'

'पटियाट' के बारे में सोचे बिना ही सिहान ने घोषणा कर दी। सिहान सहमत हो गया, “हाँ! हम क्या करेंगे? डॉक्टर की सलाह तो माननी ही होगी।” लेकिन जब उसने टी.ए.डी.ए. करने के लिए हवाई जहाज का टिकट माँगा, तो उसे याद आया कि यह बगलू-बनारस है। उसे डर था कि इस बिहारी को पता चल गया होगा कि जो लोग आमतौर पर गया जाते हैं वे बगलू-बनारस-बंगालू जाते हैं। लेकिन सिहान के भाषण में कोई संदेह नहीं था। बगलू-बनारस-बंगालू ने उसे इतना टी.ए. दिया। प्रोफेसरों के भौतिकी और गति पर दो व्याख्यान, जो कुछ दशक पहले तैयार किए गए थे और कई स्थानों पर दिए गए थे, शक्तिशाली हो गए थे। श्रोताओं के भाइयों ने सिर झुकाकर उसे सुना और भाषण के बाद उसे डांटा।

जब मैं पटना से बनारस गया, तो बातचीत में वही टोपी पहनता था। बाद में, अमेरिका में, मुझे किसी टोपी की ज़रूरत नहीं पड़ी। वहाँ, मैं ढीले कपड़े पहनता था, बाल खुले रखता था, और अगर मेरा मन करता, तो मैं पूरी तरह तैयार हो जाता, कोई कुछ नहीं सोचता। यह एक सच्चे आज़ाद आदमी का लुक था! तब तक मेरे बाल लंबे हो जाते थे।' पटना-बनारस का मेरा यह प्रवास इसी सोच के साथ खत्म हुआ।

Machine Translated by Google

12

जैसे ही यह खबर गांव में पहुंची, दगंत और बिबिता ने सोचा कि उन्हें अजिया का यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए। अजिया ने कहा कि वे त्योहार के बाद किसी सुविधाजनक दिन यह कर सकते हैं। यह काम सुबाना चाचा को करना चाहिए। "तुम भी प्लेन से आओ। मैं प्लेन से राख निकाल दूंगा।" यह कहकर दगंत और बिबिता बगलू लौट आए। सुबाना को प्लेन से मिट्टी के बर्तन में रखी राख निकालना मुश्किल लगा। सुबाना, जिसे उड़ने का कोई ज्ञान नहीं था, एक बेवकूफ की तरह था। उस समय, यह समझा गया कि गांव में रहने वाली लामी मैडम किसी काम से बनारस चली गई हैं। सुबाना और विशाली को भी उनके साथ जाना चाहिए, और काम झाया के बाद, लामी मैडमनी को रेत पर बैठना चाहिए, और बिना किसी परेशानी के, उन्हें भी जंगल में निकल जाना चाहिए।

एक बार फिर, अगर वह बनारस जाकर औरंगजेब के बिना आया के मस्जिद बनाने वाला हिस्सा लिखता, तो वह ऐसा नहीं कर पाता, हेलमिया आ गया था। अब उसने इन दोनों के साथ मस्ती करने का फैसला किया। उससे पहले, उसे ऐसे किसी साथी की ज़रूरत नहीं थी। वह अपाज्या का दरवाज़ा बंद करके ऐतिहासिक घटनाओं और ताड़ के पेड़ों में डूब जाता। तब से, उसे किसी और के साथ की ज़रूरत नहीं थी। अगर वह कच्छपा-लावा या कुछ और होता, तो बस! अगर वह खेतों में पैर फैलाने भी जाता, तो नारियल और पोफला में इतिहास की पाँच कहानियाँ पढ़ता। असल में, अगर बगलू तेजस्वी अकेले खुशबू सूंघ पाता, तो उसे जाना ज़्यादा अच्छा लगता। कोई भी पूरा इतिहास देखने में समय बिता सकता था।

अब विशाली और सुबाना लगातार किसी न किसी टॉपिक पर बात कर रहे थे। विशाली उससे आठ साल बड़ी है। वह उसे पहले से इसी नाम से बुलाता आ रहा है। वह सुबाना को पहले ज़्यादा नहीं जानता था। जब वे मिले थे, तब वह कॉलेज में पढ़ती थी। इस वजह से, वह इज़्ज़त से उसका ज़िक्र ऐसे करता था जैसे वह उससे बारह या तेरह साल बड़ी हो। पिछले कुछ दिनों से वे किसी न किसी टॉपिक पर बात करते रहते थे। अब ढाई दिन हो गए थे। बातचीत में हर टॉपिक के आखिर में प्रोफ़ेसर रुककर कहते, "सभी पढ़े-लिखे लोग ऐसे ही होते हैं, है ना? लेकिन यह कैसे हुआ? बंदर अपने साथ-साथ पूरा जंगल भी बर्बाद कर देते हैं, है ना? यह मैं तुम्हें नहीं बता रहा हूँ। तुम्हारा ही है।

Machine Translated by Google

"वे कहते थे। उन्होंने माया के सामने भी कहा था। आप कॉन्टेक्स्ट क्यों नहीं बताते?"

सुबाना ने विशाली की बात बीच में ही टोकते हुए कहा, "अब ऐसी झूठी बातें कहने का क्या मतलब है? क्या तुम समझ भी रही हो कि तुम क्या कह रही हो?"

विशाल की मेंटल स्ट्रेंथ को जानते हुए, वह हँसी, "चलो बस कह देते हैं! तुम्हें किसी बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है..."

ट्रेन में सीट नहीं मिली तो उन्हें इटारसी में ट्रेन बदलनी पड़ी। एक साथी ने बताया, “आयतास में दूसरी ट्रेन है। बहुत जगह है। मुगलसराय उतर जाओ। वहां से तुम कोई भी ट्रेन, ट्राम या बस लेकर आयतास में बनारस पहुंच सकते हो। वहां से तुम्हें जितनी गाड़ियां आ-जानी हैं, मिल जाएंगी।” दो-तीन और लोगों से पता करने के बाद कि जानकारी सही है, उन्होंने वहीं रुकने का फैसला किया। पहले काशी, फिर याग।

सुबह दस बजे मुगलसराय में दो साइकिलें खड़ी थीं। एक पर वे दोनों और दूसरी पर लामी बैठ गई। सुबान ने हाथ में सफेद कपड़े में लिपटा हुआ चावल का केक रखा हुआ था। थोड़ी ही देर में दोनों के बीच एक फुट का अंतर हो गया। चूंकि वे दोनों भाई थे, इसलिए उनकी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी।

रावला की तरह ही था। गर्मी से उसका शरीर काला पड़ गया था। उसने घुटनों तक धोती पहनी हुई थी। उसने हाथों और घुटनों पर पीले रंग का दुपट्टा पहना हुआ था। उसने गले में चमकीले रंग का दुपट्टा पहना हुआ था। उसने सोचा, "भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

“बिवनाथ सामा!” वह हांफते हुए बोला।

“समा? क शमा?”

“बस, तुम भी हँसे। ठीक है।”

“समाहांजीन?”

"हाँ, माँ। कितनी बुरी बात है। "क्या तुम चाकू

लेकर गाड़ी चला रहे हो?"

“पेट! मुझे अपने पेट के लिए कुछ करना होगा, माँ!”

Machine Translated by Google

"बस..!" वह चुप रही, सोच रही थी कि आगे क्या सोचे। वह भी थक गया था। जब उसे बात करने के लिए कुछ मिला, तो वह पास के कडुनाम्बा पेड़ के नीचे रुक गई। राया ने खंभे से जुड़े थैले से एक लकड़ी दरार में डाल दी। थोड़ी देर बाद, उसने शांति से कहा, "माँ, आपने बात करना बंद कर दिया। गरीबी में जीना ही जाति का धर्म है, है ना? पुराने ज़माने से, यह जाति गाँव के बाहर, जंगल में, झोपड़ियाँ बनाकर और चढ़ावा चढ़ाकर रहती आई है। अगर यह जाति नहीं की जाती थी, तो हर नवाब, बादशाह और सूबेदार जो भी आता था और 'पंजलि' कहता था, हमें पकड़ लेता था। हमारी आँखें खुलवाकर उसमें थूकवाते थे और जाति करते थे। तलवारों से हमारा गला काट देते थे। फिर हमारे पुरखे गाँव भाग गए। पुराणों और वचनकारों ने उनका धर्म बदल दिया। उनका मानना था कि अगर जाति नहीं की गई, तो पूरा समाज खत्म हो जाएगा। अब जाति हो गई है। अब वे राजनीति के लिए हमारे वोट भी लेने की कोशिश कर रहे हैं।" वह हँसा।

"ये सब मैं जानता हूँ। आप काशी का इतिहास भी जानते होंगे। क्या आप मुझे दो-तीन दिन में काशी दिखाएंगे?"

"ओह, माँ। मैं आपको काशी के हर मंदिर, हर घाट और हर स्तंभ के बारे में बताऊंगा।"

"तुमने क्या सीखा?" उसने सोचा, यह सोचते हुए कि क्या उसने कॉलेज में काशी का इतिहास पढ़ा था।

"थोड़ी संस्कृत आ रही है। तुलसी-रामायण पूरी है। सुनकर सीखा है। यहां हर किसी को काशी का इतिहास पता होना चाहिए। नहीं तो वह काशीवासी कहलाने के लायक नहीं रहेगा। चलो, चलते हैं। वह आगे निकल गया होगा। मेरा भाई माया से ज़्यादा ताकतवर है। वह लोगों को तेज़ी से ले जाता है, लेकिन माया को इतिहास और पौराणिक कथाओं का उतना ज्ञान नहीं है जितना उसे है।" यानन ने उसे थोड़ा घसीटा, और जब वह उसके पास पहुंचा, तो उस पर कूद गया और चलने लगा।

उन्हें इन शब्दों में बहुत सारा इतिहास झांकता हुआ दिखा। जब दोनों जगहें तबाह हो गईं, तो वहां के पुजारी गांवों में भाग गए क्योंकि वहां पूजा करने के लिए कोई मंदिर या पूजा की जगह नहीं थी। इसके बाद, इन गांवों में घूमते-फिरते कथावाचकों की वजह से हिंदू धर्म ज़िंदा रहा। भजन, गीत, श्लोक और श्लोकों के ज़रिए धर्म का सार ज़िंदा रहा। संस्कृत और मंडी का महत्व कम हो गया और धार्मिक भाषाएं भी बहने लगीं। वैया-शु संत इकट्ठा हुए और यह बहाव और भी ज़्यादा फैल गया। जनपद, मूर्तियों और प्रतिभाओं के रूप में धर्म का पुनर्जन्म हुआ। वह धर्म बहुत शक्तिशाली हो गया। वह पूरे भारत में फैल गया।

Machine Translated by Google

रा आगे बढ़ चुका था।

अरे! वो देखो, काशी! ये वो काशी है जो जलती हुई सुई की काशी में उठकर खड़ी हो जाती है!

“शमाजी! दसवाँ तेगाव कहाँ है?” उसने पूछा।

“काशी. माताजी! बनारस!”

"वास्तव में?"

“संदेह क्यों, माँ?”

एक मस्जिद जो पूरे काशी को अपनी गिरफ़्त में रखती है और आपको कहने पर मजबूर करती है, 'मैं काशी हूँ!' मैंने सोचा कि अगर इसे पश्चिम में लाया जाता तो बेहतर होता। नीचे घाटों की एक लाइन, दाईं ओर एक बड़ी मस्जिद...

“शमाजी! हर जगह शादी ही शादी है। विनता चंदोली कहाँ है?”

“देखा नहीं? बाईं ओर देखो। वहाँ, एकदम खाली, बोझ की तरह खड़ी, ‘यानवापी मस्जिद’ है। असली चिन्नाथ मंदिर को बादशाह औरंगज़ेब ने तोड़ दिया था, और यह मस्जिद 1669 में इसी जगह पर, इसके खंभों और दीवारों का इस्तेमाल करके बनाई गई थी। हालाँकि इसे औरंगज़ेब ने बनवाया था, लेकिन इसका नाम ‘यानवापी मस्जिद’ ही है। दाईं ओर, इसका नाम बदलकर ‘आलमगीर मस्जिद’ नहीं किया गया है। इस जगह पर एक राधव मंदिर था। उसके बाद, इस जगह पर यह मस्जिद बनाई गई। यह मस्जिद 1659 में बनी थी।”

वह इस बात से इम्प्रेस हुआ कि उसे भगवान का साल पता था। इसके साथ ही, उसे काशी की हर मस्जिद को देखना था और उसका इतिहास समझना था। ध्यान भटकने से बचने के लिए माथे पर हाथ रखकर, उसने एक बार फिर काशी को देखा। अनगिनत मस्जिदें दिख रही थीं। अलग-अलग आकार की। हर मस्जिद उस जगह पर मौजूद दो अलग-अलग निशानियों की नींव पर बनी थी। उसे किताब में पढ़ी सारी बातें याद आ गईं।

'काशी हेसगया संप्रदाय का मुखिया है। वैदिक, बौद्ध, जैन, शा, तांत्रिक, वैनाव, शैव, गणपति, राम, कृष्ण! इतना ही नहीं, बल्कि अनसुलझा कर्ज भी जारी रहेगा। यहां पूजा-पाठ की कोई रस्म नहीं है। अगर आप यहां मरते हैं, तो आप नए जम्बूपाया के सभी तरफ से यहां आएंगे, और आप पूर्व से आएंगे। चोरों के डर के बिना, वे यहां आएंगे और मुस्लिम राजाओं द्वारा लगाए गए टैक्स का भुगतान किए बिना यहां से चले जाएंगे। इस संप्रदाय का हर मंदिर। इन दो घंटों में से हर एक के लिए दो बार।

Machine Translated by Google

पुराणों में हर छोटे-बड़े इंसान के लिए एक मंदिर का ज़िक्र है। यह समाज की धार्मिक ज़रूरतों की वजह से है। काशी में जितने मंदिर बने, देश के किसी और शहर में इतने मंदिर नहीं बने। दूसरे धर्मों के मंदिर तोड़ने पड़े, इसलिए इस धर्म को मानने वाले सदियों से काशी पर राज कर रहे थे। इसलिए, ऐसी मस्जिद का रहना तो स्वाभाविक ही है! काशी को अपने दरवाज़े पर आने वाले हर धर्म को अपनी पूजा की जगह बनाने की जगह देनी चाहिए थी। लेकिन अगर बाकी सभी धर्म खत्म हो जाएं, लेकिन हम खुद ज़िंदा रहें, तो हमने काशी में सभी पंथों के मंदिर तोड़ दिए और इन जगहों पर मस्जिदें बना दीं।

काशी पास आ गई। घाटों के नाम देवताओं के नाम पर रखे गए थे। हर घाट का एक नाम था। असी घाट, हनुमान घाट, शिवाला घाट, बछराज घाट, आनंदमयी घाट, केदार घाट, चौक घाट, नारद घाट, अमृतराव घाट, चौसी घाट, पांडेघाट, राणा घाट, दशमेध घाट, बाजीराव से जुड़ा मिनकांका घाट, भोंसला घाट, येर घाट, राम घाट, मंगलगौरी घाट, दलपत घाट... कितने घाट, कितने नाम! मोतीचंद और डायना एल के रिसर्च वर्क में दिए गए सभी नाम मुझे याद भी नहीं हैं। ये सभी मराओं ने और मराओं के समय में बनाए थे। अगर मराओं का उदय न होता, तो काशी औरतों की छाया में रह जाती, क्या काशी 'काशी' रह जाती? क्या मेरी आत्मा का कायाकल्प हो गया है?' वह इन विचारों में इतनी खोई हुई थी कि उसे अपने सामने के अलग-अलग घाट भी दिखाई नहीं दे रहे थे।

विशालिनी को लगा कि होटल में आकर रुकना गैर-धार्मिक होगा, उसे धर्मशाला में रुकना चाहिए। वह भी कभी-कभी होटलों में जाती थी। लेकिन काशी और रामेरा जैसी जगहों पर जाते समय उसे कुछ धार्मिक नियम-कानून मानने पड़ते थे, और इसके अलावा, यहाँ आने का कारण भक्तों के लिए था, और सुबन भी यह बात समझता था। रावला बिविनाथ समात्रा इस मामले में बहुत समझदार लगे। उन्होंने कहा, “आप भी कर्नाटक से आते हैं। यहाँ एक हंसी दूर धर्मशाला है। लेकिन क्योंकि यह हरम घाट पर है, इसलिए यह चौबीसों घंटे आग के धुएं से भरी रहती है। मान-मंदार घाट के बगल में एक मारवाड़ी धर्मशाला है। वहाँ अच्छा दूध मिलता है। अगर कोई मारवाड़ी नहीं होता, तो वे दूसरों को दे देते हैं। वहाँ का मैनेजर माया को जानता है। अगर आप चाहें, तो वह आपको बुला सकता है। यह दशमेध घाट के पास है।”

स्टूडेंट पास के मारवाड़ी रेस्टोरेंट में खाना खा-खाकर तंग आ गया था। इस वजह से खाने और रहने की जगह की कमी हो गई।

दिन निकलने लगा। “अरे, वो सुबह-सुबह आते हैं। वो जाने-माने पंडित हैं। तुम्हारी उम्र चाहे जितनी भी हो, तुम्हारी पूजा जल्दी होगी, वो कहते हैं। अगर तुम चाहो, तो तुम भी जाकर विनता चंद्रदर्शन ले आओ। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें दिखा दूँगा!” रावल बिविनाथ सामा

Machine Translated by Google

वह गया। वह पास के दशमेध घाट भी गया और दाईं ओर वाली गली से ले गया। छोटी-छोटी गलियां। यहां-वहां बैठे फूल बेचने वाले। सारी जगहें ऐसी ही हैं। छोटे दुकानदार जो हमसे पूजा की थाली लेते थे और इस दौरान चप्पलों का ध्यान रखते थे। सूरज डूबने के बाद भी सब बिज़ी थे। सिवाय उसके जो रोज़ काशी-निवास जाता था, वह हमेशा बिज़ी रहता था। 'अपना सामान संभालो गया। यह काशी-विनाथ है!' दूसरों की तरह ही।

"कहाँ? मैं कहाँ हूँ?" विशाली ने बिना कुछ समझे पूछा। वह इतना ही समझ गया। सुबाना भी सोचने लगा, "कहाँ?"

सामने एक छोटा सा मंडप था। यह शायद कोई गांव का हॉल रहा होगा, इतना छोटा। इसके आस-पास बैठने की भी जगह नहीं थी। "काशी सुसी मंदिर को क्या कहते हैं?" विशाली और सुबाना ने एक साथ पूछा। लामी, जो बहुत ज़्यादा इतिहास पढ़ रही थी, कुछ नहीं बोली, लेकिन वह भी अंदर ही अंदर गिर गई।

सुबंस ने पूछा, "क्या आप इवाश मंडप की पूजा मंदिर के रूप में करते हैं?"

वह तीनों आदमियों को एक तरफ ले गया और बोला, "इधर आओ। मैं तुम्हें यह दिखाता हूँ।" एक पत्थर के नंदी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "नंदी हमेशा शंकर पंडि के सामने बैठता है और उसकी नज़र हमेशा मंदिर में शिवलिंग पर टिकी रहती है। हाँ या नहीं? अब देखो, यह नंदी कहाँ देख रहा है? समझे?"

इन तीनों ने भी दिन का उजाला नहीं देखा। आसमान में सूरज की रोशनी चमक रही थी। मुगलसराय आते समय, काशी जैसी ही हालत में खड़ी 'यानवापी मस्जिद'! औरंगजेब का धार्मिक खौफ आज भी महसूस होता है। बारह फुट ऊंची दीवार बनाई गई थी ताकि कोई अंदर न जा सके, और उस पर लंबे और नुकीले तीर थे जो सीने को छेद देते थे। पूरी काशी इतनी मोटी कांटेदार बाड़ों से घिरी हुई थी कि कहीं भी चढ़कर केले खाने वाले बंदर भी अंदर नहीं जा सकते थे। बॉर्डर पर अपनी बंदूकें लिए खड़े हथियारबंद सैनिक भी एक किलेबंदी थे!

यह देखकर विशाल और सुबाना की छाती पीटने लगी। लामी, जिसने किताबों और मैगज़ीन में इसके बारे में सब कुछ पढ़ा था, उसे भी यह सीन देखकर इसका मतलब समझ नहीं आया।

"औरंगजेबान ने नाथ मंदिर के टूटने की जगह पर एक मस्जिद बनवाई, और हथियारबंद सैनिकों ने उसके चारों ओर कांटेदार तार की बाड़ लगा दी।" समनसंगट्टा।

Machine Translated by Google

तीन दिन भटकते हुए। इटारसी पहुँचने पर सोने की कोई जगह नहीं थी। विशाली और सुबाना जल्दी सो गए। हालाँकि वह शारीरिक रूप से थका हुआ महसूस कर रही थी, लेकिन लामिला को नींद नहीं आ रही थी। उसने आँखें बंद कीं, और उसके सामने यानवापी मस्जिद खड़ी थी। यानवापी मस्जिद, अपनी छत पर खड़ी, काशी को रौंदती हुई, काशी की साँस थी! आँखें खोलने पर उसे साँस लेने में आसानी महसूस हुई। इससे वह उठकर बैठ गई। उसने पास में बहती गंगा की आवाज़ सूंघी, इस उम्मीद में कि उसे बहते पानी की आवाज़ सुनाई देगी। लेकिन उसे कुछ सुनाई नहीं दिया। यह कोई नदी नहीं है जो ज़ोर से बहती है। यह एक संस्कृति है जो चुपचाप अंदर रहती है। यह उन सभी का एक मूक साथी है जो किसी पंथ, किसी विचारधारा, किसी तर्क, किसी दर्शन, कुछ नास्तिकों, उन लोगों में विश्वास करते हैं जो भगवान में विश्वास नहीं करते, जो धर्म की जड़ों की खोज करते हैं। मेरा मन किया, चलो नदी के किनारे बैठकर देखें।

वह उठी, यह सोचकर कि विशाली-सुबन नहीं जागेंगे, वह धीरे से बाहर निकली और कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया। वह घाट पर आई। चाँदनी थी। नदी चाँदनी में चाँदी की तरह चमक रही थी। उसने सिर घुमाकर देखा, दूसरी तरफ़ की मस्जिद चाँदनी में शानदार लग रही थी और गंगा नदी अपने आप धीरे-धीरे बह रही थी, मानो किनारे पर बनी बड़ी मस्जिद तक पहुँच ही नहीं रही हो। 'औरंगज़ेब का हुक्म आया है मंदिर तोड़ने का। सूबेदार हर गली-मोहल्ले में सैनिक रखे हुए है, मानो लोग बगावत कर देंगे। दोनों पुजारियों को अंदाज़ा

लगाना होगा। हो सकता है हम दोनों को बचाना मुश्किल हो, लेकिन धनुर्धर तो मूर्ख है! रात में सभी पुजारी इकट्ठा होते हैं, शिवलिंग को निकालकर नदी के किनारे बनी 'यानवापी' नाम की गुफा में विसर्जित कर देते हैं। गुफा को मिट्टी से भर देते हैं और दरवाज़ा बंद कर देते हैं। दूसरे दिन मंदिर तोड़ने आए लोगों को यह बात समझ नहीं आई। इसी वजह से असली मंदिर का शिवलिंग बच गया। रावण समझदार है। वह यह बात अच्छी तरह जानता है! लेकिन सिर्फ़ रावण ही नहीं, काशी में हर कोई समझदार है।'

"औरत, तुम कौन हो?"

पीछे से कदमों की आवाज़ आई। इस समय घाट पर अकेली एक औरत! सड़क के बीच में दो आदमी बैठे थे। कौन? माया जैसा आदमी जो खामोशी का मज़ा लेने आया था?

“कहाँ से? किस जगह से आई हो? किस मठ में उतरी हो? इस समय यहाँ अकेली क्यों बैठी हो?” बीड़ी की महक आई। “नदी के पास मत जाओ। अकेली, औरत। यहाँ चोर और गुंडे हैं। सावधान रहना।” पावलंदशामेध घाट की तरफ गई। उसने दाईं ओर मुड़कर देखा। किनारे पर दस-बीस नावें बंधी होंगी। वह घाट की सीढ़ियों पर बैठ गई। वह कुछ देर बैठी रही। वह मुस्कुराई। ‘आज

Machine Translated by Google

तारीख? पी? क्यों? क्या वजह है? क्या वजह है? मैंने कहा:! एक बार सब ठीक से समझ लेना चाहिए। सुबन को पता चल जाएगा। बाकी लोगों को पक्का पता चल जाएगा। लेकिन इसके बाद, वे तुमकुर छोड़ देंगे। इस उम्र में, वे अकेले रहेंगे!'

अँधेरा होने पर भी उसे डर नहीं लगा। गुंडों और लुटेरों का सीन दो-तीन टेक में रिकॉर्ड हो गया। फिर उसे याद आया; 'मैं वज्रजहान के साथ मंदिर की तबाही देखना चाहता हूँ। उसे भी हिडाल्स के साथ काशी जाना होगा। मैंने हिडाल्स को अपने मन में आए आइडिया के बारे में बताया और उनसे तुरंत काशी चलने को कहा। उन्होंने मुझसे यह भी कहा, 'मैं सोचकर तुम्हें कुछ सजेस्ट कर सकता हूँ।' दासु रेडावशी ने कहा, 'काशी आकर सब कुछ अपनी आँखों से देखने की तुम्हारी कोशिश से मुझे भी हिम्मत मिली है। मुझे भी बिना किसी झिझक के इसे देखने से फायदा होगा। मैं मंदिर की तबाही की सारी डिटेल्स पान और नाडी को अपनी आँखों से दिखाऊँगा। अगर वज्रजहान माया की मदद करने आता है, तो मुझे भी आसानी होगी। यह घटना इमरजेंसी है, इसलिए परमिशन मिलनी चाहिए, प्राइम मिनिस्टर रिक्वेस्ट कर रहे हैं। नंबर्स कंसिस्टेंट हैं!

यही वह पल था जब सहमति बनी। इतना ही नहीं, वे दोनों, गार्ड के साथ, जाने के लिए भी तैयार हो गए।

इस साल बारिश बहुत ज़ोरों से हो रही थी। नदी इतनी तेज़ बह रही थी कि हमें नाव से पार करना पड़ा।

सुबह उन्होंने गंगा में स्नान भी किया। वे विनय पूजा के लिए निकले। वे दशमेध घाट की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। उनके साथ एक पंडा और रावला भी थे। अगर वह अकेली आती, तो लामी गंगा और विनय पूजा के जाल में नहीं फँसती। जब वह छोटी थी, तो अपाज्या भावना के प्रभाव में, वह मानती थी कि अहिंसा ही एकमात्र धर्म है, और बाकी सभी रीति-रिवाजों का कोई मतलब नहीं है। इसके बाद, मार्क्सवादी विचारों के कारण, धर्म गरीबों को दी जाने वाली अफीम की गोली और अपमान था। अगले कदमों पर, उसे लगा कि बड़ों की परंपरा ही सबसे बड़ा धर्म है और बाकी सभी रीति-रिवाज बेकार हैं, और समाजवाद वहीं तक है जहाँ तक दुनिया पहुँच सकती है। बाद में, इलम और पूरी गैर-धार्मिक दुनिया पर लादिया का दबाव अशांतिल को समाजवाद का एक रूप लगा। धार्मिक जीवन वाले इस समाज में, उसकी मंडली में धार्मिक कामों के लिए कोई जगह नहीं थी। लेकिन जब विसाली और सुबाना पूजा करने निकले, तो उसे उनके साथ न जाने का कोई कारण नहीं दिखा। इसके उलट, काशी में उमादास जो मस्जिद बना रहे थे, उसकी रूहानी हालत सुधारने के लिए, उन्होंने विनाथया पंडी पर गंगाजल डालना और उस पर एक फूल चढ़ाना ज़रूरी समझा।

Machine Translated by Google

जब वह सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, तो उसे अचानक डर लगा। ओह! यह रहा! मैंने कहा:! यह अजीब है, लेकिन... हाँ। यही है। विशाली आगे बढ़ी और बोली, "यह क्या है? तुम भी आ गए? सच है, आखिर में कोई कैसे बस सकता है? माँ का कर्ज़ सबसे बड़ा होता है, इसलिए शंकराचार्य..."

प्रोफेसर शाइच! समझदार। काली पैंट, लाल चोगा, कंधों पर हरी शॉल, हाथ में जापानी कैमरा, सिर पूरी तरह ढका हुआ, दाढ़ी-मूंछ नहीं। अगर कोई और होता, तो भी मैं उसे तुरंत पहचान लेता। उसका चेहरा बहुत गंदा था। यह मुश्किल था। उसने मेरी तरफ देखा। उसके गाल, नाक और कान लाल हो गए।

“तुम काशी में पांडादान करने आए हो, गांव में नहीं? क्या करोगे? तुम्हारे पिता बहुत नाराज़ होंगे! नहीं तो गांव में क्यों नहीं करते? हम अठिया यहां लाए हैं। हम धर्मशाला में हैं। हमारे साथ यज्ञ में चलो और विश्वनाथ का पूजन करो।”

डेढ़ घंटा बीत गया। प्रोफेसर ने उसे होश में लाया। फिर उसने कहा, “मैं यहाँ ऑडिटोरियम में एक वर्कशॉप के लिए आया हूँ। रिज्या, तुम एक सिनेमैटोग्राफर हो। तुम बनारस घाट पर बिना कैमरा लिए क्या कर रहे हो? यहाँ का नज़ारा तो इस घाट जैसा है, बंदर, बैल! तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी? एक वेश्या, एक सांड...” उसने इस बारे में और सोचा। पड़ोसी ने तुरंत कहा, “एक वेश्या, एक सांड, एक सन्यासी!” उसने एक के बाद एक इन शब्दों के बारे में सोचा, “सर, ऐसा लगता है कि आप गया गए हैं।”

प्रोफेसर का चेहरा पीला पड़ गया। वह यह कैसे समझ पाया? क्या ये पंच सभी भाषाएँ जानते हैं? वे अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले पंडितों को क्यों पकड़ते हैं? विद्वान को सब समझ में आ गया होगा। पंच ने आगे कहा, "यह जगह कैसी है? गया-काशी-याग। तुम भी गया से आए हो। अगर तुम्हें काशी पूजा करनी है, तो हमारे साथ आओ। अगर तुम्हें याग में जाना है, तो मैं आऊँगा।"

“तुम भी जाओ। मुझे इस पूरी चीज़ पर भरोसा नहीं है। मैं यहाँ तस्वीरें लेने आया हूँ।” किसी को कुछ और कहने का मौका दिए बिना, वह चला गया, और कैमरे को आगे के सीन पर फोकस कर दिया।

'अगर ऐसा न होता, तो क्या वे अपनी बहनों और बेटियों के साथ पूजा करने जाते? अगर ऐसा होता, तो क्या वे सच में गया जाकर सिर झुकाते?' वे जहाँ भी मिलते, प्रोफेसर उन्हें 'हमारे गाँव की लड़की, लामी!' कहते और कभी-कभी उन्हें 'रिज्या' भी कहते।

त्योहार के दूसरे दिन अथि-विसजन भी यज्ञ में गए और आए। बगलुयाओं को मंदिर में सीधे जगह नहीं मिली, इसलिए विशाली-सुबनों की संख्या भी बढ़ गई।

Machine Translated by Google

पिछले फ़ैसले के बाद भी लामी दो हफ़्ते काशी में रहीं। उन्हें एक हफ़्ते मठ में रहने की इजाज़त दी गई। इसके बाद उन्हें नदी के किनारे मठ में गाय, गधे और गधी की तरह रहने की इजाज़त दी गई। अब विशाली-सुबाना एक-एक करके देवला आने-जाने लगीं। लामी का मन फिर से अपने काम में लग गया। विनाथय वंश का इतिहास उनके दिल की गहराइयों में खुलने लगा था। लिखते समय और भी डिटेल्स जोड़ी जाएँगी। काफ़ी रिसर्च भी हुई है। यह गंगा, यह मस्जिद, यह देवला जो सारे वंशों के बाद भी बचा और बढ़ा, देखने के लिए काफ़ी है। अगर ज़रूरी हो तो यह हिस्सा इसी गाँव में पूरा कर लेना चाहिए। विशाली-सुबाना के रेवे में बसने के तुरंत बाद उन्हें हालात की जानकारी दे देनी चाहिए!

Machine Translated by Google

13

मैंने हिंदुओं को अपने मन में चल रहे विचार बताए और काशी जाने का इरादा बताया। वे मेरे साथ यह आइडिया शेयर करने के लिए तैयार हो गए।

दूसरे दिन उन्होंने कहा, "काशी जाकर सब कुछ अपनी आँखों से देखने की इच्छा देखकर, मेरे मन में भी इच्छा हुई है। मैं इस कहानी की तबाही को भी अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ। मैं मंदिर की तबाही की सारी डिटेल्स अपनी आँखों से लेकर आऊँगा। अगर आप मेरे असिस्टेंट बनकर वहाँ आएँ तो आसानी होगी। चूँकि यह एक इमरजेंसी सिचुएशन है, इसलिए मैं विजरे आज़मा से रिक्वेस्ट करूँगा कि मुझे इजाज़त दें। देखते हैं क्या होता है!" इस समय इजाज़त मिल गई थी। इतना ही नहीं, मैंने

हेतपाल से अपनी यात्रा के बारे में भी जाना।

इस साल बारिश हमेशा तेज़ हो रही थी। नदी तेज़ बह रही थी, इसलिए हमें नाव से रहना पड़ा। हमें दो पोस्टमैन के साथ भेजा गया था, हर एक के पास एक घोड़ा था। बड़े, मज़बूत घोड़े। शुरू में, मुझे उन पर सवारी करने में थोड़ी मुश्किल हुई। घोड़े बहुत तेज़ थे। अगर मैं कोई सीधा-सादा आदमी होता, तो ये दोनों आधे-अधूरे मन से कोशिश करते। ऐसे घुड़सवार के साथ रहना नामुमकिन था, इसलिए शायद वे पोस्ट ऑफिस में भी एक पोस्टमैन भेज देते। लेकिन मैं घुड़सवारों के साथ आया था, उनके अफ़सरों की तरह। जब मैंने घुड़सवारों को देखा, तो वे किसी फ़ारसी-अरब जोड़े जैसे लग रहे थे। बस मैं उदयपुर के महल में एक हिजड़ा था! यह सब समझने के बाद, उन्होंने मुझे इस तरह समझाया कि मैं घोड़े को समझ सकूँ। कुछ ही समय में, मुझे घोड़े की सवारी आ गई और मैं घोड़े को तेज़ भी दौड़ा सकता था। हिदुलाओं में यह नहीं था। यह उन लोगों की आदत का हिस्सा था जिनके पास घोड़े नहीं थे। उन्होंने कागज़ के एक टुकड़े पर राजा का चेहरा लिखा था, उसे रोल करके एक बांस की नली में रखा था। उन्होंने उस पर एक कवर लपेटा था और उस पर लैकर कोट लगाया था। उन्होंने नली को एक थैले में रखा, उस थैले को चारों तरफ से सिल दिया, उस पर लैकर कोट लगाया और दोनों घुड़सवार उसे सुरक्षित रूप से ले जा रहे थे। हालांकि उनमें से किसी को भी इसका मतलब नहीं पता था, लेकिन हिडुलस इसे ऑफिशियली समझ सकते थे और मैं इसे अनऑफिशियली समझ सकता था। हिडुलस को सख्त आदेश दिए गए थे कि कोई और इसे न समझे। डाली तेबनारस और फिर भी राजा के पीछे चले गए। डालीन निघुन शाहाबाद, गाजियाबाद, ढाना, हफूद, बागसर, गडमूर, बागड़ी, अमरोहा, मुरादाबाद, रायबरेली, सेला, कड़ा, दल, एम

Machine Translated by Google

हवाओं ने हुदुलाओं को बताया कि उन्हें मगनम्बरस जाना है। आने-जाने का रास्ता अच्छा था। वहाँ रियात मुसलमानों के खाने और नमाज़ के लिए शराबखाने थे। सरकारी काम से रुके लोगों के लिए भी अच्छा इंतज़ाम था। हम बीच-बीच में घोड़े बदलते रहते थे और खुशी-खुशी रहते थे। कभी-कभी बारिश भी हो जाती थी। इस समय वे इस बात का खास ध्यान रख रहे थे कि दो घंटे की पहरेदारी भीग न जाए।

जब हम बनारस पहुँचे, तो बारिश का दिन था। इस वजह से सब लोग दूर-दूर से इकट्ठा हुए थे। यह जगह हमेशा गाँव वालों से भरी रहती है। यह तीर्थस्थल है, काशी! लोगों का यह भी मानना है कि सुबह यहाँ आकर गंगा और शिवदर्शन करने से खास आशीर्वाद मिलता है! मुसलमानों के आने के बाद ऐसे लोगों पर टैक्स लगा दिया गया, हुडुला ने कहा, “बादशाह अकबर तो अपवाद हैं! ये लोग पहले से ही गरीब हैं। व्यापार और व्यापार में उन्हें मुसलमानों से दोगुना टैक्स देना पड़ता है। ऊपर से, जजिया भी है। उनके पास जाने के लिए पैसे कहाँ से आते हैं? इसके अलावा, मुझे घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है। मैं यहाँ क्यों आऊँ, आप खुद सोचिए। रात का अँधेरा कितना घना है।”

हाडुला को कोतवालों से मिलने की कोई इच्छा नहीं थी। लेकिन घाटी से आया राजा का बेटा तुरंत कोतवाल का स्वागत करने आया। राजधानी में छोटा अधिकारी राज्य के सभी 'राजाओं' का सम्मानपूर्ण अभिवादन प्राप्त करता है, यह सरकार का समय है। इसके बाद हिंदुओं ने पूछा। कोतवाल, जो समझ गया था कि हिंदू मंदिर-विनाश आदेश के प्रतिनिधि हैं, ने धीमी आवाज़ में अनुरोध किया, "अब समय आ गया है। यहाँ का पागलपन केवल वही समझ सकता है जो बनारस में है। अगर हम बाहरी लोगों के आने पर मंदिर को नष्ट करने जाते हैं, तो बड़ा हंगामा होगा। हालाँकि हमारा पक्ष उनके पक्ष में है, हमारी ताकत उनसे कम है, इसलिए हमें समझदारी से काम लेना होगा। हम एक सप्ताह बीत जाने देंगे। बाहर से सभी लोग गाँव छोड़ देंगे। जब समय पूरा हो जाएगा, तो कोई भी "यहाँ नहीं होगा, मैं खुद एक आदेश जारी करूँगा। इसके बाद, मैं अपने सैनिकों द्वारा पूरे गाँव को गिरफ्तार करवाऊँगा, और उसके बाद मैं सम्राट का आदेश जारी करूँगा। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि अगर कोई देरी हुई तो बादशाह नाराज़ न हों।"

"अगर लाखों लोग धर्म के खिलाफ खड़े हैं, तो इन सभी लोगों को मारना धर्म है। लेकिन जब ताकत कम होती है, तो वर्क कमिटी उसे फेंक देती है। आपको कुछ करना चाहिए था!"

अधिकारी के चेहरे पर संतुष्टि दिखाई दी।

आह, हम एक खास महल में आए हैं। खाना हमारा है।

Machine Translated by Google

यह बहुत स्वादिष्ट था। दलीप में यहाँ बहुत सारे फल हैं। यह उनका दिन था। मैंने अपनी ज़िंदगी में दूध, गुड़ और इलायची के साथ ऐसी मीठी डिश कभी नहीं खाई थी। ऐसा लगा जैसे मैं मिठाई खाते-खाते अपनी उम्र भूल गया था। यानी, मुझे इसका नतीजा भुगतना पड़ा! मुझे दस्त हो गए। मैं चटनी खाना चाहता था।

मैं काशी देखने के लिए गांव में अकेला घूम रहा था। इस जगह के बारे में मैं देवताओं के ज़माने से सुनता आ रहा था। मैं कितना भी गुस्से में क्यों न होऊं, माया तो पूरब में कहीं छिपी थी, कौन जाने! काशी के रायावन में घूमते हुए अचानक वह बाहर आ गई और मैं भी वहीं चलने लगा। मुझे लग रहा था कि काशी खो गई है। लेकिन गांव में घूमते हुए मुझे देवताओं के देवता मिलते रहे। भले ही मैंने मुसलमान का वेश धारण किया हुआ था, फिर भी सब मुझे देखकर कुछ न कुछ कहते। मुझे देखते ही सबके चेहरे बदल जाते। डर, शर्म से नफ़रत, रायका जाति के लिए इज़्ज़त, बेबसी, मौका मिले तो चाकू से मार डालने की इच्छा – हर चेहरे पर अलग-अलग भाव थे। कभी-कभी एक ही चेहरे पर इन भावों का मिला-जुला रूप दिखता था। नीचे ढलान पर चल रही बेचारी गायों की आँखों में भी, कभी मौका मिले तो ऊपर आने की इच्छा, मैंने इन लोगों की आँखों में भी वही भावनाएँ देखीं।

इस रायावान में घूमते हुए माया ने मन में सोचा, मुझे भी धोती पहनकर इस रायावान की तरह घूमना चाहिए। लेकिन धोती कहाँ से मिलेगी? काशी व्यापार के लिए बहुत बड़ी जगह है, हेम को भी पहले से पता था। वहाँ से माया के पास धोती खरीदने के लिए पैसे होंगे, छत पर रखी धोती। अगर वह कपड़े भी बदल ले, तो भी उसके चेहरे पर जो दाढ़ी है, जो धर्म की निशानी है, वह रहेगी? वह उसका क्या करे? अगर वह उसे हटा दे, तो क्या वह घर छोड़ देगी? मान लो, अगर वह उससे कह दे कि उसने बात करने के लिए कपड़े बदले हैं, तो क्या वह रहेगी? तुरंत उसने मन में चेतावनी दी, यह सब बहुत खतरनाक है। इस वजह से, वह ऐसे ही चलती रही।

गाँव में बहुत सारे देवता थे। हर गली में आठ या दस देवता थे। कुछ घरों के अंदर प्राइवेट देवता भी थे। अपुना, लामी, पावती, गौरी, दगुरा, काली, चंडी, चामुंडी, वगैरह सैकड़ों देवता थे; शिव के अनगिनत, अलग-अलग नाम थे। बृहपति, कामेर, पंचलकेर, पंचकेर, अंधकेर, शांतर, विमकेर, चमनेर, काकाटेकर, भैरवर, दस या पंद्रह नहीं, हज़ारों! देवता के पास खड़े मकाडे राय ने एक बीस साल पुराने पेड़ से पूछा, “इस देवता का क्या नाम है?” वहाँ उसने कहा, “खानसाहेब, मैं आपको काशी की सभी जगहें दिखाऊँगा। आप जितना चाहें उतना मज़ा कर सकते हैं।” मैंने नाम के बारे में सोचा। मुझे समझ आया कि यह दधीचिभ है। माथे पर भूमि, लोहबान की एक शीशी, बिना बालों वाले सिर पर एक दुपट्टा।

Machine Translated by Google

बाल जो बड़े हो गए हैं। “मैंने तय किया कि पूजा-पाठ के चक्कर में पड़े बिना समपुन काशी के सारे मंदिर देख लूँगा। मैं सुबह से शाम तक चार दिन बिताऊँगा। नहीं तो, तुम्हारा मंदिरों में जाकर देखने का मूड नहीं है। मैं तुम्हें बाहर खड़े होकर हर मंदिर का इतिहास बताऊँगा।” मैंने उससे कहा। मैं भी दो कदम चलने को तैयार हो गया। वह खुश था।

रास्ते में मैं यह सोच रहा था,

"वे कहते हैं कि काशी में बहुत-बहुत बड़े लोग हैं, क्या यह सच है?"

“हाँ। अलग-अलग जगहों से वैदिक विद्वान हैं; बौद्ध और जैन भी हैं।”

“सभी लोग यहाँ रहने क्यों आते हैं?”

“क्योंकि?” उसने गला रुंधते हुए कहा, “क्योंकि मुझे क्या पता? मैं इतना होशियार नहीं हूँ!”

“भजी! डरो मत। मैं खरगोश नहीं हूँ। अगर तुम मुझे कुछ बताओगे भी तो मैं किसी और को नहीं बताऊँगा। अल्लाह की कसम!” मैं वहाँ से चला गया। माया ने भी इस बात पर यकीन कर लिया।

“मुसलमानों ने कामिर, तसिला, पुष्पपुरा, कायाकुज, थानेर जैसी सभी जगहों पर हमला किया। उन्होंने मंदिरों, घरों, जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया और पंडितों, आचार्यों, भी और जुमुनों का कत्लेआम किया। बाकी लोग अपनी जान बचाकर पूरब की ओर भाग गए। काशी ने इन सभी लोगों का स्वागत किया। खिलजियों ने नालंदा मंदिर को नष्ट कर दिया और वहां हजारों बौद्ध भिक्षुओं को मार डाला। उनमें से कुछ ने तिब्बत भागकर अपनी जान बचाई। कुछ काशी आए और सारनाथ में बस गए। अगर वे काशी में मरते, तो उन्हें वहीं परमानेंट रहने की जगह मिल जाती। पूरे भारत से बहुत सारे तीर्थयात्री यहां आते हैं। इस वजह से, काशी आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या, "उनके जैसा कहीं और नहीं है।"

मैंने सोचा, "मुझे इस छुट्टी के बारे में इतना कैसे पता चल सकता है?" समाज के बड़ों की बातें सुनकर वह ज़रूर इतना समझदार हो गया होगा। उसने वेद भी किया था। उसके प्रोफ़ेशन के बारे में जानकारी दिख रही थी।

“आपने ये सारे संकेत दिखाए हैं। राक्षसों को मारने के बाद, आप इस राक्षस का नाम शिव को क्यों देते हैं और उनकी पूजा भी करते हैं? क्या आप उनके नाम पर मंदिर बनाते हैं? इसका क्या मतलब है? मधुकैभट्ट एक महान ऋषि थे, और वे भी एक महान ऋषि थे। मधुकैभट्टर नाम के भी एक ऋषि हैं। क्या यह संभव है?”

Machine Translated by Google

“खान साहब, जीते जी कोई भगवान का दुश्मन हो सकता है। लेकिन मरने के बाद भी उसमें भगवान के गुण होते हैं। भगवान किसी की बुराई नहीं करते। नहीं
का?”

“आप किसी की बुराई नहीं करते? शैतान की भी?” “आपके धर्म में

शैतान है, लेकिन हमारे धर्म में नहीं। जिन लोगों के साथ इसकी वजह से गलत होता है, हम उन्हें भी ऊपर उठाते हैं और अपने सीने से लगा लेते हैं। क्या एक माँ अपने बच्चे को अपने सीने से नहीं लगाती? हाँ, सही है।”

यह सपना उस सपने से मेल नहीं खाता था जो पिछले आठ सालों से मेरे मन की गहराइयों में पल रहा था। 'क्या शैतान ताकतवर नहीं बनना चाहता? अगर वह शैतान में नहीं है, तो इन फॉलोअर्स के बीच वह कहाँ से आएगा? क्या यह इस इंसानी मुलाकात का कारण हो सकता है?' मैंने उससे वहीं बातचीत रोक दी और अगले शैतान को देखने के लिए आगे बढ़ गया।

चौथे दिन जब मैं मठ में लौटा तो भिक्षुओं ने पूछा, “तुमने क्या देखा?”

"यह नाम में रखने जैसा है, यह बहुत स्वादिष्ट है!"

"मेरा मतलब है, अगर आप इतना सारा पैसा देखते हैं तो क्या आप इतिहास समझते हैं?"

मैंने इसका जवाब भी नहीं सोचा। मैं उन्हें बेवकूफ की तरह देखता रहा। मुझे लग रहा था कि मैं कितना भी नाखुश क्यों न होऊं, वे मुझसे नाराज़ नहीं होंगे। उन्होंने खुद कहा, “आप पिछले चार दिनों से उन दोनों से मिलने गए थे, जबकि मैं ग़ौवन मस्जिद देखने जा रहा था। कोतवाल अपने साथ दो मौलानाओं को लाए थे। उन्हें इतिहास की अच्छी जानकारी है। हम लोग, जो दलितों के बीच बैठकर किताबें लिखते हैं, लोकल इतिहास की डिटेल्स कैसे जान सकते हैं? कुतुब-उन-ऐबक और शाह-उन-ग़ोरी ने 604 AH में बनारस पर कब्ज़ा कर लिया और सैयद जमालुन नाम के एक अमीर को गवर्नर बनाया। उसने शहर में अपने नाम पर जमालुनपुरा नाम का एक मोहल्ला बसाया। वह आज भी वहीं रहता है।
उसने शहर में मूर्ति पूजा को पूरी तरह खत्म करने का फ़ैसला किया। लेकिन जल्द ही यहाँ उसका अधिकार खत्म हो गया। 607 AH में, कुतुब-उन-पुहा ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद यहाँ हमारा धार्मिक गर्व मरने लगा। इस समय, देव मंदिर को तोड़ दिया गया, और उसके खंभों का इस्तेमाल करके एक मस्जिद बनाई गई। हनुमान पथ पर एक बहुत सुंदर गुंबद वाली मस्जिद है। क्या आपने इसे देखा है? आपने भी इसे देखा है। इसका पूरा निचला हिस्सा बना हुआ है। हेदम मंदिर के अवशेष। मस्जिद ढाई मंज़िला है। फ़र्श पर एक संस्कृत शिलालेख है। यह कहीं देवा का शिलालेख है, मंदिर

Machine Translated by Google

इसका इस्तेमाल पाड़ा पर मस्जिद बनाने में किया गया था। मस्जिद में चार खंभों वाले मोहे में चौबीस खंभे हैं, और गुलज़ार मोहे में मकदम साहब नाम का एक मकबरा है। पश्चिम में उर और ओवाया भी मंदिरों के ऐसे ही खंभों से बने हैं।"

इतने कम समय में उन्होंने जो जानकारी इकट्ठा की थी, उसे सुनकर मैं हैरान रह गया। वह यह भी डिटेल में बता रहे थे कि बबन, खिलजी, तुगलक, लोदी के राज में काशी में कौन से मंदिर तोड़े गए और इन मंदिरों के बचे हुए हिस्सों पर कौन सी मस्जिदें बनाई गईं। सारी डिटेल्स रखना मुश्किल था। किसी तरह, हिंदुओं की मौत का खतरा तो कम हुआ होगा! मैंने सोचा था कि जाति की जानकारी तो मंदिर दिखाने वाले से ही मिलेगी, "क्या यह मुमकिन है कि ऐसे आदमी के टूटने के बाद भी आज इस शहर में इतने सारे लोग हैं?"

"बस! हमारे लोगों को कोई छूट, कोई फ़ायदा नहीं दिया जाता, वे ट्रेड और कॉमर्स में इंडियंस से मुकाबला नहीं कर सकते। ये हमारे लोग हैं, हमारे योद्धा हैं; लेकिन अगर लड़ाई नहीं होती, तो वे लूटपाट, खाना और औरतों में लगे रहते हैं। आपने भी देखा है! कितने भी टैक्स लगाओ, वे एक पैसा भी बर्बाद नहीं होने देते, वे पैसे पर पैसा जोड़ते रहते हैं और अपना ट्रेड बढ़ाते रहते हैं। असल में, दूसरों को ट्रेड करने का मौका भी नहीं मिलता, लेकिन हमारे लोग इजाज़त लेते हैं और कुछ प्रॉफ़िट लेकर किसी अजनबी को बेच देते हैं। वे खुद औरतों और पैसे में डूबे रहते हैं। यही है उन लोगों की कीमत जिन्हें सैनिक के तौर पर ट्रेनिंग दी जाती है! लेकिन उसे भी नहीं छोड़ा जा सकता। अगर कोई नहीं होगा, तो पावर का बैलेंस कैसे बना रहेगा? शॉर्ट में, पैसे की पावर। इसे पुनपाने वालों के हाथों से नहीं छीना जा सकता। वे इस शहर के देवताओं को भी नहीं छोड़ते। काशी शहर में, वे कहते हैं कि राजा की पावर तब तक पूरी तरह से रिलीज़ नहीं होगी जब तक वह अफ़सरों को रिश्वत न दे। बनारस में नए मंदिर बनाने, सफ़ाई करने जैसी कोई पावर इस्तेमाल नहीं हो रही है। मंदिर, और दलिया बादशाहों का क्या! इस मंदिर से जितना टैक्स मिलने की उम्मीद थी, वह खत्म हो गया। इसके बाद, यहाँ के सूबेदार और कोतवाल जो सलाह देंगे, उस पर भरोसा करने के लिए आज़ाद हैं! अब हालात वैसे नहीं हैं। राजा, चाना, धामिन आलमगीर, बादशाह औरंगजेब इससे खुश नहीं हैं और बैठे रहते हैं। बिना रिश्वत के कोई उनके सिर में धूल नहीं झोंक पाएगा।"

"अब विनता का मंदिर किसने बनवाया?"

"बनारस के एक राजा थे टोडरमल। उनके बेटे का नाम गोवधन था। नारायण भवाया नाम के एक आदमी ने गोवधन को सलाह दी, 'इस विद्या के नाम पर एक मंदिर बनाओ, तुम्हारी विद्या सती हो जाएगी।' लोग हमेशा उसे ऐसे पापों के लिए सलाह देते हैं। तुम ऐसा क्यों करते हो, बेटा!..." बोलते-बोलते वह रुक गया। "ऐसा... ऐसा नहीं है। पापी को सलाह देकर! इसीलिए

Machine Translated by Google

कहते हैं, अगर तुम एक इंसान को मारते हो, तो तुम्हें दस आम लोगों का फ़ायदा मिलता है। यह बादशाह अकबर के राज में बना था। उसके घरवालों ने कहा, तुम्हें सरकार से कोई मदद नहीं मिलेगी, लेकिन अगर तुम पैसे बचाकर मंदिर भी बनाओगे, तो सरकार को कोई दिक्कत नहीं होगी। छी! नीच! पापी! वह तो अभी भी नर्क में ही होगा। वह 1015 AH में मरा था, है ना? वह पिछले चौसठ साल से नर्क में है। वह इसके बाद भी नर्क में ही रहेगा।" साधु का चेहरा गुस्से से भर गया था। मैंने उसके मुस्कुराते चेहरे पर इतना गुस्सा पहले कभी नहीं देखा था।

डिनर के समय उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैं भी चुप था। सोने से पहले मैंने सोचा, "सम्राट आलमगीर ने काशी से ही राजवंश की खबरें क्यों शुरू कीं?"

"उर पचा आह। क्या हमें कफ़्फ़ारा की कहानी से शुरू नहीं करना चाहिए था? कोई और वजह होगी। इस शहर में पिछले तीन सौ साल से भीपंथ नाम का एक पंथ बढ़ने लगा है, वे कहते हैं। किसी का नाम रामानंद था, किसी का नाम कबीर था, उसके बाद वल्लभ नाम का कवि, तुलसीदास नाम का कवि – इन सब लोगों को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, ये काफ़ी हैं, ये बेमतलब, समझ से बाहर घूमते रहते हैं। अगर बस इतना ही होता, तो हमें बहस करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। लेकिन क्या आप जानते हैं इसका क्या मतलब है? सभी भगवान एक हैं, आपके और हमारे भगवान एक ही हैं!! इसका क्या मतलब है? उनके भगवान और हमारे भगवान एक ही हैं? यह तो घमंड की हद हो गई! अल्लाह के बराबर दो भगवान हैं, ऐसा कहने वालों को सच में काट देना चाहिए। इसमें कबीर हमारे आदमी हैं, मेरी बेटी। लेकिन रंभा हंसता है। वह राम-रहीम की तरह हंसता है। मुसलमान होकर उसने दो लोगों की जान बचाई, यही उसका आपा खोने के लिए काफ़ी है! और जबकि यह यहाँ जो हो रहा है, इसका मतलब है कि हमारे अधिकारी भ्रष्ट हो गए हैं, ज़रा देखो! बादशाह आलमगीर यह सब लेकर आए हैं। तो, पहले बनारस जाना है, और उसके बाद, उन्होंने दूसरे गाँवों में जाने का फ़ैसला किया है। उनका मन बहुत धार्मिक है। मुझे पता है कि गैर-धार्मिक मन कैसे काम करते हैं! मैं हमेशा तुमसे कहता हूँ, है ना? गाँव में उनके लिए शुद्ध सफ़ेद रेशम का एक चमचमाता महल बनाया गया है!

कुछ देर तक मेरा दिमाग यह हिसाब लगाने में लगा रहा कि इतने बड़े शुद्ध सोने के महल को बनाने में कितने लाख सोना लगेगा। मुझे चौकोर आकार का पता नहीं था। मैंने इसके बारे में सोचा। लेकिन तब तक मैं सो चुका था।

महीने के दूसरे दिन, शहर की हर गली में हथियारबंद घुड़सवार और सैनिक पहले से ही खड़े थे। नदी में नहाने पर भी रोक लगाने के लिए सैनिक किनारों पर खड़े थे। मुसलमानों के अलावा किसी के पास कोई हथियार नहीं होना चाहिए, और घोड़े हर जगह थे। न केवल लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी और हंसिया, बल्कि सब्जी काटने के लिए छोटे चाकू भी घर से बाहर लाने पर रोक थी।

Machine Translated by Google

ऐसा लग रहा था जैसे पुहा डंगोरा से पिटे तक कोई घर से बाहर आ गया हो।

इन सब कामों की वजह से मंदिर टूट जाएगा, यह बात गांव में सब समझ रहे थे। लेकिन क्या करें? उनके हाथ में कोई ताकत नहीं थी, कोई अधिकार नहीं था। कोई ग्रुप नहीं था। कुछ घरों के दरवाजों से 'हर हर महादेवा', 'बंबभोलेनाथ', 'शिवोहन शिवा' वगैरह की आवाज़ें आ रही थीं। सैनिक इन दरवाजों पर दस्तक देते और चिल्लाते, "दंगा बंद करो! नहीं तो घर जला दूंगा!" अंदर की आवाज़ अपने आप गायब हो जाती। अचानक, हाथ में कुल्हाड़ी लिए एक जंगली जानवर, ज़ोर-ज़ोर से 'हर हर महादेवा' चिल्लाता हुआ मंदिर की तरफ़ दौड़ता। लेकिन इससे पहले कि वह दस-बारह कदम भी चल पाता, एक घुड़सवार उसकी तरफ़ आता और उसके सिर पर वार करके चला जाता। राजा की ज़िंदगी का एक और हिस्सा चला जाता। आस-पास के घरों का शोर भी बंद दरवाज़ों के पीछे दब रहा था।

यह देखने के लिए कि सब ठीक चल रहा है या नहीं, हमें शाही मास्क और दो काठी वाले घोड़े दिए गए। इसके बाद, हम पूरे शहर का मुआयना करने गए।

मैंने ज़ोर से पूछा, "क्या सच में ऐसे सिस्टम की ज़रूरत है जहाँ गैर-मुसलमानों को हथियार रखने की इजाज़त न हो?" “क्या आप मुझे इसकी कहानी बता सकते हैं, मैं आपको कुछ बताता हूँ?

हाल ही में, मैं आपको तीस साल पहले हुई एक घटना बताता हूँ। हमारे बादशाह के पिता, शाहजहाँ भी एक धार्मिक व्यक्ति थे। यानी, हमारे बादशाह धार्मिक नहीं थे, लेकिन फिर भी उन्हें धार्मिक होना पड़ता था। उनके पिता, बादशाह जहाँगीर। वह अपने धर्म का पालन करते थे। अगर वह चाहते, तो अपने खर्चे पर मस्जिद बना सकते थे, यह कानून भी बादशाह जहाँगीर के समय में बादशाह अकबर ने बनाया था। इसलिए, उनके समय में, कुछ जगहों पर मस्जिदों के निर्माण के कुछ मामले ज़रूर हुए होंगे। बादशाह शाहजहाँ गद्दी पर बैठे। उन्होंने मई 1042 AH में एक आदेश जारी किया, कि जो मस्जिदें उन्होंने बनाई हैं और जो बन रही हैं, उन्हें तुरंत गिरा दिया जाए। इसलिए, इसका ज़िक्र 'बादशाह-नामा' में नहीं है। इस आदेश के आधार पर, सरकार ने बनारस के 76 दाव की ज़मीन का बँटवारा किया। इलाहाबाद के सूबेदार, हिदायत रबेग ने अपने चचेरे भाई को बनारस के आधे-अधूरे बने 76 दाव को नष्ट करने के लिए भेजा। लेकिन एक बार राजदतु रियात में छिपा हुआ था। वह रियात पहुँचा और अपने चचेरे भाई और उसके चार साथियों को मार डाला। लेकिन उसकी सेना ने पीछा किया और राजदतु पर हमला करके उसे मार डाला। जब वह मरने ही वाला था, तो उनमें से एक ने आगे बढ़कर पाँच लोगों को मार डाला! हंजियों का घमंड किस हद तक जा सकता है, ज़रा इरादा तो देखो! दूसरों को सबक सिखाने के लिए उन्होंने इन राजदतुओं को रियात के पास एक पेड़ से लटका दिया और वे सब आगे बढ़ गए। ऐसे अनुभवों की वजह से ही कोतवाल इतने सावधान रहे हैं।

Machine Translated by Google

काशी आने के दूसरे ही दिन मैंने विनता मंदिर देखा था। उसके बाद मैं एक बार फिर वहाँ गया था। मैंने सोचा था कि पाँच-छह दिन में कम से कम ज़मीन पर बनने वाले मंदिर का आकार तो देख ही लूँगा। यह चौकोर आकार का था। हर भुजा एक सौ चौबीस हाथ लंबी थी। गुफा के पास चार मंडप थे, सोलह हाथ लंबे और दस हाथ चौड़े। उसके बाद बारह हाथ लंबे और आठ हाथ चौड़े मंडप थे। इससे चारों दिशाओं में पहुँचा जा सकता था। पूर्वी और पश्चिमी मंडपों में अर्पाल और दंडपाणि के मंदिर थे। मंडपों के चारों कोनों में चार छोटे उप-मंदिर हॉल थे। मंडपों के बाहर एक नंदी मंडप था। पूरे मंदिर की ऊँचाई एक सौ बाईस हाथ लंबी थी। मंदिर के शिखर की ऊँचाई चौसठ हाथ थी। मंडपों पर शिखरों की ऊँचाई अड़तालीस हाथ थी। कुल मिलाकर, यह मंडपों का मंदिर है। पहले 125 हाथ लंबे और पति का हाथ पकड़े हुए, धमक-आयमक उपदेश हॉल में चलते हैं। इस दिन, अनगिनत छोटे मंदिर!

,

मुझे सपना आया कि वे चारों तरफ से तोपें चलाएंगे और मंदिर को ज़मीन पर गिरा देंगे। लेकिन जब मैं सैनिकों की मदद से वहाँ पहुँचा, तो नज़ारा कुछ और ही था। इस बात पर गंभीर चर्चा हो रही थी कि तोप का गोला इमारत के किस हिस्से पर लगे और किस हिस्से पर नहीं। चर्चा करने वाले लोग फ़ारसी बोलने वाले मुस्लिम ज्योतिषी थे। काफ़ी चर्चा के बाद, तोपों से दीवारें उड़ा दी गईं। मरने वाले के शरीर में किसी की कोई दिलचस्पी नहीं थी। ज्योतिषी उसी इमारत की नींव, सामने का हिस्सा, दीवारें और खंभे रखते हुए उसे मस्जिद बनाने की सोच रहे थे। दरवाज़े के आस-पास पाँच सौ से ज़्यादा सैनिक और घुड़सवार हाथों में हथियार लिए खड़े थे। जैसे ही सामने की दीवार गिर रही थी, इस काम के लिए नियुक्त मुख्य सरदार चिल्लाया, “मूट! मूट!” उसने दीवार बनाने का काम वहीं रोक दिया और दस-बारह सैनिकों के साथ मंदिर में घुस गया। बाकी सब बाहर खड़े थे। थोड़ी देर बाद, वह बाहर आया और सरदार से कहा, “अंदर कोई मूट नहीं है। इसके निशान हैं कि इसे वहाँ से ले जाया गया था।”

कोतवाल भी अंदर जाकर देखने लगे। बाहर उन्होंने आपस में कुछ बातचीत की। उन्होंने हिंदुओं से भी बात की। वे पहले यहाँ कहाँ पूजा करते थे? क्या पुजारी पहले इस खाली जगह पर पूजा करते थे? उन्हें गिरफ्तार करके काली मिर्च का दाना देना चाहिए था, और अगर उन्होंने ज़बरदस्ती दरार नहीं खोली होती, तो क्या होता अगर वे जाते और शिवलिंग नहीं मिलता? अगर मिल भी जाता, तो वे उसे मस्जिद के दरवाज़े पर सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करते। और इसके लिए, आस-पास दो मूर्तियाँ हैं! अगर यह शिवलिंग नहीं होता तो क्या होता? ऐसे में, हाथ में लिए गए काम में देरी न हो, इसलिए अगला कदम उठाया गया।

माया को सुबह से ही उल्टी जैसा लग रहा था। इस बीच, वह गांव की सड़कों पर घोड़े पर सवार होकर जा रही थी।

Machine Translated by Google

मैं झोपड़ी से बाहर आ गया था। मैं अभी भी झोपड़ी के सामने ज़मीन पर बैठा था। मेरा पेट खराब हो रहा था। सुबह मेरा पेट साफ हुआ था। इसके बाद इतना खाना था कि मेरा पेट दर्द करने लगा। दलित प्रार्थना करना भी मुश्किल था, और यहाँ मुझे घटिया खाना मिल रहा था। ऊपर से फल। फिर भी मेरा पेट खराब हो रहा था। क्या मुझे जाकर फिर से पेट साफ कर लेना चाहिए? कोई बात नहीं। मैंने गार्ड्स को बताया और हॉस्टल की तरफ चल दिया। उन्होंने मुझे चेतावनी दी, "अकेले मत जाना। खिड़की से चाकू आएगा और मुझे अपना पेट साफ करना है, है ना? तो यहाँ नदी पर जाकर आ जाओ। काफ़िर इसे पवित्र मानते हैं, अगर तुम ऐसी जगह बैठोगे तो तुम्हें दुआ मिलेगी।" उन्होंने कहा।

नदी का बहाव थोड़ा कम हो गया था। मुझे एक ऐसी जगह मिली जो फिसलन वाली नहीं थी और जहाँ कीचड़ भी नहीं था और मैं वहाँ चट्टानों पर बैठ गया। मुझे लगा कि मैं एक ऐसी जगह को गंदा कर रहा हूँ जिसे काफ़िर पवित्र मानते हैं! लेकिन मेरे पेट में बेचैनी कम नहीं हुई। क्योंकि मेरा पेट खाली था, इसलिए बैठने का भी कोई फ़ायदा नहीं था। मेरे पेट की बेचैनी मेरे मन की बेचैनी बन गई। क्योंकि मुझे समझ नहीं आ रहा था।

मैं घुटनों के बल उठा और नदी की तरफ़ घसीटता हुआ गया। मैं सीढ़ियों पर बैठ गया। नदी का पानी अभी भी लाल रंग का टपक रहा था। ऊपर कहीं बारिश अभी भी हो रही थी। रफ़्तार भी काफ़ी तेज़ थी। लेकिन साफ़ था कि यह और तेज़ नहीं हो रही थी। नदी शांत लग रही थी। पेड़ों की डालियाँ और तने, जानवरों और मवेशियों की लाशें, और कपड़े से ढकी इंसानी लाशें नदी से आ रही थीं। गंगा को शांति से बहते हुए देखना, जिसमें मारने और जान देने की ताकत हो, नदी पार करके गाँव न जा पाना, पेट में खंजर घोंपकर मर न पाना, बिना देर किए धर्म बदलना, लकड़ी के हैंडल वाली दरांती – ये सारी बातें मेरे दिमाग़ में घूम गईं। जो इंसान अपने मंदिरों की रक्षा भी नहीं कर सकता, वह आस्था का नाथ कैसे हो सकता है? मेरे पीछे ढोल की हर आवाज़ के साथ, मेरी चाहत और मज़बूत होती गई। मैं उठकर झरने की सीढ़ियाँ चढ़ने का मन नहीं कर रहा था। मैं वहीं बैठकर नदी को देखता रहा। समतल जंगल से बहती नदी मुझे भूत जैसी लग रही थी।

मैं घाट के किनारे टहल रहा था। थोड़ी दूर एक साधु बैठा था। सफ़ेद दाढ़ी, सफ़ेद बाल, सफ़ेद चोगे पर सफ़ेद कपड़ा। गर्मी-हवा-सर्दी-बारिश से उसका शरीर काला पड़ गया था। बारिश में उसका रूप साफ़ दिख रहा था, बीच-बीच में आसमान से पानी की बूँदें गिर रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वह नदी को, यहाँ तक कि पानी को भी देख रहा है। मैं पास जाकर देखना चाहता था। यह नज़ारा मुझे सिहरन दे रहा था। कदमों की आहट या परछाई महसूस करके, मैं उसकी तरफ़ मुड़ा। मैं कुछ कहना चाहता था। पर क्या कहूँ? दो-तीन सौ कदम दूर हुई एक घटना ने मेरे दिमाग़ को इतना हिला दिया था कि मुझे और कुछ सूझ ही नहीं रहा था।

Machine Translated by Google

“तुम अपने विनाथ मंदिर के साथ वहाँ थे, क्या तुमने नहीं सुना? फिर भी तुम यहाँ चुपचाप बैठे हो?” मैंने कंधे उचकाए।

“तुम्हारी इच्छा सफल हुई, है ना? भगवान तुम्हारा भला करे!” उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। मैं चौंक गया। ‘क्या मंदिर का टूटना मेरी इच्छा थी? है ना? इस इच्छा के बाद, मैंने सम्राट के खास दूत की मदद ली और हुडुला के साथ यहाँ आने का फैसला किया? फिर भी, मुझे लगा कि मुझे उनकी बातों का विरोध करना चाहिए।’

मैं इसे अंदर से बाहर तक देख रहा था। मैंने सोचा, अब मुझे किसी से किसी लॉजिक के आधार पर बात करनी चाहिए।

“यह माया की मर्ज़ी नहीं है। पूरे हिंदू जगत पर राज करने वाला राजा शाह औरंगज़ेब की मर्ज़ी है। उसने इन दुनियावी लोगों को इस देश पर राज करने के लिए अपॉइंट किया था, और बादशाह ने ही इस मर्ज़ी को पूरा किया। मेरी बस यही चिंता है कि आप इस भगवान को आस्था के भगवान के तौर पर पूजते हैं, लेकिन इस भगवान में आपके ही देश के सैकड़ों दुश्मनों से लड़ने की ताकत नहीं है। इसका मतलब है कि वह एक ही भगवान है। हिंदू जगत में सैकड़ों नहीं, बल्कि हज़ारों भगवान हैं, लेकिन उन्हें खत्म करके वहाँ एक भगवान को स्थापित करना, यह बादशाह की मर्ज़ी है। कई एक भगवानों की जगह एक भगवान की पूजा शुरू करना! समझे?” मैं जोश दिखा रहा था।

“बैस! तुम बकवास कर रहे हो। यह बकवास करने का टॉपिक नहीं है।” उसने पास के पत्थर की तरफ इशारा किया और दूर चला गया। माया की भी सुबह से तबीयत ठीक नहीं थी। हम बैठ गए।

"तुम्हारा गाँव कहाँ है? तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं?" यानान ने सोचा, और छोटे बच्चे से आसानी से पूछने की कोशिश की।

मुझे गुस्सा आया। 'क्या करूँ? मुझे भी गुस्सा आया। मैं इसका क्या करूँ? लेकिन मैंने क्या गलत किया? पहचान मिलना बहुत आम बात है। मुसलमानों में भी ऐसा ही होता है। इसके उलट, यह दूसरों से भी आगे निकल जाता है। अगर आप गाँव वाले का नाम 'बिन' भी जोड़ दें, तो भी पहले नाम का कोई मतलब नहीं रह जाता। मैंने इस बारे में सोचा। गुस्सा शांत हुआ। लेकिन गुस्सा अभी भी था। मुझे क्या करना चाहिए?'

उन्होंने आगे कहा, “तुम्हें झिझक होना स्वाभाविक है। सुनो, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। तुम एक राजकुमार हो। तुम्हें अपने फ़ायदे के लिए नहीं, बल्कि औरतों की सेवा के लिए पकड़कर रखा गया है। हाँ या नहीं?”

मेरा दिल बैठ गया। 'यह वह आदमी है जो चेचन्या का इतिहास बताता है।

Machine Translated by Google

नहीं?' मैं उनके सामने झुकना चाहता था, लेकिन मैंने नहीं झुकाया। उन्होंने आगे कहा, "माया के बारे में आपकी भावनाएँ बदल रही हैं। आपकी इज़्ज़त बढ़ रही है! है ना? मैं आपको बताता हूँ, माया में ऐसी कोई सुपरनैचुरल शक्ति नहीं है। मैं लगातार उन सभी जगहों पर जाता रहता हूँ जो पवित्र हैं और नष्ट हो चुकी हैं। इस वजह से, जैसे ही मैं किसी इंसान को देखता हूँ, मुझे पता चल जाता है कि वह किस हालत में है, उसका चेहरा और उसकी आवाज़ कैसी है। इस वजह से, मैं उसकी असली हालत बता पाया। अगर मुझे अच्छा खाना भी मिले, तो भी उसे खाना न मिलने पर जो कमज़ोरी और मुँह से बदबू आती है, वह वैसी ही रहती है। उसका जोश खत्म होने की वजह से उसका मुँह नरम बना रहा, इसलिए मुझे लगा जैसे मैं आपकी सेवा में हूँ। क्या मैं सही हूँ?"

मेरी हालत उस औरत जैसी हो गई जो एक राक्षस के सामने खड़ी हो। राक्षस की भविष्यवाणी को मना करने की हिम्मत मुझे कहाँ से मिलेगी? मैंने मन ही मन सोचा, "महाराज, मुसलमानों में सिर्फ़ एक ही भगवान है। हमारे बीच सैकड़ों भगवान हैं। तो उनमें एकता कैसे हो सकती है? उनके हाथ से ताकत जा रही है, और इस्लाम की ताकत और मज़बूत होती जा रही है, है ना?"

उन्होंने पूछा, "क्या कोई और उदाहरण है जहां गणपति पूजने वालों ने विनू पूजने वालों के खिलाफ हिंसा की हो और पावती पूजने वालों ने लामी पूजने वालों के खिलाफ हिंसा की हो और मुसलमानों से मदद मांगी हो?"

मुझे एक भी घटना याद नहीं आई। "फिर भी, क्या अल्लाह के सामने तुम्हारे अपने मंदिर नहीं हैं? और क्या यह सच नहीं है कि अल्लाह और यवन में कोई दो राय नहीं है?" मैंने अपना शक ज़ाहिर किया। चुपचाप सुनने के बाद, उन्होंने कहा, "उनका भगवान का विचार गलत है और क्योंकि हम लड़ाई हार रहे हैं, इसलिए हम भी ऐसा कर रहे हैं। यह तुम्हारी गलती है। हम इस नैतिक विचार पर विश्वास करते हैं, हमारा भगवान भी इसी पर खड़ा है। यह अयामया के इस लेवल पर है, यह भी इसी पर निर्भर करता है। अल्लाह हमेशा रहने वाला भगवान है, जो उसके अलावा किसी और की पूजा नहीं करता, वह हमेशा जलते रहने वाले नरक में भाला फेंकता है। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि ऐसे भगवान को बनाने वाला भी उसी बुरे स्वभाव का है? मैं अकेला हूँ, किसी और के लिए कोई जगह नहीं है, बर्दाश्त नहीं करने वाला; वह कैसा धार्मिक इंसान है जो ऐसे भगवान को बनाता है जो वासना, गुस्सा, नशे और बुराई से भरा हो? जो कानून की ताकत और सही होने का इस्तेमाल करता है, क्या खुद को, जो हमेशा रहने वाला है, जीत का श्रेय देना मुमकिन है?"

उ

मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था। ऐसी बातें सोचना माया के बस में नहीं था। कुछ देर इंतज़ार करने के बाद माया ने उर से कहा, "मेरा मानना है कि धर्म का आधार अयम है। मुझे अयम की इच्छा नहीं है। जो आदमी जानवर जैसा है, उसे पहले अपने अंदर से खुद को साधना चाहिए। अहंसा, स,

Machine Translated by Google

क्या अत्य, विकल्प, अप्राह, पवित्रता, संतोष, तपस्या, दोष, ईर निधन या नितिया की कल्पना करना एक अभ्यास है?

“हमने इसे बचपन में सुना था। अब इसका मतलब समझ में आने लगा है।”

“इन नियमों और कायदों को मानकर भगवान की पवित्रता पाने के बाद ही किसी को भगवान के बारे में बात करने का अधिकार है। पवित्रता पाते हुए इंसान को अपने डायमेंशन में बढ़ना चाहिए। ऐसे डेवलपमेंट से, हर इंसान पर भगवान के अलग-अलग वाइब्रेशन जमा होते हैं। इससे पता चलता है कि वह किस लेवल की स्पिरिचुअल प्रैक्टिस या नैतिकता पर है। अगर आप दूसरों की स्पिरिचुअल प्रैक्टिस खत्म करना चाहते हैं, तो मुझे बताएं कि उनकी किस तरह की नैतिकता और स्पिरिचुअल प्रैक्टिस है!”

मैं उसकी बात पूरी तरह समझ गया, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं उसका चेहरा देखता रहा। भले ही मैं समझ नहीं पाया, फिर भी वह मुझे लात मार रहा था। उन्होंने आगे कहा, “सभी धर्म एक हैं। सभी धार्मिक संत एक ही सच बोलते हैं। हर कोई अलग-अलग बोलता है। कुछ पॉजिटिव सच बोलते हैं, तो कुछ नेगेटिव सच। कुछ ‘अनंत समाधि’ की बात करते हैं, तो कुछ नहीं। कुछ पुण्य को ज़रूरी मानते हैं, तो कुछ उसे नकारते हैं। कुछ खुशी का रास्ता बताते हैं, तो कुछ दुख से छुटकारा पाने का रास्ता दिखाते हैं। नीति और वेद में कोई बुनियादी फ़र्क नहीं है। वेद, बौद्ध, जैन, योग वगैरह में सारे फ़र्क सिर्फ़ नाम के हैं। मैं सभी धर्मों के संतों से मिलता हूँ और उनसे चर्चा करता हूँ। मैं सच की तलाश में घूमता हूँ। एक बार मुझे एक मौलवी साहब से बात करने का मौका मिला। हेमौलवी शैतो। वे दूसरे धर्मों से चर्चा करने को तैयार नहीं हैं। हमारा धर्म भगवान का आखिरी संदेश है और इसे पूरी दुनिया में फैलाना भगवान का विचार है, तो बाकी सभी धर्म इतने मामूली क्यों हैं? फिर हम ऐसे मामूली धर्मों के मामूली मानने वालों से कैसे चर्चा कर सकते हैं? जिन मौलवियों से मैं मिला, वे ज़्यादा अलग नहीं हैं। यह सोच। उन्होंने अपने बनाने वाले, पवित्र पैगंबर (स) की ज़िंदगी से एक घटना सुनाई। पैगंबर (स) को भगवान के रसूल ने जो मैसेज भेजा, उसे 'कुरान' कहते हैं। पैगंबर (स) ने अपने फॉलोअर्स को अपनी ज़िंदगी के अनुभव से कुछ उदाहरण दिए। इसका नाम 'हदस' है। जो धर्म 'कुरान' बना। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सच्चा धर्म। 'हदस' ज़िंदगी जीने का तरीका है, और इसलिए पैगंबर (स) की ज़िंदगी 'कुरान' जितनी ही ज़रूरी है। "यह समझना ज़रूरी है। यह उसी तरह है। मैं आपको बता रहा हूँ, है ना?"

"मुझे पता है, लेकिन मैं बस यही कह रहा हूँ।"

“मौलवियों द्वारा वर्णित घटना इस प्रकार है: वादी (वादियों) की अरब में सभी लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित करने की प्रबल इच्छा थी

Machine Translated by Google

यहूदियों का एक ग्रुप था जिसे यहूदी कहते थे। वे दूसरे ग्रुप की तरह धर्म बदलने में उतने अच्छे नहीं थे। यहूदी, यहूदियों का एक समाज था, शरिया। उनका दूसरे ग्रुप पर असर था। कुरान का बैकग्राउंड बाइबिल से था। बाइबिल का ओरिजिन यहूदियों का 'तोरा' है। इसे पुराना ड्राफ्ट भी कहा जाता है। इस इलाके में, उन्हें बहुत पुरानी परंपरा वाला ग्रुप माना जाता था और समाज में उन पर यकीन किया जाता था। यह भी कहा जाता है कि भविष्य में एक और दुश्मन इकट्ठा होगा। अगर हम उन्हें अपना बना लेंगे, तो दुश्मनों ने सोचा कि अगर हम उन्हें अपना बना लेंगे, तो इस इलाके के बाकी सभी ग्रुप हमें अपना लेंगे। कुरैश ने ऐसा मैसेज भेजा। लेकिन क्या उन्हें ऐसा करना चाहिए था? इसके उलट, वे इस्लाम विरोधी ग्रुप से हाथ मिलाने की कोशिश कर रहे थे। इमाम (अ.स.) ने सोचा कि उन्हें सबक सिखाना चाहिए। उन्होंने अपने साथ मौजूद दूसरे दो अरब ग्रुप को धोखा दिया और दारूकान के कैंप पर हमला कर दिया। शियाओं की कमी के कारण उन्हें सरेंडर करना पड़ा। आगे क्या हुआ, हम इस नज़रिए से समझ सकते हैं। इमाम (अ.स.) ने अंदर मिले सात सौ सैनिकों के हाथ बांध दिए और उन्हें बाहर निकाला। एक हज़ार दो सौ बच्चों को जानवरों की तरह बाहर निकाला गया। इमाम (अ.स.) ने इस नौजवान से पूछा, 'तुम्हें सिखाया गया होगा। मैं तुममें से किसी एक को जज की ज़िम्मेदारी सौंपता हूँ। वह जो भी तुम्हें बताएगा, तुम्हें सिखाया जाएगा।' सहीह इस पर मान गया। उनके बीच अंदरूनी कलह भी थी। इस घटना से कुछ दिन पहले, साद नाम के एक योद्धा ने बिना लड़े कुरैश को हरा दिया था और अपनी जान बचाकर भाग गया था। इस लड़ाई में तीरों से लगे घाव उसके शरीर पर अभी भी दिख रहे थे। मुद्दई (स.) एक औरत की सेवा कर रहा था। मुद्दई (स.) ने उसे बुलाया और गधे पर बिठाकर कहा कि उसे कोई निशानी दो। जब हर आदमी ने अपनी निशानी दी, तो सभी कैदी 'दया, दया' चिल्लाने लगे। आदमियों के सिर काट दिए गए। उसने हुक्म दिया कि सारी जायदाद बांट ली जाए और औरतों और बच्चों को गुलाम बना लिया जाए। मुद्दई (स.) इस पर मान गया। इस फ़ैसले के बाद, साद को गाँव में एक पक्की जगह दे दी गई, और उसने इसके लिए दुआ की। औरतों और बच्चों को गाँव ले जाया गया। इन आदमियों को खेत में बंद कर दिया गया। अगर इन लोगों को तौरात में बताई गई आयत 'वादी मुहम्मद (स.अ.व.)' याद होती, तो उनकी जान बच जाती। लेकिन अपनी जान बचाने के लिए भी, इस तरफ़ से किसी ने अपने पुराने धर्म को नहीं छोड़ा। सभी लोगों ने अपना समय धर्म की तिलावत करने और अपने पुरखों के ईमान को मज़बूत रखने में मदद करने में बिताया। यहाँ, शासक (स.अ.व.) ने उनसे राभर गाँव के बीच में एक गहरी खाई खुदवाई। सुबह, पाँच या छह लोगों को इस खाई में लाकर उनके सिर काट दिए गए। इसके बाद, पाँच या छह और लोगों के सिर काटे गए। इस तरह की चीज़ें तब तक चलती रहीं जब तक लोग मर नहीं गए। नदी बहती रही, और मांस का ढेर जमा होता रहा। इस हमले में शामिल इन सैनिकों ने इन औरतों और बच्चों को आपस में बाँट लिया। इस तरह, मुद्दई (स.अ.व.) ने अयंत पारमती 'रहने' को अपने लिए चुना और उसे रख लिया। वादी को उससे शादी का प्रस्ताव मिला था। लेकिन वह हार मानने को तैयार नहीं थी। इस वजह से

Machine Translated by Google

उन्होंने उसे वैसे ही रख लिया। मुद्दई ने तय किया कि युद्ध से लाई गई लूट का पांचवां हिस्सा मुद्दई को न देकर बाकी सभी सैनिकों में बांट दिया जाए। सैनिकों के अपनी पसंद बताने के बाद, बचे हुए बेटों, बच्चों, घोड़ों और मवेशियों के लिए नीलामी रखी गई। तब से, युद्ध की लूट का पांचवां हिस्सा राजा के पास जमा करने का रिवाज शुरू हुआ। क्या आपने इस घटना के बारे में सुना है?"

"मैंने सुना था। लेकिन यह डरावना था! देवताओं ने मुझे बताया था।" मैंने अपना सिर नीचे कर लिया।

"यह क्या है, मुझे बताओ!" साधु ने सोचा। मुझे भी समझ

नहीं आया। वह माया के चेहरे को देख रहा था। उसकी नज़र इतनी तेज़ थी कि माया को चीरकर ज़ोर से रोने पर मजबूर कर सकती थी।

"वादी जो भी करते हैं, वह इस फ़ैसले की वजह से करते हैं, हाँ या ना? अगर ऐसा है, तो आपने वादी को खुश क्यों नहीं किया?" मैंने पूछा। असल में, मेरे मन में कोई खुशी नहीं थी। उन दोनों ने यह घटना बताते हुए मुझे यकीन दिला दिया था।

"संत, साधु, वादी, ऋषि – कोई भी इंसान जो अपने कामों की ज़िम्मेदारी भगवान या देवताओं पर डालता है, वह अपनी ज़िम्मेदारी से बच रहा है। हर समाज अपने नैतिक पैमानों के हिसाब से अपना भगवान बनाता है, जैसा कि असामी सुवती कहते हैं। अगर हम कहते हैं या मानते हैं कि हर किसी को इस भगवान पर विश्वास करना चाहिए, तो क्या हमें उसकी पूजा करनी चाहिए? अगर नहीं, तो हम दूसरों की इज़्ज़त कैसे कर सकते हैं? जो भगवान पर विश्वास नहीं करते, उन्हें हम कैसे समझ सकते हैं? आयतन में भगवान ज़रूरी नहीं है। भगवान को पूरी तरह से नकारने वाला भी आयतन हो सकता है। सबसे ज़रूरी है दया, काम, वाणी, मन और दिमाग में अहिंसा। क्योंकि 'काम' के बिना बुराई पर जीत नहीं मिल सकती।"

"महाराज, क्या सेना की हार का जश्न मनाना हमारे लिए गलत है?"

"क्या आपने मौत के देवता धमशा नामक राक्षस का नाम सुना है?" "नहीं।"

"इसे कहते हैं,

'यमैन्दशं आचारो वहरा: कुलिथति:! इसी प्रकार जब अन्य

दो भी उनके वश में आ गये।

Machine Translated by Google

यानी राजा को देश पर वहां के रीति-रिवाजों और परंपराओं के हिसाब से, और वहां के पारिवारिक ढांचे के हिसाब से राज करना चाहिए था। क्या तुम लोग, हमारे बच्चों, धर्म का आदर्श नहीं समझते? अच्छा, क्या तुमने कालिदास का महाकाव्य 'रघुवंश' सुना है?

"नहीं।"

“इसमें रघु को महान कवि और देवताओं को जीतने वाला बताया गया है। इसका क्या मतलब है? बहुत समय पहले, कामी के महान राजा वल्लभदेव ने तीन तरह के राजाओं को हराया था: धर्म को जीतने वाला, लालच को जीतने वाला, और राक्षसों को जीतने वाला। धर्म को जीतने वाला, जिसने शूल की जगह जनकालय को बिठाकर अपनी जीत का ऐलान किया, लालच को जीतने वाले ने शूल को तोहफ़े देकर, और राक्षसों को जीतने वाले ने शूल को मारकर और खजाना लूटकर। क्या तुमने इस मतलब का नाम सुना है?”

“मैंने सुना है। माया पिताज्य के दरबार में पंडित अक्सर इस नाम का जाप करते थे। पंडित शिवपाद ने उनसे कहा था कि जब वे अपना काम पूरा कर लेंगे तो वे युता के अयास सिखाएंगे।”

“इसमें कबाड़ को कैसे रखना है, इस बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। सुनिए इसमें क्या लिखा है।”

और न ही मृतकों की पु दारा निभमयेत।

भूमि कुओं में रखी जाती है

जीरा जलाने के लिए।

Yev naya dandam opanhatah pu pauanvatate.

राजा के वंशजों, बच्चों और रिश्तेदारों को हिरासत में नहीं लेना चाहिए। सभी कुलों, परिवारों और खानदानों को वहां ताकत देनी चाहिए। राजा को युद्ध में मारे गए राजा के बेटे का सम्मान करना चाहिए। रिश्तेदारों, बच्चों और नाती-पोतों को उसके साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए। इसके अलावा, वे राजा के शासन के हिसाब से बोलते, कपड़े पहनते, बोलते और व्यवहार करते हैं। अपने परिवार, घर वगैरह पर गर्व करना चाहिए और सभी लोगों के साथ एक जैसा व्यवहार करना चाहिए और ज़मीन और दौलत होनी चाहिए। अगर हम यह कहें, तो हम जितने चाहें उतने नियम कह सकते हैं।

"लेकिन फिर भी, अगर हम अलायंस हार जाते हैं और अपनी बात मनवा लेते हैं..."

Machine Translated by Google

“किसी को हराने के लिए निकलना घमंड है। क्या लड़ाई हारने के बाद हारे हुए राजा को गुलाम बनाना सही है? अगर तुम्हारी माँ भगवान की शक्ति का हिस्सा है, तो क्या तुम्हारी माँ भी भगवान की शक्ति का हिस्सा नहीं है? उनकी हार से पहले भी भरत-खंड में लड़ाई हुई थी। लेकिन कोई भी राजा हारे हुए राजा पर अपनी मर्ज़ी नहीं थोपता।”

यह विषय, यह भाषा, मेरे लिए पूरी तरह अनजान नहीं थी। पकड़े जाने से पहले की ज़िंदगी में मैंने भगवान से कुछ बातें भी सीखी थीं। सभी जीवों का एक स्वभाव होता है, सभी जीवों का भी स्वभाव होता है, उनमें रजस-तमस जैसे गुण होते हैं, जो पहले खो गए थे। मुझे अनायास ही याद आने लगा कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के किए काम भविष्य के नवाबों, सुल्तानों, तोया-मुखियों और बादशाहों के लिए मिसाल माने जाते थे, और मेरे मन में उठे इस ख्याल ने मुझे तुरंत रोक दिया। उन्होंने भी कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद मेरे मन में एक ख्याल आया, “उन्होंने ऐसे काम करने की योजना बनाई है, नमाज़ पढ़ने वालों को बेइज्जत करने और भगाने की, लोगों को गुलाम बनाने की। ऐसे समय में तुम क्या कर रहे हो?”

“मैं क्या कर रहा हूँ? सिर्फ़ मैं ही नहीं, माया जैसे हज़ारों साधु-सन्यासी गाँवों में घूमते रहते हैं। चूँकि सर्दी का मौसम है, इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम कुछ मत खाओ, अपने पुरखों का धर्म मत तोड़ो। मैं एक जगह ज़्यादा देर नहीं रुकता।”

“क्या शिवाजी ज़िंदा हैं?” मेरे मन में कुछ आया और मैंने सोचा।

“ज़िंदा? औरंगज़ेब कैद से भागकर विदेश पहुँच गया है! हर खोई हुई कला उसे वापस पाने की बात है। इसमें कोई शक नहीं कि भविष्य में भारत श्रापित होगा।”

उसी समय साधु की नज़र माया पर पड़ी। मैं भी चलने लगा। मैंने मुड़कर देखा तो दो सैनिक हाथों में तलवारें लिए हमारी तरफ आ रहे थे। जैसे ही वे पास आए, दोनों ने मन ही मन सोचा, "गाँव कहाँ है?"

“डाली।” मैंने कहा।

“क्या तुम सम्राट का डाक लेकर आये हो?”

"हाँ।"

“तुम लोग नदी किनारे खाना खाने आए हो। हदुलासाहेब को तुम्हारी चिंता है। चलो।”

Machine Translated by Google

मैं उठा और चलने लगा। साधु से बात करना या उनके सामने अपना परिचय देना मेरे हित में नहीं था।

हर दिन सुनी और देखी गई बातें नदी में डाली जा रही थीं। मैं नोट्स ले रहा था और सुन रहा था। विनाथ मंदिर के गिरने के दूसरे दिन पूरी नदी इसी नदी में बह गई।

"मैं हमेशा रिपोर्ट करता रहता हूँ। लेकिन इस क्लर्क को इतनी इंटेलिजेंस कहाँ से मिलेगी कि वह मुझे वो डिटेल्स दे जो मैं नहीं दे रहा हूँ? शिवाजी पर प्योर फ़ारसी टेक्स्ट मुझे और कहाँ मिलेगा? अगर बादशाह यह पढ़ लेंगे कि मैंने यह नदी पार की है, तो वे इतना रोएँगे कि खुशी में मुझे जागीर भी दे देंगे। लेकिन मैं क्या कहूँ! वहाँ कुछ पॉलिटिशियन भी हैं! वे मेरी रिपोर्ट बादशाह तक नहीं पहुँचने देंगे।" हनत ने आह भरी। उसने आगे कहा, "क्यों नहीं, मैंने अपना फ़र्ज़ निभाया है। इसके लिए मेरे पास अल्लाह की तरफ़ से काफ़ी पैसे हैं।"

इस मौके का फ़ायदा उठाते हुए, मैंने सोचा, "जो कोई भी किसी भी रूप में भगवान की पूजा करता है, वह एक जैसा है, लेकिन वे कुछ और कहते हैं। मूर्ति पूजा बहुत बड़ी बेइज़्ज़ती है और इंसानियत की पवित्रता को खत्म करती है। क्या पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इसका ज़िक्र नहीं किया है?"

"उसने सिर्फ़ इतना ही नहीं कहा। उसने खुद अपने मानने वालों के लिए मिसाल कायम की। अल-मलिक, बाल, एल, अल्लाह, मनात अल-उज़्ज़, शुशास, धुश-शरा, अत-थुरैया, खुज़ू, वाद, दा, जाद, मनाफ़, यागुत, ये सभी भगवान उसके आदर्श थे। और भी भगवान थे। उन सभी भगवानों और उनकी मूर्तियों को खत्म कर दिया गया और सिर्फ़ एक भगवान, अल्लाह की स्थापना वादी (स) ने भारत के सभी नवाबों, सुल्तानों, शेखों और बादशाहों के सामने की। अब औरंगज़ेब बादशाह को अपना आदर्श बनाकर काम कर रहा है। उसे लात मारो!"

वादी का आदर्श इतना बड़ा था कि किसी को यह कहने का हक नहीं है कि वह मूर्ख है। लेकिन जब उसने नदी किनारे साधु से बात की, तो उसका मन यह मानने को तैयार नहीं था। वह अपने मन में जो कुछ बना था, उसे बताने के लिए खुद को काफी करीब महसूस नहीं कर रहा था। वह इस साधु से इस मामले पर फिर से बात करना चाहता था। चूंकि वह शहर में था, इसलिए उसे तुरंत नींद नहीं आई। शिव को छोड़कर, शहर की हर सड़क बंद थी। मुझे पता था कि शहर के बाहर कोई सैनिक नहीं थे। दूसरे दिन सुबह जाना मुश्किल था। मैं बहुत देर तक जागा रहा।

जब मैं सुबह जल्दी उठकर नदी पर गया, तो वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं था, एक भी संत नहीं। जैसे काशी में कुछ भी होने का ख्याल ही नहीं था, गंगा एकदम अकेली थी।

Machine Translated by Google

यह बह रहा था। यह क्या है, क्या पेट में कुछ और छिपा है जो बह रहा है, ऐसा कुछ मेरे दिमाग में चल रहा था। लेकिन मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

बादशाह ने चिट्ठी ली, उसे एक बांस की नली में रखा, बांधा, चारों तरफ से सिली हुई एक थैली में रखा, और इस थैली को भी बांध दिया, और हम चारों को रहने की इजाज़त दे दी। मुखिया को एक शॉल और एक अंगरखी दी गई। कोतवाल और नायब ने मुझे अंगरखी भी नहीं दी, और हमें भेज दिया। अब, न सिर्फ़ हम, बल्कि महल के मुखिया, इतियाज़ खान और कादर खान भी अंदाज़ा लगा सकते थे कि चिट्ठी में क्या लिखा है। हमने पहली राशि सराय में हमारे लिए बना लंगर खाया और इशा की नमाज़ पढ़कर सो गए। हम दोनों, जो ज़मीन पर सो रहे थे, आपस में बातें कर रहे थे। इतियाज़ खान कह रहा था, “मंदिर तोड़ने से जो दौलत मिलेगी, उसमें मेरा भी हिस्सा है। भले ही मुझे शाही महल में जगह न मिले, लेकिन मुझे संगमरमर का महल ज़रूर मिलेगा।”

“आपने क्या सोचा, वघनजे? यह ऐसी जगह नहीं है जहाँ आपको सैलरी मिले और सिर्फ़ आपकी कविता की वजह से नौकरी मिल जाए।” कादर खान, जो किसी भी रंग के डैशिंग इंसान थे, लेकिन धर्म के बारे में बहुत कुछ जानते थे, ने कहा।

यह देश भी मुस्लिम है। उसे नहीं पता कि किसी और पीढ़ी में किसने इस्लाम अपनाया। असल में, उसे नहीं पता, क्योंकि वह किसी को बताना नहीं चाहता! जब डालिन बनारस आया, तो मैंने उससे भी बात की। इस समय, वह भी कहता था कि वह एक शुद्ध मुसलमान है जो एक अरब देश से आया है। लेकिन उसे अरबी या फ़ारसी का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। वह दोनों लोकल मिलिट्री भाषा में बात करता था, जिसमें अरबी के शब्द भरे होते हैं। हालाँकि एडमिनिस्ट्रेशन फ़ारसी में होता था, लेकिन ऊँचे अफ़सर इस मिलिट्री भाषा को जानते थे। लेकिन उन्होंने कभी एक-दूसरे से इस विदेशी भाषा में बात नहीं की। कहा जाता है कि आलमगीर बादशाह भी यह भाषा जानते थे। वे भी ज़रूरी हैं! अगर खानों की भाषा आती है, तो ही एडमिनिस्ट्रेशन पर मज़बूत पकड़ हो सकती है! खानों ने मुझे यही बताया।

उन्होंने पूछा, "अगर आप फेम तक नहीं पहुंचे होते तो क्या यह कम नहीं होता?" उन्होंने अपनी स्पीच को सपोर्ट करने के लिए इतियाज से कहा।

“जो जिहाद करता है, उसे वही मिलता है। जो धर्म के लिए अपनी जान देता है, उसे वही मिलता है। क्या आप जानते हैं कि दुनिया में क्या है?”

"क्या आपने तुधमंथ नहीं पढ़ा? तो मुझे बताओ।"

Machine Translated by Google

"सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ। दूध और शहद से भरी एक झील। न गर्मी है, न सर्दी, न हवा। जो घोड़ा तुम्हें वहाँ ले जाएगा, उस पर बैठने के लिए आरामदायक सीट है। तुम्हें कैसे पता कि कमल जैसे बड़े स्तनों वाली एक जवान औरत कमल जैसी है? उसके स्तन सुंदर हैं, उसके स्तन बहुत सुंदर हैं, उसकी योनि बहुत सुंदर है। उसका नाम री है। उसका शरीर पारदर्शी है। इससे, अंदर की हड्डियाँ माणिक में रेखाओं की तरह दिखाई देती हैं। ये रेखाएँ सफेद कांच में लाल शब्दों की तरह दिखाई देती हैं। प्रेग्नेंसी, बच्चे का जन्म और बच्चे के जन्म का सामान्य चक्र, और तो और, ये प्राकृतिक और स्वाभाविक हैं।

इनसे भी ऐसी औरतें बहुत पवित्र होती हैं। इस वजह से उनकी आँखें हमेशा गंदगी से भरी रहती हैं। वे अपने पति के अलावा किसी और को नहीं देखतीं। वे हमेशा अपने पति के शुक्रगुजार रहती हैं जिन्हें वे अपना पति मानती हैं। उनकी उम्र कभी नहीं बढ़ती। अगर उनकी नज़र आसमान से धरती पर पड़ती है, तो पूरा माहौल खुशबूदार हो जाता है। वे आईने से भी ज़्यादा चमकदार होती हैं। कोई भी उनके गालों पर उनकी परछाई देख सकता है। हर आदमी जो आसमान पहनता है, उसे ऐसा ही खूबसूरत रूप दिया जाता है। भले ही वे किसी भी उम्र में आसमान पहनें, उनकी उम्र तीस साल हो जाती है। इसके बाद उनकी उम्र नहीं बढ़ती। नहीं तो, उन्हें सौ आदमियों की उम्र मिलती है। देवताओं का बनाया हुआ एक महल और नौ हज़ार गुलाम उन्हें दिए जाते हैं! गहने

लात?"

इतियाज़ की तरफ़ से कोई आवाज़ नहीं आई।

लेकिन हुडुला उठकर रोने लगा। भांतिया घर से बाहर चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया। उम्बा के पास खड़े हुडुला ने सोचा, "कादर, तुम इतनी देर से बातें कर रहे हो! लेकिन तुमने किस पवित्र जगह और किस वजह की बात की, मुझे नहीं बताया?"

"खान साहब! मैंने इसका थोड़ा सा हिस्सा मिलिट्री भाषा के अनुवाद में पढ़ा है। लेकिन यह एक सूरह है। इस वजह से, मुझे याद नहीं है कि मैंने इसे कहाँ पढ़ा था। मैंने जो कहा वह सच है, है ना? इसका मतलब है, अल्लाह की कृपा माया पर है।"

"हाँ।"

तीसरा दिन। गाँव में चार-पाँच सौ लोग थे। वे भाग रहे थे और जूझ रहे थे। उनमें आदमी, औरतें, बच्चे थे। बच्चों को छोड़कर, सबके सिर पर बर्तन, घर का सामान, टोपियाँ और स्कार्फ़ थे। जो बच्चे झोपड़ी में ले जाए गए थे, उनके सिर पर भी सामान का एक बड़ा बंडल था। सभी किसान थे। उन्होंने ठीक से कपड़े नहीं पहने थे, उनका पेट भरा नहीं था, उनके बालों में तेल भी नहीं लगा था। आदमियों ने ट्यूनिक नहीं पहने थे। औरतों के कोट भी फटे हुए थे और उनकी पीठ पर थे। जब हम देख रहे थे, तो लगभग बीस

Machine Translated by Google

घुड़सवारों ने आकर ग्रुप को घेर लिया। जो ग्रुप भाग गया था, वह वहीं रुक गया। नहीं तो, बुखार की वजह से सब रुक जाते! उनके साथ जो बच्चे थे और जो ज़मीन पर लेटे थे, वे कांप रहे थे। उनमें से कुछ हाथ फैलाकर रो रहे थे। हम चारों घुड़सवारों के पास गए और रुक गए। हमारे कपड़े और घोड़ों के गहने देखकर घुड़सवारों ने सबसे पहले 'सलाम अलेकुम' कहा। हमने 'अलेकुम सलाम' कहा और ग्रुप से पूछा।

"सूअर टैक्स चुराकर भाग रहे थे। अगर हम दौड़कर आते और उन्हें घेर लेते तो वे भाग जाते।" एक घुड़सवार ने कहा।

भीड़ में से एक आदमी चिल्लाया, "टैक्स दिया! वे दुल्हन मांग रहे हैं!"

“सुवर! क्या तुम जज़िया के लिए रिश्वत मांगते हो? तो ये मुसलमान! जज़िया तो देना ही पड़ेगा। बादशाह दयालु है। जो मुसलमान बनेंगे उन पर जज़िया टैक्स मत लगाओ, ज़मीन का टैक्स भी मत लो, इसलिए आए हैं। अब मुसलमान बन जाओ। तुम्हें अपना घर, ज़मीन, गाय-बैल और पशुधन मिलेगा।” यह हवा चली। इसके साथ चार और हवाएँ मिलीं और बोलीं, “तुम सब मुसलमान बन जाओ और खुशी-खुशी रहो।”

हतारा चिल्लाया, "तुम कौन होते हो हमें अपना घर छोड़ने के लिए कहने वाले? अगर तुम्हारा घर बड़ा है, तो उसे जाने दो! अगर तुमने हमारे घर को छुआ तो!" उसने गुस्से से थूका।

सब लोग आपस में बहस करने लगे कि इस ज़ुल्म का क्या किया जाए। तभी इतियाज़ ने अपना घोड़ा भीड़ में डाल दिया और हाथ में ली तलवार से योद्धा की गर्दन पर बगल से वार किया। आधी गर्दन कट गई। योद्धा को राम को मारने का मौका नहीं मिला। भीड़ तितर-बितर हो गई। वे अपने चारों ओर हो रहे हमलों के बारे में सोचे बिना तितर-बितर हो गए। चूंकि हमलों की ताकत कम थी, इसलिए भीड़ को कवर करना मुश्किल था। बहुत से लोग भाग गए। कुछ जाल में फंस गए।

“सूअर कहाँ भागेंगे? वे कहीं भी भागें, हमारे सैनिक शिकार हुए बिना नहीं रहेंगे। वे क्या सोचते हैं, हमारे राजा!” वरन का चेहरा लाल हो गया। लाल रंग की तलवार ने राजा को मारा, उसने सोचा, “आप इस मुसीबत में क्यों पड़े? जज़िया वसूलना हमारा काम नहीं है। डाक पहुँचाने का काम हमारा है।”

“अरे, अगर तुमने अपनी दवाई ले ली तो तुमने थूका कैसे?”

Machine Translated by Google

"क्या तुम ऐसा नहीं करना चाहते? मैं उसे तुरंत नरक में भेज दूँगा। अब बताओ, तुम मुझे राइड दिलाओगे या नहीं?"

"अधिकारियों की मर्ज़ी के बिना किसी को भी मारना जुर्म है।" उसका चेहरा उतर गया। अपनी पहचान और काम का तरीका बताकर उसे मनाने के बाद, उसने उसे जाने दिया। काफ़ी दूर तक भागने के बाद, उसने सड़क पर कादर नांघोस की स्पीड धीमी कर दी, अही की नज़र से दूर। कहीं तलवार थी। मेरा भी मन किया कि इतियाज़ का गला काट दूँ। लेकिन अंजाम का ख्याल मन में आया और मैंने खुद को ढक लिया। फिर भी, आधी गर्दन कटे इस कातिल का शरीर कुछ कुत्तों की तरह नहीं हिला। पूरा गैंग कुत्तों के सामने से नहीं गुज़रता था। वे इन आदमियों को गुलाम बनाते थे, उन्हें टॉर्चर करते थे। वे उनके खूबसूरत बालों का इस्तेमाल अपने मज़े के लिए करते थे। मेरा अपना अनुभव मुझे यही बता रहा था। तभी मुझे शामली की तेज़ी से याद आई।

मैं उनसे फिर कभी नहीं मिला। अगर मैंने थोड़ी और कोशिश की होती, तो यह मुमकिन नहीं होता। उन्हें मुश्किल से उदयपुर महल साहिब के अंदर लाया जा सकता था। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। तीन बच्चों की माँ को बिना किसी वजह के कौन ले जाएगा? और अगर यह सब किया भी जाए, तो क्या फायदा? खैर? शायद इसके लिए भी इजाज़त मिल जाए। लेकिन संधा का क्या? लोग नहीं हँसेंगे? शामली भी हँसेगी।

मैंने फिर सोचा, जो लोग यहां से भागे हैं, उनका क्या होगा? वे सैनिकों से बचने के लिए जंगल में चले जाएंगे। वे पनाह के लिए भटकेंगे और पेड़ों की जड़ों और पत्तों पर आदिवासियों की तरह रहते रहेंगे। महाराणा तप और उनके अनुयायी, जो अकबर के सैनिकों से बचने के लिए जंगल में भटक गए थे, वे भी जंगल में भटकते होंगे। वे भी अपने चार-पांच साल में जंगलवासी बन गए होंगे।

डाली पहुँचकर मैंने उससे उदयपुर महल में देखे गए ज़ुल्म के बारे में बताने को कहा। मैंने सोचा, 'मुझे तुम्हें बताना ही चाहिए,' क्योंकि यह भगवान के नाम पर किया गया पाप था! लेकिन मैं तुम्हें कैसे बताऊँ? अगर मैंने तुम्हें नहीं बताया होता, तो मैं ज़िंदा नहीं बचता। थोड़ी ही देर में, मैंने दस शब्दों में सब कुछ बता दिया। चूँकि मैंने ऐसे कामों की वजह से सैकड़ों देवताओं के खत्म होने की कहानी सुनी थी, इसलिए मुझे उन्हें सुनने में भी ज़्यादा मज़ा नहीं आया। उसने भी यह कहकर बात खत्म कर दी, "भगवान तुम पर दया करें।" इसके बाद एक दिन राजा ने गर्व और जोश के साथ कहा, "सुना नहीं? मथुरा के केशवराज देवला ने भी वंश के उत्तराधिकार का फरमान जारी कर दिया है। इतना ही नहीं, राजपूतों में छोटे-बड़े सरदार सिर उठा रहे हैं। वे नए देवला बना रहे हैं। उन सबको सबक सिखाने का प्लान बन रहा है। जोधपुर इलाके में कुछ, उदयपुर पैलेस के सामने चंदावालय, उदयसागर झील के किनारे तीन देवला, उदयपुर के आसपास एकशेपनयाहार देवला, चिचूर में रेसा, आमेर में सहस देवला बन रहे हैं। वे रेगुलर तरीके से काम करते थे।

Machine Translated by Google

बादशाहों को हमेशा की तरह क्रेडिट मिलता है! वे तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक देश का आखिरी काफ़िर इस्लाम में कन्वर्ट नहीं हो जाता या मारा नहीं जाता। इतना बड़ा महल, जैसा पहले कभी किसी के लिए नहीं बना और बाद में कभी किसी के लिए नहीं बनेगा, उनके लिए एक लाइन में बनाया जाएगा। खुद देख लो!"

प्रोफेसर यहाँ वर्कशॉप के लिए आए थे, इसमें कोई शक नहीं। उन्हें अपने अनुभव से पता था कि वे ऐसे ग्रुप के अलावा कहीं नहीं रुकेंगे जो चर्चाओं, भाषणों और आम खबरों से भरा हो, और वे ऐसे ग्रुप के बिना कहीं नहीं रुक पाएंगे जो उड़ सके या उड़ सके। 'उनकी आदत है कि वे IP गेट-हाउस पर उतरते हैं। उनके रहने के लिए कोई जगह तो होनी ही चाहिए। उन्हें बातचीत के साथ तालमेल बिठाना आना चाहिए। उन्हें उन सभी को रखने के लिए एक बड़ा कमरा चाहिए। क्योंकि उन्हें सिर्फ़ सरकार या सरकार से पैसे पाने वाले ग्रुप ही बुला सकते हैं, इसलिए IP गेट-हाउस तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। अगर वे वर्कशॉप के लिए आए थे, तो यूनिवर्सिटी के किसी डिपार्टमेंट ने उनके लिए इंतज़ाम किया होगा। इस वजह से, उनका मेन पॉइंट मंदिर के गेट-हाउस में ही होगा। आप जाकर लेटर क्यों नहीं ले आते?' वह भी इसी मंदिर में आई थीं। 'प्रोफेसर की पहल पर, ऑल इंडिया प्रोग्रेसिव साइंस एसोसिएशन की मीटिंग यहीं हुई थी, इसी के लिए! जो लोग अपनी आवाज़ बुलंद कर रहे थे, उन्होंने यहीं पर ऑल इंडिया लेवल के विचारकों के तौर पर अपनी जगह बना ली थी! इस समय मीटिंग इतनी बड़ी थी कि छत पर एक बड़ा मंडप बनाया गया था। इस समय सभी भाषण मार्क्सवादी विचारों के थे। भारत में जाति के ज़रिए चल रहा वर्ग संघर्ष; साहित्य, कला, संगीत, धर्म और दूसरे मामलों में चल रहा वर्ग संघर्ष; पूजा, यात्रा, तीर्थयात्रा में चल रहा वर्ग संघर्ष; आयमया बुराया के नाम पर हो रहे शोषण का विषय उठाया गया। सुबह से शाम तक मैं इसी विषय पर भाषण, लोक नाटक, नाच; कॉकेशियन डांस वगैरह सुनता रहा। इस बार मैंने काशी शहर में कदम भी नहीं रखा। मैं विनाथ मंदिर नहीं गया, मैंने गंगा घाट भी नहीं देखा। क्या देखूं? शोषण के ज़ख्म! मज़दूरों का शोषण करके बनाए गए मंदिर और धर्मशालाएं, पूजा की उम्मीद दिखाते हुए। काशी नाम की शैतानियत फैलाने का कल्चर! प्रोग्रेसिव लीडर डॉ. रामविप यादव ने यहीं मुझसे बात की थी! मैंने उनसे सोचा, "डॉ. साहेब, आपने भी अपना नाम क्यों नहीं बदल लिया?" इस पर उन्होंने कहा, "मेरे माता-पिता कितने बेवकूफ़ थे, जो नर्क में रहते हुए भी मेरा नाम वही है।"

जब वह अपनी साइकिल से गेटहाउस की ओर जा रही थी, तो उसे एहसास हुआ, "हाँ। ऑफिसर बगलू सुइट नंबर दो में थे। अब वह वर्कशॉप में हैं। सोशल-साइंस लॉक।" बिल्डिंग के बारे में सोचते हुए, वह इस तरफ चली गई।

Machine Translated by Google

बिल्डिंग बड़ी थी। बेंच सभी क्लास से दिख रही थीं। अंदर, करीब साठ स्टूडेंट थे। पोडियम पर तीन सीटें थीं। यह साफ़ था कि बीच में बैठा ऑफिसर परमानेंट रेजिडेंट था। उसका लाल चोगा, दो हफ़्ते पहले साफ़ किया हुआ सिर, और दाढ़ी-मूंछ उसे एक क्रांतिकारी जैसा दिखा रहे थे। वह खिड़की के बाहर खड़ी अंदर देख रही थी। परमानेंटली, वह एक भेड़िये जैसा दिख रहा था। स्टूडेंट उसी लाइन में बैठे थे जैसे वे हमेशा क्लासरूम में बैठते हैं। हर कोई अपने अंकल के हाथों में हाथ उठाता, और इजाज़त मिलने के बाद, वह अगले के बारे में सोचता। उसे याद था कि उसने छोटी उम्र में ऐसी वर्कशॉप में हिस्सा लिया था।

एक बुद्धिमान व्यक्ति ने सोचा, "कार्यशाला को बनारस ले जाने का कारण यह है क्या?"

राजा, राखी रंग की शर्ट और पैंट पहने हुए, उसके पास खड़ा था। लेकिन राजा ने कहा, "मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।" राजा पहले स्टूल पर बैठ गया। राजा हमेशा इसी तरह बोलता था, "यह तुम्हारी जगह है। इसका नाम 'बनारस हदम पूर्वपीठ' है। तियवादी मालवीय लोगों ने तियवादी पूंजीपतियों और मारवा की मदद से काशी शहर में यह मंदिर बनवाया, जो भारत का सबसे महत्वपूर्ण मंदिर है। इसी मंदिर में, मशहूर उगपति बिलाय ने एक बड़ा विनाथ मंदिर बनवाया। नतीजतन, इन सभी लोगों ने जितना सपना देखा था, उससे कहीं ज़्यादा बनाया है। तथाकथित 'भारतीय संस्कृति' के मामले में, धीमे-धीमे उक्राद की पहली गति को आगे बढ़ाना और उसे साफ करना ज़रूरी है, है ना?" "लेकिन इस मंदिर में, शिव, शिव, वैकया, शिव, सिखाए जाते हैं?" उसी लड़के ने फिर सोचा।

"हमें इस बारे में कोई आइडिया नहीं है। लेकिन जो टीचर यह सब्जेक्ट पढ़ाते हैं, वे सभी सोशल, रिलीजियस और मोरल क्रिटिक हैं। उन्हें रिफॉर्म करने की ज़रूरत है। इसी वजह से, आज इस वर्कशॉप में इस डिपार्टमेंट से बहुत सारे स्टूडेंट्स आए हैं। इस डिपार्टमेंट से कुछ टीचर्स भी आए हैं। इसी वजह से, आज की वर्कशॉप बहुत सक्सेसफुल रही है, मैं यह अनाउंस कर रहा हूँ!" इसके बाद पूरी असेंबली ने तालियों की गड़गड़ाहट से इसका स्वागत किया।

इसी हंगामे के बीच एक लड़का उठा। उसने सोचा, "अगर ऐसा है तो पास में ही अलीगढ़ मुस्लिम कोर्ट भी उतना ही बर्बाद हो गया होगा। आपने वहां वर्कशॉप क्यों नहीं की? क्या आप इसके बाद वहां भी वर्कशॉप करने वाले हैं?"

पूरी मीटिंग खत्म हो गई। प्रोफेसर शनि ने कुछ नहीं कहा

Machine Translated by Google

साजिश रची, कि वे मन ही मन यहाँ आने को तैयार हैं। इसके बाद सामू ने हमेशा की तरह कहा, “जब हम अपने समाज की रक्षा कर रहे हैं, तो हम तुरंत अपने गरीब, हाशिए पर पड़े भाइयों पर उंगली उठाना चाहते हैं। आप भी यही सोचते हैं, तो आपका बैकग्राउंड RSS से ही होगा। आप भी हमारी वर्कशॉप के लिए कुछ करने यहाँ आए हैं। फिर भी, एक बेसिक सच समझिए। बसन्याकों में कॉमन सेंस है। हाशिए पर पड़े लोग, जो हमेशा अपने होने से डरते रहते हैं, उनमें ऐसी कॉमन सेंस नहीं हो सकती। जब तक हम हाशिए पर पड़े लोगों को अपनी संस्कृति को बनाए रखने और बढ़ाने का अधिकार नहीं देंगे, तब तक कोई डेमोक्रेसी नहीं होगी, कोई इनटॉलेरेंस नहीं होगी। बसन्याकों की लापरवाही देश के लिए घातक है। इतिहास की इस अहम घटना को किसी को नहीं भूलना चाहिए। "नहीं।"

तारों की इतनी ज़ोरदार आवाज़ आई कि हॉल की छत उड़ गई। सोचने वाले का चेहरा पसीने से लथपथ था।

लामिया का मन किया कि मीटिंग में घुस जाए और सैकड़ों उदाहरण देकर प्रोफेसर की बातों को गलत साबित कर दे, लेकिन वह यहाँ अजनबी थी। इसके अलावा, उसे याद आया कि अब वह उसके करीब आ गई थी। वह रुककर उससे मिलना भी नहीं चाहती थी। वह मुड़ी और चलने लगी।

‘यह कहानी यहीं खत्म होती है? वजा जहान डाली के पास लौट आया। और क्या करना है? औरंगजेब को मारना नहीं है। इन अंगारकों के मुंह में जाने का कोई तरीका नहीं है। इतिहास कहता है कि औरंगजेब अड़तीस साल तक ज़िंदा रहा। अपने मन की कहानी पर चलने का कोई दबाव नहीं है। कोई ऐतिहासिक प्लॉट या डॉक्यूमेंट लिखते समय, हमेशा अपने इरादे में पूरी तरह से ऐतिहासिक होना चाहिए। नहीं तो, अपजानी ने लिखा, ऐसे इतिहास का ब्यौरा लिखा जाना चाहिए था। वह खुशहाल इतिहास हमारे अपने तरीके से रुकने वाला नहीं है। अगर कदंब ऐसी बातें करना बंद कर दे, तो इमोशनल तकलीफ भी महसूस होती है। इसके बाद, मुझे एहसास हुआ कि मुझे शमाला देवी की कहानी कहीं पहुंचानी है। लेकिन मैं क्या करूं?’ लमी दो दिन तक सोचती रही लेकिन कुछ नहीं सूझा।

काशी आए हुए उन्हें दो महीने हो चुके थे। उन्होंने नॉवेल का वो हिस्सा लिख लिया था जिसमें इस जगह के बारे में बताया गया था। धर्मशाला के मैनेजर, जो हर आठ महीने में बिस्तर बदलते थे, ने उनके रहने का भी इंतज़ाम कर दिया था। कोई उन्हें परेशान न करे, इसके लिए उन्होंने अपने जान-पहचान वाले की धर्मशाला में भी कुछ दिन रुकने का इंतज़ाम कर लिया था। नॉवेल के नज़रिए से काशी की कहानी की ज़रूरत भले ही खत्म हो गई थी, लेकिन उनके मन में इस जगह की चाहत अभी खत्म नहीं हुई थी। इस दौरान, वापीथा की लाइब्रेरी में बैठकर उन्होंने इस समय में काशी के बारे में डिटेल में जानना शुरू कर दिया था।

Machine Translated by Google

टीचर, जो इस सब्जेक्ट को लेकर बहुत जोशीले और जोशीले थे, ने उन्हें वहीं बैठकर टेक्स्ट पढ़ने और नोट्स लेने की भी इजाज़त दे दी।

एक दिन अचानक उनकी स्मृति आई और उन्होंने निम्नलिखित टिप्पणी की: 'महमूद गजनी के आक्रमण के बाद काशी पश्चिम भारत के पंजाब के कामिर के सुशिक्षित लोगों के बसने के कारण उत्तरी भारत का एकमात्र नगर बन गया। उसी समय उसने वहां के मंदिरों को नष्ट कर दिया, वहां के बहुमूल्य ग्रंथों को जला दिया और वहां हजारों भिक्षुओं के संपादन का उदाहरण होते हुए भी काशी के पंडित सावधान नहीं रहे। औरंगजेब द्वारा इनके विनाश के बाद पंडितों ने अपने घरों में विद्यार्थियों को रखा और शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाई। तुम शिक्षण संस्थाओं का विनाश क्यों देखते हो?

असली काशी अब नहीं रही। आज की काशी में जो बसन मंदिर, घाट और मशान हैं, वे मराठों ने बनवाए थे। काशी को मुसलमानों के चंगुल से आज़ाद कराने के बाद, मराठी शासकों और अधिकारियों ने उस मंदिर की जगह पर नया मंदिर बनाने की कोशिश की, जो उसके खंडहरों की मदद से बनाया गया था। इसके लिए उन्होंने पैसे, धन और पैसे का भी इस्तेमाल किया। एक बार मंदिर की जगह ले लेने के बाद किसी भी मुस्लिम शासक को उसे वापस करने का अधिकार नहीं है।

इसके बाद बनारस इंजाओं के हाथ लग गया। मराठों ने इंजाओं को जितना चाहें उतना पैसा देकर और दूसरे राजाओं को मिलिट्री मदद देकर विनाथ मंदिर की असली जगह पाने की बहुत कोशिश की। लेकिन इंजाओं, जिनकी हिंदुओं और मुलिस के बीच हमेशा दरार बनाए रखने की पॉलिसी थी, ने मना कर दिया। बाजीराव का एकमात्र जवाब मस्जिद को तोड़कर वहां मंदिर बनाना था। लेकिन बालाजी बाजीराव (1740-1771) 1742 में अपनी सेना के साथ बनारस में कुछ करने के इरादे से मिजापुर आए। यही अवध के नवाब सदर जंग के लिए प्रेरणा थी। उन्होंने पंडितों को इकट्ठा किया और धमकी दी कि अगर बालाजी बाजीराव ने काशी पर हमला किया तो वे उन सभी को मार डालेंगे। डरे हुए लोगों ने बालाजी बाजीराव से वापस लौटने की रिक्वेस्ट की। बाजीराव चले गए। नौ सौ साल पहले, मुल्तान में सूर्य मंदिर पर कब्जा करने वाले मुसलमानों ने, जिसे तुर्कों ने ले लिया था, सूर्य मंदिर को नष्ट करने की धमकी दी थी और उन पर हमला करने वालों को भगा दिया था। अब, खत्म होने के डर से, उन्होंने बाजीराव को वापस भेज दिया। पहले, हज़ारों लोग एक-दूसरे को श्रद्धांजलि देते थे।

Machine Translated by Google

जब परंपरा थी तो इस ज़माने के बनारस के लोग इतने डरे हुए क्यों थे? ऐसा लगता है कि औरतों की उन्हें हराने की कोशिश कामयाब हो गई थी।

बालाजी बाजीराव ने फरवरी 1759 में रामजी अनंत शांडे (संघिया) को लिखा। उसमें उन्होंने लिखा, "हमें शुजा औला से दो-तीन बातें तय करनी हैं। उनसे बनारस, इलाहाबाद और अयोध्या छीन लो। उन्होंने बनारस और अयोध्या माया विडला को देने का वादा किया था (1757 में)। इलाहाबाद का मामला अभी भी बातचीत में है। अगर इस मामले में कोई आसान समझौता हो, तो कर लो।" (हिस्टोरिकल? लिस्ट वगैरह पेज 166)। लेकिन शुजा औला, जो बनारस और अयोध्या छोड़कर देने की बात कर रहे थे, उनका मन कुछ और ही था। दिल्ली का वज़ीर उन पर ऐसा करने का दबाव बना रहा था। एक बार जब वह जंगल लौट आए, तो वह गद्दार थे। है ना?

अकबर को छोड़कर, हर मुस्लिम शासक हिंदुओं से टैक्स लेता था। औरंगजेब ने टैक्स इतना बढ़ा दिया कि बर्दाश्त के बाहर हो गया। उसकी मौत के बाद भी, वहां आए सूबेदारों, बादशाहों और नवाबों ने टैक्स कम नहीं किए। मराठों ने काशी, इलाहाबाद और यज्ञ को अपने कब्जे में लेना आसान बनाने की कोशिश जारी रखी। मुसलमान उन्हें जीतकर या बेचकर कभी नहीं हरा सकते थे, लेकिन वे विनाथ मंदिर को उसकी जगह फिर से बनाकर मुसलमानों को कभी नहीं हरा सकते थे। उनके बाद आए अंग्रेजों ने मुसलमानों का साथ दिया। नाना फडणवीस ने भी शर्त रखी थी कि अगर वे विनाथ मंदिर को तोड़ना चाहते हैं, तो वे टीपू सुल्तान की लड़ाई में उनकी मदद करेंगे। लेकिन अंग्रेजों ने यह नहीं माना। इससे अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया में बिजली पैदा हो गई।

1669 में औरंगजेब के गिराए जाने के बाद 1775 तक विनाथ मंदिर नहीं बचा था। छोटा 'मंदिर', जिसे अब 'यानवापी मस्जिद' कहा जाता है, अहियाबानी ने लगभग 1775 में बनवाया था। 1857 के विद्रोह के दौरान, कुछ मुसलमानों ने इस छोटे मंदिर पर भी लाल झंडा फहराने की कोशिश की। इससे कोली सेना की हार हुई।

अंग्रेजों ने अपने राजनीतिक मामलों के लिए जो नीतियां अपनाई थीं, उन्हें भारत में संवैधानिक आधार दिया गया। नतीजतन, मुसलमानों को उन मंदिरों की जगह लेने के लिए मजबूर होना पड़ा जो उन्होंने नहीं बनाए थे। 1803 में, लॉर्ड बेलुमुचिया नाम के एक अंग्रेज ने लिखा, "...औरंगजेब की बनाई मस्जिद के पास मीनारें देखकर मेरे मन में एक तरह का अपराधबोध हुआ। मंदिर की जगह को लेकर झगड़ा तब खत्म हुआ जब सरकार ने पवित्र शहर में पवित्र मंदिर की जगह उसके पुराने मालिकों को दे दी, जो उस समय मौजूद भी नहीं थे।" (जोसेफ बेकेट वेलेस्ली। वॉयेजेज एंड हिस्ट्री ऑफ लॉर्ड वेलेस्ली, पार्ट 1, पेज 90 लंदन। 1811) मुगल शासन खत्म होने के बाद भी।

Machine Translated by Google

आज तक इस टैक्स पेमेंट का क्रेडिट वही है। उस देश के बारे में क्या कहा जाए जो विदेशियों के बनाए इस क्रेडिट को हटाने के बजाय उसे अपने पास रखे हुए है?

'अगर मैं फार्म हाउस से अपाज्या अय्याशकीत वटला लेकर सिर्फ़ किताबों के आधार पर लिखने बैठ जाता, तो काशी के बारे में नॉवेल स्टाइल में हिस्सा लिखना मुमकिन नहीं होता। इतना ही नहीं, मैं इस शहर के बाद के इतिहास को भी नहीं समझ पाता। कितनी किताबें, कितने आर्टिकल, कितने रिसर्च वर्क, पेशवा के डॉक्यूमेंट्स के ट्रांसलेशन, यूरोपियन भाषाओं में नैरेशन! लाइब्रेरी में इन आहों ने भी मुझे किताबों में कुछ रेफरेंस दिए हैं।' लेमिच का मन इसी विज़न से भर गया था।

हालांकि उन्हें आए हुए पांच महीने हो गए थे, लेकिन काशी छोड़ने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी।

Machine Translated by Google

14

मैं काशी गया और नौकरानी के बारे में और जानकारी ली। मैं जनाया की सर्विस से थक गया था। हुडुला की सिफारिश पर, मैंने खुद को लिखने और उसे तैयार करने के ऑफिस में नियुक्त करवा लिया। हालांकि गुलाम की पोजीशन में कोई बदलाव नहीं हुआ, लेकिन मुझे ऑफिस के काम के लिए सैलरी मिलने लगी। मुझे हुडुला के घर में ही रहना और खाना पड़ता था। इसलिए, मैं सैलरी का आधा हिस्सा उसे दे देता था।

मुगल बादशाह का एक मामूली नौकर होने के नाते, दरबार में भी मेरी बहुत इज़्ज़त थी। सबने मेरी तारीफ़ की कि मैं बिना किसी रुकावट के काफ़िरों का बड़ा महल देखने गया। सबने मुझे इसके लिए बधाई दी। लेकिन मेरा दिल अब औरंगज़ेब की फ़ौज की तबाही देखना और देखना चाहता था। मैं अपनी तलवार से बादशाह का सिर काटने और कई घुड़सवारों की धावा बोलने का इंतज़ार कर रहा था। कभी-कभी मुझे माया के दबाव से शर्म आती थी।

इस दौरान, मुझे मिली खबरों का फ़ायदा उठाते हुए, मैं शामले से चार बार मिला था। मुझे घुड़सवारी वाली मुलाकात याद आ गई। शबाना बेगम भी इन मुलाकातों में हमारे साथ होती थीं। हमारी अविवाहित भाभी, तबस्सुम, के पति थे, और भावना को भी यह अच्छा लगता था। इन मुलाकातों के लिए, हम घोड़े पर जाते थे, और हम उनके लिए खाना-पीना भेजते थे। हम उनके बच्चों को भी भेजते थे। मुझे उनसे बहुत प्यार था। मैं उनके आस-पास जमा हुए बाकी दो बच्चों को भी अपने साथ ले जाता था।

एक दिन मैंने उससे पूछा, “शमले, क्या मैं तुम्हें पैसे देकर गुलामी से आज़ाद कर सकता हूँ या तुम्हारे मालिक को तुम्हें आज़ाद करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ? तुम जो भी करोगी, शबाना बेगम तुम्हारी जितनी मदद कर सकती हैं, ज़रूर करेंगी। मैं भी खुद को गुलामी से आज़ाद कर सकता हूँ। मुझे कुछ सैलरी मिलती है। क्या तुम दोनों एक हो?”

“हेकसंशय आह?े” ितनंपटकन िवचारलं.

“का?”

“तुम भी मूर्ख हो...” उसके शब्द गले में अटक गए। हमारा मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

Machine Translated by Google

वह नहीं चाहता था, उसका चेहरा अचानक उतर गया। उसकी जीभ उसके दांतों के नीचे फंस गई।

'इसमें नया क्या है? फिर भी, दोनों के साथ खुशी-खुशी रहने में क्या दिक्कत है?' यह एहसास इतना मज़बूत था कि मैंने बिना सोचे-समझे यह करने की आज़ादी महसूस की। एक बार जब यह बात मेरे दिमाग में आ गई, मैंने यह सब देखा और सुना; तो फिर बिना खाने के साथ रहने की कोई गुंजाइश नहीं है, है ना?

लेकिन माया ने एक शब्द भी नहीं कहा। मेरा दिमाग खराब हो गया था। मुझे यह सोचने की भी समझ नहीं थी कि उसकी फीलिंग्स क्या होंगी। इसके बाद, मैं तीन महीने तक उससे मिलने नहीं गया। हालाँकि वह एक गुलाम थी, लेकिन दशदखान से उसके दो बच्चे थे। वह उससे शारीरिक रूप से भूखी थी। हालाँकि वह एक गुलाम थी, लेकिन उसने एक शानदार ज़िंदगी जी। यह सब छोड़कर, बीती बातों को याद करके, और एक ऐसे पति के साथ गरीबी में दिन बिताने में कौन सी समझदारी है जो पति नहीं है? हाँ। उसने भी यही सोचा होगा। नहीं, वह हिली नहीं, लेकिन उसका दिल दुखी था। लेकिन इससे हालात नहीं बदले।

इस दौरान शिवाजी के बारे में खबरें आईं। सिर्फ़ माया दरबार में ही नहीं, दलितों में भी। बीमार होने का नाटक करके वह शांति जैसे धार्मिक काम करता, और लोगों को तोहफ़े में फल और सब्ज़ियाँ भेजने के बजाय, अपनी बॉडी को फलों की टोकरी में लपेटकर सो जाता और भाग जाता। बाद में, जांच के दौरान पता चला कि वह अपनी बॉडी को फलों की टोकरी में लपेटकर मथुरा चला गया था। उसे पकड़ने के लिए घुड़सवार दक्षिण भेजे गए। लेकिन वह नहीं मिला। अब जब शिवाजी अपने देश लौट आया था, तो वह एक-एक करके अपनी कला सीख रहा था, लोग कह रहे थे। मुझे वह साधु याद आया जो मुझे काशी में गंगा घाट पर मिला था और जिसने भविष्यवाणी की थी कि शिवाजी महाराजा बनेंगे। अब मुझे समझ आया कि वह दक्षिण जाकर मथुरा चला गया था। वहाँ दाढ़ी, मूंछ और बाल मुंडवाकर साधु के वेश में पुवला यज्ञ में गया और उसके बाद रास्ते से मराठा-दशा पहुँच गया। पच्चीस दिन बाद! पूरे शहर के लोगों की नज़र में वह एक आदर्श हीरो बन गया था। हर जगह उसकी चर्चा थी। 'हमने उसे दरबार में देखा था,' अब हर कोई उस पर गर्व महसूस कर रहा था। जो लोग वहाँ नहीं गए थे, उनमें से कई ऐसे भी थे जिन्होंने उसे नहीं देखा था। जो लोग बादशाह पर गर्व कर रहे थे, वे भी बिना रुके शिवाजी की चंडैया, शारि, संगवधन और तान की तारीफ़ कर रहे थे!

इस बीच एक और खबर आई। बुंदेल का छसाल शिवाजी के पास गया और उनसे सेना में भर्ती होने की रिक्वेस्ट की। जब औरंगजेब ने राज्य जीतने के लिए युद्ध का ऐलान किया, तो इसी छसाल ने औरंगजेब की मदद की थी। बाद में दोनों के बीच मतभेद हो गया। औरंगजेब सेना को लेकर इतना जुनूनी था कि आखिर में लड़ने की बारी उसकी ही आई। जयपुर

Machine Translated by Google

मेरे राजा का बेटा छह साल की उम्र में औरंगजेब से शादी कर लेता। उसने छह साल तक औरंगजेब की तरफ से लड़ाई लड़ी थी। लेकिन अपने बेटों की मौत और अपने धार्मिक मंदिरों को टूटते देखकर, उसने औरंगजेब के पास लौटने से मना कर दिया। इसलिए, आया शिवाजी से मिला जो भाग गया था और शिवाजी की सेना में कमांडर बनना चाहता था। शिवाजी ने कहा, "हमारी सेना में लड़ने के कई तरीके हैं। लेकिन अकेले मारस से लड़ने से कोई फायदा नहीं होगा। अपने देश जाओ और मुगलों से उठ खड़े होने की अपील करो। मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा।" अब छसल वापस बंडल में आ गया है। वहां के मुगलों की तरह किसी में भी आवाज उठाने की हिम्मत नहीं थी। लेकिन बंडल खंड के लोग मथुरा में केशवराय मंदिर के टूटने से भी नाराज थे। बादशाह ने अपने ट्रस्टी, अकबरनामा और आईने अकबरी के लेखक, अद-उल-फसल को, बगावत करने वाले बादशाह अकबर के बेटे सलीम को गिरफ्तार करने के लिए भेजा था। इस बार, सुलेमान ने अपने दोस्त बंडल के वीर सिंह को अद-उल-फसल के रास्ते में उसे मारने के लिए भेजा था। वीरसंह ने क्या किया? बाद में, सलीम जहांगीर, जो गद्दी पर बैठा, ने वीरसंह को केशवराय मंदिर बनाने की इजाजत दे दी थी। मुस्लिम राज में कहीं और धमाया के लिए मंदिर बनाने की इजाजत के बिना! बंडल खंड के निवासियों की इस मंदिर में खास दिलचस्पी थी। बंडल लोगों ने छसला के नेतृत्व में विद्रोह की घोषणा की क्योंकि औरंगजेब ने मंदिर को नष्ट कर दिया था और उसके बचे हुए हिस्सों का इस्तेमाल पैदल सैनिकों के रूप में उसी जगह पर मस्जिद बनाने के लिए किया था। इसलिए, राजा को वहां पैसा भेजने में परेशानी हो रही है।

ये सारी बातें मुझे हुलदा से समझ में आईं। हर बार शिवाजी का ज़िक्र बहुत ही नफ़रत से होता था। वे छसला को 'नरक की दुनिया से बचकर आया एक पत्र' कहते थे। क्योंकि मैं उनकी सोच और उनकी भाषा जानता था, इसलिए मैं उनकी बातों से असली हालात समझ सकता था।

उस समय अचानक मेरे मन में एक ख्याल आया। 'मैंने अपने पेट में छुरा न घोंपकर बहुत बड़ी गलती की और मैं शारीरिक और मानसिक रूप से कितना कमज़ोर हो गया था। मुझे कितने साल ऐसे जीना चाहिए? क्या मुझे शिवाजी महाराज जैसा नहीं बनना चाहिए, जो औरंगज़ेब के चंगुल से बचकर अब अपना साम्राज्य बना रहे हैं? क्या मुझे सिर्फ़ इसलिए खुद को नामर्द मान लेना चाहिए क्योंकि मैंने अपनी सेक्सुअल पावर खो दी है? हिंदुस्तानी लोगों के इतिहास में कई नामर्द मिलिट्री कमांडर हुए हैं जो बहुत सफल रहे हैं। हिंदुओं ने हमें ऐसे कई लोगों के बारे में बताया है।'

मैं पूरी रात सो नहीं पाया। दूसरे दिन, शुरू से ही मेरे मन में शक पैदा होने लगे।

Machine Translated by Google

गरीबी में जीवन जीने और सार्वजनिक जीवन में लंबा समय बिताने के बाद, अब शिवाजी जैसी हिम्मत की उम्मीद कैसे की जा सकती है? जब तक शांति है, ऐसे ही जीना चाहिए। यही खुशी का रास्ता है। लेकिन सिर्फ दो दिनों में, एक आलसी कुत्ते की तरह, यह खाना खाते हुए, मुझे दुनिया से नफरत होने लगी। मुझे परवाह नहीं है कि मैं कितने लोगों को मारूंगा या कितने घोड़ों को मारूंगा। भले ही यह सिर्फ एक दिन के लिए हो, मैं दुनिया को अपने जैसा ही जीऊंगा, यह भावना एक हफ्ते में और मजबूत हो गई। 'मैं भी आसानी से बाल, दाढ़ी, मूंछें बढ़ा सकता हूं और सन्यास का वेश धारण कर सकता हूं। तभी मैं शिवाजी जैसा बनूंगा। इसके अलावा, शिवाजी की तरह मेरे पीछे पड़ने की कोई संभावना नहीं है। यानी, अगर कोई मुझे रास्ते में रोककर चेक करेगा, तो मैं 'सूता' जैसा हो जाऊंगा। एक बार मुसलमान बन गया और फिर से अपना धर्म बदल लिया, तो मेरा मरना तय है, मुझे याद आया। कोई वजह बताते हुए, मैं आलमगीर द्वारा सजाए गए दरबार को एक बार फिर देखना चाहता हूं, अगर नहीं, तो मैं सरकारी इजाज़त ले लूंगा, भले ही वह संबंधित न हो। मैं उसे आया के पास ले गया और वहाँ से आर्या की नज़र हट गई और बंडल खंड पास में ही है। एक बार वहाँ पहुँच गया, तो नहीं जाऊँगा। फिर मेरे मन में आया, हमें मराठा देश नहीं जाना चाहिए। शिवाजी के देश में जाकर शांति से जीना मुमकिन नहीं है, ऐसी भ्रम की ज़िंदगी जीना मुमकिन नहीं है। लेकिन, इस दलीपति के साथ सिर्फ़ छसल राजा का जुड़ना सही रहेगा जो आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहा है। मन के विचार साफ़ होने लगे, और कॉन्सन्ट्रेशन भी थोड़ा शांत होने लगा।

जैसे ही मेरा मन शांत होने लगा, मेरे मन में एक और ख्याल आया। मुझे साधु बनकर रहना है, मुझे साधु ही रहना है, मैंने एक बार फिर मन में सोचा। इसके अलावा, मेरा इहाम है, देवगढ़ खानदान का बेटा। अगर वह भी चला जाए, तो हम उसे अपने साथ क्यों नहीं ले जाते? वह दासदखाना के घर में बड़ा हो रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि वह सिपाही बनेगा। भविष्य में उसे मंदिरों में सेंधमारी या जजिया वसूलने का काम दिया जाएगा। अगर हम उसे अपने साथ ले गए, तो किस्मत खराब हो जाएगी। मैं इस बारे में शामले से आखिरी बात करने के लिए घौवन गया।

जैसा शबाना बेगम ने कहा था, मैं हमेशा की तरह गोवा गया था। थोड़ी देर बाद मैं शामला आ गया। माया के मन में शक था। उसने पहले ही साथ रहने से मना कर दिया था। अब, अगर माया ने तिनंदशाद खान को बता दिया कि वह क्या सोच रही है? तो यहां से जाने से पहले ही मेरा मन मेरे शरीर से अलग होकर ज़मीन पर गिर जाएगा। यह ख्याल यहां आने से पहले मेरे मन में नहीं आया था। मेरे मन में एक वॉर्निंग सिग्नल आया। वह एक नानी की तरह खुशी-दुख की बातें करती और फिर यहां से चली जाती।

लेकिन शामलया, जो पास आ गई थी, उसके चेहरे पर कन्फ्यूजन था। वह बिना कुछ कहे सामने बैठ गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। आखिर में, मैंने बात शुरू की, "आप कैसे हैं?"

Machine Translated by Google

"छह महीने हो गए और तुम यहाँ नहीं हो? तुम्हारा गुस्सा होना तो बनता है! हम दोनों एक ही देश से हैं, तो तुम्हें भी बताना चाहिए, मैंने मन ही मन सोचा। चार पत्नियाँ, फिर भी किसी को नया अट्रैक्शन मिला, और अगर तुम उनमें से किसी एक को तलाक देकर उसकी जगह ले लो, तो कोई और रास्ता नहीं होगा। मैं ऐसे माहौल में रहता हूँ! मैं बिना फिजिकल रिलेशन के शादीशुदा ज़िंदगी का सपना भी कैसे देख सकता हूँ? मैं पंद्रह साल का था जब पकड़ा गया था। इसके बाद, मैं आज तक इसी माहौल में रह रहा हूँ! देखता हूँ। तुम्हारे आइडिया का क्या हुआ?"

मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। मैंने उसके चेहरे को देखा। उसके चेहरे पर पक्का इरादा था। मैंने सोचा, "तुम मुझे ऐसे क्यों देख रही हो? मैं साँस नहीं ले पा रही हूँ।"

क्या आप ऐसा सोचते हैं?

"लेकिन मेरी ज़िंदगी के कुछ अरमान हैं," मैंने उसे काशी और छासा के बारे में बताया और चला गया, "मैं उदयपुर पैलेस से परमिशन लेकर तुमसे मिलने आऊंगा। क्या तुम अपने बच्चों के साथ यहां से निकलने का कोई रास्ता निकालोगे? अगर तुम्हें यहां से तीन दिन के लिए निकलने की परमिशन भी मिल जाए, तो भी काफी होगा। मैं एक जगह घुस गया, यह सोचकर कि किसी बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं आसानी से बुंडला इलाके में जा सकता था। ऐसा नहीं है कि वहां कोई खुशहाल ज़िंदगी मेरा इंतज़ार कर रही होगी। इसके अलावा, मैं यहां से सिर्फ़ खुशहाल ज़िंदगी जीने के लिए नहीं, बल्कि आज़ाद होने के लिए निकला हूं! मैं हवा में मरने के लिए तैयार होकर जाऊंगा..."

कुछ सोचने के बाद उसने कहा, "लेकिन मुझे किसी को यह नहीं बताना चाहिए कि मैं राज्य के बाहर लड़ने जा रही हूँ। अगर मैं यहाँ से आपके साथ रहने का फ़ैसला करती हूँ, तो शबाना बेगम मेरा साथ ज़रूर देंगी। कम से कम एक हफ़्ता तो उनके लिए काफ़ी होगा। दशद ख़ान को भी इन दोनों बेटों से कोई मतलब नहीं है। उसने ऐसे कई बेटे कहीं इकट्ठा कर रखे हैं। बेगम साहिब को ज़रूर लगता है कि ये बेटे पर्दे के पीछे राज कर रहे हैं। आप भी अगली कहानी शुरू कर सकते हैं।"

Machine Translated by Google

15

जब तक वह अमेरिका लौटा, उसके सिर और दाढ़ी के बाल वापस उग आए थे। दो हफ़्ते बाद, उसके सिर के बीच के बाल, जो दिख रहे थे, मर गए। इस उम्र में भी, अपाया दोयावन, जिसके दाढ़ी के बजाय घने बाल थे, गर्व से हाथ हिला रहा था। यह उससे नहीं, उसकी माँ से आया था। उसने एक बार फिर खुद से कहा कि दाढ़ी और धरती का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है, और आईने में देखकर वह खुद पर मुस्कुराया।

इसके एक दिन बाद, मीटिंग के लिए एयरपोर्ट जाते समय, उसने लैम को इकॉनमी क्लास में चेक-इन करने के लिए लाइन में देखा। क्योंकि उसे इकॉनमी क्लास के बारे में पता नहीं था, इसलिए वहाँ कम लोग थे। इसलिए वह लाइन में खड़ा नहीं होना चाहता था। इसलिए वह उसके पास गया और कहा, “हाय लैम! क्या तुम्हारे एरिया में अभी तक कोई फ़ोन लाइन नहीं है? मैंने तुमसे कॉन्टैक्ट करने की बहुत कोशिश की। तुम इस मीटिंग में गई थीं, मैं भी वहाँ गया था। अगर तुमने पहले ही कह दिया होता, ‘मैं इकॉनमी क्लास में नहीं उड़ सकती’, तो मैं तुम्हें इकॉनमी क्लास लेने की सलाह देता।”

"बस ढाई घंटे हैं! अगर मैं कहीं भी बैठ गई तो क्या होगा?" वह हँसी।

"मैं बिना बात किए रह सकता था।"

“अगर मैं आकर आपकी कार में बैठूं, तो मुझे इतना खर्च आएगा। सरकार इसका पेमेंट नहीं करेगी, लेकिन अगर आप आकर हमारी कार में बैठेंगे, तो एयरलाइन आपसे चार्ज नहीं लेगी। यानी, अगर जगह हो तो!”

"मुझे खून की परवाह नहीं है, मुझे कारण पता है। मैं आपसे प्लेन में मिलूंगा।"
आप।"

वह उससे बात करना चाहती थी, और वह उससे सवाल पूछना चाहता था। वे दोनों एक-दूसरे के पास बैठ गए। वह भी उससे बात करना चाहती थी। वह भी उससे सवाल पूछना चाहता था।

उसने पूछा, “यहां हर कोई आपके आने का इंतज़ार कर रहा था. आप क्यों नहीं आए?”

Machine Translated by Google

उसकी आँखों में स्नेह और वात्सल्य के मिले-जुले भाव से अयंत ने उसे देखते हुए कहा, “काली पीक, इन शब्दों का क्या अर्थ है? घर में जगह नहीं है, इसलिए मुझे सुबह बिस्तर पर जाना होगा, ओह के!”
लेकिन..."

“तुम्हारा ईगो बहुत बड़ा है। सॉरी! मुझे एक सेफ इमेज चाहिए!” उसने भी उनकी नज़र पकड़ी और दूर चला गया।

अगर वह इस बात पर बहस करने लगती, तो वह और भी चुप रहती, इसलिए उसकी आँखों में देखकर वह चौंक गई। उसने तुरंत प्यार से पूछा, “बताओ। कौन आया है? चौदह तारीख को बहुत सारे लोग आए होंगे। मैं उस दिन हुए खर्च के बारे में सोच रही थी। लेकिन फिर, जिसने किसी भी रस्म में हिस्सा नहीं लिया, अगर वह गड़बड़ करता है तो उससे पैसे क्यों चाहिए... इसलिए हम चुपचाप बैठे रहे।”

“तुम गुलाम नहीं हो, लेकिन तुम्हारा बेटा है, दागंतानंदले। तुमने हिस्सा नहीं लिया, लेकिन वह, उसकी पत्नी और उसका बेटा सब आए। उन्होंने पत्ते उगाए, उन्हें खाने के लिए उगाया, फिर सड़े हुए पत्ते तोड़े और ज़मीन धोई। उसकी पत्नी एक विलेन है। सभी गांववाले उसे बहुत पसंद करते थे!”

"लेकिन उसे यह खबर किसने बताई? इसका उसके दादा-दादी से क्या कनेक्शन था?"

“अगर कोई रिश्ता होता! उस दिन फ़ोन पर बात हुई थी जयराम? मीनाईताई के बेटे से? जो मीट बेचता है? इस कंपनी से इस कंपनी का बिज़नेस का रिश्ता है। मैं कभी कामया निमन से मिला था। जब हम दोनों ने एक-दूसरे को अच्छा बोलने वाला समझा, तो खाते-पीते बातें करते हुए हम दोनों को पता चला कि हम चचेरे भाई-बहन हैं। वह बगलू आया और इस बंगले पर उतरा, वह मसाला गया और इस घर पर उतरा। एक बार वह उसे कार से अपने दादा-दादी से मिलवाने ले आया था। उसके बाद हर साल पति-पत्नी एक बार गाँव आते हैं, एक बार खाना खाते हैं, कपड़े-धोती पर दस हज़ार रुपए खर्च करते हैं, और गिर पड़ते हैं। उस दिन फ़ोन पर बात करने के बाद वह जल्दी से मसाला चला गया और उसी रात उसने मुझे फ़ोन पर गाँव का क्या-क्या हुआ, सब कुछ बताया। मैंने उसे बताया। दूसरे दिन सुबह वह दोनों कार लेकर आए। मैंने अपने दादा-दादी से बात की। मैंने अपने पासपोर्ट में हज़ार रुपए रखे और उनसे कहा कि मेरी दादी ने पूरी ज़िंदगी जी है, और वह कुछ भी नहीं कर सकता। मेरे पास इंतज़ार करने का समय नहीं है, मुझे ज़रूरी काम है। मुझे अबू धाबी जाना है। वैकुंठ समाराधना के दिन सुबह आना और रात तक रुकना!..." और वह चला गया।

प्रोफेसर की नज़रें उसके चेहरे पर टिकी थीं। 'डैंगैंट की पीठ में चाकू है।'

Machine Translated by Google

मुझे लगता है कि मेरे साथ धोखा हुआ है। उसने यह सब करने से पहले मुझे क्यों नहीं बताया? क्या उसे लगा कि मैं उसके डामा के प्लान के रास्ते में आ जाऊँगा? डैगेंट और उसकी पत्नी माया के साथ ठीक हैं। वे अपनी कंपनी को बढ़ाने के लिए मेरी मदद भी लेते हैं।

लामी ने आगे कहा, “अजिया के नाम पर मैं नरसंहया देवला की दुल्हन को दो बोरी चावल के साथ अक्केत भेजता हूँ, भले ही वह सुवती पर पाँच लाख रुपये ख़र्च करने लगे, कोई बात नहीं, आप भी वहाँ की परंपरा देखिए, मुझे बताइए। इसीलिए मेरी पत्नी भी देवला जाती है। हर साल, वे दोनों वैंवा देवला जाते हैं, वह कहती थी। मेरे पति भी सारी सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, हेहे!”

एक बार बिबतन के सामने डेव का टॉपिक उठा था। उसने कहा था, 'टिपाटी एक कैपिटलिस्ट डेव है', जो इर्रेलेवेंट था। 'वहाँ जाने वाले भीम पन्यान आम तौर पर गरीब या गरीब होते हैं। उन्हें भी कैपिटलिस्ट होना चाहिए,' उसने हँसते हुए कहा था। 'गरीबों की यह इच्छा पूरी करने की इच्छा अफीम से जुड़ी है, जैसा कि डेव के मामले में है,' प्रोफेसर ने कहा था, 'लेकिन रूस अफीम की वजह से युद्ध हार गया।' इंडिया, जो उनके नक्शेकदम पर चला, वह भी हार गया, और हमारी कंपनियाँ फल-फूल रही हैं,' उसने कहा था। प्रोफेसर ने बहस वहीं रोक दी थी, यह सोचकर कि अपनी बहू से बहस करके उसे हारने का क्या मतलब है? उसे सब कुछ एक झटके में याद आ गया। किसी वजह से, वह अपने दादा को बताना चाहता था कि वह उसके दादा-दादी का रिश्तेदार है। उसने उन्हें क्यों नहीं बताया? डर या शर्मिंदगी? उसे अपने दामाद पर गुस्सा आ रहा था। लेकिन वह जानता था कि वह ठीक से सोच नहीं सकता था या उस पर प्रेशर नहीं डाल सकता था।

ऐसा लगा जैसे अंदर आग जल रही हो। उसने घंटी बजाई। पास आई एयर होस्टेस को अपना ASU क्लास पास दिखाते हुए उसने ऑर्डर किया, “एक जोड़ी।” फिर, लमिका की ओर मुड़कर उसने पूछा, “तुम्हारा क्या?” जब उसने कहा, “कुछ नहीं,” तो उसने कहा, “जी, सर,” और चली गई।

राष्ट्रीय एकता के लिए सरकार की तरफ से बुद्धिजीवियों, कलाकारों, विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों की तीन दिन की मीटिंग बुलाई गई थी। तीस-बीस लोग इकट्ठा होने वाले थे। उनमें से कुछ लोग वृपता और टीवी पर चमक रहे थे। रिजिया, जो पिछले पांच सालों में एक बार भी टीवी पर नहीं चमकी थीं, अकेली थीं। लेकिन उससे पहले, वह लगातार टीवी और वृपता पर चमकती रहती थीं। मीटिंग शुरू होने से पहले, चाय पार्टी के दौरान कई लोगों ने उन्हें पहचान लिया और पूछा, “यह क्या है! आप कहाँ थीं? भारत में या विदेश में?” प्रोफेसर भी सबसे बात कर रहे थे, हंस रहे थे और पूछ रहे थे। मंत्रालय के सचिव और कुछ अन्य अधिकारी सभी के बारे में पूछ रहे थे। कुल मिलाकर माहौल में प्रोफेसर की जगह अहम थी।

Machine Translated by Google

वह आ रहा था। उसने इस लिस्ट में अपना नाम सुझाया था, उसने मुझे दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने सामान का इंतज़ार करते हुए बताया था। उसे दूसरों की तरह जनपथ होटल तक टैक्सी लेने की ज़रूरत नहीं थी। उसे लेने के लिए एक सरकारी गाड़ी आई थी। वहाँ से उसे सरकारी फाइव-स्टार होटल अशोका ले जाया गया। जैसा उसने सुझाया था, मैं टैक्सी से जनपथ होटल चला गया।

मीटिंग शुरू करने वाले मंत्री आगे आए और उन्होंने मंत्री को अपना परिचय दिया और उनका स्वागत किया। उनमें से कई लोग उन्हें अच्छी तरह जानते थे। मंत्री ने सभी सुविधाओं के बारे में भी पूछा। टेराकोटा ट्रिम वाली खादी सफारी पहने हुए, वह बहुत मॉडर्न लग रहे थे।

अपनी शुरुआती बातों में, उन्होंने जातिवादी विचारों पर ज़ोरदार हमला किया और कहा कि सरकार को कला, शिक्षा, रिसर्च, साहित्य वगैरह पर इन विचारों को रोकने के लिए कुछ नहीं करना चाहिए। "प्रोफ़ेसर शाई अपने कीनोट एड्रेस में इस मीटिंग का भविष्य क्या होना चाहिए, इस पर अपने कुछ विचार पेश करेंगे–" उन्होंने कहा और रुक गए। सब जानते थे कि वह सिर्फ़ एक आम मंत्री नहीं बल्कि एक पॉलिटिशियन थे।

इसके बाद प्रोफेसर शाह बोलने के लिए खड़े हुए। उन्होंने सरकार और लोगों को इतना सम्मान देने के लिए धन्यवाद दिया और देश जिस गंभीर स्थिति से गुज़र रहा है, उसके बारे में विस्तार से बताया। "...भारत कभी भी एकतरफ़ा कल्चर वाला देश नहीं रहा है। हमारे हिसाब से, ताजमहल उतना ही ज़रूरी है जितना वेल्लोर और अजंता के मंदिर। ताजमहल देखने आने वाले लोगों की संख्या विजयनगर देखने आने वालों की संख्या से कुछ कम है, और हमें यह नहीं भूलना चाहिए। भारत में कभी भी ऐसा हिंदू-मुस्लिम झगड़ा नहीं हुआ। हमें अपने बच्चों को मुसलमानों द्वारा हिंदुओं पर किए गए ज़ुल्मों से बचाने के लिए अपनी हिस्ट्री की पढ़ाई और हिस्ट्री रिसर्च में क्या करना चाहिए? इस संदर्भ में, इस मीटिंग की ज़िम्मेदारी है कि हमारे कलाकारों, कवियों, पब्लिशर्स, क्रिटिक्स और लेखकों के लिए क्या किया जाना चाहिए, इस पर डिटेल में चर्चा की जाए। ज़रूरत पड़ने पर यह मीटिंग फिर से बुलाई जाएगी। हमें इस पर चर्चा करनी है और सुझाव देने हैं कि एक समय में हर एरिया में क्या किया जा सकता है। हमें इस मीटिंग में कुछ बुनियादी बातों पर फ़ैसला करना है। मीटिंग के चेयरमैन के तौर पर, माननीय मंत्री ने मुझसे कहा है कि मुझे इस नज़रिए से काम करना चाहिए। मैंने उनसे यह भी कहा है कि जब माया जैसी कोई इंसान इस मीटिंग में मौजूद हो, तो मैं यह ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहती। लेकिन मुझे जो काम सौंपा गया है, वह

Machine Translated by Google

"मुझे हमेशा लगता है कि अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना और असेंबली के काम में योगदान देना मेरा फ़र्ज़ है..."

डेढ़ घंटे से वहां मौजूद ऐसे व्यक्ति का भाषण सुनते हुए कई लोगों को लगा कि उनके बिना मीटिंग करना गलत है। कुछ को लगा कि उन्हें इस सज्जन के कहने पर बुलाया गया है, तो ऐसे समय में उनका विरोध क्यों करें? और वैसे भी क्या फायदा? जैसे ही सज्जन ने पूछा, 'असेंबली के चुनाव पर आपकी क्या राय है?', हंगामा हो गया। सुवती को बहुत हंगामा मिला, लेकिन सज्जन की आंखों में जो हंगामा था, वह बर्दाश्त के बाहर होगा।

मंत्री के जाने के बाद मीटिंग का मेन काम शुरू हुआ। नौकरों ने सबको चाय और बिस्किट दिए। उन्होंने ही टॉपिक को मेन पॉइंट पर लाया, “इतिहास का सबक ही हमारे समाज को बर्बाद कर रहा है। इतिहास हमेशा तरक्की का रास्ता दिखाता है। मुसलमानों ने मंदिर तोड़े, ज़बरदस्ती लोगों का धर्म बदला, ऐसी कुछ बातें, किसी न किसी तरह, हमारे इतिहास में लिखी हैं। हमें अपना इतिहास इसी तरफ से शुरू करना चाहिए। हमें ऐसा इतिहास बनाना चाहिए जो पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल हो और हमें उसे धर्मग्रंथों में जगह देनी चाहिए। इस काम के लिए, इस मीटिंग को एक कमेटी बनानी चाहिए...”

यह सुनते-सुनते लामी की आत्मा बेचैन हो गई, तड़पने लगी। यह सब उसे बेबस महसूस कराने लगा। उसके भाषण का वहीं विरोध करने की इच्छा अंदर ही अंदर उमड़ रही थी। लेकिन यहां मौजूद हर कोई नेशनल लेवल पर मशहूर था। यह सोचकर कि सरकार ने नेशनल लेवल पर यह मीटिंग बुलाई है, उसे भी जोश आ रहा था। "औरंगजेब, टीपू सुल्तान, मुहम्मद गजनी जैसे कुछ उदाहरण लेते हुए, उन पर लगाए गए झूठे इल्ज़ाम..."

जब प्रोफेसर बात कर रहे थे, तो उसने अनजाने में एक बात कह दी, "सर! क्या आपने भी बनारस देखा है?"

प्रोफेसर मुस्कुराए। पूरी सभा हैरान रह गई। गोल मेज़ के चारों ओर बैठे सभी लोग उनकी ओर देखने लगे। प्रोफेसर ने मन ही मन सोचा, “तुम इसका मतलब नहीं समझे हो। बेहतर होता अगर तुम इसे ले आते!”

“विनाथ देवालय की जगह पर एक सुंदर मस्जिद है। मुसलमान इसे ‘यानवापी मस्जिद’ के नाम से जानते हैं। इसके बगल में एक कोने में बने मंडप में शिव की पूजा विनाथ मंदर के रूप में की जाती है। वह मस्जिद किसने बनवाई, इस जगह पर क्यों बनवाई? इस विषय पर बिना सोचे-समझे कुछ कहने से पहले, मैं पहले उन लोगों से पूछूंगा जो ऐसे हजारों खंडहरों के संदर्भ में उठते हैं।” उनकी आवाज़ में इमोशन भरा हुआ था।

Machine Translated by Google

प्रोफेसर ने सोचा, “औरंगजेब की तरह उसने भी ऐसी ही किसी जगह पर मस्जिद बनाई होगी। लेकिन दो मंदिरों वाली जगह पर मस्जिद बनाना बेकार है। यह अनसाइंटिफिक है, ऐसा क्यों होगा?”

“औरंगजेब की मौत 1707 में हुई। इसके बाद, उनके आखिरी सरदार हिनायतुल्लाह खान ने बादशाह औरंगजेब का इतिहास लिखा, जो उनके दोस्त सक मुतक खान के पसंदीदा थे। दरबार में मौजूद मैन्युस्क्रिप्ट्स के अलावा, उन्होंने एक भी किताब नहीं लिखी। इस किताब का नाम 'मैसर-ए-आलमिगरी' है। किताब के अगले चैप्टर में लिखा है, ‘बादशाह के हुक्म के मुताबिक, इन अधिकारियों ने काशी में विनाथ मंदिर नहीं बनवाया।’ साल 1670 में, रमजान के महीने में, औरंगजेब ने आदेश दिया कि मथुरा में चांदवाला मंदिर न बनाया जाए, और इस जगह पर एक बड़ी मस्जिद बनाई गई। बादशाह के राज के बारहवें साल में विनाथ मंदिर को तोड़ दिया गया और तेरहवें साल में मथुरा में चांदवाला मंदिर को तोड़ दिया गया। मैं इस ऐतिहासिक आधार को असेंबली के सामने लाना चाहूंगा।”

मीटिंग हुई। लामी, जो पाँच साल से गैरहाज़िर थी, बोलने के मूड में थी। उन्होंने आगे कहा, “हिंदू-मुस्लिम दुनिया में मंदिर बनाने का विचार बहुत ज़िंदा है। आज इसकी बहुत ज़रूरत भी है। लेकिन इस पर समाज नहीं बनाया जा सकता। हर साल पच्चीस लाख लोग काशी जाते हैं। जब हम यहां आते हैं, तो हम न सिर्फ़ काशी का मंदिर देखते हैं, बल्कि वहां बनी नई मस्जिद भी देखते हैं। जब हम अपने गांव लौटते हैं, तो हम अपने आस-पास के सभी लोगों को इस दुखद घटना के बारे में बताते हैं। जब हमारे मन में ऐसी भावनाएँ हों तो देश की भावना कैसे पैदा हो सकती है? आज, अगर हम स्कूल में स्टूडेंट्स से यह बात छिपा भी लें, तो भी हम सफल हो जाएंगे। ये बच्चे अपनी पढ़ाई के लिए जाएंगे और अपने माता-पिता से इस बारे में सोचेंगे। इस समय वे क्या करेंगे? यह सिर्फ़ काशी-मथुरा-आयोये की बात है। ऐसी कोई बात नहीं है। भारत में ऐसे तीस हज़ार मंदिर हैं! यह रिसर्चर्स का दिया हुआ आंकड़ा है। क्या हम कहें कि ये सभी मंदिर बर्बर लोगों ने बनाए थे? क्या आप यह कहानी बनाएंगे कि जैन, बौद्ध, शैव, वैनाव और दूसरों ने अपने पूर्वजों के मंदिर तोड़ दिए? दूसरी ओर, किसी भी धर्म ने कभी यह नहीं कहा कि दूसरे धर्मों को नष्ट कर दिया जाए। अगर किसी ने सामाजिक रूप से खतरनाक काम भी किया हो, तो भी उनके धर्म ने उसे आदर्श नहीं माना है। इसके उलट, दूसरे धर्मों की पूजा की जगहों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया, हाथ में तलवार लेकर धर्म का प्रचार किया गया, जजिया लगाया गया, हारने वालों को हज़ारों लोगों ने गुलाम बना लिया, और उन्हें ही आदर्श माना जाने लगा। ऊपर बताई गई सलाह आज भी लागू है, तो आप कैसे पक्का कर सकते हैं कि अनुसारया की मानसिक भूमिका वही है? अनुसारया की मानसिक भूमिकाओं को देखते हुए, हर कोई बराबर है, ताकि

Machine Translated by Google

हमने अपने देश का संविधान क्यों नहीं लिखा? अगर हम धर्म बदलने वालों के नज़रिए को नकार दें और दूसरे धर्मों का अंत करने वाले प्रचारकों जैसा ही धर्म अपनाकर धर्म बदलने वालों के नज़रिए को नकार दें, तो क्या यह खोखला नहीं हो जाएगा? यह उन सभी मूल्यों का लक्ष्य होना चाहिए जिन तक पहुंचा जा सकता है।”

वह अपने अंदर से उठ रहे विचारों को ऐसे बता रही थी जैसे कोई बाज़ हो। उसने अपने मन में यह यकीन बना लिया था कि वह हर दिन ऐसे ही बोल सकती है। वह अपने साथ कोई नोट्स नहीं लाई थी। उसके पास कॉन्टेक्स्ट भी नहीं था। उसे इस मीटिंग का मकसद भी नहीं पता था। लेकिन अब उसे इसकी परवाह नहीं थी। तीन दशकों से जो नोट्स उसने अलग रखे थे और पिछले पाँच सालों से जो कॉन्टेक्स्ट इस्तेमाल किया था, उसका हर शब्द उसे याद आ गया था। उसका मन और मज़बूत हो गया था। उसका कॉन्फिडेंस और भी बढ़ गया जब उसने सभी स्टूडेंट्स को देखा और हर एक को अपनी आँखों से नोट किया। उसे यह भी याद आया कि एक मज़बूत और बोल्ड चेहरा किसी बहस में एक कीमती चीज़ हो सकता है। गोल टेबल के चारों ओर बैठकर मज़बूती से देखते हुए... 'ओह! यह कहाँ से आ गया! मज़ानल मिनी की स्पीच और उन पर दबाव डालने वाले ऑफिसर्स में ज़रूर कुछ तो बात रही होगी। मुझे उतना आगे नहीं जाना चाहिए था जितना वह आया क्योंकि मैं अपने सब्जेक्ट में था। यह डॉक्यूमेंट मीटिंग के कुछ समय बाद आया।'

वह एक पल के लिए हिचकिचाई। साथ ही, उसका मन बेसब्र हो गया। फिर वह सावधान हो गई। 'अगर मैं इसमें फंस गई, तो मेरी हार पक्की है! अगर मैं खड़ी होकर उसे रौंदूंगी, तभी मैं अपने विचार बता पाऊंगी।' उसकी डगमगाती नज़र उस पर टिक गई। अब, मा आमिर की नज़र भी मानो डगमगा रही थी। 'वह भी हमें आँखों में हराने की कोशिश कर रहा है! लेकिन हमें पीछे नहीं हटना है, हमें हार नहीं माननी है, हमें गिरना नहीं है!' थोड़ी देर की कोशिश के बाद, उसकी नज़र सामने रखी टेबल पर पड़ी और वह फ़ाइल का सहारा ढूंढने लगी।

प्रोफेसर ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, "आपने अपनी बात कह दी है। धन्यवाद! अगर कोई बेगम रिजिया के विचारों पर कमेंट करना चाहता है, तो प्लीज़ करें।"

वह प्रोफेसर पर गुस्सा था कि उसने उसकी बात बीच में ही टोक दी। हालांकि उसका चेहरा शांत था, लेकिन उसकी आँखों में यह एहसास था कि 'मैं इनमें से कुछ लोगों से मिला हूँ!' उसकी नज़र एक लाइन में बैठे कुछ आदमियों पर गई, जिनकी दाढ़ी भी उसकी तरह ही थी। क्या यह दाढ़ी है? किसी मॉडर्न लड़की की दाढ़ी?

Machine Translated by Google

उन्हें अपने बेटे नज़ीर की दाढ़ी याद आ गई।

ग्रुप में एक दाढ़ी वाला आदमी खड़ा हुआ और हंसा, "मैंने कभी किसी को बिना सही वजह के किसी धर्म और उसके नेताओं की बुराई करते नहीं देखा, लेकिन अगर कोई मुझे बता सके कि ऐसे इंसान को इतनी ज़रूरी मीटिंग में बुलाने के लिए कौन ज़िम्मेदार है, तो मैं शुक्रगुजार रहूंगा।"

बात छोड़कर अतीत पर हमला करने की आदत कभी ठीक नहीं हो सकती, ऐसा उसका मन हुआ असंतिल से कहने का, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। उसके पास बैठकर उसने सोचा, “मैडम, क्या आप फ़ारसी जानती हैं? अगर हाँ, तो कितनी? क्योंकि, आपने जिस किताब ‘मसर-ए-अलीगरी’ का ज़िक्र किया है, वह फ़ारसी में है।”

“मुझे वह भाषा नहीं आती। मैंने सरकार के अनुवाद पर भरोसा किया है।”

ग्रुप ज़ोर से हंसने लगा। उनमें से एक ने कहा, “आप एक इतिहासकार को सरकार की तरह परंपरावादी कैसे मान सकते हैं? आपका क्या मतलब है?” दूसरे ने कहा, “जब आपको ओरिजिनल भाषा भी नहीं आती, तो आप ट्रांसलेशन की बात कर रहे हैं। आपका क्या मतलब है?”

फिर उसने जल्दी से पूछा, "क्या तुम बीमार महसूस कर रहे हो?"

"अब क्यों?"

“क्या तुम पूरे यूरोप का पुराना इतिहास नहीं समझते, भले ही तुम्हें असली भाषा नहीं आती, इंग्लिश ट्रांसलेशन के साथ भी?” वह हँसी। कटचन कन्फ्यूज़ हो गई। वह इससे आगे बढ़ गई।

“अगर ऐसी बहस शुरू हुई, तो मीटिंग का काम कैसे चलेगा? इसके अलावा, अगर पूरी मीटिंग समय पर रोक दी गई तो मीटिंग कैसे चलेगी? दूसरे लोग कैसे बयान देंगे? अकेले इस महिला ने आधा घंटा बर्बाद किया है। तीनों सदस्यों में से हर एक को आधा घंटा मिलता है, यानी कुल साढ़े बाईस घंटे। क्या यह काफी समय है? अगर है भी, तो क्या ऐसी बेकार की चर्चाओं में समय बर्बाद करना सही है? सरकार को इस बारे में एक्शन लेना चाहिए।”

उन्होंने कहा, "अब दूसरों को भी बोलने का मौका मिलना चाहिए। मिसेज रिज़ा कुरैशी को फिर से बोलने का मौका मिलेगा।"

"यह बात करने का समय नहीं है, आदरणीय सर! अपने पैर ठीक रखें।"

Machine Translated by Google

हमें इस पर एक मज़बूत इमारत बनाने की ज़रूरत है!" वह उतनी ही ज़ोर से उस पर चिल्लाई, "राजनेता इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने का काम कर रहे हैं। नेता उनके पीछे खड़े हैं। जो लेखक इतिहास की ज़िम्मेदारी नहीं लेते, वे अपनी ज़रूरतों के हिसाब से इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने वाले नाटक और नॉवेल लिखते हैं। क्या आपको लगता है कि इस असेंबली को इस बारे में कुछ करने का कोई हक़ नहीं है?"

"कौन सा टॉपिक कहाँ ले जाता है? एक उदाहरण दो। तुम्हारा मुँह साफ़ हो जाएगा।" एक व्यक्ति ने कहा।

उसे अपनी दाईं ओर कुर्सी पर बैठी एक औरत का ख्याल आया। लेहेल्स लाउंज – लाल साड़ी – लाल फूलों की एक बड़ी, बड़ी माला। कौन? रिज़ा ने उसे पहचाना नहीं। "दुनिया के सबसे मशहूर धार्मिक नेता के बारे में बेइज़्ज़ती वाली बातें कहना कितना सही है?"

"मैंने किसी के बारे में बुरा नहीं कहा है। मैं ऐसा नहीं करूँगा। जो लोग ऐतिहासिक सच्चाई की तलाश में हैं, उन्हें किसी के बारे में बुरा नहीं सोचना चाहिए। मैं एक ऐतिहासिक नज़रिया पेश कर रहा हूँ। पैगंबरों ने अरब देशों के साथ क्या किया? उनकी पहली बेटी, खित्जा, एक ऐसी महिला थी जिसकी आर्थिक और सामाजिक हैसियत इतनी थी कि वह कारवाँ चला सके। उसने अपना तीसरा पति खुद चुना और उसकी शादी खुद से पंद्रह साल छोटी महिला से कर दी। पैगंबर, जो उसके ज़िंदा रहने तक उसके साथ रहे, ने उसकी मौत के बाद कुल अठारह और लोगों से शादी की..."

अब, भले ही वह बोलते समय गोल टेबल के चारों ओर सबको देख रही थी, उसकी नज़रें आमिर पर टिकी थीं। उसे उम्मीद थी कि यह एक इंसान उसके दुख का बोझ उठाएगा और उसे बचाएगा।

"...इसके बाद, इस्लाम के पूरे इतिहास में ऐसा करने का कोई आर्थिक और सामाजिक कारण कहाँ था? इलम से पहले अरब देशों में सती की पूजा होती थी। इलम में सती के लिए कोई जगह नहीं है। मर्द क्यों हो, औरत क्यों हो, हमें इस बारे में सोचना होगा? मर्द और औरत के बीच बराबरी का दावा करने वाला कोई भी इस बारे में क्यों नहीं बोलता? भारतीय औरतों की हालत पर इस इलम वाली भावना के असर के बारे में कोई बात क्यों नहीं करता? मुस्लिम शासकों, आगज़नी करने वालों, नवाबों और अधिकारियों ने हज़ारों औरतों को काबुल, ईरान वगैरह ले जाकर बेच दिया। राजस्थान, पंजाब और भारत के दूसरे हिस्सों में सती की बदनामी पर बहुत असर पड़ा। इतना कि यह एक परंपरा बन गई। इस बारे में कोई नहीं जानता। श्रीवादी इसे क्यों नहीं हटाते? आज भी भारत में अंतरजातीय विवाह की मान्यता है। कोई इसकी शुरुआत क्यों नहीं देखता? हर बुरी परंपरा की अपनी पुरानी-

Machine Translated by Google

इसका कारण पुराना धर्म है, क्या हमारे बुद्धिजीवी जो अछूतों से डरते हैं और उनसे डरते हैं, उन्हें असली इतिहास पता भी है? मिडिल एज में, यूरोपियन लोग बड़े-बड़े जहाज बनाकर अपने धार्मिक खाने के लिए कॉन्टिनेंट्स में घूमने निकल पड़ते थे। वे बुनाई की कला को खोजने और खोजने लगे। इस समय, क्या पूरे भारत पर मुसलमानों का राज नहीं था? वे देश की सारी दौलत अपने ही लोगों पर उड़ा रहे थे और ऐशो-आराम से जी रहे थे, वे देश के लोकल लोगों को बिगाड़ रहे थे, वे न सिर्फ अपना धर्म बिगाड़ रहे थे, बल्कि नेनंदा और तशीला जैसे लोगों को भी खत्म कर रहे थे। वे लोगों को मार रहे थे, वे देश को बर्बाद कर रहे थे। वे वहां की दौलत जला रहे थे। यह भी क्यों नहीं बताया जाता कि भारत के पिछड़ेपन का दोष कभी-कभी काले धार्मिक रिवाज पर डाला जाता था और इस देश को पिछले हज़ार सालों से बंजर ज़मीन बना दिया था? अकबर जैसे महान बादशाह भी सबको मार डालते थे और बॉर्डर पार करने वाले पुर्तगालियों को भी मार डालते थे। क्या आप उस समय के हालात की कल्पना नहीं कर सकते? "हमें अपने बच्चों को क्या इतिहास पढ़ाना चाहिए?" उसने चारों ओर देखते हुए पूछा।

कोई नहीं बोला। आमिर भी वहीं बैठा अपनी फ़ाइल देख रहा था। उसने आगे कहा, “आप में से कुछ

लोग राइटर हैं। कुछ लोग सिनेमा, ड्रामा वगैरह जैसे विज़ुअल आर्ट्स में हैं। सच बताओ! आर्ट, आर्टिस्ट और आर्ट्स के मामले में, क्या इस देश के धर्म जितना कोई और धर्म है? और किस धर्म में यह मुमकिन है कि आर्ट को पाँचवाँ वेद और आर्ट से मिलने वाले आनंद को उसका भाई माना जाए, और आर्टिस्ट को अपना रिश्तेदार माना जाए? हम आज़ादी से अपने भगवानों, अपने टीचरों की पूजा कर सकते हैं। हम उनकी पूजा भी कर सकते हैं। क्या यह किसी और धर्म में सच है? हमने यूरोप में भी बहुत लड़ाई लड़ी, लेकिन यह सच रेनेसां के दौरान सामने आया। इलम के अलावा ऐसा करना नामुमकिन है। हमें अपने ट्रेडिशन से मिले ज्ञान का इस्तेमाल करना चाहिए। "हमारे आर्टिस्ट और राइटर उसी ट्रेडिशन को खत्म करने के लिए क्यों नहीं निकलते? वे इस ट्रेडिशन के बुरे नतीजों को जानते हुए भी इसके पीछे इतने पागल क्यों हैं?"

बोलते हुए उसने चारों ओर देखा। ऐसा लगा जैसे उसके अंदर किसी तरह का कम्युनिकेशन हुआ हो। उनके बीच एक शांति भी थी।

दाढ़ी वाली लाइन में छह या आठ लोग खड़े हो गए। चीफ ने कहा, “हम लंच के लिए आधे घंटे लेट हैं। मैडम रिज़ा, अपनी बात इतनी साफ-साफ बताने के लिए धन्यवाद! लंच के बाद, हर व्यक्ति को मौका दिया जाएगा।”

Machine Translated by Google

लंच बुफे के दौरान, आमिर किसी और से बात करके उसे मिस कर रहा था। इस मीटिंग में उसके कई जानने वाले लोग थे। वह पाँच साल से इस जगह से दूर थी, और लोग उसे उसकी वजह से और जिस तरह से वह अपने अजीब कपड़े दिखा रही थी, उसकी वजह से पहचानते थे। फिर भी, जब वह मुड़कर आसिया के कमरे में वापस चला गया तो उसे और भी शर्मिंदगी महसूस हुई।

पिछली मीटिंग में सबका एक ही सुर था, "हमें पढ़ाई करनी चाहिए, मेल-मिलाप का यही एक तरीका है, आज हम क्या करें, ये कड़वी बातें दिल में रखकर? मुसलमानों ने हिंदुओं में ये फूट डाली है। भारतू में जाति-पाति से तंग आकर गरीब-गुरबों ने मुसलमानों को बुलाया। पैगंबर मुहम्मद के मार्गदर्शन के बिना, यहां गरीब-गुरबों की ज़िंदगी नर्क जैसी होती। अगर मुसलमानों के साथ विदेशियों जैसा बर्ताव होता, तो मेरे साथ भी वैसा ही होता! भले ही मूर्ति मिट्टी से बनी हो, मिट्टी से, धरती से और भगवान के पैरों से, भारत में मूर्ति पूजा की शुरुआत मूर्ति को दिल में रखकर हुई थी। मुसलमानों द्वारा की गई मूर्ति-तोड़ से युवा सच में बहुत दुखी थे! अब वही लोग मुस्लिम-विरोधी भावनाओं को हवा दे रहे हैं। वगैरह वगैरह।"

"तुम भी झूठ बोल रहे हो। ऐसे कई उदाहरण हैं जब लोगों ने जजिया देने से मना कर दिया और जंगल में जाकर आदिवासी बन गए। महाराणा तप और उनके समर्थकों के मुगलों से हारने के बाद, उन्होंने कसम खाई कि जब तक उन्हें अपना राज्य वापस नहीं मिल जाता, वे शहर में नहीं घुसेंगे और जंगल में ही रहे। वे आज भी गड़िया लोहार के नाम से राजधानी में हैं। इस बारे में एक रिसर्च पेपर भी पब्लिश हुआ है।" "अपने मकसद को सपोर्ट करने के लिए, तिश लोगों ने खुद ही अयानों के बारे में बात करना शुरू कर दिया।" "यहां कभी ऐसा समाज नहीं था जिसे अयान और विद में बांटा जा सके..." जब भी मौका मिलता, वह कॉन्टेक्स्ट के हिसाब से बोल रही थीं।

कुछ लोगों ने शिकायत की कि जब कोई और बोल रहा हो, तो मीटिंग में बोलना मीटिंग के हित में नहीं है। "जब आपने इन लेडीज़ को टोका, जो खुद को बहुत ज़रूरी समझती हैं?" तब भी मीटिंग कैसे चली? कुछ लोग तो चिल्लाने लगे, "रिज़िया मैडम! मुझे एक मुश्किल फ़ैसला लेना है। प्लीज़ अपने विचार दूसरों के साथ भी शेयर करें।" आया ने अपनी आवाज़ ऊँची की। वह चुप रही।

'एक गोपच देखा गया था। खास पॉलिसी को सपोर्ट करने के लिए यहां कमेटी बनी थी। मुझे भी इसी मुद्दे और रास्ते की वजह से यहां बुलाया गया है। जब से कमेटी मेंबर के नाम लिस्ट हुए थे और तब से लेकर आखिर तक, प्रोफेसर ही इस मीटिंग के स्पीकर होते थे। अपाज्या की मौत के बाद, मैं गांव गया और वहीं रहा, और उन्हें सिर्फ इतना पता था कि मैं किस तरह की पढ़ाई कर रहा हूं। चूंकि मुझे पढ़ाई का सब्जेक्ट नहीं पता था, इसलिए मुझे सिर्फ इस देश की बूढ़ी बागी औरत के बारे में पता था, इसलिए उन्होंने मेरा नाम यहां रख लिया।

Machine Translated by Google

मैंने इसे लिस्ट में डाल दिया है। अब मैं दुविधा में हूँ। एक तरफ तो मेरे विचार ये हैं कि दूसरा ये कि मेरा पोता बच्चों जैसी हरकतें कर रहा है। मेरा बेटा बच्चों जैसी हरकतें कर रहा है। इसीलिए हेमया इस मामले में इतना संयम दिखा रही है। नहीं तो वो अपने पति से, जो इतना बेइज्ज़ती करने वाला है, मुझसे बात करवाती। मैंने पाँच साल में जो कुछ भी पढ़ा है, जो कुछ भी मन में सोचा है, वो एक ही बार में निकल जाएगा, ये एक मीटिंग थी जिसने ऐसा कर दिया, हेमया!

"लेकिन क्या प्रोफेसरों ने मुझे नहीं बताया कि आमिर भी इस मीटिंग में आ रहे हैं, जब वे प्लेन में बातें कर रहे थे? हो सकता है कि मंत्रियों ने उनकी जानकारी के बिना कुछ नाम बताए हों?"

आमिर को बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि वह इस मीटिंग में आएगी। उसे कमेटी का मकसद भी नहीं पता था। उसे नेशनल यूनिटी से जुड़ी मीटिंग में बुलाया जा रहा था, ऐसा मैसेज सरकार की तरफ से आया था। उसे नहीं पता था कि इसके पीछे कौन है। 'प्रोफेसर शनि ने भी ऐसा फोन नहीं किया। उनके पास हाल वालों का कोई फोन भी नहीं है। उन्हें माया से गुस्सा रहा होगा क्योंकि उन्होंने दूसरी शादी कर ली थी। इसीलिए उन्होंने अपनी बेटी की नज़ीर से शादी के समय भी माया से कॉन्टैक्ट नहीं किया। अब मैं क्यों जाकर बात करूँ? सरकार मुझे नेशनल यूनिटी से जुड़े डॉक्यूमेंटेशन के लिए चुन रही है। इसीलिए मुझे यहाँ भेजा गया था।' मीटिंग में उसे देखते ही वह परेशान हो गया। हालाँकि वह समझता था कि दोनों कभी, कहीं भी नहीं मिलेंगे, लेकिन उसे ऐसी मीटिंग की उम्मीद नहीं थी। इस वजह से, उसने यह भी नहीं सोचा कि ऐसी मीटिंग पर वह कैसे रिएक्ट करेगा। 'वह अपने गाँव में किताबों के बादल में दबी हुई थी, और वह उसे बगुला और लगभग एक चिप बनाने के धंधे में डूबा हुआ था। इस वजह से, उसे कुछ समझ आ गया था कि कभी

कहीं मिलना नहीं होगा। एक बार उसने फ़ोन किया, 'मुझे पता चला कि तुमने दूसरी शादी कर ली है -' मैंने इस बारे में नहीं सोचा। उस समय, मैंने उसे एक नोट भी दिया जिसमें लिखा था 'मैंने तुम्हें तलाक़ नहीं दिया है -' और उसे अपने हाथ में रख लिया। इस घटना के बाद, कोई कॉन्टैक्ट नहीं हुआ। ऐसी कोई गुंजाइश नहीं थी, ओह! बहुत ज़िद्दी औरत! यह राय?

आमसमान?

आज भी उसने मीटिंग की। ऐसा क्यों है कि वह हम जैसा नहीं है? बूढ़ा प्रोफेसर, ठोड़ी पर दाढ़ी वाला बुद्धिजीवी, लंबी दाढ़ी वाला आदमी जो अपनी स्किल दिखाने का एक भी मौका नहीं छोड़ता, खादी का चोगा और धोती पहने आज का आदमी, घने बालों में उंगली जितनी लंबी साड़ी और माथे पर थोड़ा सा परफ्यूम लगाए दो पंडित प्रोफेसर, सबने मुझे हिकारत से देखा। आखिर में, मैं, दस्या के साथ, विक्टिम को पाकर खुश हुआ और अपनी नज़रें उस पर टिका दीं। मुझे उस समय यह क्यों समझ नहीं आया कि ये सब डायरेक्शन-इफेक्ट वाली बातें थीं? मैंने उसकी नज़र क्यों बचाई और ऑर्गनाइज़र को मुझे फाइल में क्यों दबाने दिया? मैंने इस तरह नीचे देखना धोखा समझा।

Machine Translated by Google

मैं क्यों भूल गया? मैंने ऐसा किया, और वह और भी ज़ोर से बोलने लगी। अगर मैंने भी उस समय उसकी तरफ देखा होता, तो उसकी आवाज़ पूरी तरह से गायब हो जाती! ओह! मैं चूक गया!'

'लंच के बाद, आया ने दूसरों को बोलने का मौका दिया। फिर भी, वह खुद को प्रेज़ेंट करती रही। मीटिंग में कोई भी उतना बिना तैयारी के नहीं आया जितना वह आई थी। वह हर स्पीच में मौजूद थी! उसने कभी माया की तरफ़ सिर भी नहीं घुमाया। अगर मैं कुछ कहता, तो वह आकर माया पर हमला कर देती। अगर चालाक प्रोफ़ेसर शशिनामा मुझसे अपनी राय रखने के लिए कहते, तो वह माया की तरफ़ मुड़ जाती। इसके अलावा, मैं बिल्कुल भी तैयारी करके नहीं आया था।'

आमिर इस मीटिंग में बैठना नहीं चाहता था। उसने सोचा, अटेंडेंस बुक पर साइन कर देना ही काफी होगा। तीसरे दिन सारा मानदेय उसके हाथ में आ गया। वह यह सोचकर उठा कि कोई आकर उसे लात नहीं मारेगा। वह वहाँ से ऐसे निकला जैसे टॉयलेट जा रहा हो। वह एक टैक्सी में बैठा और 'जनपथ होटल' चला गया।

टैक्सी होटल दशेनंधवुलागली। शत रायवन पेड़ों, इमारतों दशुलागया के पीछे भाग रहा है।

'हमेशा ऐसा ही होता है। बहस, भाषा, भाषा की प्लानिंग, दोनों भाषाओं का इस्तेमाल, इंग्लिश और हिंदी, हमेशा एक ही तरह से होता है। मैंने यह सजेस्ट नहीं किया, मैंने बस किया और डायलॉग लिखना शुरू कर दिया। अगर मैंने कहानी लिखी होती, तो डायरेक्शन बहुत आसान होता। लेकिन मैं कहानी लिखना बंद नहीं करता। डायरेक्शन में भी, मैं 'यह नहीं है, ऐसा होना चाहिए' जैसी बातें सजेस्ट करता रहता हूँ। मुझे इन सजेशंस और आर्गुमेंट्स से कोई एडवाइस नहीं मिलती। मुझमें टीचर बनने की ताकत या टैलेंट नहीं है। मुझमें टीचर बनने का कॉन्फिडेंस भी नहीं है। मुझे स्कूलों में कोई टीचिंग जॉब नहीं मिलती। इसी वजह से, मैंने अपना 8th पास सर्टिफिकेट दिखाने के बाद एक ग्रामर स्कूल में टीचिंग जॉब कर ली, बस! स्कूल जाते समय आँखों से लेकर बालों और पैरों तक, आँखों को छोड़कर, पूरे शरीर को ढकने वाला काला घूंघट हटाना होता है! शिवाजी नगर बस स्टैंड के सामने फलों की छोटी सी दुकान चलाने वाले मिस्टर सर साहब के परिवार ने आज तक एक भी औरत को घर से बाहर नहीं भेजा, भले ही यह पारंपरिक हो। इस घर की कोई भी औरत बिना बुर्का लिए घर से बाहर नहीं निकलती। दूसरी तरफ रहने वाले कसर अली खान को पता ही नहीं चला होगा कि उन्होंने एक मुस्लिम लड़की से शादी कर ली है। अगर बीबी ऐसे चली जाती, तो हमारा समाज चुप नहीं रहता। तुम्हें भी उससे शादी कर लेनी चाहिए। वह चांदी जैसी चमकदार है,' उन्होंने यह कहकर मुझे यकीन दिलाया था। मैं कितने दिन अकेला रहा? जिस्म की भूख मेरे सारे ख्यालों पर कंट्रोल कर लेती थी, यह बिल्कुल सच है! तेज़ दुनिया में कोई इधर-उधर जा सकता है। लेकिन इसमें भी कई बार ऐसा होता है। इस दुनिया में कुछ भी छिप नहीं सकता।

Machine Translated by Google

शिवा को छोड़कर, इलाके में हर कोई रिज़ा को माया की तरह ही जानता था। घर में पत्नी होने पर भी वह सब कुछ संभाल लेती है। यह सोचकर कि अगर वह जवान हुई तो मेरे पिता भी वापस आ जाएँगे, मैंने ज़ुबैदा से शादी करने का फ़ैसला किया।

लेकिन पहला ही दिन आ गया। वैसे तो ज़ुबैदा की माँ बगलुम में पली-बढ़ी थी, लेकिन प्राइमरी स्कूल में पढ़ाने से आगे नहीं बढ़ पाई थी। अब उसके साथ कैसे पेश आऊँ, यह सोचकर मेरा दिल बैठ गया। वह अच्छा खाना बनाती है, घर ठीक से संभालती है, कहती है 'अगर तुम्हें भी भूख लगी तो मैं नौकरी छोड़ दूँगी', बिस्तर गरम करती है। पाँच साल के बच्चे की भूख मिट गई, और दिन यूँ ही निकल गया। पता नहीं क्यों, मुझे खुद पर शर्म आ रही थी। मैं बीस साल का लड़का हूँ, इस उम्र में क्या हो गया है जब मैं बच्चों के साथ नहीं खेल सकता? इस उम्र में क्या मैं उससे कहूँ कि यह मेरा है? अगर मैं नहीं चाहूँगा, तो वह नहीं सुनेगी। यह मेरी माँ की नैचुरल इच्छा थी, लेकिन फ़ैमिली प्लानिंग की यह भावना पाप है! मैंने विडाल के सोलह बच्चों का उदाहरण देखा था, ग्यारह ज़िंदा और पाँच मरे हुए। आखिर में, मैं हार गया क्योंकि मैं रेपिस्ट जितना मज़बूत नहीं था। उसके भाई-बहन, जो पास में रहते थे, हमारे घर रहने आने लगे। क्या यह बड़ा घर और पैसे की बर्बादी नहीं थी जिसने मुझे रुलाया? क्योंकि मैं हर महीने हम दोनों के लिए कितना भी सामान लाऊं, वह काफी नहीं था।
मेरे मन में हज़ार बार आता, "तुम्हारे भाई-बहनों को तुम्हारे घर में कदम नहीं रखना चाहिए।" मुझे यह बात खुद से दोहरानी पड़ती थी। एक-दो बार कहने के बाद, मैं कहती, "तुम भी तो हर दिन, कभी-कभी शूटिंग के लिए घर से बाहर रहते हो। मैं घर में अकेली कैसे रह सकती हूँ?" मुझे नहीं पता था कि अगर पढ़ाई-लिखाई की कमी हो तो जो घर हैं उनका बहुत इस्तेमाल होता है। हालाँकि माया के मन में तलाक का ख्याल अक्सर आता था, लेकिन माया के मन में जो दया और उसके पेट में पल रहा बच्चा था, उसने इसे बहुत मुश्किल बना दिया था। अगर कोई ऐसा जीवनसाथी हो जो पढ़ा-लिखा हो, दयालु हो, पति पर पैसे का बोझ न डाले, और अपने पैरों पर मजबूती से खड़ा हो, तो दोस्त होने का एहसास कितना अच्छा होगा! रिज़ा के बारे में सोचकर, वह कुनिंगल के पास इस गाँव में जाकर उससे यह बात शेयर करती। वह जाकर उससे कहती, "मैंने तुम्हें तलाक नहीं दिया है। हम कुछ भी करें, हम पति-पत्नी ही रहेंगे। तुम्हारे साथ इसी फ्लैट में रहो। जब तक मैं ज़िंदा रहूँगी, तुम्हारे साथ रहूँगी। शादी करके जो गलती की थी, उसकी भरपाई करूँगी। उसे भी चार पैसे मिलते हैं..." लेकिन नहीं। वह सुनती नहीं। वह बिल्कुल नहीं सुनती! फुय्या फ्यूजन हिल पर मुलाकात के समय से साथ रहने के सभी अच्छे पलों को याद किया जा सकता है। लेकिन अगर मैं कहूँ, 'मैंने हेसगैलिट में डायलॉग भी लिखे हैं,' तो क्या होगा?...'

"सर! जनपथ होटल!" टैक्सी ने उसे होश में ला दिया। वह अपने कमरे में गया और AC चालू करने की कोशिश की, लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। 'कितनी आँखें माया को घूर रही थीं!'

Machine Translated by Google

खाने के बाद मैंने बस इतना ही किया। स्मार्ट, दयालु और सब्र वाला होना चाहिए; लेकिन क्या नए साल के बारे में थोड़ी बात नहीं करनी चाहिए? इसके लिए कल्चर की ज़रूरत थी। अगर यह नहीं था, तो जाने का क्या फ़ायदा? मैंने थोड़ी देर सोचा। जो लोग मीटिंग में बता सकते थे कि कौन आ रहा है, उन्हें उन संबंधित अफ़सरों को बताना चाहिए जो मुश्किल में थे। लेकिन ये सरकारी अफ़सर बहुत ज़िद्दी हैं! वे कहेंगे, 'तुम्हें बुलाया है, आना है तो आओ, नहीं तो आओ। जब तुम्हें पता चलेगा कि किसी और को बुलाया है तो तुम क्या करोगे?' कितनी अजीब भीड़ है!'

सुबह के आठ बज रहे थे, लेकिन उसने दवा नहीं ली। उसे भूख लगी थी। वह खाने के लिए उठा। वह बार और रेस्टोरेंट में कुछ खाना चाहता था। उसे रोज़ आने की आदत नहीं थी। लेकिन जब वह शारीरिक या मानसिक रूप से थक जाता था, तो उसे किसी दूसरी जगह आने की आदत थी। उसे याद आया कि रिज़ा भी ऐसे ही लोगों के साथ रहती थी। यह याद करके उसे खुद पर गुस्सा आया। इस गुस्से में उसने अपना सिर हिलाया। उसके पास आए वेटर ने कहा, "काउच" और खाने का मेन्यू सामने आने लगा। उसने पेट में काउच के साथ चिकन के ऊपर थोड़ा और काउच डाला, और उसे बेहतर महसूस हुआ। उसे अपने शरीर में ताकत और मन में शांति महसूस होने लगी। शहद थोड़ा कड़वा था।

'मैं यहाँ अकेला नहीं आया होगा। दूसरे मेंबर्स को भी इसी होटल में ठहराया गया होगा। क्यों न उसके बारे में भी पता कर लिया जाए?' यह सोचकर वह गया और बिल की रसीद ले ली। उसने पूछा, "मलाया मीटिंग के लिए आई है। उसका नाम रिज़ा बेगम है। रूम नंबर क्या है?" रिसेप्शनिस्ट ने पूछा, "रिज़ा बेगम कुरैशी। रूम नंबर एक चार।"

वह 'थान्यू' की आवाज़ के साथ घर में घुसा। उसका कमरा दूसरी मंज़िल पर था... घर के ऊपर की तरफ़... उसे कमरा मिल गया। उसने घंटी बजाई और दरवाज़े पर खड़ा हो गया। एक मिनट में दरवाज़ा खुल गया। वह दरवाज़े पर खड़ी थी। उसके बाल पूरी तरह सफ़ेद थे। उसने अभी भी वही पोपी रंग की, झालरदार साड़ी पहनी हुई थी जो वह कई दिनों से पहने हुए थी। उसने एक जोड़ी चप्पल पहनी हुई थी। उसके हाथ में तीन सौ पेज की किताब थी। वह हँसा, "मैं!"

“हं!” वह हँसी.

“मैं तुमसे बात करना चाहती थी।”

“तुम अंदर आ सकते हो।” वह मान गई। वह अंदर आया। उसने उसे बिस्तर पर बैठने को कहा, दरवाज़ा बंद किया, और अंदर आकर उसके सामने बिस्तर पर बैठ गई।

Machine Translated by Google

उसकी हिम्मत बढ़ गई क्योंकि वह आसानी से कमरे में जा सकता था। लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करे। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह यहाँ किस बारे में बात करने आया है। उसने कहा, "मैंने चीफ़ मिनिस्टर से पूछा कि रिज़ा बेगम किस कमरे में हैं, और उन्होंने कहा कि रिज़ा बेगम कुरैशी यहाँ हैं।"
"क्या आपको पता है कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ?" उसने पूछा। उसे लगा कि इसीलिए वह

यहाँ आया है।

"उसने मेरे कमरे के बारे में नहीं सोचा। अगर वह गंदा होता, तो वह सोचता, तुम दोनों अलग-अलग कमरों में क्यों गए?" वह फूट-फूट कर हंसा।

उसने बिना कुछ कहे उसे देखा। लेकिन अब उसे उसकी नज़रों से डर नहीं लग रहा था। उसकी नज़रों में मुस्कुराते हुए उसने कहा, “जो सरकारी अफ़सर हमें खर्च करने की कोशिश कर रहा है, वह भी ऐसा ही सोचेगा। अगर वह ऐसा सोच भी रहा है, तो मुझे लगता है कि हमें साथ रहना चाहिए। कम से कम आज के लिए तो!”

“ओह! यह पूरी योजना इसी के लिए है!”

"क्या प्लान है? हम पति-पत्नी हैं।"

“मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि तुम्हारा पति कौन है क्योंकि तुमने मुझे तलाक नहीं दिया है। क्या तुमने मुझे तलाक दिए बिना इसे वैसे ही रखा है?”

“कैरेट! मैं कभी हार नहीं मानूंगा। मैं कभी बेकार में हार नहीं मानूंगा। अगर तुम मुझे चाहते हो, तो मैं इसे ज़ुबैदा को दे दूंगा। मैं तुम्हें चाहता हूँ! महाराज!” उसने कहा, उठकर उसके पास गया।

डर और शर्म के बावजूद, उसने उससे कहा, “आमिर, उठो मत! वहीं बैठो! पहले हमें तुमसे कुछ बातें करनी हैं।” वह फिर से सोफे पर बैठ गया। उसने कहा, “मिस पूषा किसी आदमी का रेप तभी कर सकती है जब वह बहुत कमज़ोर हो या उसके हाथ में चाकू हो और वह उसका इस्तेमाल करने के खतरे में हो, है ना? कमज़ोर या थोड़ी कमज़ोर औरत का भी रेप करना गलत नहीं है। यह आदमी भी जो यहाँ आया है, वह बिल्कुल गलत नहीं है। तुमने जितने रेप सीन शूट करने थे, कर लिए हैं, इसलिए तुम्हें इतना सावधान रहने की ज़रूरत नहीं है।”

"क्या मैं तुम्हारा रेप करने आया हूँ? यूँ ही कुछ मत कहो। तुम मेरी पत्नी हो। मैंने तुम्हें तलाक़ नहीं दिया है। अगर तुम चाहो तो मैं ज़ुबैदा को यहीं तलाक़ दे दूँगा। लेकिन मुझे तुम चाहिए।" वह बुदबुदाया।

Machine Translated by Google

“अगर तुम पत्नी भी हो, तो भी तुम्हें ज़बरदस्ती के लिए राज़ी होने की ज़रूरत नहीं है। हम अलग-अलग कमरे ले रहे हैं, मैं साथ रहने के लिए राज़ी नहीं हूँ, बस इतना ही काफ़ी है। मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि इस वजह से तुमने मेरे कमरे में दखल दिया है।”

“लेकिन तुमने यह क्यों मान लिया कि मैं तुम्हारा रेप करने आया हूँ? नहीं!” “तुम कह रही हो कि तुमने मुझे अभी तक

तलाक नहीं दिया है। मैं भी तुम्हें तलाक दे सकता हूँ।”

“कैसे? एक महिला के क्या अधिकार हैं? मैं थ्योरी के हिसाब से सोच रहा हूँ।”

“क्या मुझे इस सिचुएशन में उस धर्म को छोड़ने का लीगल हक है जो डिवोर्स की इजाज़त देता है? मैंने अपना धर्म बदला है और ऐसा करने का अधिकार किसी को नहीं दिया है। मुझे यह भी पता है कि कोटा का फैसला हो चुका है कि चाहे मर्द हो या औरत, अगर मैं अपना धर्म बदल भी लूँ, तो भी मेरी शादी इसी धर्म के हिसाब से होनी चाहिए, और इस धर्म की पाबंदियों को मानना चाहिए। लेकिन क्योंकि मैं अभी भी दूसरे मर्द को अपना पति मान रही हूँ, तो मैंने तुम्हें बुखार चढ़ा दिया है, इसलिए मैं कोटा जाकर अपनी आवाज़ उठाऊँगी। तुम्हें लगा होगा कि तुम अपने आप एक साथ चार शादियाँ कर लोगी, लेकिन मैं चुपचाप नहीं बैठूँगी। मैं इसे कोर्ट में ले जाऊँगी। फिर तुम खुद सोच लेना कि तुम्हारी इमेज का क्या होगा।”

उसे पता भी नहीं था कि वह क्या कर रही है। जब उसे चोट लगी, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह पूरी तरह लाल हो गई थी। वह उसे देख रही थी। थोड़ी देर बाद, वह उठा और उसके पास बैठ गया। वह चुप थी। उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसे किस किया।

“यह स्वाभाविक है कि तुम्हें गुस्सा आए कि मैंने दूसरी शादी कर ली। लेकिन जब तुम चले जाओगे तो मैं अकेला हो जाऊंगा, चिंता मत करो!”

वह हिली नहीं, लेकिन थोड़ी इमोशनल हो गई। फिर भी, उसने खुद को संभाला और सोचा, "अगर तुम एक और काम करना चाहती हो, तो क्या तुम किसी ऐसे इंसान से नहीं मिली जो तुम्हारे साथ इंटेलेक्चुअली और इमोशनली कम्पैटिबल हो?"

“हमें पढ़ने का मौका नहीं मिलता, यह मैं जानता हूँ। दूसरे समुदायों में भी लड़कियाँ खूब पढ़ती हैं। लेकिन इस लड़की की दूसरी शादी कौन करेगा, वह भी माया की उम्र में?”

उसे समझ नहीं आ रहा था कि याया की बातों पर हंसे या रोए। 'इसे नादानी कहूँ, या किसी खास सिचुएशन में माया से हमदर्दी पाने की बेवकूफी?'

Machine Translated by Google

उसने हाथ पकड़े हुए आदमी का हाथ दबाते हुए कहा, “तुम्हारी बेगम का नाम ज़ुबैदा है ना? अभी से उसे पढ़ाना शुरू करो। कोई बात नहीं! उसे किसी अच्छे स्कूल और कॉलेज में भेजो, अलग-अलग टीचर और प्रोफ़ेसर से गाइडेंस दिलाओ, और अगले आठ-दस साल में वह तुम्हारे लिए एक अच्छी पत्नी बन जाएगी।” “तब तक मैं सीनियर सिटिज़न हो जाऊँगी। अगर मैं उसे

पढ़ाने की बहुत कोशिश भी करूँ, तो भी उसके दिल में सीखने की इच्छा तो होगी ही! तुम नहीं जानते उसकी इंटेलिजेंस का लेवल क्या है।”

'ओह, यह सच है!' इस स्थिति को लेकर उसके दिल में दया आ गई। वह सच में अपने अंदर झाँकने लगी और सोचने लगी। वह लगभग तीन या चार मिनट तक वहीं बैठी रही। फिर उसने कहा, “एक और गोली खा लो। मॉडर्न एजुकेशन के बिना कोई समझदार नहीं होगा। औरतें धर्म बदलने के बाद तुम्हारी तरह साथी बनने के लेवल पर नहीं आ पाएंगी। लेकिन मॉडर्न एजुकेशन बराबरी की मांग करेगी। सिर्फ आर्थिक, सामाजिक और साथ रहने में ही नहीं, बल्कि धार्मिक लेवल पर भी! तब वह भी हो सकती है। आदमी क्यों होना चाहिए? एक क्यों है? पहले धर्म में, आदमी उतना ही ताकतवर है जितना औरत। आदमी औरत से ज़्यादा समझदार भी है। उसमें महिषासुर जैसे राक्षस को मारने की ताकत है। औरत राक्षस के आगे सरेंडर कर देती है और राक्षस राक्षस बनकर राक्षस को मार डालता है, क्या तुमने वह कहानी नहीं सुनी? औरतों का धर्म इस्लाम बनने से पहले, अरब में कई दोहरे धर्म थे। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन पर बैन लगा दिया और अल्लाह जैसा ही दोहरे धर्म रखा। इसके बजाय एक दोहरे धर्म क्यों नहीं रखा? दोहरे धर्म इसी तरह के धर्म को दिखाते हैं। मैं तुम्हें एक और इशारा देता हूं। जो लोग मॉडर्न शिक्षाओं और विचारों का सामना करते हैं, उन्हें दोहरे धर्मों का सामना करना पड़ता है और वे हैं। सच्चा दोहरे धर्म। आपने क्या सोचा? मैं भी उस समय वहीं मौजूद था। एक औरत खड़ी हुई और हंसते हुए बोली, "सीतानेफ़, अगर इतना भी काफ़ी हो, तो भी राम, जो संतुष्ट नहीं है, उसके चेहरे पर चार-छह थप्पड़ मारने चाहिए।" यह एक उदाहरण है कि आज की औरत का मन विरोधाभासों पर कैसे रिएक्ट करता है। आज हमारे लिखने वाले अह्या, उपादी, सीता, मंदोदरी, कुंती को घबराहट में दिखाते हैं, यहाँ तक कि हेतु भी जानता है। तुम्हें पता है या नहीं? बोलो!"

कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोलीं, “आज के विद्वान भी इसे आपके धार्मिक अनुयायियों के सामने पेश करेंगे। दोबारा इस्तेमाल के लिए

Machine Translated by Google

क्या भगवान और बेटा दोनों बराबर ज़रूरी नहीं हैं? इसमें भी एक की जगह ज़रूरी है और दूसरा कैसे मौजूद है, इस पर भी बात होगी। इस समय, इस पर फिर से सोचना ज़रूरी होगा कि क्या दो भगवान होने चाहिए। मैं पिछले पाँच सालों से पढ़ रहा हूँ। मैंने वेदों में भी थोड़ा पढ़ा है। इसके अनुसार, न तो भगवान है और न ही बेटा। यह सच का एक पहलू है। इसी सिद्धांत से दुनिया बनी है। और वह सिद्धांत है भगवान-प। इसी वजह से दुनिया है। इसी वजह से हम इसे कभी नहीं भूलते। इसका मतलब यह है कि सिर्फ़ एक भगवान है और इससे आगे जो कुछ भी है, वह तेलंगाना से परे है। इस भगवान से प्रार्थना करने के लिए हम जिस भाषा, शब्दों, भावनाओं का इस्तेमाल करते हैं, वे इसी भगवान की हैं! नर और मादा का द्वैत वेदों के पाँच सिद्धांतों पर आधारित है। जैसे मधुमक्खी मधुमक्खी की सेवा करती है, अगर कोई अयामया के लेवल पर पहुँच जाता है, तो वह करेवादी बन जाता है। नर और मादा में फ़र्क सिर्फ़ काम के लेवल पर है। एक बार जब कोई इस लेवल पर पहुँच जाता है, तो जेंडर में कोई फ़र्क नहीं रहता, वेद भी यही मानते हैं। क्या आपके धर्म के लोग वेदों को मानने के लिए माया को मानते हैं? मुझे बताओ! क्या वे ऐसा करेंगे?”

उसने बात करना बंद कर दिया। इससे उसे और भी गुस्सा आया। वह मुड़ी और उसकी तरफ देखा। उसकी आँखें नींद से भरी थीं। जादू हो चुका था, वह सो चुकी थी! उसे लगा कि उसने इतनी देर तक इतनी गंभीरता और ईमानदारी से बात की थी, कि वह उसके कानों तक नहीं पहुँची होगी। उसे दुख हुआ कि उसने इतने दिल से जो कुछ भी कहा था, वह सब बेकार गया।

आमिर, जो बैठा था, उसके ऊपर झुक गया। उसे ऐसे ही छोड़कर, वह उसके बगल में बिस्तर पर लेट गई, और वह चौंक कर जाग गई। उसने उसके दोनों हाथ हिलाए और कहा, “आमिर! आमिर! तुम सो गए हो। चलो तुम्हें तुम्हारे कमरे में ले चलते हैं। तुम्हारा कमरा नंबर क्या है?”

उसने बस 'हं?' कहा। उसने जेब में हाथ डाला और देखा। उसे कमरे की चाबी मिल गई। ढाई सौ। वह उसे उसके भारी बैग के साथ कमरे से बाहर ले आई। लेकिन उसे उसे ले जाने में मुश्किल हो रही थी, और जब वह इधर-उधर देख रही थी, तो दूसरी तरफ होटल वाला आदमी दिखाई दिया। उसने उसे पास बुलाया, कमरे की चाबी दी और कहा, "उसे उसके कमरे में ले जाओ और सो जाओ।" वह आमिर का भारी बैग टॉयलेट में ले गया।

होटल वाला दरवाज़े पर खड़ा था, जबकि आमिर को होटल वाला कमरे से ले जा रहा था। वह कमरे में आई और सो गई, लेकिन वह सो नहीं सका। पूरे दिन की मन की शांति भंग हो गई थी। अब, आमिर के आने से, जो उसे ढूंढते हुए कमरे में आया था, उसमें बहुत हलचल मच गई थी। 'यह आदमी मुझसे नाराज़ होकर खेलने चला गया। लेकिन यह बूढ़ा आदमी दूसरी लड़की कैसे ढूंढ सकता है?'

Machine Translated by Google

हाहा!' उसने एक पल सोचा। 'मैंने यह अकेले होने की आज़ादी से किया।' उसने किया, 'अगर हमने ऐसा नहीं भी किया होता, तो भी हम साथ होते। अगर मैंने उसे बताया होता, तो वह तुरंत मुझे तलाक देकर चला जाता। मुझे इस सोच से कुछ तसल्ली हुई। लेकिन मेरा मन तुरंत सावधान हो गया। अगर मैंने इस कहानी के लिए इस धर्म की किसी दूसरी परंपरा के आधार पर काम किया, तो मेरे पास इसकी बुराई करने का नैतिक आधार कैसे होगा? इसके अलावा, यह सब होने के बाद, यह देखने का समय है कि क्या मुझे इससे प्यार महसूस होता है, हैं?' मेरे मन ने मिला-जुला नेगेटिव जवाब दिया। इन सभी इमोशनल उतार-चढ़ाव के कारण, मैं सुबह तक सो नहीं पाया।

सुबह उठकर, नहाकर मीटिंग की जगह पर जाते हुए, रास्ते में मुझे 'औरंगज़ेब रोड' नाम की एक बड़ी सड़क दिखी। मैंने मन ही मन सोचा, 'मज़ेदार बात है! इस महानगर में एक सड़क का नाम बादशाह अकबर के नाम पर रखा गया है। लेकिन इस मामले में, जिसे सुबह होते ही याद किया जाना चाहिए, औरंगज़ेब को भी शामिल किया गया है? इसका क्या मतलब है? भारत की आज़ादी में इसका क्या रोल है? हम इतिहास में हर चीज़ को एक ही नज़र से देखते हैं, क्या होटल बैंक की इस पॉलिसी को इसी वजह से रिजेक्ट किया जा रहा है? क्या यह बिगड़ी हुई सोच की निशानी है? ये नेता तो ऋषियों के लेवल के भी नहीं हैं जो मरे हुए रावण को राम और अमीरों को धर्म मान सकें। औरंगज़ेब एक ऐतिहासिक व्यक्ति है। अगर हम उसे इतिहास से मिटा सकते हैं, तो हम उसके कामों की सीख को शास्त्रों से कैसे मिटा सकते हैं?' आज इस मीटिंग में कुछ तो ज़रूर पेश किया गया होगा।

वह बातचीत की जगह पर काफी पहले ही पहुँच गई थीं। 'कम से कम मैं दलित तक तो पहुँच गई। मुझे एक दिन रुककर लाल कला, जुमा मस्जिद, तुगलकाबाद, मायुन का मकबरा वगैरह को डिटेल में देखना चाहिए। इससे मुझे अपनी लिखी किताब को एक अलग नज़रिए से पढ़ने में मदद मिलेगी।'

जब वह इसी सोच में बाहर खड़ी थी, तभी एक शिकारी पक्षी उसके पास आया।

"मी डॉटर राजदान. अलाहाबाद िवापीठात इितहासाचा रीडर आह.ेकालचेतुमचे मुेफटलास! तुही खया मद!" तेहणाले.

"ओह, मैं इनटॉलेरेंट हूँ। लेकिन कल मीटिंग में तुमने मेरा साथ क्यों नहीं दिया?" उसने मन ही मन सोचा।

"तुम ही हो जिसने पूरे भारत को मुस्लिम देश बनाया, है ना?" वह मज़ाक पर हँसा। फिर, अपनी हथेली में तंबाकू, चूना और गुड़ रखकर, उसने अपनी उंगलियों से उसे मिलाया और दरार में फैला दिया। "तुम्हारा नाम रिज़या बेगम है। लेकिन तुम मुसलमान भी नहीं हो। क्या यह सही है?"

Machine Translated by Google

"कहाँ?"

“तुम जमात के मुसलमानों को भी यह आइडिया नहीं दे सकतीं। तुमने शादी करने के लिए इस्लाम भी कबूल किया था। लेकिन फिर तुम दोनों ने शादी कर ली। हाँ या ना? मैं पर्सनल बात कर रही हूँ, गुस्सा मत हो।” ‘तुम बहुत ज़िद्दी हो, प्रोफेसरों ने मुझसे कहा, और अगर मैं ऐसा सोचूँगी, तो

मेरा हाल हेमा जैसा हो जाएगा।’ जब वह यह सोच ही रही थी, प्रोफेसर और फूड अटेंडेंट एक स्पेशल कार में आए। डॉ. राजदान आगे आए और प्रोफेसरों को पास बुलाया। अटेंडेंट यह देखने के लिए हॉल में गए कि क्या हो रहा है। राजदान ने कहा, “सर, मुझे लोगों से बात करना पसंद है। मैं थोड़ी शर्मीली हूँ। चूँकि मुझे फाइनेंशियली कुछ भी उम्मीद नहीं है, इसलिए मैं अपना फ्यूचर बताकर आ रही हूँ। क्या आप मुझे अपनी अच्छी किस्मत देखने का मौका देंगे?” बोलते हुए उन्होंने उसका दाहिना हाथ अपने हाथ में ले लिया। प्रोफेसर ने भी कोई एतराज़ नहीं किया। उन्होंने अपनी दाहिनी हथेली राजदान के सामने कर दी। उन्होंने ध्यान से प्रोफेसर का हाथ देखा और कहा, “सिर्फ़ एक नहीं, पहली नज़र में तो यह अच्छा आइडिया लग रहा है। आपको इस लेवल का अवॉर्ड मिलेगा, कुछ ऐसा ही। हमारे देश में तो लाइफ़ अवॉर्ड जैसी कोई चीज़ नहीं होती, है ना भारत के लिए!”

प्रोफेसर का चेहरा खिल उठा।

अब राजा की बेटी के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई। उसके होंठों से तंबाकू का एक कश निकल गया, उसे पता भी नहीं चला। लेकिन बिना सोचे-समझे, उसने अपनी हथेलियाँ आपस में रगड़ना शुरू कर दिया। वह लात मारने लगी, उनके हाथ देखकर कौन जानता है कि भविष्य में क्या होगा? लेकिन अगर आप उनके चेहरे देखें, तो वे आपको बता सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है!

रात के इस समय मौका देखकर उसने भी उससे पूछा, "मैडम, क्या मैं आपका हाथ देख सकता हूँ?"

“जिन लोगों को भविष्य के बारे में कोई उम्मीद है, उन्हें एक योद्धा के सहारे की ज़रूरत है। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। माया के बारे में आपकी भविष्यवाणी भी बिल्कुल सही है। इसके लिए आपको बधाई!”

इस पर तेखड़खंडनू हंसे और बोले, “इसमें माया जैसा कुछ नहीं है। कोई तुम्हारे बारे में बात कर रहा था, और माया ने भी यह सुना था। तुम कभी मॉडर्न औरत थीं! यहां कुछ लोगों को पता था कि तुमने धर्म बदलकर शादी भी कर ली है। प्रोफेसर शानी ने तुम्हारा नाम सुझाया था। तुमने भी उनके आइडिया को माना था, इन लोगों ने तुम्हें लिफ़्ट दी थी, लेकिन तुम उनके खिलाफ हो गईं। सिर्फ शाना ही नहीं, हमें भी ऐसा ही लगा है। यहां मीटिंग की वजह से।

Machine Translated by Google

रिपोर्ट मेरे पास दो बार जाती है, है ना! मैंने प्रोफेसरों को बुलाया और उनसे पूछा, 'आपने जिस लड़की को रिकमेंड किया था, वह ऐसे क्यों बात कर रही है?' प्रोफेसरों ने खुद यह कहा।"

अब उसके मन में कोई शक नहीं था कि इस मीटिंग के पीछे कौन था और उनके मकसद क्या थे। भले ही उसे बहस के बारे में थोड़ा-बहुत पता था, लेकिन वह कभी-कभी उन ऐतिहासिक बातों का ज़िक्र करती थी जो उसे पता थीं। “काले लोगों की गलतियों को नज़रअंदाज़ करना गलत है,” “इतिहास की गलतियों को बिना जाने और खुली आँखों से माने,” “क्या पिछले सौ सालों में इंसान की ये गलतियाँ ठीक नहीं हो रही हैं? दलितों और पिछड़े समुदायों को खाना न देकर, उन्हें सही शिक्षा न देकर, उन्हें मंदिर में जाने न देकर या उन्हें पुजारी बनाकर भी, क्या पूरा समाज उन गलतियों को ठीक करने की कोशिश कर रहा है? समाज में महिलाओं को ऐसे सुधार लाने का मौका क्यों नहीं दिया जाता? और अगर सुधार होने ही हैं, तो क्या उन्हें पहले गलतियों के बारे में नहीं बताया जाना चाहिए? इतिहास की गाइडेंस के बिना ये सुधार कैसे किए जा सकते हैं...?” वह बोलती रही वगैरह।

एक चिकनी दाढ़ी वाले अधिकारी ने कहा, "भले ही आप राजा या महाराजा की तरह काम करें, यह सच में अनैतिक है, लेकिन इस वजह से समाज में माहौल खराब करने और हमारे भाई-बहनों को नुकसान पहुंचाने में राजा का क्या फ़ायदा है?"

फिर उन्होंने जल्दी से जवाब दिया, “इतिहास का मकसद कभी भी किसी की बुराई करना, उसे मिटाना, उसके दिमाग को गंदा करना नहीं होता। यह बेकार है। हमें आज अपने से पहले के लोगों की गलतियों को समझकर अपनी ज़िंदगी जीनी चाहिए, कम से कम इन गलतियों से तो छुटकारा पाना चाहिए। इसलिए, हमें ईमानदारी से इसे सीधे देखने की ज़रूरत है, बिना ऐतिहासिक बातों को कोई रंग दिए। लेकिन आप उन्हें वह मौका नहीं देते। यह बहुत सच है कि आज के बच्चे पहले के बच्चों के राजाओं के बर्ताव के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। लेकिन अगर हम अपने पुरखों की गलतियों की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं हैं, तो इसका मतलब है कि हम इन गलतियों का साथ देते हैं। इसका क्या मतलब है कि जापान ने हाल ही में कोरिया में हमारे लोगों द्वारा किए गए ज़ुल्मों की ज़िम्मेदारी ली? क्या जर्मनों ने, जो इंसानियत के खिलाफ़ किए गए घिनौने काम के दोषी थे, यह कसम नहीं खाई थी कि ऐसी घटना फिर कभी नहीं होगी? हम अपने पुरखों की गलतियों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। हम अलग हैं, उन्होंने इस कसम में कहा। भारतीय समाज लड़कियों को ऐसे संस्कार डेवलप करने का मौका नहीं देता।

Machine Translated by Google

अगर हम इतिहास से मिली सीख को ईमानदारी से मानने को तैयार हैं, तो हम ये ऐतिहासिक गलतियाँ दोबारा नहीं करेंगे। आइए, एक समाज के तौर पर इंसान की इन गलतियों को विनम्रता और दया के साथ स्वीकार करें। अगर हम इसमें उनकी मदद भी करें, तो समाज में एकता और एकजुटता जैसे देश के लिए ज़रूरी गुण और मज़बूत होंगे और देश की नींव और मज़बूत होगी, क्यों नहीं?

क्या आप ऐसा सोचते हैं?

"आपकी बातें दूसरों ने सुन ली हैं। अब अगर आप उनकी बातों में दखल देते हैं, तो प्लीज़ उन्हें रोक दें," अय महाराज बार-बार रिक्वेस्ट करते रहे। अगर उनकी बेटी नज़ीरची बेगम न होतीं, तो वे उस समय उन्हें मीटिंग से बाहर निकाल देते, लेकिन इस वजह से वह बिना रुके अपनी बातें कहती रहीं।

गाँव लौटने के बाद भी उसके मन में वही ख्याल घूम रहे थे, इसलिए उसने एक बार फिर इन रेफरेंस और नोट्स को देखा। उसने इन रेफरेंस की लिस्ट बनाना शुरू कर दिया। उसने तय किया कि जब अगली मीटिंग बुलाई जाएगी, तो वह इन सभी रेफरेंस को एक-एक करके देखेगी। एक महीने बाद, उसे डॉ. राजदान का एक लेटर मिला, "मैडम रिज़्या को नमस्ते। मुझे खुशी है कि मुझे आपसे फिर से मिलने का मौका मिला। क्या आप इस महीने की चौबीस, पच्चीस और छब्बीस तारीख को होने वाली दूसरी मीटिंग में भी आ रही हैं? मुझे आपसे इतिहास के बारे में बहुत कुछ बात करनी है। मुझे उम्मीद है कि आपका काम अच्छा होगा!"

'ओह! तुम तो हमारे पास आए ही नहीं। राजधानी पहुँचकर यहाँ आए हो, है ना?' उसने सोचा, लेकिन जल्द ही उसे इसका मतलब समझ आ गया। उसकी आत्मा खुशी से भर गई। 'शायमेव की जीत होती है।' इस देश में कैसी कहानी चल रही है जहाँ कोई नारा नहीं है!

दो हफ़्ते बीत जाने के बाद भी मेरा दिल दुख रहा था। साथ ही, मैं यह भी समझना चाहता था कि दूसरी मीटिंग में क्या हुआ था। मैंने डॉ. राज़दान से बात करने का भी सोचा। मुझे उन्हें सब कुछ बताने में कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन अगर मैं लिखकर देता तो वह नहीं मानतीं। अगर मैं उन्हें फ़ोन करता, तो शायद वह ज़्यादा खुलकर बात करतीं। मुझे वह पहचान पत्र मिला जो उन्होंने मुझे पिछली मीटिंग में दिया था। उसमें उनके घर का फ़ोन नंबर भी था। सरकार देश के हर गाँव में फ़ोन की सुविधा देने की योजना की घोषणा कर रही थी। कौन जानता है कि वह यहाँ कब आएंगी, इसलिए वह सुबह की बस पकड़कर कुंगल चली गईं। राज़दान, जो उनसे फ़ोन पर मिलीं, ने कहा, "रिज्या जी! आपने भारत के इतिहास को एक नई दिशा दी है। बधाई हो!" सिहानू: "क्या हुआ? अगर आप इसे साफ़-साफ़ समझा सकें तो अच्छा होगा।"

Machine Translated by Google

“एक मिनट! फ़ोन रख दो। मैं सिगरेट लेकर आ रहा हूँ...” उसे वेटर की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी देर बाद एक और आवाज़ सुनाई दी, “मुस्लिम राजाओं को ‘जातिवादी’ कहना चाहिए!” अंक लता? कहानी सुनाने वाले के हाथ में जातिवादी! इतिहासकार औरंगज़ेब को जातिवादी राजा मानते हैं, है ना? वह शेखी बघारने वाला नहीं था, बल्कि वह तो धार्मिक कट्टरपंथी था, मीटिंग में तय हुआ कि दस-पंद्रह रिसर्च आर्टिकल, चार-छह रिसर्च किताबें जल्द से जल्द पब्लिश की जाएँ। एक-दो साल में औरंगज़ेब का कैरेक्टर पूरी तरह बदल जाएगा और वह जातिवादी नहीं रहेगा! काशी-विनाथ की कहानी कैसे आगे बढ़ेगी, मैं सोचता हूँ? औरंगज़ेब बंगाल गया था। उसके साथ कुछ हिंदू राजकुमार थे। उसके राजकुमार भी उसके साथ होने चाहिए। बनारस के पास आयावर ने बादशाह से रिक्वेस्ट की कि उसे विनाथ की पूजा करने का मौका मिलना चाहिए। हिंदू राजाओं को न सिर्फ़ ऐसा करने की इजाज़त थी, बल्कि उनके युद्ध की भी इजाज़त थी। बनारस ने पाँच मील दूर एक गार्ड भी रखा था। गंगा किनारे बसे सभी राजा पूजा के लिए विनाथ मंदिर में घुस गए। पूजा के बाद एक को छोड़कर बाकी सभी राजा वापस लौट गए। रिज़्याजी, सुन रहे हो?

"हाँ, मैं सुन रही हूँ, तुम भी बोलो!" उसने कराहते हुए कहा।

“तुम भी, मेरी प्यारी। नहीं तो, मैं तुम्हें और कुछ नहीं बता सकता। मैंने महल का कोना-कोना ढूंढा, रानी जो पीछे रह गई थी, लेकिन मुझे वह नहीं मिली। जैसे ही यह खबर राजा तक पहुंची, वह बहुत गुस्से में आ गए। उन्होंने अपने अधिकारियों को उसे ढूंढने के लिए भेजा। उन्होंने उसे अच्छी तरह से देखा, सभी मूर्तियों को हिलाया। जब उन्होंने एक कोने में गणेश की मूर्ति पड़ी देखी, तो उन्होंने उसे हिलाया और देखा कि मूर्ति पीछे की ओर हिल रही थी। जब वे बेसमेंट में गए, तो उन्होंने देखा कि रानी के साथ रेप हुआ था। वह रोने लगीं। बेसमेंट महल के ठीक नीचे था। यह सुनकर राजा ने सोचा कि रानी के साथ रेप हुआ होगा। चूंकि पवित्र जगह छोड़ दी गई थी, इसलिए वहां से पवित्र शिवलिंग लाया गया। मंदिर को हटाकर ज़मीन पर गिरा दिया गया। वहां के पुजारी बदल दिए गए। यह समझा जा सकता है कि राजा, जो मंदिर और मंदिर के संबंध में आचरण की पवित्रता का बहुत सम्मान करते थे, ऐसी भूमिका निभाएंगे। इस समय भी, हिंदू धर्म कितना बिगड़ गया था, यह सामने आ जाएगा। कौन आएगा? संपर्वाय सभा में यह तय किया गया कि इतिहासकारों को अपना शोध इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना चाहिए...”

मैंने मन ही मन सोचा, “अगर आप यह कहना चाहते हैं कि मंदिर को तोड़ देना चाहिए क्योंकि यह खंडहर है, तो फिर बादशाह ने इस खंडहर जगह पर दीवारों और खंभों वाली मस्जिद क्यों बनवाई, और बादशाह ने इस मंदिर का क्या किया? मथुरा में केशव मंदिर का क्या हुआ? उदयपुर में शाही महल का मंदिर, उदयसागर के किनारे असली मंदिर, उदयपुर के आस-पास के 120 मंदिर

Machine Translated by Google

औरंगजेब के बनाए हुए कई मंदिर हैं जैसे मंदिर, चिचूर का बास मंदिर, अंबर का सहस। इन सभी मंदिरों के लिए कहानी कौन लिखेगा?”

“वे हर दिन के लिए अलग-अलग कहानियाँ बनाएंगे। सरकार के पास बहुत पैसा है। अगर इतिहास वैसा लिखा जाए जैसा हम कहते हैं, तो वे ये सारी कहानियाँ बना सकते हैं। है ना?”

"तो, आपने असेंबली में यह कहते हुए विरोध नहीं किया कि यह सब झूठ है?"

“ये सब मीटिंग्स में नहीं होता, मैडम! मीटिंग के बाद, अंदर के लोग कुछ फ़ैसले लेते हैं और फिर हल्के-फुल्के माहौल में वही ऑफिशियल अनाउंसमेंट जारी कर देते हैं। मेरी भी माया से ऐसी ही बात हुई थी और मुझे समझ नहीं आया। मैं भी कोच लेता हूँ! यह एक अच्छा आइडिया है!...” वह हँसा।

Machine Translated by Google

16

अखबारों में राष्ट्रीय एकता पर कॉन्फ्रेंस की चर्चा हुई। अंग्रेजी अखबारों ने प्रोफेसर के कीनोट स्पीच और समापन भाषण का सारांश देते हुए एक लंबा आर्टिकल छापा था। अंग्रेजी और कुर्दिश अखबारों ने कॉन्फ्रेंस में हुई चर्चाओं पर ध्यान दिया था। लेकिन उसमें कहीं भी उनके नाम या उनके बताए गए विचारों का ज़िक्र नहीं था। एक भी अखबार में नहीं! सदियों से हमारे भाईयों ने भारतीयों को जो झूठा इतिहास बताया है, हमारे कुछ इतिहासकार जो इस जादू-टोने का शिकार हो गए हैं, जिन्होंने वादी महम दया उपदेशे की सही सलाह मानी है, उन लड़कियों की निंदा करना जिन्होंने सही सलाह मानी है, यह हमारे देश की विचारधारा नहीं है जब तक कि इसे पूरी तरह से खत्म न कर दिया जाए... यह उन्हीं लेखकों और उन्हीं लेखकों, एडिटरों, पाठकों ने लिखा था। यह सोचने के बाद कि यह राज्य किसी मानसिक बीमारी से ग्रस्त है, मैं चिंतित हो गया।

इसके बाद भी, उसने एक महीने तक सभी ग्रुप्स पर नज़र रखी। हर जगह एक ही टोन सुनाई दे रही थी। अलग-अलग मीटिंग्स और कॉन्फ्रेंस में एक ही आइडिया पर चर्चा हो रही थी। उसने सोचा, क्यों न वह खुद एक आर्टिकल लिखे? मीटिंग में बताए गए आइडियाज़ को अपने शब्दों में लिखे। मीटिंग में कोई उसे अकेला नहीं छोड़ता, इसलिए वह अगली मीटिंग में लिखेगी कि उसे कैसे चुना गया। जैसे ही इंग्लिश और कोरियन आर्टिकल तैयार हुए, वह बगलू गई और उन्हें टाइप करवाया। फिर उसने उन्हें एक इंग्लिश ग्रुप को भेजा जो जातियों में पॉपुलर था और कर्नाटक में 'निभाड़' नाम के एक ग्रुप को। दो हफ़्ते बीते, तीन हफ़्ते बीते, एक महीना बीता। किसी भी ग्रुप में आर्टिकल पूरा नहीं हुआ या उन्हें उनसे एक लाइन का एक्सप्लेनेशन भी नहीं मिला। दोनों एडिटर्स को इस बारे में पूछने के लिए लेटर भेजा गया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

आखिरकार, एक दिन, वह उसी इंग्लिश अखबार में ऑफ-सीजन में गई। वह जाकर रेजिडेंट एडिटर से मिली। वह उसका जान-पहचान वाला निकला। उसका नाम आनंदन था। उसने उसके साथ बहुत इज़्ज़त से पेश आया। जब उससे आर्टिकल के बारे में पूछा गया, तो उसने कहा, “मुझे कुछ नहीं पता। सब-एडिटर ने इसे छापा नहीं, कौन जाने!”

“मैं उनसे मिलना और बात करना चाहता हूँ। मेरे पास ऐसा कोई आर्टिकल नहीं है जिसे मैं आसानी से छोड़ दूँ।” वह हँसी। इस पर वह हँसा, “ऑफिस में फ़ोन करके बाहर वालों के सामने इल्ज़ाम लगाना, यह माया की पॉलिसी में फिट नहीं बैठता।”

Machine Translated by Google

"तो फिर तुम भी वह आर्टिकल मांग सकते हो। अगर याना ने वह खो दिया है, तो मैं उसकी एक और कॉपी ले आई हूँ। तुम भी आ जाओ!" याया के चेहरे पर थोड़ी सी छुप-छुपकर बात दिखी। याना ने कहा, "असंकर, तुम भी उसे छोड़ सकते हो। मैं अभी बहुत बिज़ी हूँ।"

"ठीक है. तो मैं कब आऊँगा? मैं अपना आर्टिकल पब्लिश करने के बारे में नहीं सोच रहा हूँ. सब्जेक्ट सीरियस है. मैं कई सालों से इस सब्जेक्ट पर काम कर रहा हूँ. मैंने एक ऐसा आइडिया पेश किया है जिसे समाज को समझना चाहिए. तो ये रही मेरी राय."

"मैडम! ये सब पॉलिसी के मामले हैं। हमारे दिमाग ऑफ-टाइम पर लगे हैं। मैं इसका जवाब नहीं दे पाऊंगा, मेरे बारे में सोचना भी मत।" उसने अपनी लाचारी दिखाई।

"तो मैं यह पत्र मुख्यमंत्री को भेजूंगा।"

"भेज दो!" हनात ने बच्चे को ले जाते हुए कहा।

मैंने आर्टिकल की एक कॉपी सेंट्रल ऑफिस भी भेजी। वहां से भी मुझे कोई जवाब नहीं मिला। असल में, आर्टिकल कहीं पब्लिश ही नहीं हुआ। कड वृपा के एडिटर ने भी जूया से बात की, अपनी यादें ताज़ा करते हुए कहा, "तुम बगलू छोड़कर गांव क्यों चली गईं? तुम्हें पता है तुम्हें यहां की कितनी याद आती है? पांच साल बहुत लंबा समय होता है। इस दौरान बहुत कुछ हुआ है। दूसरे शब्दों में, मैं तुम्हें स्टार नहीं मानता!..." यह कहने के बाद अयंत ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम और आमिर अलग हो गए, यह बहुत बुरा हुआ। उन्होंने किसी और से शादी कर ली है, बगलू में किसी ऐसे से तो क्या जो उन्हें पसंद नहीं करता। वह भी एक ऐसी औरत से जो घूंघट करती है? उसके साथ उसे क्या खुशी मिलेगी! वह इस बारे में और अपनी पत्नी के बारे में किसी से बात नहीं करता। दूसरे लोग क्या सोचेंगे?"

"क्या लिबरल मूवमेंट ने इस बारे में कुछ नहीं किया?"

"अप्सनायकों की बात उठी है, इस आंदोलन से जुड़े लोग भी चुप हैं। आप यहाँ क्यों आए हैं, बताइए? मुझे हैरानी है कि आपका आर्टिकल छपा क्यों नहीं! मैं समझता हूँ कि ऐसा आर्टिकल सालों तक बिना लिखे नहीं लिखा जा सकता। लेकिन मुझे इसे छापने में डर लग रहा है। अगर यह छपा, तो लोग भीड़ बनाकर हमारे ऑफिस पर पत्थर फेंकेंगे। आग लगा देंगे। हमारा सामान ले जाने वाली गाड़ियों पर पेट्रोल डालेंगे और लाठियाँ चलाएँगे। मुझे भी मार डालेंगे। मेरा मालिक मेरा काम कम कर देगा, इसमें कोई शक नहीं है। क्या माया के एडिटर को अब अंदाज़ा नहीं होना चाहिए कि अगर कोई आर्टिकल छपा तो क्या होगा? लोग ऐसे आर्टिकल भी निकाल देंगे। सरकार सामान बिकने नहीं देगी।"

Machine Translated by Google

इसमें 66 बैकलॉग हैं। आप इस आर्टिकल को कहीं भी भेजें, हर एडिटर इसके बारे में सोचेगा।
"मैं करूँगा।"

कोई रिसर्च नहीं, कोई रिसर्च नहीं, कोई रिसर्च नहीं! यह कैसा लोकतंत्र है? यह देश कब मज़बूत होगा? यहाँ का नागरिक कब आज़ाद होगा? अपजय ने अपने कलेक्शन में मौजूद सभी किताबें पढ़ ली थीं और उसके बाद भी ज़रूरत के हिसाब से उन्हें ऑर्डर कर दिया था। इस पढ़ने के बाद उसे यह साफ़ हो गया था कि डिटेल्स जोड़ने से सोच के फ्लो में कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। उसे इकट्ठा की गई डिटेल्स के आधार पर किताब लिखने का मन भी नहीं था। बल्कि उसे लगा कि उसे अब तक लिखी गई किताबों को ही आकार देना चाहिए और उन्हें पूरा करना चाहिए।

नॉवेल पूरा हो गया था। यह ज़्यादा लंबा नहीं था। यह नॉन-फिक्शनल था। टाइप करने के बाद, मैंने इसे चार पब्लिशर्स को दिया। वे पब्लिशर्स भी इसे नाम से जानते थे। ड्रामा और सिनेमा के फील्ड में भी यही होता था। इस वजह से, उन चारों ने इसे बड़े चाव से लिया और पढ़ा भी। लेकिन कोई भी इसे पब्लिश करने को तैयार नहीं था।

“मैडम, अगर यह किताब छप गई तो बहुत दिक्कत होगी। पत्थरबाज़ी, आगज़नी और मार-काट होगी। सरकार शायद इस पर बैन लगा देगी। हम इस बकवास का क्या करेंगे? नहीं तो आप भी कोई दूसरी किताब लिख लेंगी। हम उसे तुरंत छपवा लेंगे!” –” चारों अलग-अलग शब्दों और आवाज़ों में हंसे।

“इस किताब पर हुए सारे खर्च मैं उठाऊंगा। जैसे ही किताब खत्म हो जाए, मुझे रिफंड कर देना। अगर कुछ होता है और कोई नुकसान होता है, तो मेरे पैसे लगेंगे,” उन्होंने सुझाव दिया।

इसके लिए भी कोई तैयार नहीं है।

अब मेरी माँ भी गुस्सा हो गईं। 'मैं एक आर्टिस्ट हूँ। मैं एक राइटर हूँ। मैंने यह किताब तुम्हारे फायदे के लिए लिखी है। अब, किसी ज़ुल्म की वजह से मैं पीछे क्यों हटूँ?'

वह एक प्रिंटिंग हाउस गई। उसे टाइप की हुई कॉपी मिली। उसने अंदाज़ा लगाया कि इसे छापने में कितना खर्च आएगा। अपने हिसाब से, वह तीस हज़ार देने को तैयार हो गई और बिना डिपॉज़िट दिए गाँव लौट गई। प्रिंटिंग हो गई। उसने किताब मुख्य एडिटर को भेज दी। उसने ज़िले के मुख्य लेखकों-रिव्यूअर और मुख्य विचारकों को भी एक-एक कॉपी भेजी। तीनों किताबें छपने के बाद, वह पैसे के हिसाब से सौ-सौ कॉपी लेकर वापस आई। लेकिन किसी ने भी किताब का प्रूफ़ नहीं लिखा था; इतना ही नहीं, लेखकों-रिव्यूअर और विचारकों को एक साधारण रसीद भी नहीं मिली थी। यह

Machine Translated by Google

यह किस तरह की बौद्धिक साज़िश थी? वे दिन दुख में डूबे हुए थे।

लेकिन एक दिन, एक फ्रंट-पेज सप्लीमेंट में "नाइटली डेडली नॉवेल्स" टाइटल से एक लंबा एस्से छपा। 'भारत के बंटवारे के बाद, लामी उफ्फ रिज्या बेगम, जो इस मिट्टी से प्यार की वजह से यहां रह गए भाइयों को मेंटल और फिजिकल दर्द दे रही हैं, ने अपने बुरे कैरेक्टर, अक्ल और मेंटैलिटी का परिचय दिया है.. जब इलम शब्द का मतलब शांति होता है, तो उन्होंने दबे-कुचले लोगों की बेइज्जती की है.. उन्होंने दशा की घटना की जानकारी का गलत इस्तेमाल किया है। अगर धार्मिक अशांति फैलाने वाली और पब्लिश हुई इस किताब पर, जिसका मकसद देश की एकता को नुकसान पहुंचाना है, समय रहते बैन नहीं किया गया, तो सरकार को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी...' और भी कई इल्ज़ाम पहले पैराग्राफ में लगाए गए थे। लेखक ने लेखक का नाम नहीं बताया और सिर्फ 'समिक' का ज़िक्र किया। वरना, ऐसे भटके हुए इंसान का नाम जानने का क्या फायदा! लेकिन गुस्सा होने पर भी क्यों लिखना! पढ़ने वाले समझ जाएंगे कि ऐसी कोई किताब निकली है। बस इतना ही काफी है। उन्हें थोड़ा दुख हुआ। लेकिन साथ ही, उन्हें डर था कि इसे बैन कर दिया जाएगा और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। 'आज रविवार है।

किताबों की दुकानें भी बंद रहेंगी। सरकारी ऑफिस भी बंद रहेंगे। हमें बगलू जाकर दुकानों में पूछना चाहिए था। क्रिटिक्स कैसे कुछ बता सकते हैं? माया किताबों में इस्तेमाल हुए हिस्टोरिकल सबूतों के बारे में इसमें एक भी आर्टिकल नहीं लिखा गया है। यह सिर्फ़ इमोशनल फायदे और राज्य की पॉलिटिक्स से भरा है। मुझे तब याद आया, क्या मैं भी अपाज्या की मौत के बाद अपने गांव जाकर उनका कलेक्शन पढ़ने से पहले ऐसी ही भाषा और सेंटीमेंट में डूबा नहीं था?

मैंने एक बार आपकी किताब पढ़ी थी। इसमें यहाँ-वहाँ कुछ रेफरेंस हैं, लेकिन यह काफी नहीं है। हर जगह रेफरेंस की लिस्ट दी जानी चाहिए थी। किताब के आखिर में रेफरेंस की लिस्ट होनी चाहिए थी। लेकिन फिर भी कुछ दिक्कतें हैं। रेफरेंस की 45 पेज की लिस्ट अलग से प्रिंट करके हर किताब के साथ दी जा सकती है।

शाम को पाँच बजे एक पुलिस जीप उनके घर के सामने आकर रुकी। उसमें से एक इंस्पेक्टर और पाँच कांस्टेबल उतरे। एक लॉरी उनके पीछे-पीछे आई। उसमें दस सिपाही थे। वे हिजरी के लिए आए थे, उनसे मिलने आए थे। लेकिन अब उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। यह पूरा अनुभव उनके लिए नया था। इंस्पेक्टर आया और सोचने लगा, "लामी, रिज़्या बेगम, तुम भी, है ना?"

उन्होंने कहा हाँ'।

Machine Translated by Google

"आपकी किताब पर बैन लगाने का सरकारी ऑर्डर है। हमें यह अभी करना होगा..." उसने कहा, और सीधे अंदर घुस गया। उसके पीछे-पीछे सिपाही भी अंदर घुस गए और पूरे घर की तलाशी ली। वे ऊपर भी गए। एक कमरे में बीस-बीस किताबें रखी थीं। किताब पर रिया नाम का एक टैग लगा था। जैसे ही उस आदमी ने साइन किया, सिपाही उन सबको ट्रक में ले गए। फिर उस आदमी ने पुलिस को चिल्लाकर कहा, "अरे, इसे उठाओ!" इतने में सात-आठ सिपाही थाने में घुस गए और सारी किताबें ले ली गईं।

लामी दरवाज़े पर खड़ी होकर बोली, "रुको! तुम भी, अगर तुमने मुझे उस जगह का नाम नहीं दिखाया है और सरकार ने उस पर बैन लगा दिया है, तो इसका पिछले छह सौ सालों से लेना-देना है। यहाँ की सभी मूर्तियाँ पुरानी हैं। उनमें से ज़्यादातर पाँच सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। उनका उस जगह से कोई लेना-देना नहीं है। तुम भी, रुको। उन्हें छूने का कोई कारण नहीं है।"

"अरे लेडी! आपको अपने घर की सारी मूर्तियाँ लाने को कहा गया है। उनमें क्या है, यह देखना हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है। इसके लिए, अगर आप चाहें, तो किले में जाकर अपनी मूर्तियाँ ले आएँ।" उसने फिर से सैनिकों को इशारा किया। उनमें से एक ने भारी पैसे एक तरफ़ खींच लिए। बाकी लोगों ने मूर्तियाँ इकट्ठी कीं और लॉरी में बैठने लगे।

सारी मूर्तियों को लॉरी में रख दिया गया और सारे सैनिक लॉरी में चढ़ गए। मूर्तियाँ ठीक से रखी भी नहीं थीं। वे अस्त-व्यस्त हालत में थीं। इस वजह से सबके खड़े होने की जगह नहीं थी। कुछ तो मूर्तियों पर जूते रखकर खड़े हो गए। 'मूर्तियाँ तो सारवती जैसी हैं, अगर गलती से उन पर पैर भी पड़ जाए तो उन्हें सलाम करना चाहिए, लेकिन वे बहुत दूर हैं, उनके पैरों से कुछ नहीं टूटता, क्या उनमें सेक्युलर कल्चर भी नहीं है?' वह सोचने लगी। जीप चली गई। लॉरी भी पीछे छूट गई। सारी मूर्तियाँ, रेफरेंस बुक्स और लिखी हुई किताबें, सब खत्म हो गईं। 'अब, कौन जाने इन मूर्तियों को ठीक होने में कितने दशक लगेंगे! उस दौरान, इन किताबों की सिलाई फट जाएगी, कागज भीग जाएगा, और वे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगी! यह अनमोल खजाना धूल में बदल जाएगा। इस तरह, भारत के सभी मंदिरों से ये खजाने हटा दिए जाएँगे।' इस सोच से मैं काँप गया।

कवि की आँखें उसकी आँखों से नहीं मिलीं। उसका मन बेबसी और निराशा से भर गया था। वह समझ गई थी कि ज़िंदगी की रफ़्तार और दया की लय गायब थी। वह महसूस कर रही थी कि कपनाशिया की ताकत से उसने जो किताब बनाई थी, उसके हीरो के बीज बोने के बाद क्या हुआ होगा। 'हम इस स्थिति से कैसे निपट सकते हैं? इस माहौल में जहाँ कोई सोच नहीं है, कोई रिसर्च नहीं है, कोई कल्पना नहीं है, क्या हमें सिर ढँककर चुपचाप बैठना होगा? नहीं। बिल्कुल नहीं!

Machine Translated by Google

लेकिन फिर लड़ाई कैसी होगी?' इस सवाल पर सोचते-सोचते मेरी नींद खुल गई। फिर भी, मुझे नींद नहीं आ रही थी।

सुबह जब मैं उठा, तो नहाया और बेसन की रोटी और नारियल की चटनी खाई। मुझे नींद आने में दिक्कत हो रही थी, इसलिए मैंने कॉफी की जगह एक कटोरी दही खाया। अब मुझे थोड़ी नींद आ रही थी। मैं आधी रात को अपनी रोज़ की जगह पर बिस्तर पर लेटे-लेटे सो गया।

लेकिन जल्द ही लमन ने आवाज़ लगाई, "अवा, कोई कार से आया है। मैंने तुमसे कहा था कि तुम सो रही हो, फिर भी तुम सुनने को तैयार नहीं हो। आया मुझे जगाने के लिए जल्दी कर रही है।" निपयानमाली उठ गई। उसे आलस छोड़कर बिस्तर से उठने में पाँच मिनट लगे। वह बाहर आई और उसे देखा।

दरवाज़े पर एक नई कार खड़ी थी। एक हैंडसम आदमी पोर्च पर बैठा था। जैसे ही वह अपनी नींद से ठीक हो रही थी, वह उठा और उससे इंग्लिश में कहा, "मुझे तुम्हें कुछ ज़रूरी बात बतानी है। क्या हम यहीं बात करें?"

वह उसे Ajax ले गई। उसे बेंच पर बैठने को कहा गया, लेकिन बैठने के बजाय उसने धीमी आवाज़ में कहा, "मैं तुम्हें रास्ते में सब कुछ बता दूँगा। मुझे पता चला है कि तुम्हें अरेस्ट करने का सरकारी ऑर्डर आ गया है। पुलिस के आने और तुम्हें अरेस्ट करने से पहले तुम्हें यहाँ से निकल जाना चाहिए। तुम्हें बगलू में एक अच्छा वकील करना होगा और प्री-अरेस्ट बेल लेनी होगी। एक बार अरेस्ट हो गए, तो बेल मिलने में कितने हफ़्ते या महीने लगेंगे, पता नहीं। तब तक तुम्हें जेल में रहना होगा। समाज में फूट डालने और अलग-अलग नुकसान पहुँचाने वाले काम करने जैसे चार्ज लगेंगे। अब, ज़रूरत के हिसाब से चार कपड़े ले लो और चलो। मुझे कुंगलवन के रास्ते बगलू जाना है! मेरे गाँवों से एक डाकू गुज़र रहा है। आओ और कपड़े पहन लो। तुम्हें कुछ दिनों के लिए बगलू में मेरे एक दोस्त के घर में छिपना होगा। "मैं वकील को अरेस्ट करने और उसे प्री-अरेस्ट बेल के लिए हाई कोर्ट के सामने लाने के लिए सब कुछ करूँगा।"

फिर, एक दिन, छुट्टियों में, वह तैयार होकर बाहर आई और लामा से कहा, "मुझे आपके लिए कुछ काम करना है। कोई आया था, पुलिस आई और मुझसे पूछताछ करने लगी, लेकिन मैं कहती रही कि मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ गई थी।" और वह कार में आमिर के बगल में बैठ गई।

कार गांव से बाहर आ गई।

"दाईं ओर पांच मील की दूरी पर डोगाघ नाम का एक गांव है। वहां से बाएं मुड़ें और आगे बढ़ें।"

Machine Translated by Google

"जाओ, बगुला जा सकता है। डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।" वह हँसी।

उसके मन में एक ख्याल आया। 'अगर मैं अरेस्ट हो गया तो आगे क्या करूँगा? अगर मैं अरेस्ट हो गया तो मेरी ताकत मेरे खिलाफ हो जाएगी। मैं कमज़ोर होकर भी लड़ सकता हूँ। मैं बिना कमज़ोरी के लड़ूँगा! माया कदंब रीम में जो अनुभव हुए हैं, उनके मुकाबले अरेस्ट होना क्या बड़ी बात है?'

'दूसरे लेफ्ट टर्न पर मेरे मन में जिज्ञासा हुई, यह अमेरिकन अचानक माया को लेकर इतना परेशान क्यों हो गया?' मैंने उसका चेहरा देखा। वह भी उसकी तरफ मुड़ा। उनकी नज़रें मिलीं। उसने कहा, "तुम्हारे दिमाग में क्या है, माया तुम्हारे पास आ गई है। तुम पागल हो रहे हो। गाड़ी चलाते हुए बात नहीं कर पाओगे। तुम एक-दो मील गाड़ी चलाकर रोककर बात कर सकते हो। तुम हमारी पुलिस का रवैया जानते हो। वे यह सब बर्दाश्त नहीं करेंगे।"

"तुम सच में नहीं आओगे। मैं भी सुनने के लिए उत्सुक हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो।" यह बात मानते हुए वह भी हँसी।

एक मील चलने के बाद, हमने दाहिनी ओर आम, कटहल, कटहल और पपीते के पेड़ों वाला एक बगीचा देखा। उसके सामने कार पार्क करने के बाद आमिर ने कहा, “मैं आज दलित में आपके कमरे में आया था। उस समय जो बातचीत हुई, उसे सुनकर मैं बहुत थका हुआ था। अगले दिन मैं थोड़ा जल्दी उठ गया। मुझे मीटिंग में आपके सामने आने में डर लग रहा था। लेकिन, मैं खुद से यह कहकर आया था कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप माया की तरफ नहीं थे। भले ही पूरी मीटिंग आपके साथ थी, मैं देख सकता था कि आप कितने सब्र से सिचुएशन को संभाल रहे थे, जबकि इस पूरी मीटिंग में सिर्फ़ आप ही इस सब्जेक्ट पर बोल रहे थे। आपकी बातें सुनकर, मुझे आपके सब्जेक्ट पर भरोसा हो गया था। मैं बार-बार ‘वाह’ और ‘बधाई’ कह रहा था। अगर कोई और कुछ कहता भी, तो मैं हमेशा आपकी तरफ होता। यह उभर रहा था। लेकिन मुझमें इतने लोगों के सामने, यहाँ तक कि सरकार को रिप्रेजेंट करने वाले एक प्रोफेसर के सामने भी यह सब बोलने की हिम्मत नहीं थी। आप डरपोक हैं। आप कहाँ से आए हैं? आपकी बातों का कोई हिस्टोरिकल बेसिस होना चाहिए, वरना आप बोल नहीं पाते। इतना ही नहीं, मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे माया से प्यार हो गया है। तुम्हारी बात सुनते हुए।" हनीता ने उसकी तरफ देखा।

वह भी इस बात को गंभीरता से देख रही थी।

उन्होंने आगे कहा, “मैं इसका फ़ैन नहीं हूँ। अगर आप चाहते हैं कि कोई आपकी तारीफ़ करे या आपको इज़्ज़त दे! या फिर आपको किसी ऐसी चीज़ का फ़ैन बनना होगा जो असली नहीं है। आपको इस पर गर्व होगा, कि आप पूजा के लेवल पर पहुँच गए हैं, कि आपसे प्यार किया जाएगा।

Machine Translated by Google

इस कंपनी की तुलना हमसे नहीं की जा सकती, मैंने सोचा। लेकिन शाम को आकर आपको यह सब बताने में मुझे झिझक हो रही थी। इसके बाद, मुझे एहसास हुआ कि आपको दूसरी मीटिंग से बाहर कर दिया गया और आप दिल्ली चले गए। आपकी सरकार ऐसे ही काम करती है। मैं इतनी सारी डॉरमेट्री का काम जानता हूँ। हर डॉरमेट्री के पाँच फायदे होते हैं। मैंने इससे यह नई कार ली। तेजाऊ के बाद, मैं आपके बारे में सोचता रहा। अपने समझदार साथी से क्या बात करूँ? कैसी बातचीत करूँ? ऐसी औरत को क्या दे सकता हूँ जो पुष्पा से ज़्यादा समझदार न हो! लेकिन मैं आपसे मिलने से डर रहा था। मैं झिझक भी रहा था। इसके बाद, मैं काम में डूब गया...” हवा रुक गई थी। उसने एक बार इधर-उधर देखा। बगीचे के पास, इतनी खुली हवा में कितना अच्छा लगता है! आमिर ने आगे कहा, “चलो। वहाँ इस पत्थर की बेंच पर बैठते हैं।” और कार से बाहर निकल गया।

इस बेंच पर बैठने के बाद, उसने कहा, “मैं अपने काम में खो गया था। कल सुबह, मैं उठा और अखबार का सप्लीमेंट देखा। मुझे इंटरव्यू की उम्मीद थी, इसलिए मैंने अखबार को ध्यान से देखा। मैंने आपकी किताब का कवर पढ़ा। मुझे नहीं पता था कि आपने ऐसी किताब लिखी है। आपने भी इसे पढ़ा होगा, है ना?”

“पढ़ो। मैं तीन पेपर और एक इंग्लिश पेपर लूँगा।”

“ये ‘सामी’ तो बहुत दूर था, ‘पारिन’ कौन हो सकता है? किसी ने लिखा होगा, मैंने सोचा। क्यों किसी ने, ऐसे ही लिखा होगा, मैंने सोचा। मैं तुरंत किताब पढ़ना चाहता था। लेकिन रविवार। किताब तो किताब है। क्या आप मेरे असिस्टेंट मोहन कुमार को जानते हैं? वह लेखक का अच्छा दोस्त है। मैंने उसे फ़ोन किया। उसने कहा, मैंने पढ़ ली है, मैं माया के साथ हूँ। तुम पढ़ोगे तो तुम्हें भी हैरानी होगी। लेकिन मैं इसे मौके पर दिल्ली ले आया। मैंने तुरंत पढ़ ली। सच कहूँ तो! मेरा दिमाग चकरा गया। सच में बहुत गड़बड़ हो गई होगी? लेकिन आपने हर जगह से रेफरेंस का सहारा लिया है। यहाँ तक कि खुद सुल्तान-बादशाह ने भी। जो किताबें लीं उनमें रेफरेंस के साथ लेखकों और लेखकों के नाम भी दिए गए थे। इससे मुझे लगा कि मुझे ओरिजिनल किताबें पढ़नी चाहिए और समझना चाहिए कि वे क्या हैं। आपने दिल्ली में भी यही बात कही थी। मैं सोच रहा था कि ओरिजिनल किताबें कहाँ से मिलेंगी। शाम के आठ बज रहे थे। मैंने आग भी जलाई। बातचीत के दौरान, अलग-अलग जातियों के लोग गांव में आगजनी शुरू कर दी। क्योंकि, तुम्हारी किताब री! डाकू है, बसों में आग लगाई जा रही है, पत्थरबाजी से दुकानों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। इस वजह से सरकार ने किताब पर बैन लगाने और इसे बंद करने का आदेश दिया है। यह समुदाय लेखक को गिरफ्तार करने की भी मांग कर रहा है।

“जब मैंने यह खबर सुनी तो मुझे तुम्हारी चिंता हुई। मैंने कल रात 10 बजे पुलिस को फोन किया। उन्होंने पुलिस को यह सोचकर बुलाया कि मैं गलत काम करने वालों का प्रतिनिधि हूँ।

Machine Translated by Google

मैं राइटर के गांव गया हूं और किताबें और उनका पूरा सेट वापस ले आया हूं। मैंने गांव वालों को खबर दे दी है। अब से माहौल शांत हो जाएगा। मुझे इस बात का यकीन है।" मैंने सोचा, "वे लोग राइटर को भी अरेस्ट करने की मांग कर रहे हैं। उसका क्या?" उसने जवाब दिया, "मैं एक सवर्ण हूं और मैं उन्हें जानकारी नहीं दे सकता।" इसका क्या मतलब है? मैं तुम्हें अरेस्ट करने की सोच रहा हूं। है ना? मैं इसके बारे में सोचता रहा। मुझे वह सब याद आता रहा जो तुम दिल्ली मीटिंग में कह रहे थे। तुमने वहां कुछ रेफरेंस बताए थे। तुमने इस किताब में भी ऐसा किया है। मैं भी इन रेफरेंस के कुछ हिस्से पढ़ना चाहता हूं। लेकिन पुलिस सारी किताबों का क्या करेगी? यह सोचकर मैं अपने बड़े बेड पर सिगरेट पीने बैठ गया। क्या तुम्हें वह याद है? मुझे याद आया कि, वे सारी किताबें तुम्हारे मम्मी-पापा की थीं।"

दोनों फिर बैठ गए। उसने सोचा, "माया, मेरे मन में एक जिज्ञासा है। परिया के नाम से यह घिनौना लेख किसने लिखा होगा?"

"पहले तुम मुझे अपना अंदाज़ा बताओ। फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि मुझे क्या लगता है।" उसने यह सोचते हुए अपनी स्टार्ट की हुई कार बंद कर दी।

"ोफेसर शी?"

"मेरा भी यही अंदाज़ा है। हो सकता है उन्होंने जान-बूझकर लिखा हो। उन्होंने किसी से कर्ज़ लिया होगा। अपनी खपत बढ़ाने के लिए वृप्स ने भी यह दंगा शुरू किया है। वे अपनी बेटी आपके बेटे को नहीं देंगे। वे कितना भी कर लें, वे इतना सीधा हमला नहीं कर सकते। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि वे इस काम में हिस्सा ले सकते हैं। अगर हम ध्यान से जांच करें, तो पता लगाना मुश्किल नहीं होगा।" इस तरह यानंकार शुरू हुआ। जैसे ही रिश्वत की बात उठी, नज़ीरिया चुप हो गई।

थोड़ी दूर चलने के बाद उसने सोचा, "क्या तुम्हें उन किताबों, लेखकों और प्रकाशकों के नाम याद हैं जिन्हें पुलिस ले गई थी?"

"का?"

"इनकी एक लिस्ट बना लो। अगर तुम्हें कोटा जाकर इन्हें सॉर्ट करवाना पड़े, तब भी यह लिस्ट काम आएगी। सुवती को लिखो, यह पूरी लिस्ट नहीं है, इसमें सिर्फ़ वही है जो मुझे याद है।"

उसने एक पल सोचा। फिर उसने कहा, "लेकिन ये किताबें सिर्फ़ हमारी किताबें वापस पाने के लिए नहीं हैं, बल्कि उन किताबों के लिए भी हैं जो हमारे पास हैं। किताबों पर

Machine Translated by Google

"कोटा में यह भी तर्क दिया जा सकता है कि अगर बैन लगाना ही था, तो पहले इस पर बैन लगना चाहिए था।"

बागालुया नंजुंडपा के घर पर रहते हुए, लामी ने सिर्फ़ याददाश्त के आधार पर यह लिस्ट बनाई।

Abu-L-Fazl Allaml:	1.	The A-IN-I Akbar, vol. I, II and III Translated by H. Blochmann, complete and ubabridged, First published 1927, 1949 Low price publications, Delhi 110052 D. K. Publishers Distributors Pvt. Ltd. Ansari Road, Darya Gunj, New Delhi-110002
Abu-L-Fazl:	2.	The Akbar Nama Translated from the Persian by H. Beveridge, Vol. 1and 11 first Published, 1902, 1939 Low price publications D. K. Publishers Distributors
A.K. Priolkar:	3.	The Goa Inquisition With accounts given by Dr. Dellon and Dr. Buchanan, First published 1961, Voice of India 1991

Machine Translated by Google

Alberuni's India:	4.	Edited With notes and Indices by Edward C. Sachau Vol. 1and 11 First published, 1910, Reprints 1989, 93, 96, Low price publications.
Babur-Nama:	5.	Translated by Annette S. Beveridge Two Vols bound in one First published 1921 Reprinted in Lpp, 1989, 97
Sir H. M. Elliot And John Dowson	6-13.	The History Of India As Told By lts Own Historians. 8 Volumes, Low price publications, Delhi-52

इस समय के मुस्लिम लेखकों ने भारत पर मुगल हमलों, युद्धों और राज्य के प्रशासन के बारे में बहुत कुछ लिखा है; इलियट और डॉसन ने बड़े पैमाने पर टेक्स्ट चुने और उनका इंग्लिश में अनुवाद किया।

David Frawley And Navaratna S. Rajaram :	14.	Islam in Today's World (The Myth and The Truth) Naimisha Research Foundation, Bangalore

Machine Translated by Google

David Frawley and S. V. Seshagiri Rao Navaratna S. Rajaram	15.	Crusade in India: Christianity's struggle for survival in the post-colonial world. Naimisha Research Foundation, Bangalore
Harsh Narain :	16.	Jizya and The Spread of Islam 1990
The Islamic Trilogy Series:	17.	Vol.I.Mohammed And The Unbelievers A Political Life
	18.	Vol. II. The political Traditions Of Mohammed The Hadith For The Unbelievers
	19.	Vol. III. A Simple Koran Read Able And Understandable
	20.	Vol. IV An Abridged Koran Readable And understandable
	21.	Vol. V. Mohammed, Allah, And The Jews The Foundational Doctrine

Machine Translated by Google

	22.	Vol. VI. Mohammed, Allah And The Christians The Foundational Doctrine
	23.	Vol. VII. Mohammed, Allah And Hinduism The Foundational Doctrine
	24.	Vol. VIII. Mohammed, Allah And The Intellectuals The Foundational Doctrine Centre For The Study Of Political Islam (CSPI Publications)
Ishwar Sharan:	25.	The Myth of Saint Thomas and The Mylapore Shiva Temple Voice of India 1991
Jadunath Sarkar:	26.	A Short History Of Aurangzib Orient Longman 1979. First published 1930, 54, 62.
	27.	Shivaji and his times, First edition 1919 Orient Longman 1973, 92, 97

Machine Translated by Google

	28.	A History of Jaipur written in 1939-40 published in
	29.	Military History of India First Edition 1960 Orient Longman 1970
James Tod:	30-31.	Annals and Antiquities of Rajasthan 2 volumes, First published 1829, Routledge Keganpaul Ltd. London, Paper back 1997 Rupa Ă co.,
John F. Richards:	32.	The New Cambridge History of India, The Mugal Empire, Cambridge University Press, First South Asian Edition 1993 Foundation Books, Ansari Road New Delhi 110 002
Koenradd Elst:	33.	Ayodhya and After; issues before Hindu Society, Voice of India, 2/18 Ansari Road, New Delhi 110 002

Machine Translated by Google

	34.	Negationism in India; concealing the Record of Islam, Voice of India
	35.	Psychology of Prophetism, Voice of India
	36.	Ram Janma Bhoomi Vs Babri Masjid: A case Study in Hindu Muslim conflict. Voice of India
	37.	The Saffron Swastika The notion of Hindu Fascism) Vol I Ă II Voice of India
	38.	Dr. Ambedkar, A True Aryan
	39.	Indigenous Indians: Agatsya to Ambedkar.
K. M. Panikkar:	40.	Malabar and the Portuguese, 1929 Voice of India reprint 1997
K. S. Lal:	41.	The Mughal Harem, Aditya Prakashan, New Delhi

Machine Translated by Google

	42.	Muslim slave system in Medieval India Aditya Prakashana
	43.	Indian Muslims: Who are they? Voice of India
	44.	Theory And Practice of Muslim State in India. Aditya Prakashana
	45.	The legacy of Muslim Rule in India. Aditya Prakashana
Maasir-I-Alamgirr:	46.	Saqi Must'ad Khan, Eng tr. By Jadunath Sarkar, Royal Asiatic Society of Bengal, Calcutta,1947, 1986
Navaratna S. Rajaram:	47.	The Politics of History (Aryan Invasion Theory and The Subversion of Scholarship) Voice of India
	48.	Nationalism and Distortions in Indian History, Naimisha Research Foundation, Bangalore

Machine Translated by Google

	49.	A Hindu view of the world Essays in the Intellectual Kshatriya Traditions Voice of India
	50.	Profiles in Deception (Ayodhya and the Dead Sea Scrolls) Voice of India
	51.	Hindutva and The Nation Naimisha Research Foundation, Bangalore
	52.	Aryan Invasion: Historical Theory or Political Myth. Vigil (A public opinion Forum) 49, Murthy Street, West Mambalam Madras 600 033
Navaratna S. Rajaram David Frawley Foreword by Klaus K. Klostermaier.	53.	Vedic Aryans and The Origins and of Civilization (A Literary and Scientific Perspective)

Machine Translated by Google

R. C Majumdar :	54-64.	The History And Culture of the Indian people, 11 vols Bharatiya Vidya Bhavan.
Samuel P. Huntington:	65.	The Clash of Civilizations and The Remaking of world Order. Penguin
Suhas Majumdar:	66.	Jihad (The Islamic Doctrine of permanent war), Voice of India
Swapan Das Gupta. Ramajois, Arun Jaitley:	67.	The Ayodhya Reference, Supreme Court Judgement And Commentaries
S. P. Gupta. Koenraad Elst:		
Arun Shourie Shrikant G. Talageri:	68.	Aryan Invasion Theory and Indian Nationalism, Voice of India

Machine Translated by Google

69. The Aryan Invasion Theory: A Reappraisal. With Foreword by S. R. Rao. Aditya Prakashan F-14/65 Model town II Delhi 110 009

SitaRam Goel:

70. History of Hindu-Christian Encounters (A. D 304 to 1996) Voice of India.

71. Hindu Temples-What Happened to Them vol.I A Preliminary Survey Vol. II The Islamic Evidence

72. The Calcutta Quran Petition Voice of India

73. How I became A Hindu (Reprinted With a post script) Voice of India

74. Freedom of Expression (Secular Theory versus Liberal Democracy) Voice of India

Machine Translated by Google

75. Genisis And growth of Nehruism vol.I Commitment to Communism
76. Catholic Ashrams (Sanyasins or Swindlers?) Voice of India
77. Papacy: Its Doctrine and History
78. Stalinist 'Historians" Spread the Big Lie
79. Perversion of India's Political parlance
80. Hindu Society Under Siege
81. Muslism Separatism: Causes and Consequences
82. Pseudo-Secularism: Christian Missions and Hindu Resistance
83. Defence of Hindu Society

Machine Translated by Google

	84.	Heroice Hindu Resistance To Muslim Invaders (636 A. D to 1206 A. D)
	85.	Hindus and Hinduism: Manipulation of Meanings
	86.	India's Secularism, New name for National Subversion. Original in Hindi, English translation by Yashpal Sharma
Stanley Lane-Poole :	87.	Aurangzib And the Decay of Mugal Empire. First published 1890, reprint 1930, Lpp 1990.
The Jahangirnama :	88.	Memoirs of Jahangir Translated, Edited and Annotated by Wheeler Thackston. Oxford University press, New York

Machine Translated by Google

The Tuzuk-I-Jahangiri:	89-90.	The Memoirs of Jahangir Translated by Alexander Rogers Edited by Henry Beveridge in two volumses bound in one, First published 1909-1914
Gul Badan Begum:	91.	The History of Humayun (Humayun Nama) Translation with introduction notes illustration by Annette S. Beveridge First Published 1902
William Irvine:	92.	The Army of the Indian Moghuls, (Its Organization and Administration) LPP

या कादंबरीमधील विश्वनाथ देवालयाच्या विध्वंसाशी संबंधित.

Anwar Shaikh:	93.	Islam, The Arab Imperialism
	94.	Islam, Sex and Violence 1999 The Principality Publishers P.O. Box 918, Cardiff, U.K.

Machine Translated by Google

Arun Shourie:	95.	Eminent Historians: Their Technology, Their Line, Their Fraud A.S.A. New Delhi
	96.	A Secular Agenda A.S.A.
	97.	The World of Fatwas Or The Shariat in Action, A.S.A.
	98.	Indian Controversies, Essay on Religion in Action, A.S.A.
	99.	Arun Shourie and his Christian Critic. Voice of India
	100.	The State As Charade, A.S.A.
	101.	Missionaries in India, A.S.A.
	102.	Harvesting Our Souls, A.S.A.
	103.	Hindusim: Essence and Concequence. A.S.A.
David Frawley:	104.	Arise Arjuna: Hinduism And The Modern World. Voice of India

Machine Translated by Google

Diana L. Eck:	105.	Banaras, City of Light, Penguin
Every Man's Library:	106.	The Koran Translated by Marmaduke
Pickthall Ibn Warraq:	107.	Why I Am Not a Muslim Prometheus Books, 59 John Glenn Drive Amherst, New York 14228-2197
Jagmohan:	108.	My Frozen Turbulence in Kashmir Allied publishers
King James Version:	109.	Holy Bible Standard Text Edition
Sir William Muir:	110.	The Life of Mahommet: From Original Sources, Third Edition, London, 1894, First Indian reprint, Voice of India
Margoliouth D.S.:	111.	Mohammed and The Rise of Islam First published, London 1905 Reprint, Voice of India, 1985
Martin Lings:	112.	Muhammad His life Based on the Earliest Sources. George Allen and Unwin

इस किताब के चैप्टर LXI में बताया गया है कि सैनिकों ने बिन कुरैज़ नाम के कबीले के सभी लोगों, सात सौ आदमियों, बारह सौ औरतों और बच्चों की ज़िंदगी को बाँट दिया था। युवाओं के व्यापार में दूसरों के घोड़ों और ऊँटों के व्यापार का ज़िक्र सर विलियम मूर के पेज 320 पर ऊपर दिए गए टेक्स्ट में है। मार्टिन लैंग

Machine Translated by Google

इस किताब को पाकिस्तान सरकार ने अवॉर्ड दिया था और 1990 में इलाहाबाद में नेशनल सीरत कॉन्फ्रेंस के लिए लाइफ चार्टर के तौर पर चुना गया था। 1990 में, यह किताब उन्हें अशर यूनिवर्सिटी ने दी थी और उन्हें इज़चेरई मुबारक ने ऑथर ऑफ़ द बुक अवॉर्ड दिया था। इन मुसलमानों के बीच हुई बातचीत की बायोग्राफी का यही मतलब है। पहला एडिशन; जॉर्ज एलन और अनविन, 1983 रिव्यू 1986-8

मी वापरलेया आवृीचेकाशक : The Islamic Text Society, 1991, 22 A, Brookland Avenue, Cambridge CB2 2D U.K.

सर विलियम मुइर की XVII, मदीना की घेराबंदी और बेनी कुरैज़ा का नरसंहार, चैप्टर IV, यहूदियों का विनाश और DS मार्गोलिउथ का चैप्टर IV आज मुस्लिम समाज और मुस्लिम दुनिया के बीच संघर्ष को दिखाता है। रेफरेंस पॉल जॉनसन: यहूदियों का इतिहास, हार्पर पेरेनियल P. 166, 167,

Naipaul V.S.:
113. Beyond Belief Islamic Excursions among the Converted Peoples, Viking

Ram Swarup:
114. The Word as Revelation Names of Gods Foreword by David Frawley 1980
115. Meditations, Yogas, Gods, Religions
116. Women in Islam
117. Whither Sikhism?
118. Hindu view of Christanity and Islam
119. Pope John Paul II on Eastern Religions and Yoga A Hindu-Buddhist Rejoinder

Machine Translated by Google

Robert Sewell: 120. A Forgotten Empire (Vijayanagar) Asian Educational Services, New Delhi-Chennai

Sharma H.D.: 121. The Real Tipu

डॉ. धन गुडी ने इस किताब का अनुवाद 'तपु- निज वाप' नाम से किया है। 'साहित्य संधू', 14/3, नृपतुंग राटा, बैंगलोर, 560001,

इस आर्टिकल के आखिर में दिए गए रेफरेंस ज़रूर पढ़ने चाहिए।

Shriram Sathe:

122. Aryans: Who Were They? Bharatiya Itihasa Sankalana Samiti, Mysore, 1971

123. Bharatiya Historiography Bharatiya Itihasa Sankalana Samiti, 14/3 RT, LIGH Barkatpura Hyderabad 500 027

124. Facts About Aryans Hyderabad 500 027

125. European Secularism: Mother of Misconceptions

Machine Translated by Google

Vigil, A Public opinion Forum:	126.	Kashmir: Views by Eminent persons 49, Murthy Street, Madras 600 033
Warad Pande N.R. :	127.	The Nemisis of Nehru-Worship Sahitya Sindhu Prakashana Bangalore 560 001.
पवित्र कुर्आन :	१२८.	शांति प्रकाशन, हिदायत् सेंटर, बीबी अलाबि रस्ता, मंगळूर, ५७५००१

येक सुर : (क्रियाएँ) मेय, उदाहरणार्थ एवरीमैन्स लाइब्रेरी से अंग्रेजी अनुवाद
हर एडिशन के साथ आगे आने वाले वर्सेज (या वर्सेज) की संख्या कम होती गई है।

मोतिचंद्र	१२९.	काशी का इतिहास, (हिंदी) विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी- २२१ ००१

या कादंबरीतील काशीच्या गंगाघाटावर भेटलेल्या साधूचं बोलणं.

याज्ञवल्क्य स्मृती	१३०.	१.३४३, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली १९८५
रघुवंशम्:	१३१.	४-४३. धर्मविजय नावाच्या ग्रंथाचे टीकाकार काश्मिरी विद्वान, वल्लभ देव.

Machine Translated by Google

Raghu Vamsham,ED	132.	H.D. Velankar, Nirnayasagar press, Bombay 1948 p.93
वेंकटाचार्य एन.एस.:	१३३.	कौटलीयार्थ शास्त्रं ओरिएंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, म्हैसूर १७६ वे प्रकरण, १३ वे अधिकरण, ५ वा अध्याय आणि १२१ वे प्रकरण, ७ वे अधिकरण, १६ वा अध्याय.
नारायणाचार्य के.एस.:	१३४.	Relevance of Kautilya For Today Kautilya Institute of National Studies Mysore-570005.

135. "चचनामा अरब मुस्लिम शैली का लेखन है, एक 'विजय की सुखद कहानी', विजय
सिंधु. लेकिन यह एक खूनी कहानी है, और जो हिस्से स्कूल की किताबों में आते हैं वे परियों की कहानियाँ हैं... इतिहास इतना चुना हुआ है कि वह जल्दी ही झूठ की ओर ले जाता है। मोहम्मद से पहले, अंधेरा था, गुलामी थी, शोषण था। मोहम्मद के बाद, रोशनी है: गुलामी और शोषण गायब हो जाते हैं। लेकिन क्या ऐसा हुआ? यह कैसे कहा या सिखाया जा सकता है? उन सभी गुलामों का क्या जिन्हें सिंध से खलीफ़ा के पास वापस भेजा गया था? उन अफ्रीकी गुलामों के वंशजों का क्या जो कराची के बारे में जानते थे? इसका कोई सही जवाब नहीं है। इसलिए विश्वास असली दुनिया को खत्म करने या उस पर हावी होने लगता है।"

वी.एस. नायपॉल. विश्वासियों के बीच6एक इस्लामी यात्रा, 1981

'क्या किसी खास लोगों के खिलाफ जिहाद का आह्वान करने वालों का धार्मिक अधिकार है, या यह उन लोगों के खिलाफ मानवाधिकारों का उल्लंघन है जिनके खिलाफ जिहाद का ऐलान किया जाता है और चलाया जाता है?

-डॉ. जॉन गारंग. संयुक्त राष्ट्र, जिनेवा, 22 मार्च, 1999.

इसमें उद्धृत:

जिहाद की विरासत

इस्लामी पवित्र युद्ध और गैर-मुसलमानों का भाग्य

संपादक: एंड्रयू जी. बोस्टन, MD. प्रस्तावना: इब्न वार्राक

प्रोमेथियस बुक्स 59 जॉन ग्लेन ड्राइव एमहर्स्ट,

न्यूयॉर्क 14228-2197

Machine Translated by Google

The Complete Works of Swami Vivekananda:

136. Advaita Ashrama, Mayavati Memorial Edition, Fourteenth Edition, 1972 Vol. I p. 183 to 185

"योगी सिखाते हैं कि मन खुद एक ऊँची अवस्था में होता है, जो तर्क से परे है, एक सुपरकॉन्शियस अवस्था है, और जब मन उस ऊँची अवस्था में पहुँच जाता है, तो यह ज्ञान, तर्क से परे, इंसान को मिलता है। मेटाफिजिकल और ट्रांसेंडेंटल ज्ञान उस इंसान को मिलता है। तर्क से परे जाने, आम इंसानी स्वभाव से आगे बढ़ने की यह अवस्था, कभी-कभी ऐसे इंसान को अचानक मिल सकती है जो इसके साइंस को नहीं समझता; वह, मानो, इस पर अचानक आ जाता है। जब वह इस पर अचानक आ जाता है, तो वह आम तौर पर इसे बाहर से आने वाला समझता है। तो इससे पता चलता है कि क्यों एक प्रेरणा, या ट्रांसेंडेंटल ज्ञान, अलग-अलग देशों में एक जैसा हो सकता है, लेकिन एक देश में यह किसी फरिश्ते से, दूसरे में किसी देवता से, और तीसरे में भगवान से आता हुआ लगेगा। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि मन अपने स्वभाव से ज्ञान लाया, और ज्ञान की खोज का मतलब उस व्यक्ति के विश्वास और शिक्षा के अनुसार निकाला गया जिसके ज़रिए यह आया। असली बात यह है कि ये अलग-अलग लोग, मानो, इस सुपरकॉन्शियस अवस्था पर अचानक आ गए।

"योगी कहते हैं कि इस हालत में आने का बहुत बड़ा खतरा है। कई मामलों में दिमाग के खराब होने का खतरा होता है, और आम तौर पर, आप पाएंगे कि ये सभी लोग, चाहे वे कितने भी बड़े क्यों न हों, जो बिना समझे इस सुपरकॉन्शियस हालत में आ गए थे, अंधेरे में टटोल रहे थे और आम तौर पर अपने ज्ञान के साथ-साथ कुछ अजीब अंधविश्वास भी रखते थे। वे खुद को वहम के लिए खोल देते थे। मोहम्मद ने दावा किया कि अंग। गेब्रियल एक दिन एक गुफा में उनके पास आए और उन्हें स्वर्ग के घोड़े, हरक पर ले गए, और उन्होंने स्वर्ग की सैर की। लेकिन इन सबके साथ, मोहम्मद ने कुछ अद्भुत सच भी बताए। अगर आप कुरान पढ़ेंगे, तो आपको पता चलेगा कि सबसे अद्भुत सच अंधविश्वासों के साथ मिले हुए हैं।

आप इसे कैसे समझाएंगे? वह आदमी इंस्पायर्ड था, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह इंस्पिरेशन, मानो, अचानक मिली हो। वह कोई ट्रेंड योगी नहीं था, और उसे नहीं पता था कि वह क्या कर रहा है। सोचिए कि मोहम्मद ने दुनिया के लिए क्या अच्छा किया, और सोचिए कि उनके कट्टरपन से कितनी बड़ी बुराई हुई! सोचिए कि उनकी शिक्षाओं की वजह से लाखों लोगों का कत्लेआम हुआ, मांएं अपने बच्चों से बिछड़ गईं, बच्चे अनाथ हो गए, पूरे देश तबाह हो गए, लाखों-करोड़ों लोग मारे गए!

"तो हम मोहम्मद और दूसरे महान टीचरों की ज़िंदगी की स्टडी करके इस खतरे को देखते हैं। फिर भी, हम पाते हैं कि वे सभी इंस्पायर्ड थे। जब भी कोई पैगंबर अपने इमोशनल नेचर को बढ़ाकर सुपर कॉन्शस स्टेट में गया, तो वह न सिर्फ़ कुछ सच बल्कि कुछ कट्टरता भी साथ लाया, कुछ अंधविश्वास जिसने दुनिया को उतना ही नुकसान पहुंचाया जितना कि उसकी शिक्षा की महानता ने मदद की। इंसानी ज़िंदगी कहे जाने वाले बड़े अंतर से कोई भी तर्क निकालने के लिए, हमें अपने तर्क से आगे बढ़ना होगा, लेकिन हमें यह साइंटिफिक तरीके से, धीरे-धीरे, रेगुलर प्रैक्टिस से करना होगा, और हमें सभी अंधविश्वासों को छोड़ना होगा। हमें सुपरकॉन्शस स्टेट की स्टडी किसी भी दूसरे साइंस की तरह ही करनी चाहिए। हमें तर्क पर अपनी नींव रखनी होगी, हमें तर्क का जहाँ तक हो सके, उसका पीछा करना होगा, और जब तर्क फेल हो जाए, तो तर्क खुद हमें सबसे ऊँचे लेवल का रास्ता दिखाएगा। जब आप किसी आदमी को यह कहते हुए सुनें कि 'मैं इंस्पायर्ड हूँ' और फिर बिना सोचे-समझे बात करें, तो उसे मना कर दें। क्यों? क्योंकि ये तीन अवस्थाएँ - सहज ज्ञान, तर्क और सुपरकॉन्शसनेस, या अनकॉन्शस, कॉन्शस और सुपरकॉन्शसनेस अवस्था - एक ही मन की हैं। एक आदमी में तीन मन नहीं होते, बल्कि उसकी एक अवस्था दूसरों में बदल जाती है। सहज ज्ञान तर्क में बदल जाता है, और तर्क ट्रांसेंडेंटल चेतना में बदल जाता है; इसलिए, कोई भी अवस्था दूसरों का खंडन नहीं करती। असली प्रेरणा कभी भी तर्क का खंडन नहीं करती, बल्कि उसे पूरा करती है। जैसे आप महान पैगंबरों को यह कहते हुए पाते हैं, 'मैं विनाश करने नहीं आया हूँ।

Machine Translated by Google

बल्कि पूरा करने के लिए,' इसलिए प्रेरणा हमेशा तर्क को पूरा करने के लिए आती है, और उसके साथ तालमेल में होती है।"

वामी विवेकानंद के भाषण का अनुवाद:

"एक योगी मानता है कि सोच से परे एक अवस्था होती है। जब मन इस अवस्था में पहुँच जाता है, तो उसे अलौकिक ज्ञान हो जाता है। इसे सुपर-फिजिकल और समझ से बाहर का ज्ञान भी कहते हैं। हालाँकि मन ने इंसान की फिजिकल अवस्था से आगे जाने की संभावना को नहीं समझा है, लेकिन कभी-कभी वह अचानक इस अवस्था में पहुँच सकता है। अगर इसे ठीक से न समझा जाए, तो वह वहीं अटका रहेगा। ऐसे समय में ऐसा लगता है जैसे 'यह कहीं से आना नहीं आ रहा है'। हालाँकि ऐसी अवस्था या ज्ञान सब एक जैसा ही होता है, लेकिन अलग-अलग देशों, धर्मों और लोगों में, इसे अलग-अलग लोग बताते हैं; इसके पीछे का कारण यह है। कुछ देशों में, माना जाता है कि यह किसी भगवान से आया है। दूसरों में, माना जाता है कि यह किसी भगवान ने दिया है। कुछ का मानना है कि यह किसी एक देश में शुरू हुआ, जबकि दूसरे मानते हैं कि यह ईरान से आया है। इसका क्या मतलब है? मुझे इसके पीछे का कारण पता है, लेकिन जब मैंने इसके पीछे के कारणों को खोजा, तो मैं कन्फ्यूज हो गया।

आना वे अपनी मान्यताओं, विश्वासों और ज्ञान के अनुसार बंटे हुए हैं। हालाँकि, स्थिति ऐसी है कि वे भ्रम की स्थिति में फंसे रहते हैं क्योंकि वे इसके पीछे के कारणों को नहीं जानते हैं।

योगी कहते हैं कि ऐसे हालात में ऐसी चीज़ों में फंसे रहने में बहुत खतरा है। ऐसी चीज़ों में फंसे लोगों को अक्सर पागल होने का डर रहता है। ऐसी चीज़ों में फंसे लोगों में – चाहे वे कितने भी बड़े क्यों न हों – आप एक तरह का अंधापन भी पहचान लेंगे। उन्होंने खुद को दुनिया की बुराइयों के लिए खुला छोड़ दिया है।

एक दिन, गयाल नाम का एक राक्षस उनके घर आया और उन्हें ग़ौवन हरक नाम के राक्षस के पास ले गया, जैसा कि पैगंबर मुहम्मद ने बताया है। इसके अलावा, पैगंबर मुहम्मद ने अंधे आदमी की ताकत के बारे में भी बताया! अगर आप कुरान पढ़ेंगे, तो आपको अंधे आदमी की ताकत के साथ-साथ अंधे आदमी की ताकत भी दिखेगी।

आप इसे कैसे समझाएंगे? यह सच है कि केस करने वालों को स्ट्रोक या दौरा पड़ा था, लेकिन यह अचानक और गलती से हुआ। ऐसा नहीं है कि उन्होंने यह गलती से किया हो। इसलिए, उन्हें नहीं पता कि उनके हाथों जो कुछ भी हो रहा है, उसके पीछे क्या वजह है।

ज़रा सोचिए कि वादी मुहम्मद ने दुनिया को कितना नुकसान पहुँचाया है, सिर्फ़ ज़िंदा लोगों को ही नहीं, बल्कि इस दुनिया को भी! हज़ारों लोग उनकी शिक्षाओं का शिकार हुए हैं, माँओं ने अपने बच्चे खो दिए हैं और बच्चे अपने माता-पिता को खोने के बाद अनाथ हो गए हैं, हज़ारों लोग पूरी तरह से बर्बाद हो गए हैं और हज़ारों लोगों को मिलकर सज़ा मिली है।

Machine Translated by Google

इसके बारे में सोचो.

आसान शब्दों में कहें तो, अगर आप महान ऋषि वाडी महम दसरा के जीवन में दिलचस्पी रखते हैं, तो आपको इस रास्ते का रिस्क लेने में कोई दिक्कत नहीं है। यह सब बेकार या बेकार में हुआ है। भाई अतीत में गए और वहां से अपनी दौलत के साथ कुछ दौलत लेकर वापस आए। उनकी कही हुई बातों ने इस दुनिया में जितना अच्छा किया है, उतना ही उनके अंधे लोगों ने इस दुनिया में दुख भी लाया है।

अगर आप ज़िंदगी के बेकार के बादल से कुछ आइडिया लेना चाहते हैं, तो आपको इन आइडिया से आगे बढ़कर आगे बढ़ना होगा। लेकिन साइंटिफिक नज़रिया रखकर, रेगुलर प्रैक्टिस और पढ़ाई करके, आपको धीरे-धीरे इस बारे में पता चलना चाहिए। आपको ब्लाइंड स्पॉट से छुटकारा पाना चाहिए।

हमें अपनी नींव सोच के रास्ते से ढूंढनी चाहिए। हमें सोच के साथ चलना चाहिए, जहां तक सोच हमें ले जाए। सोच जहां ले जाएगी, वह हमें अगले रास्ते की ओर इशारा करेगी।

अगर कोई बिना सोचे-समझे कहता है, 'मुझे ज्ञान मिल गया है', तो उसे मना कर दें। उसे मना कर दें। क्यों? क्योंकि इंट्यूशन, विचार और इंट्यूशन या ट्रांसेंडेंटल स्टेट एक ही व्यक्ति द्वारा देखी जाने वाली तीन अलग-अलग अवस्थाएँ हैं, न कि एक ही व्यक्ति के तीन मन। इंट्यूशन विचार से विकसित होता है और विचार ट्रांसेंडेंटल स्टेट में जाता है। इसलिए, इनमें से कोई भी अवस्था दूसरी अवस्थाओं का खंडन नहीं करती है।

सच्ची पारलौकिक सच्चाई कभी भी विचारों का खंडन या खंडन नहीं करती। इसके विपरीत, यह उन्हें पूरा करती है।

"'मैं बचने नहीं, बल्कि पूरा पैसा पाने आया हूँ!' यह महान व्यक्ति, चाहे पहले रहा हो या भविष्य में, हमेशा उन लोगों के विचारों से सहमत होता है जो पूरा पैसा पाने आते हैं।"

यह लिस्ट बनाते समय मुझे एहसास हुआ कि यह उन सभी किताबों की लिस्ट है जो मैंने पढ़ी थीं! मैंने उन किताबों को इस लिस्ट में शामिल करने का फैसला किया जो मुझे इसके बाद भी याद रहेंगी।